কলিকাতা. ॥ শ্রীবিশ্বেশ্বর দত্ত ॥ মাহ মাঘ: সন ১২৫৩ সাল

Calcutta 1847. Bisheshur Dutt. Dwn by Hingun Khan

শ্রীশ্রীদুর্গা ।।

শরণং ।।

# সাহানামা

আর্থাৎ

ফের দৌছি তুছির কৃত

পারস্য ভাষায়

পূর্ব্বগত বাদসাহদিগের বিবরণ

ইদানীন্তন শ্রীবিশ্বেশ্বর দত্তকর্ত্তৃক বঙ্গ ভাষায়

ভাষিত হইয়া

শ্রী গোবর্দ্ধন ভট্টাচার্য্য কর্ত্তৃক সোধিত হইয়া

কলিকাতা সিন্ধুযন্ত্রে

মুদ্রাঙ্কিত হইল

এতৎ গ্রন্থ গ্রহণেচ্ছুক মহাশয়েরা

কলিকাতানিমতলাস্থিত

☞ ২১ নং বাটিতে তত্ত্ব করিলে

পাইতে পারিবেন

শ্রী বিশ্বেশ্বর দত্তের মোহর ও প্রতিমূর্ত্তি

ব্যতিরেকে চোরা পুস্তক

জানিবেন

সন ১২৫৪ সাল

তারিখ ২৯ ভাদ্র

শ্রীশ্রীদুর্গা

স্মরণং

# সাহানামার সূচিপত্র

| বিবরণ | । ৫ । ১ | পত্র |
|---|---|---|

বিবরণ  ( ১/  পত্র

## ভূমিকার সূচি পত্র

| পত্র | পংক্তি | অশুদ্ধ | শুদ্ধ |
| --- | --- | --- | --- |
| ১ | ১৭ | সাহনানা | সাহনামা |
| ৩ | ১১ | হে | যে |
| ৪ | ৬ | উতম | উত্তম |
| ৪ | ১৪ | পরভব | পরাভব |
| ৪ | ১৭ | ভাষান্তর | ভাষান্তর |
| ৫ | ৫ | অশে | অংশে |
| ৬ | ১ | ছবক্তগিেনর | ছবক্তগিনের |
| ৮ | ২২ | ফেরেদৌহি | ফের দৌহি |
| ৯ | ৭ | বন্ধ | বন্ধু |
| ৯ | ৯ | ফয়েদ | ফরেদ |
| ১৩ | ১ | রচন | রচনা |
| ১৩ | ৩ | করিলে | করিলেন |
| ১৩ | ২৪ | ময়মদ্দীপ্রধানউরিজ | ময়মন্দীপ্রধানউজির |
| ১৪ | ১ | আলপ | আলাপ |
| ১৪ | ১১ | ময়মদ্দী | ময়মন্দী |
| ১৫ | ৭ | ইস্মাইল | জম্মাইল |
| ১৫ | ৭ | বন্ধ | বন্ধু |
| ১৫ | ১৩ | পদদ্বর | পদদ্বয় |
| ১৬ | ৮ | নহম্মদ | মহম্মদ |
| ১৬ | ১৩ | লোক্কে | লোকে |
| ১৭ | ১৭ | বথন | যখন |
| ১৭ | ২৩ | থাভিতে | থাকিতে |
| ১৮ | ১ | হস্তিয | হস্তিত্ব |
| ১৮ | ২ | নিকিত্য | নিমিত্ত |
| ১৮ | ২ | আসা | আশা |
| ১৮ | ৩ | প্রহণ | গ্রহণ |
| ১৩ | ১১ | নগরন্ত | নগরস্থ |
| ১৮ | ১৩ | কষ্ঠ | কষ্ট |
| ১৮ | ২১ | মস্তথরসাহানানা | মস্তথবসাহনামা |
| ৬ | ৩ | খানি | একখানি |
| ৭ | ১৫ | বাধ্যত | বাধীত |
| ৮ | ২৫ | আপন | আপনি |
| ১৩ | ৯ | করিত | করে যখন জমসেদ ঐ ধনূকে অক্লেশে জ্যা সংযুক্ত করত |
| ১৮ | ১৯ | হইলে | হইতে |
| ৪২ | ২০ | মযায় | ন্যায় |
| ৫৩ | ৫ | খাকিত | থাকিত |
| ৫৩ | ১৬ | অত | অতি |
| ৫৩ | ২১ | মনুচেহবের | মনুচেহরের |
| ৫৪ | ২৪ | মওদরের | নওদরের |
| ৫৬ | ১৬ | ধাবান | ধাবমান |
| ৫৮ | ১৮ | সহিভ | সহিত |
| ৬০ | ২৫ | রোস্তনের | রোস্তমের |
| ৬১ | ৭ | রেস্তম | রোস্তম |

| পত্র | পংক্তি | অশুদ্ধ | শুদ্ধ |
|---|---|---|---|
| ৭২ | ৪ | কার্র | কারা |
| ৭২ | ১৩ | কাহর | কাহার |
| ৭৩ | ১৭ | ব্যাঘ্ | ব্যাঘ্রের |
| ৭৪ | ১৮ | অজ্ঞাগর | অজাগর |
| ৭৬ | ৫ | দৈভ্য | দৈত্য |
| ৭৬ | ১১ | কম্পিত | কম্পিত |
| ৭৭ | ১৬ | হস্ত | হৃষ্ট |
| ৭৯ | ৭ | রোস্তল | রোস্তম |
| ৭৯ | ২২ | মমুদয় | সমুদয় |
| ৯১ | ২২ | করিত | করত |
| ৯৪ | ১২ | লাসিল | লাগিল |
| ৯৭ | ১৪ | অধিকবাস | অধিবাস |
| ৯৯ | ৫ | মাতমঙের | মাতা মঙের |
| ১০১ | ৬ | পরমস | পরামর্শ |
| ১০২ | ১০ | তোমাবই | তোমারিই |
| ১০২ | ২৪ | নিত্যগীত | নৃত্যগীত |
| ১০৩ | ৭ | রাজাআজ্ঞা | রাজাজ্ঞা |
| ১০৪ | ২২ | জ্ঞাল | জ্ঞান |
| ১০৮ | ১৪ | সমিব্যাহারে | সমভিব্যাহারে |
| ১১০ | ২ | বোব | বোধ |
| ১১০ | ৮ | কধ্যে | মধ্যে |
| ১১৩ | ১৬ | আমর | আমার |
| ১১৮ | ১২ | লইতে | লইয়া |

| পত্র | পংক্তি | অশুদ্ধ | শুদ্ধ |
|---|---|---|---|
| ১২৭ | ১৪ | প্রধাধ | প্রধান |
| ১২৮ | ২৩ | করিত | করত |
| ১২৯ | ১৩ | ছয়হুন | জয়হুন |
| ১৩০ | ১২ | আপমার | আপনার |
| ১৩২ | ১৭ | আমর | আমার |
| ১৩৮ | ২ | হৃক | হৃষ্ট |
| ১৩৮ | ৬ | আমর | আমার |
| ১৪০ | ৫ | তরী | তীর |
| ১৪০ | ৭ | অমুপায় | অনুপায় |
| ১৪৫ | ১০ | নস্তক | মস্তক |
| ১৪১ | ২১ | তোনার | তোমার |
| ১৪৩ | ১ | নিকটে | নিকট |
| ১৪৩ | ১৭।১৮ | দয়খোছরো তাহার বিপপবিত্ত | কয় খোছরো তাহার বিপরিত |
| ১৪৪ | ১৯।২০ | দুদাচরিত্রের | দুষ্টাচরিত্রের |
| ১৪৬ | ৭ | ভ্াতা | ভ্রাতা |
| ১৫৫ | ১৫ | কয়ংছারোর | কয় খোছরোর |
| ১৫৬ | ১১ | লাগিলা | লাগিল |
| ১৫৭ | ৫ | ফদের | ফরেদ |
| ১৫৭ | ১৭ | ফরোবোজ | ফরেবোজ |
| ১৬৭ | ৫ | তুনি | তুমি |

| পত্র | পঁক্তি | অশুদ্ধ | শুদ্ধ |
|---|---|---|---|
| ১৬৭ | ১৮ | নানক | নামক |
| ১৬৮ | ৮।৯ | সেই | সেই দর্গ |
| ১৬৮ | ১৪ | ওখামে | ওখানে |
| ১৭০ | ১৩ | অনমতি | অনুমতি |
| ১৭০ | ২২ | করিলা | করিল |
| ১৭৩ | ১৬ | গরদোয | গরদোয় |
| ১৭৫ | ২ | আমর | আমার |
| ১৭৫ | ৯ | শ্বেক | শ্বেত |
| ১৭৬ | ২৪ | কস্তকে | মস্তকে |
| ১৮২ | ২০ | নিকস্ত | নিকটস্থ |
| ১৮৪ | ২৪ | মাঠে | মাঠেচল |
| ১৮৬ | ১৮ | করিবা | করিয়া |
| ১৮৭ | ৫ | দর | দুর |
| ৮৭ | ১২ | তরানে | তুরানে |
| ১৮৯ | ২৪ | আকর | আকার |
| ১৯৩ | ১৬ | গহণ | গ্রহণ |
| ১৯৪ | ৭।৮ | বাদসাহ | বাদসাহর |
| ১৯৬ | ১ | সুর | সুরা |
| ১৯৬ | ৫ | সতাস্ত | সভাস্ত |
| ১৯৬ | ১১ | যদ্ধে | যুদ্ধে |
| ১৯৬ | ১৫ | প্রমথত | প্রথমত |
| ১৯৭ | ২৪ | শুনিনা | শুনিয়া |
| ২০৩ | ১৭ | উভয়েউভয়ে | উভয়ে উভয়ের |
| ২০৩ | ১৭ | লগিল | লাগিল |

| পত্র | পঁক্তি | অশুদ্ধ | শুদ্ধ |
|---|---|---|---|
| ২০৪ | ৪ | তরানেকর | তুরানে করে |
| ২০৬ | ১৮ | অতিতী | অতিথী |
| ২০৬ | ১৯ | অতিত | অতিথ |
| ২০৭ | ২০ | সাদসাহজাদা | বাদ সাহজাদা |
| ২০৭ | ২০ | অতিতী | অতিথী |
| ২০৯ | ২ | যত | যত্ন |
| ২১৩ | ১৯ | গন্তব | গন্তর |
| ২১৫ | ১১ | তরান | তুরান |
| ২১৫ | ১৫ | পিরাম | পিরান |
| ২২০ | ১৫ | আফরা ছিয়ায় | আফরছিয়াব |
| ২২৩ | ১ | আমর | আমার |
| ২২৫ | ৪ | করিয়া | করিবা |
| ২২৬ | ২৩ | খোরছনি | খোরাছান |
| ২৩৮ | ৩ | ব্যাগ | ব্যাঘ্র |
| ২৪৬ | ১৩ | সমেতন | বসোতন |
| ২৪৭ | ১ | সামস্থ অর্দ্ধনে এ অপূর্ব্ব | সম্মুখস্ত অঙ্গনে এক অপূর্ব্ব |
| ২৫২ | ৩ | কুযএনাম | কুমন্ত্রনায় |
| ২৫৩ | ৫ | বাদসাহের | বাদসাহির |
| ২৫৩ | ১ | দহার | ইহার |

| পত্র | পংক্তি | অশুদ্ধ | শুদ্ধ |
|---|---|---|---|
| ২৫৬ | ১ | আরচাম্পার | আর চাম্পা |
| ২৬৩ | ২ | হস্ত | হপ্ত |
| ২৬৩ | ৮ | হস্ত | হপ্ত |
| ২৬৩ | ১৪ | করিয়া | করিবা |
| ২৭১ | ৮ | তুমি | ভূমি |
| ২৭৭ | ৬ | ছিলা | ছিল |
| ২৭৮ | ১৬ | নগরে | নগর |
| ২৭৯ | ৯ | আনা | ০ |
| ২৮১ | ১ | সেন | সেনা |
| ২৮২ | ২ | সসল | সকল |
| ২৮৩ | ১৭ | কুর্ত্তি | কূর্ত্তি |
| ২৮৩ | ২৪ | যদি | ০ |
| ২৮৪ | ৫ | পৌত্রে | পৌত্র |
| ২৮৪ | ২৪ | আনায়ন | আনয়ন |
| ২৮৪ | ২২ | দখ | দুখ |
| ২৮৫ | ১৯ | গত্র | সত্র |
| ২৮৬ | ২১ | আনায়ন | আনয়ন |
| ২৮৯ | ২ | একফন্দিয়ার | এছ ফন্দিয়ার |
| ২৮৯ | ১২।১৩ | যেরূপ তাঁহা করিয়ার পিতা গোস্তাম্পার সেবা দুইবৎসর করিয়াছি | যেরূপ তাঁহার পিতা গোস্তাম্পার সেবা দুই বৎসর করিয়াছি |
| ২৯০ | ৩ | তমি বন্ধন স্বিকার | তুমি বন্ধন স্বিকার করিয়া |
| ২৯১ | ১৫ | অতিথ | আতিথ্য |
| ২৯২ | ১৫ | ঐরস | ঔরস |
| ২৯২ | ২৪ | নরিমামের | নরিমানের |
| ২৯৪ | ১০ | দৈত্য | দেও |
| ২৯৫ | ২ | এছন্দিয়ার কহিল এতক্রোধে অহঙ্কারে | এছফন্দিয়ার কহিল এতক্রোধ অহঙ্কারে |
| ২৯৫ | ৯ | আসিয়াছে | আসিয়াছ |
| ২৯৭ | ৬ | বধিব | বধিল |
| ২৯৭ | ১৩ | তদদিন | ততদিন |
| ৪২৯ | ১ | জওয়ারে | জয়ারা |
| ২৯৯ | ৫।৬ | জওয়ারে | জওয়ারা |
| ৩০০ | ১৫ | তদমন্তর | তদনন্তর |
| ৩০৩ | ২০ | ঔষাদি সর্ব্বাঙ্গে লেপন করাইতে লাগিল ও রোদন। | ঔষধাদি সর্ব্বাঙ্গে লেপন করাইতে লাগিল |

| পত্র | পংক্তি | অশুদ্ধ | শুদ্ধ |
|---|---|---|---|
| | | | বোত্তম রোদন |
| ৩০৪ | ২০ | ঘোঠককে | ঘোটককে |
| ৩০৪ | ৩১ | ঐষধি | ঔষধি |
| ৩০৫ | ১৩ | ক্ষুদ | খুদ |
| ৩০৬ | ১১ | এক থা | একথা |
| ৩০৭ | ২২ | কুটরি | কিরিটী |
| ৩১০ | ১২ | বাসাভন | বাসোতন |
| ৩১২ | ১২ | আছি | আছে |
| ৩১৩ | ৮ | তাগ্য | ভাগ্য |
| ৩১৩ | ৯ | তাহার | তাহারা |
| ৩১৪ | ১৭ | ক্রেধ | ক্রোধ |
| ২১৫ | ৭ | সোগাকে | সোগাদকে |
| ৩১৭ | ১৬ | করেলে | কাবেলে |
| ৩১৭ | ২৪ | জাবলস্থামে | জাবলস্থানে |
| ৩১৮ | ১৬ | পাণ | পালন |
| ৩১৯ | ৪ | মঙ্গে | সঙ্গে |
| ৩২০ | ১৫ | আপন | করেণ |
| ৩২১ | ১৭ | যথম | যখন |
| ৩২১ | ২০ | এবংওসণ | এবংওসর্ণ |
| ৩২২ | ১ | ফেরাতে | ফোরাতে |
| ৩২২ | ৭ | লোভে | লোভে |
| ৩২৫ | ১৬ | হইলে | হইল |
| ৩২৬ | ১৫ | নদিতে | নদিতে |
| ৩২৭ | ১০ | খলিয় | খুলিয়া |
| ৩২৯ | ৪ | হইলা | হইল |
| ৩৩০ | ১১ | ধাবমাদ | ধাবমান |
| ৩৩০ | ১৭ | উপডৌকন | উপঢৌকন |
| ৩৩১ | ১৫ | ক্ষাখে | মুখে |
| ৩৩১ | ২০ | মইলে | হইলে |
| ৩৩২ | ৯ | দারাবের | দারার |
| ৩৩২ | ১০ | দারাব | দারা |
| ৩৩২ | ১৩ | আনাইলা | আনাইল |
| ৩৩৩ | ১২ | ঘারা | দারা |
| ৩৩৪ | ১০ | দেওয়াই | দেওনাই |
| ৩৩৪ | ১৮ | জামার | আমার |
| ৩৩৪ | ২০ | উাহত | উচিত |
| ৩৩৫ | ১৯ | ছেককর | ছেকন্দর |
| ৩৩৭ | ২ | ঘারা | দারা |
| ৩৩৭ | ৮ | ঘারা | দারা |
| ৩৩৮ | ২ | দুইদিরে | দইদিনের |
| ৩৩৮ | ৬ | দারাবকে | দারাকে |
| ৩৩৮ | ১৩ | পডিত | পণ্ডিত |
| ৩৪০ | ২ | মেমত | যেমত |
| ৩৪০ | ১৮ | যাষনা | ঘোষনা |
| ৩৪১ | ৩ | নর্যাদা | মর্যাদা |

| পত্র | পঁক্তি | অশুদ্ধ | শুদ্ধ |
|---|---|---|---|
| ৩৪১ | ১৪ | হিন্দুস্থাকেনের | হিন্দুস্থানের |
| ৩৪১ | ১৫ | নিদাবসে | নিদ্রাবসে |
| ৩৪৩ | ৯ | নয়ম | নবম |
| ৩৪২ | ১৯ | ভূমি | তুমি |
| ৩৪৪ | ১০ | দার | দ্বার |
| ৩৪৪ | ১৬ | তোকারবংশ | তোমারবংশ |
| ৩৩৪ | ১৯ | তাহারগু | তাহারও |
| ৩৪৬ | ১২ | পরন্ত্যা | পরন্তু |
| ৩৪৬ | ১৪ | দারায় | দ্বারায় |
| ৩৪৮ | ৬ | লৌহ | লৌহ |
| ৩৫১ | ১৯ | এমরাহোমের | এবরাহেমের |
| ৩৫২ | ১২ | স্ত্রী | স্ত্রী |
| ৩৫২ | ২৩ | ভক্তি | ভাক্ত |
| ৩৫৪ | ৮ | নইতে | হইতে |
| ৩৫৫ | ২১ | পরিতোযিক | পারিতোষিক |
| ৩৫৭ | ৯ | হর | হয় |
| ৩৬৬ | ১ | পালবেধ | প্রালব্ধে |
| ৩৬৮ | ১৯ | উহিথ | উল্থিত |
| ৩৭৭ | ১৭ | ভজনা | তজ্জন্য |
| ৩৭৮ | ১৮ | গহ | গৃহ |
| ৩৮৪ | ৯ | গোলনারে | গোলনার |
| ৩৯১ | ৫ | তারদসির | আরদসির |
| ৩৯৫ | ৯ | লধ্যে | মধ্যে |
| ৩৯৭ | ৮ | বাদসাহিরমথ | বাদসাহরমুখ |
| ৩৯৭ | ২২ | তুনি | তুমি |
| ৩৯৮ | ৪ | গহে | গৃহে |
| ৩৯৯ | ৯ | ধাবনান | ধাবমান |
| ৪০১ | ৫ | ধাবসান | ধাবমান |
| ৪১০ | ১১ | নবণাক্ত | লবণাক্ত |
| ৪০৫ | ১৫ | ভারের | তায়ের |
| ৪০৬ | ৬ | ভিত্ত | ভিন্ন |
| ৪০৬ | ২০ | হনেক | অনেক |
| ৪০৭ | ৪ | ভোজ্ | ভোজ |
| ৪০৭ | ৮ | তৎথনাভ | তৎথনাৎ |
| ৪০৭ | ১১ | গোগনে | গোপনে |
| ৪১১ | ১ | দিব্য | দ্রব্য |
| ৪১১ | ১০ | তাহার | কাহার |
| ৪১৩ | ১১ | তোডারা | তোরা |
| ৪০১৩ | ১৫ | তোডরা | তোর্ রা |
| ৪১৩ | ১৬ | তোডরা | তোর্ রা |
| ৪১৩ | ১৮ | তোডরা | তোর্ রা |

| পত্র | পংক্তি | অশুদ্ধ | শুদ্ধ |
|---|---|---|---|
| ৪১৩ | ১৯ | তোডরা | তোরা |
| ৪১৫ | ১৪ | নোহার | লোহর |
| ৪১৯ | ১৩ | বহরামে | বহরামের |
| ৪১৯ | ১৪ | জওয়নাইকে | জওয়ানুইকে |
| ৪২৮ | ৩ | বাদসাহরত্রিকালে | বাদসাহরাত্রিকালে |
| ৪২৮ | ৭ | গিজ্ঞাসা | জিজ্ঞাসা |
| ৪২৮ | ১৭ | ঙ্গিজ্ঞাসা | জিজ্ঞাসা |
| ৪২৮ | ২০ | বুজর চমেহর | বুজরচেমেহর |
| ৪২৮ | ২২ | বুজরচমেহরকে | বুজরচেমেহরকে |
| ৪২৯ | ১০ | বুজরচমেহর | বুজরচেমেহর |
| ৪৩০ | ২০ | মিয়মিত | নিয়মিত |
| ৪৩৩ | ২ | তলখন্দরের | তসখন্দের |
| ৪৩৩ | ১৭ | বর্ত্তমান | বর্ত্তমান |
| ৪৩৬ | ১৪ | কোথকরেছে | কোথাকরেছ |
| ৪৪৫ | ১১ | সয়য়নাগারে | সয়নাগারে |
| ৪৪৭ | ১৮ | নদ্যের | গদ্যের |
| ৪৪৮ | ২৩ | বেক্কাছি | বেক্বাছ |
| ৪৫০ | ২ | দেশ | ০ |
| ৪৫১ | ১৫ | দোকনি | দোকানি |

শ্রীশ্রীদুর্গা।

প্রণতকর্ত্রী

# ভূমিকা

বাঙ্গালা ভাষায় ফের দৌছি তুছির কৃত সাহানামার বাঙ্গালা ভাষায় অনুবাদ করিবার কারণ যে এক দিবস কয়েকজন আত্মীয় বর্গের সহিত একত্র ভ্রমণ করত নানা প্রসঙ্গানন্তর কেহ কহিলেন যে ইদানীন্তন পারস্য ভাষার দুইতিনখান গল্পের পুস্তক বাঙ্গালা ভাষায় অনুবাদ হইয়াছে কিন্তু তাহাতে পূর্ব্বগত বাদসাহ দিগের বিচারের কিম্বা যুদ্ধের কোন বর্ণনা নাই কেবল গল্প মাত্র তাহাতে কোন গুণ দর্শে না; ছেকন্দর নামা প্রভৃতি এমত কোন পুস্তকের বাঙ্গালা ভাষায় ভাষিত হইলে পূর্ব্বগত বাদসাহ দিগের সমুদয় বিবরণ জানা জাইতে পারে; তাহা শুনিয়া আমি কহিলাম যে ছেকন্দর নামার ভাষান্তর হইলে কেবল ছেকন্দর বাদসাহর বিবরণ জ্ঞাত হইতে পারিবা কিন্তু তাহাতে অন্য কোন বাদসাহর বিশেষ বর্ণনা নাই পূর্ব্বের বাদসাহ দিগের বিবরণ জ্ঞাত হইবার নিমিত্ত্য ফেরদৌছি তুছির কৃত সাহানামার তুল্য পারসিতে এমত কোন পুস্তক নাই. ছেকন্দর বাদসাহ যেমত একজন তাহা অপিক্ষা অধিক প্রতাপান্বিত অনেক বাদসাহ দিগের বিবরণ সাহানামা গ্রন্থে বাক্ত আছে

পরন্তু সে গ্রন্থ মহাভারতের তুল্য অতি বাহুল্য ষাষ্ঠি সহস্র শ্লোকে সমাপ্ত হইয়াছে। তাহার বাঙ্গলা ভাষায় রচিত হইলে পারস জাতীর আদি বাদসাহ কয়ুমরছ অবধি শেষ এজদ জোরদ বাদসাহ পর্য্যন্ত প্রায় পঞ্চাশত বাদসাহর বিবরণ; এতদ্ভিন্ন রোস্তমের ও ছিমোরগের এবং দৈত্য আদির অনেক বিবরণ তাহার মধ্যে আছে। এই কথা শুনিয়া সকলে কহিলেন যে সাহানামার বাঙ্গলা ভাষায় আপনি যদি অনুবাদ করেণ তবে হইতে পারে; আর বিশেষ আপনকার এক নূতন গ্রন্থ প্রকাশ করা হয়, এবং যতদিন এইগ্রন্থ থাকিবেক ততদিন আপনার নাম থাকিবেক; ইহা শুনিয়া সাহা নাম গ্রন্থে বাঙ্গলা ভাষায় রচনা করিবার আমার মানস হইল, এবং ভাষান্তর করণের বিশেষ কারণ এই যে বাঙ্গলা দেশে শ্রীযুত ইংরাজ বাহাদুর দিগের প্রথম আমল অবধি রাজ দরবার সকলে রাজ কর্ম্মের লিখিত পঠিত পারস্য ভিন্ন হইতনা। অধুনা প্রায় দশ বার বৎসর হইল শ্রীযুত গবরণর জনেরেল বাহাদুরের আজ্ঞা ক্রমে প্রচার হইয়াছে যে যে দেশের যে ভাষা তাহাতেই সে দেশের লোকেরা রাজ দরবারে আবেদন পত্র ও মোকদ্দমা যে সকল লিখিত পঠিত হইবে তাহা স্বীয়২ ভাষায় করিবেক। তদবধি বাঙ্গলা দেশে যে২স্থানে রাজদরবার আছে সেই সকলস্থানে বাঙ্গলা ভাষায় রাজ দরবারের কর্ম্ম সকল নিষ্পন্ন হইতেছে, অতএব পারস্য বিদ্যা বাঙ্গলা দেশে প্রায় লুপ্ত হইবার সম্ভাবনা এ নিমিত্ত সাহানামা পুস্তক অতি প্রধানগ্রন্থ বাঙ্গলা ভাষায় রচিত হইলে বাঙ্গালি দিগের পারসির পূর্ব্বগত বাদসাহ

দিগের বিবরণ অনায়াসে বোধ গম্য হইতেপারে, ইহা বিবেচনা করিয়া ফের দৌছি তুছির কৃত আসল সাহনামা ও তওক্কল বেগের কৃত ঐ সাহানামার পারসি গদ্য তরজমা যাহা মন্তখব সাহনামা নামে প্রসিদ্ধ রূপে সর্ব্বত্র প্রচলিত আছে এই দুই গ্রন্থ সমুদয় ঐক্য করিয়া দেখিলাম যে তাহাতে তওক্কল বেগ হিজরি ১০৬৩ একসহস্র ত্রিষষ্টিশকে ঐ রচনা করিয়াছেন, কিন্তু তাহাতে কয়ুমরছ বাদসাহ অবধি ছেকন্দর বাদসাহ পর্য্যন্তর বিবরণ বিরচিত করিয়াছেন, তাহার পর আরদসির বাদসাহ অবধি এজ্‌দজোরদ বাদসাহ পর্য্যন্ত বাদসাহদিগের নাম লিখিয়া দুই পৃষ্ঠা কাগজ সমাপ্ত করিয়াছেন, তদদৃষ্টে বিবেচনা করিলাম যে মন্তখব সাহানামা বর্ণনা করিলে ফেরদৌছি তুছির কৃত সাহনামার সম্পূর্ণ রূপে ভাষান্তর করা হয়না; কারণ আরদসির বাদসাহ অবধি এজ্‌দজোরদ বাদসাহ পর্য্যন্ত প্রায় ফেরদৌছির কৃত সাহনামার কিয়দংশ তওক্কল বেগ ত্যাগ করিয়া আপন গ্রন্থ সমাপ্ত করিয়াছেন, তজ্জন্য আমি আরদসির বাদসাহ অবধি এজ্‌দজোরদ বাদসাহ পর্য্যন্ত পারস্য ভাষায় রচনা করিয়া পরে সমুদয় সাহনামা বাঙ্গলা ভাসায় ভাষিত করিতে প্রবৃত্ত হইয়া ঈশ্বরের কৃপায় আপন ক্ষুদ্র বুদ্ধি দ্বারা এক প্রকার ভাষান্তর করিলাম, ইহাতে পাঠক বর্গের নিকটে প্রার্থনা এই যে ইহার মধ্যে দোষ ও অশুদ্ধ ভ্রান্তি ক্রমে যাহা হইয়া থাকে তাহা অনুগ্রহপূর্ব্বক গ্রহণ নাকরিয়া বরং শুদ্ধ করিয়া দিবেন; এবং যে স্থলে সন্দেহ হইবে তাহা ফেরদৌছির কৃত সাহনামা দেখিলে সে সন্দেহ দূরীকৃত হইবেক।

শাহানামা পুস্তকের শ্লোক হইবার আদী কারণ ॥

পুরাতন পারস্য গ্রন্থ লেখকেরা লিখিয়াছেন যে আজম দেশ অর্থাৎ ইরানাদি দেশের ছাছানবংসির বাদসাহ দিগে র মধ্যে নওসেরওয়া নামে একজন অতি দাতা ও সৎ বিবে চক বাদসাহ হইয়াছিলেন তিনি পূর্ব্বগত বাদসাহ দিগের গুণ ও কীর্ত্তি অন্য২ দেশে লোক পাঠাইয়া এবং উত্তম গ্রন্থ কিম্বা ইতিহাস যে স্থলে থাকিত তাহা আনাইয়া আপন পুস্তকালয়ে রাখিতেন। পরে এজদজোরদ বাদসাহর সময়ে ঐ পুস্তকালয়স্থ সমুদয় পুস্তকের শুচি পত্র করিতে নশুরজ দেহকাম নামে এক পণ্ডিতকে আজ্ঞা করিলেন. সে সমুদয় পুস্তকের শুচিপত্র করিয়া দেখাইলে তাহাও ঐ পুস্তকালয়ে রাখিলেন; পরে আরব দেশের অমর নামক বাদসাহর ছাদ বেককাছ নামে এক সেনাপতি সসৈন্যে ইরানে আসিয়া এজদজোরদ বাদসাহকে যুদ্ধে পরাভব করিয়া তাহার সমুদয় বিষয় লুট করিয়া লইয়া যায়, তাহাতে পুস্তক সকল আপন বাদসাহ অমরকে দিলেন; ঐ পুস্তক সকল পহলবি ভাষায় ছিল এ নিমিত্ত্যে তিনি আরবি ভাষায় ভাষান্তরকরিতে আজ্ঞা করিলেন, তন্মধ্যে প্রথমতঃ ছাছন বংশীয় বাদসাহ দিগের দান ও বিচারের ও উজির দিগের সত্ পরামর্শের বাক্য [illegible]থক গুলীন রচনা করিয়া ঐ বাদসাহকে শ্রবণ করাইলেন [illegible] শ্রবণে তুষ্ট হইয়া সমুদয় পুস্তক ভাষান্তর করিতে আজ্ঞা [illegible]লেন, তাহারা সমুদয় পুস্তক ভাষান্তর করিয়া দিল, ঐ [illegible]তে লিখিতআছে যে পূর্ব্ব বাদসাহরা অগ্নি পুজা করি [illegible] ছিমোরগ নামে পক্ষ্য মনুস্যের সহিত আহার

বেবহার করিয়াছে এই সকল বিবরণ শুনিয়া অগ্রাহ্য করিয়া কহিলেন যে এ গ্রন্থে সত্য ও মিথ্যা দুই আছে ইহাতে পার ত্রিকের কোন গুণ দর্শে না ইহা কহিয়া লুটিত দ্রব্য সকল কে বন্টন করিয়া দিলেন; এই পুস্তক সমুদয় হবসদিগের অংশে পড়িল, তথা হইতে হিন্দুস্থানে আইল হিন্দুস্থান হইতে খোরাসান দেশের ইয়াকুব লয়েছের পুত্র পাইয়া পুন রায় হিন্দুস্থানে আবুমনছুরের নিকট পারস্য ভাষায় অনু বাদ করিতে পাঠাইল, হিজরি ৩৬০ তিনসত সাইট সর্ব্বে পারস্য ভাষায় গদ্য রচনা হইল; পরে ঐ পারসি তরজমা খোরাসান দেশে যায় তথা হইতে এরাক দেশে কোনছাছন বংশীয় প্রধান লোক ছিলেন তিনি লইয়া দকিকিনামে এক জন কবিকে শ্লোক দ্বারায় রচনা করিতে কহিলেন, সেই কবি দ্বিসহস্র শ্লোক রচনা করিয়াছিল তৎ সময়ে দৈবাধীন তা হার ভৃত্য তাহাকে বধ করিল তদবধি আর কেহ রচনা করে নাই ঐ রূপেই ছিল; ক্রমে ঐ ছাছান বংশীয়দিগের ঐশ্বর্য্যের অবসান হইল। যখন সুলতান মহম্মদ ছবক্তগিন গজনি নের বাদসাহ হইলেন, তিনি উত্তম পণ্ডিত ছিলেন সর্ব্বদা পণ্ডিত কবি দিগকে লইয়া সদালাপ করিতেন এবং গ্রন্থ ও ইতিহাসাদি সর্ব্বদা দেখিতেন; বিশেষতঃ আজম দেশস্থ পর্ব্ব বাদসাহ দিগের গুণ কীর্ত্তনে আহ্লাদিত হইতেন, তিনি ঐ ছাছান বংশের গুণ কীর্ত্তি যাহা গদ্য দ্বারা রচনা ছিল তাহা পদ্য দ্বারা অনুবাদ করিতে আজ্ঞা করিলেন ॥

## শুলতান মহমুদ ছবক্তগিনের নিকট পূর্ব্ব বাদসাহ দিগের কীর্ত্তির গ্রন্থ আসিবার বিবরণ ॥

খোর ফিরোজ নামে একজন ফারস দেশের বাদসাহজাদা গৃহবৈগন্য জন্য গজনিন দেশে মহমুদ সাহর রাজ্যে আসিয়া মনোমধ্যে বিবেচনা করিল যে কোন্ উপলক্ষ বাদসাহর নিকট পরচিত হইব সর্ব্বদা এই চিন্তা করিতেন; একদিন বাদসাহর এক সভাসত এমাম নামক ঐ সাহাজাদাকে অতি মলিন ও পরিছদ বিহীন কিন্তু অতি শ্রয়ান্বিত দেখিয়া পরিচয় জিজ্ঞাসা করিলে সে আপন দুদ্দসার বিবরণ তাহাকে বিস্তারিত রূপে কহিল এমাম অতি সত চরিত্র দয়াবানছিল কিঞ্চিৎ সাহার্য্য করিয়া কহিল যে বাদসাহকে জানাইয়া যাহাতে আপনকার একষ্ট দুরী কৃত হয় তাহার উপায় আমি অচিরাত্ করিব । পরে খোর ফিরোজ আপন সমুদয় বৃত্তান্ত এক আবেদন পত্র সরূপ লিখিয়া ঐ এমামের সমিভিব্যাহারে বাদসাহর দরবারে গিয়া দেখিলেন যে কয়েক জন কবি কথক গুলীন কবিতা রচনা করিয়া কথপ কথন করিতেছে, বাদসাহ তাহা শুনিয়া সন্তুষ্ট হইয়া কহিলেন যে আনছবির শ্লোক উত্তম রচনা হইয়াছে ঐ গ্রন্থ রচনা করুক খোর ফিরোজ এই কথা শুনিয়া এমামকে জিজ্ঞাসা করিল যে কোন গ্রন্থরচনা হইবে? সে কহিল বাদসাহ দিগের মধ্যে কাহার রীতি মৃগয়া কারার্ণ কাহারওবা ভম্মণে ইত্যাদি অনেক প্রকার স্বভাবে বিশিষ্ট থাকে, এ বাদসাহর স্বভাব পণ্ডিত দিগেকে লইয়া কবিতা রচনার, এনিমিত্তে নানা দেশ হইতে পণ্ডিত গণের সমাগম হইয়াছে। কথক গুলীন আজম

দেশীয় পুরাতন বাদসাহ দিগের কীর্ত্তি গদ্যেতে রচিত আছে তাহারি শ্লোকরচনাকরিতেআজ্ঞাকরিয়াছেন; এজন্য অনেক পণ্ডিতেরা শ্লোক রচনা করিয়া আনিয়াছেন, তাহার মধ্যে আনছরির শ্লোক বাদসাহর মনোনিত হইয়াছে। এই কথা শুনিয়া খোরফিরোজ অত্যন্ত খেদান্বিত ও দুঃখিত হইল এমাম তাহা দেখিয়া কহিল যে তোমার খেদের কারণ কি? সে কহিল আমি পূর্ব্বাহ্ণে ইহা জানিলে আজম দেশীয় পুর্ব্ব গত বাদসাহ দিগের সমুদয় কীর্ত্তির গ্রন্থ আমার আলয়ে প্রস্তুত আছে তাহা আনিতাম; এমাম কহিল তুমি যে আবেদন পত্র লিখিয়াছ তাহাতে এই প্রসঙ্গও লিখিয়া দেও বাদ বাদসাহ জ্ঞাত হইলে তোমাকে সমাদর পুর্ব্বক রাখিবেন। সে ঐমত করিল, বাদসাহ তদ্দৃষ্টে তুষ্টহইয়া ঐ পুস্তক আনিবার জন্য তাহার লিখন সমভিব্যাহারে এক পত্র বাহক তাহার বাটিতে পাঠাইলেন ঐ পত্র বাহক তাহার বাটিতে গিয়া পত্র দিলে তাহার পরিবারেরা তাহাকে যথেষ্ট সমাদর পুর্ব্বক গ্রন্থও কিঞ্চিৎ পাথেয় দিয়া বিদায় করিল; উক্ত ব্যক্তি গন্থ লইয়া আইলে খোরফিরোজ ঐ উপলক্ষ করিয়া বাদসাহর নিকট অতি ঘনিষ্ট হইল ॥

---

## পুর্ব্ব বাদসাহ দিগের কীর্ত্তির দ্বিতীয় গ্রন্থ আসিবার বিবরণ ॥

কেরমান দেশের বাদসাহর সহিত মহমুদ বাদসাহর অত্যন্ত প্রণয়ছিল সে জানিত যে মহমুদ সাহ গন্থ প্রিয়ো তাহার অধিকারে আরঙ্গ বরজিন নামে এক পণ্ডিত আজম দেশের

বাদসাহ দিগের সমুদয় উপাখ্যান সংগ্রহ করিয়াছিল ইহা শুনিয়া তাহা লইয়া মহমুদ সাহের নিকটে পাঠাইল। আজমের বাদসাহ দিগের সমুদয় উপাখ্যান মহমুদ সাহের নিকট একত্র হইলে আচজদি আনছরি ফররখি জয়ান মঞ্জিক চজজন খোররমি ॥ এই সাতজন কবিকে ঐ গ্রন্থের সাত অধ্যা শ্লোক রচনা করিতে আজ্ঞা করিলেন ॥

---

ফের দৌছি তুছির বিবরণ ॥

মৌলনা আহমদের পুত্র ফেরদৌছি তাহার যথার্থ নাম আবল কাছম, যে দিবস আবল কাছমের জর্ম্ম হইল সেই রাত্রে মৌলানা আহমদ স্বপ্ন দেখিল যে পশ্চিম দিগ হইতে একশব্দহয় ঐশব্দ শুনিয়া চতুদিগ হইতে ধন২সব্দ হইল, পর দিন প্রাতে মৌলানা আহমদ নজিবর্দ্দিন নামক একজন পণ্ডিত কে ঐ স্বপ্ন বিবরণ জিজ্ঞাসা করিলে সে কহিল তোমার যে পুত্র কন্য জন্মিয়াছেন তিনি অতি উৎকৃষ্ট কবি হইবেন, তাঁহার কবিতা পৃথিবীর চতুর্দিগে প্রশংসিত হইবেক। যখন ফেরদৌছি বয়ঃ প্রাপ্ত হইয়া সর্ব্বদা বিদ্যার আলোচনা করিত। ফেরদৌছির বাটি তছ নগরে এক নদীর তীরেছিল বর্ষা কালে ঐ নদীর জল বৃদ্ধি হইয়া উক্ত নগর জলে প্লাবিত হইত এ নিমিত্য ফেরদৌছি সর্ব্বদা খিদ্যমান হইয়া কহিত যদি ঈশ্বর কখন আমাকে ধন দেন তবে প্রস্তর দ্বারা এই নদী এমত গুরুতর রূপে বদ্ধ করিব যে নগর মধ্যে জল উঠিতে নাপারে। ঐ সময়ে ফেরে দৌছি শুনিল যে সুলতান মহমুদ ছবক্তগিন সাহনামা নামে এক গ্রন্থ অর্থাৎ অনেক পুরা

তন বাদসাহ দিগের গুণ কীৰ্ত্তির এক গদ্য গ্রন্থ ভাঙ্গিয়া পদ্য দ্বারা রচনা করাইবেন এজন্য অনেক পণ্ডিত এবং কবি দিগকে আনাইয়াছেন, এই কথা শুনিয়া ফেরদৌছির মানস হইল যে আমি ও পূর্ব্ব বাদসাহ দিগের গুণ কীৰ্ত্তির এক গ্রন্থ রচনা করিব কিন্তু ঐ পুরাতন বাদসাহ দিগের কীৰ্ত্তির কোন পুস্তক না পাওয়াতে ভাবিত হইয়া মহম্মুদ লস্করি নামে ফেরদৌছির এক বন্ধু ছিল তাহাকে জানাইলে সে কহিল ঐ পুস্তক আমার নিকটে আছে তাহা লও এই বাক্য শুনিয়া সেই পুস্তক লইয়া প্রথমতঃ ফয়েদুঁ বাদসাহ ও জোহাক বাদসাহর যুদ্ধের বিষয় কবিতা দ্বারায় রচনা করিল; তাহা শ্রবণে সকলেই সন্তুষ্ট হইয়া তাহাকে প্রশংসা করিল তখন তুছ দেশের কর্ত্তা আবুমনছুর ছিলেন তিনি ঐ পুস্তক শুনিয়া তুষ্ট হইয়া ফেরদৌছিকে কিঞ্চিৎ পারিতোষিক দিয়া আজ্ঞা করিলেন যে আমার নিকট থাকিয়া এই গ্রন্থাদি রচনা কর, দৈবাত ঐ আবুমনছুরের মৃত্যু হওয়াতে গ্রন্থ রচনা রহিত হইল কিন্তু ফেরদৌছির কবিতার প্রশংসা সৰ্ব্বদেশে প্রকাশ হইল, আবুমনছুরের মৃত্যু হইলে শুলতান মহম্মুদ ছবক্তগিন শুলতান হাদব কে তুছ দেশের অধিপতি করিয়া পাঠাইলেন, মহম্মুদ সাহ ফেরদৌছির কবিতা সক্তির কথা শুনিয়া ফেরদৌছিকে পাঠাইতে তুছের অধিপতি শুলতান হাদবকে পত্র লিখিলেন সে মহম্মুদ সাহর লিপি পাইয়া ফেরদৌছিকে আনয়ন করিয়া সকল বিবরণ কহিল, তাহা শুনিয়া ফের দৌছি গজনিন দেশে আসিবার নিমিত্ত্যে আজ্ঞা দিত হইয়া তুছ নগর হইতে যাত্রা করিল ॥

মতান্তরে ফেরদৌছির আসিবার বিবরণ।

কেহ কহে তুছ দেশের অধিপতি ফেরদৌছির প্রতি দৌরাত্ম্য ক রিয়াছিল এ জন্য ফেরদৌছি তছ নগর হইতে গজনিন দেশে মহমুদসাহর নিকট জ্ঞাপন করিতে আসিয়াছিল ॥ যখন মহ মুদসাহ ফেরদৌছিকে পাঠাইতে তুছের নগরের অধিপতিকে পত্র লিখিলেন, বাদসাহর মুনসি বদরদ্দিন, আনছরি ও ফদকির বন্ধু এ নিমিত্ত্য ঐ মুনসি তাহারদিগকে কহিল যে তুছ নগর হইতে ফের দৌছি নামে একজনকবি তথায়আছে তাহাকে এখানে পাঠাইতে তুছের অধিপতিকে বাদসাহ পত্র লিখিলেন, সে আইলে সাহনামা রচনা সেই করিবেক এবং অনেক পুরস্কার ও পাইবে, তোমরা বহুকাল পয্যন্ত এ বাদসাহর নিকট আছ তোমার দিগের ক্ষতি হইবে এ হেতু কহিলাম যদি কোন উপায় করিতে পার তবেই মঙ্গল, তাহা রা এই কথা শুনিয়া কহিল এখন বাদসাহকে কেহ কহিতে পারিবেকনা যে ফেরদৌছিকে পথ হইতে ফিরিয়া যাইতে লিখেন এক পরামর্স আছে আমরা একজন মনুস্যকে পাঠা ই সে ফের দৌছিকে কহিবে যে বাদসাহর গৃন্থ রচনা ক বার যেমত উৎসাহ পূর্ব্বেছিল এইক্ষণে তাহার অনেক বির হইয়াছে অতএব আপনি বিবেচনা করিয়া আসিবেন স্থির করিয়া একজন মনুস্যকে পাঠাইল, সে ফেরদৌ সহিত সাক্ষাৎকরিয়া উক্তমত কহিলে ফেরদৌছি মনেক রণ ফিরিয়া স্বদেশে যাই পুনরায় বিবেচনা করিল যদি এতদ্বাক্য মিথ্যা হয় এই সন্দিগ্ধ হইয়া আবুবেকরের সবাইনামে এক সরাই সেইস্থানে ছিল কিছুদিন উক্তস্থানে বাস করিল

এখানে বদরুদ্দিন মুনসির সহিত আনছরি ও রুদকির কিঞ্চিৎ অপ্রণয় হইল তখন মুনসি চিন্তা করিল এ প্রকার প্রবঞ্চনা করিয়া ফেরদৌছিকে ফিরাইয়া দিবার কথা বাদসাহ জানিতে পারিলে আমার পক্ষে মন্দ হইবে এই বিবেচনা করিয়া অতি শীঘ্র এক দূতের দ্বারা ফেরদৌছিকে কহিয়া পাঠাইল যে ইহার পুর্ব্বে কোন লোক আপনকাকে যে কথা কহিয়াছে সে মিথ্যা, আনছরি ও রুদকী দুইজনে সত্রুতা করিয়া কহিয়া পাঠাইয়াছিল আপনি সীয় গজনিন দেশে আগমন করুণ এই কথা শুনিয়া ফেরদৌছি গজনিনে যাত্রা করিল॥

কবিদিগের সহিত ফেরদৌছির সাক্ষ্যাৎ॥

পুর্ব্বউক্ত সাতজন কবির মধ্যে আনছরি। আছজদি। ও ফররখি এই তিনজন কবি গজনিন নগরের প্রান্ত রাজ পথের নিকট এক উদ্যানে ভ্রমণ করিতে গিয়াছিলেন এই সময়ে ফেরদৌছি ঐ স্থানে পৌঁছিয়া ঐ উদ্যানের নিকটে বসিয়া আপনার গজনিন দেশে আসিবার সংবাদ কোন বন্ধুর নিকট লোক দারায় কহিয়া পাঠাইল আপনি ক্ষণেককাল সেইস্থানে বিশ্রাম করিয়া ঐ উপবন মধ্যে লোক দেখিয়া সেইদিগে চলিল, ঐ কবিরা তাহা দেখিয়া আপনারা কহিতে লাগিল যে একজন অনাহুত আমারদিগের সুখ উৎসাহ ভঙ্গ করিতে আসিতেছে ইহাকে কোন উপায়ক্রমে দূরিকৃত করিতে হইবে; আছযদি কহিল অসৌজন্যতা করিয়া দুরীকৃত করি? আনছরি কহিল অভদ্রতা করা অনোচিত, ইহার কর্ত্তব্য এই যে আমরা তিনজনে এক কবিতার তিন কঠিন

শাব্দে শেস পুরাণ করিয়া রাখি ঐব্যক্তি আইলে সেই কবি তার চতুর্থ চরণ পুরিতে কহিব এবং কহিব যদি এই কবিত্বার চতুর্থ চরণ পুরণ করিতে পার তবে এস্থানে অবস্থান কর নতুবা প্রস্থান কর এই বাক্য স্থির করিয়া আপনারা তিন চরণ রচনা করিয়া রাখিলেন। ফেরদৌছি ঐ কবিদিগের নিকট আসিয়া ছেলাম করিয়া বসিল তখন ঐ কবিরা তাহাকে তাড়াইবার মানসে যে পরামর্শ করিয়াছিলেন সেইমত কহিলেন তাহা শুনিয়া ফেরদৌছি কহিল আপনারা যাহা রচনা করিয়াছেন তাহা পাঠ করুণ আমার কৃত সাধ্য হয় তবে এক চরণ রচনা করিব নতুবা এস্থান হইতে প্রস্থান করিব; পরে তাহারা যে তিনচরণ রচনা করিয়াছিলেন তাহা পাঠ করিলেন ॥ তাহার অথ

তোমার মুখের তুল্য চন্দ্র নহে দিপ্ত ।
উদ্যানে তাহার মত পুষ্প নহে তৃপ্ত ॥
নয়ন কটাক্ষ তব মন করে লিপ্ত ।

এই তিন চরন পাঠ করিলে ফেরদৌছি এক চরণ কহিল তাহার অর্থ এই ॥ যেমত গেওয়ের শুল পষনে নিক্ষিপ্ত ॥

ঐ কবিরা তাহা শ্রবণ করিয়া অতি তুষ্ট হইয়া ফেরদৌছিকে আপনার দিগের বন্ধুর ন্যায় রাখিলেন, কিন্তু ভয় প্রযুক্ত ফেরদৌছিকে বাদসাহের নিকট কেহ লইয়া গেলন না, কিন্তু দিন পরে ফেরদৌছি বাদসাহের এক উজির মামক নামেছিল তাহার সহিত কোন ক্রমে মিলিত হইয়া তুছ সহর হইতে আসিবার কারণ এবং আপন বাটিতে পুর্ব্ব বাদসাহ দিগের

কীর্ত্তির গদ্য গ্রন্থ ভাঙ্গিয়া যে সকল কবিতা রচন করিয়াছিল তাহাও দেখাইল; মামক তাহারই কথক গুলি কবিতা লইয়া বাদসাহকে দেখাইল বাদসাহ তুষ্ট হইয়া জিজ্ঞাসা করিলে যে এ কবিতা কে রচনা করিয়াছে? মামক সমুদয়বৃতান্ত বাদ সাহকে জানাইল তাহা শুনিয়া ফেরদৌছিকে আনিতে আজ্ঞা করিলেন, ফেরদৌছি আসিয়া বাদসাহকে কবিতার দ্বারা অনেক বর্ণনা করিল এবং তুছ নগরের অধিপতির দৌরাত্ম্য ক্রমে আপন দেশ হইতে আসিয়াছে তাহাও নিবেদন করিল বাদসাহ তাহার কবিতা শুনিয়া তুষ্টহইয়া সেই সকল কবিতা আপনার সভাস্থ আনছরি প্রভৃতি কবিদিগকে দেখাইলেন তাহারা কহিল এমত কবিতা আমরা কখন শুনিনাই। তখন বাদসাহ সাহনামা গ্রন্থ কবিতার দ্বারা রচনা করিতে ফের দৌছিকে আজ্ঞা করিলেন, আর খাজে আহমদ হছনকে আজ্ঞা করিলেন যে ফেরদৌছি যত স্লোক রচনা করিবেক তত মোহর তাহাকে দিবা এতৎ শ্রবণে ফেরদৌছি কহিল গ্রন্থ প্রস্তুত হইলে এক কালিন লইব তাহার কারণ এই যে অল্প লইলে ব্যয় হইয়া জাইবে একেত্র লইয়া তুছ নগরের নদীর জল উঠিবার পথ রুদ্ধ করিব ॥

---

হছন ময়মন্দীর সহিত ফেরদৌছির অপ্রণয়ের বিবরণ ॥

ফেরদৌছি বাদসাহর সভাস্থ সকলেরি নিকট গমনাগমন করায় ও তাহারদিগের প্রসংশার কবিতা রচনা করায় ক্রমে সকলের সহিত আত্মীয়তা হইল; হছন ময়মন্দী প্রধান উজির

গীত বাদ্য ও মদিরা পান এই সুখের সময়ে রোদনের কারণ কি বুঝি আমার প্রতি বিরক্ত হইয়াছেন? জমসেদ কহিলেন তাহা নহে জ্ঞানবান্ যে কেহ হইবেক তাহার উচিত যে প্রধান লোকের দুর্দ্দশা দেখিলে কিম্বা শুনিলে অথবা স্মরণ হইলে খেদ করিবেক এ জমসেদ বাদসাহের ছবি, তাঁহার গ্রহ বৈগুণ্য ক্রমে ঈশ্বর তাঁহাকে নির্দ্দয় হইয়া রাজ্যচ্যুত করিয়া এক জন সামান্য মনুষ্যকে সেই রাজ্যে বাদসাহ করিয়াছেন, আর জমসেদকে পথে মাঠে বনে পাহাড়ে ভ্রমণ করাইতেছেন, জমসেদ আছে কি কোন হিংসুক জন্তু সিংহ ব্যাঘ্র তাঁহাকে নষ্ট করিয়াছে এই নিমিত্ত রোদন করিতেছি। সাহজাদী ও তাহার দাই জমসেদের এই সকল বাক্যের কৌশল শুনিয়া বুঝিলেন যে আপনাকে গোপন রাখিতেছেন, তখন সাহজাদী আর সকল দাসীকে সেস্থান হইতে বাহির করিয়া দিয়া কেবল সাহজাদী ও জমসেদ এবং দাই এই তিনজন থাকিলেন, তখন সাহজাদী কহিলেন জমসেদ বাদসাহ তুমি? জমসেদ কহিলেন আমি জমসেদ বাদসাহ নহি, কন্যা কহিল ছবি কি বলে! জমসেদ কহিল আমার অবয়বের সঙ্গে আর এই ছবিতে প্রায় ঐক্য হয় বটে কিন্তু পৃথিবীতে কি এক মনুষ্যের অবয়বের মত অন্য মনুষ্য হয় না। সাহজাদী অনেক চেষ্টা করিলেন কিন্তু জমসেদ কোনমতে পরিচয় দিলেন না, তখন সাহজাদী কহিলেন যে আমার এই ধাত্রী জ্যোতিষ শাস্ত্রে সুপণ্ডিতা সেই বিদ্যাদ্বারা গণনা করিয়া কহিয়াছিল যে জমসেদ বাদসাহ এই স্থানে আসিয়া তোমাকে বিবাহ করিবেন, আর তাহা হইতে তোমার এক পুত্র হইবে, তদবধি আমি জমসেদ বাদসাহকে মানসে বরণ করিয়াছি, আর আর অনেক বাদসাহ আমাকে বিবাহ করিবার চেষ্টা পাইয়াছিল কিন্তু

আমি তাহারদিগকে বিবাহ করিতে স্বীকার করিনাই যদি আ-পনি পরিচয়না দেন তবে এইক্ষণে আপনার সাক্ষাতে প্রাণত্যা-গ করিব ইহা কহিয়া অনেক রোদন করিল তাহাতে জমসেদের মনে দয়া জন্মিল তখন কহিলেন দুই কারণের নিমিত্ত কিছু কহিতে পারিনা। প্রথমতঃ আমার এক প্রবল শত্রু আছে যদি তাহার লোক এস্থানে থাকে সে শুনিয়া তাহাকে জানাইলে আমাকে ধরিয়া লইয়া নষ্ট করিবে, আর দ্বিতীয়তঃ স্ত্রীলো-কের নিকটে পরিচয় ও পরামর্শের কথা কখন কহি নাই বিশে-ষতঃ এখন দুরাদৃষ্টের নিমিত্ত ভীত আছি এবং তুমিও স্ত্রীলোক তোমার নিকটে পরিচয় দিবনা। সাহজাদী কহিল হে বাদসাহ! সকল পুরুষকে পুরুষ ও সকল স্ত্রীকে স্ত্রীর মধ্যে গণনা করিবেন না, এবং হস্তের পাঁচ অঙ্গুলি সমান হয় না, সাহজাদী অনেক দৈন্যতা ও মিনতি করিয়া কহিল যে আমি আপনাকে বিবাহ করিতে বাঞ্ছা করিয়াছি আমা হইতে আপনার মন্দ কখনই হইবেক না। তখন জমসেদ কহিলেন যে আমি জমসেদ এবং আপনার দুর্দ্দশা ও দেশ দেশান্তরে ভ্রমণ করণের বিবরণ কহিলেন, তৎপরে সাহজাদী আপনারদিগের রীতি মত জম-সেদ বাদসাহকে বিবাহ করিয়া আপন গৃহে লইয়া গিয়া আপন গুপ্তধন বাদসাহকে যৌতুক দিলেন, সাহজাদী জমসেদকে লইয়া দিবা রাত্রি রসরঙ্গে মগ্ন হইয়া ঐ উদ্যানেই থাকেন, তাঁহার পিতা অনেক দিবস আপন কন্যাকে না দেখিয়া বাটীর লোককে জিজ্ঞাসা করিলেন, তাহারা কহিল যে তিনি এক পুরুষকে লইয়া উদ্যান মধ্যে বাস করিতেছেন, ইহা শুনিবামাত্র রাগত হইয়া কহিল যে আমার অজ্ঞাতে কেন বিবাহ করিল, পরে সাহজাদী শুনিলেন যে বাদসাহ ক্রোধা-ন্বিত হইয়াছেন তখন ঐ কন্যা ভীতা হইয়া বাটীতে আসিয়া

পিতার সহিত সাক্ষাৎ করিলেন, বাদসাহ কন্যাকে কহিলেন যে ওরে কুলকজ্জলে তুই কামাতুরা হইয়া আমাকে না কহিয়া এক পুরুষকে বিবাহ কেন করিলি আমাকে একবার জিজ্ঞাসাও করিলি না, লজ্জার চাদর ও টুপি যাহা কুলবতীদিগের অতি যত্নের ধন কামাতুরা হইয়া তাহা পরিত্যাগ করিলি, তুই বুঝিয়াছিস্ আমি তোর এ সকল বৃত্তান্ত জ্ঞাত নহি যদ্যপি তুই আমাকে বলিস্ নাই কিন্তু তোর পূর্ব্বে যে রূপ মুখের লাবণ্য ছিল পুরুষের সহিত সহবাস হওয়াতে সে লাবণ্য দূর হইয়াছে, জ্ঞানি লোকেরা কহিয়াছেন ॥

অন্য পুরুষ দেখিতে স্ত্রীর চক্ষু অন্ধ হউক।
ঘর হইতে বাহির হইলে শ্মশানে থাকুক ॥

আরও কহিয়াছেন যেন কাহার কন্যা না হয়, আর যদি হয় তবে যেন অবাধ্য না হয়, এই সকল কথা শুনিয়া সাহজাদী কহিল হে পিত! তুমি আমার স্বভাব জ্ঞাত আছ আমি কখন কুকর্ম্মান্বিত নহি এবং তোমার উজ্জ্বল কুলে কলঙ্ক রূপ কজ্জল দেই নাই ও দিব না আমি জমসেদ বাদসাহকে বিবাহ করিয়াছি, পরে সাহজাদীর দাই সমস্ত বিবরণ বাদসাহকে জানাইল, আর কহিল তোমার কন্যা জমসেদ বাদসাহ হইতে গর্ব্ভবতী হইয়াছেন এবং সাহজাদী কহিল হে পিতা! তুমি আমাকে স্বয়ম্বরা হইতে পূর্ব্বে আজ্ঞা দিয়াছ এনিমিত্ত পৃথিবীর পতি যে জমসেদ বাদসাহ যাঁহাকে পৃথিবীস্থ সমস্ত বাদসাহ কর প্রদান করিয়াছেন আমি তাঁহাকে বিবাহ করিয়াছি, জাবল স্থানের বাদসাহ এই কথা শুনিয়া আনন্দযুক্ত হইল, কিন্তু জমসেদ বাদসাহ তাহার জামাতা হইয়াছেন সে জন্য আহ্লাদ হয় নাই তাহার আহ্লাদের কারণ এই যে জমসেদকে ধৃত করিয়া জোহাক বাদসাহকে দিলে সে আমার প্রতি তুষ্ট হইবে, এবং

বহু ধন ও রাজ্য দিবে ইহা বিবেচনা করিয়া কন্যাকে কহিল যে তুমি ধন্যা যেহেতু তোমা হইতে জমসেদকে পাইলাম। কল্য প্রাতে ইহাকে কয়েদ করিয়া জোহাক বাদসাহর নিকটে পাঠাইব, এই কথা শুনিয়া সাহজাদী কাতর হইয়া মিনতি পূর্ব্বক রোদন করিয়া কহিল যে হে পিতা! এমত বাদসাহকে তুমি ধনাকাঙ্ক্ষি হইয়া নষ্ট করিও না, ধন ও রাজ্য চিরস্থায়ী নহে, এই বাদসাহকে জোহাকের নিকটে পাঠাইলে তৎক্ষণাৎ নষ্ট করিবে সে তোমারই নষ্টকরা হইবে, অতএব একর্ম্ম করিলে ইহকালে দুর্নাম পরকালে নরক হইবে, যদ্যপিও পরমেশ্বর জমসেদকে এইক্ষণে অকৃপান্বিত হইয়াছেন তত্রাপি তোমার উচিত কর্ম্ম নহে বিশেষতঃ তোমার জামাতা হইয়াছেন, ঈশ্বরের মনে যাহা আছে তাহা কেহ খণ্ডিত করিতে পারে না তাহা অবশ্যই হইবে। কিন্তু শত্রু যদি শরণাগত হয় তাহাকেও রক্ষা করিতে হয়, এজমসেদ বাদসাহ পৃথ্বীপতি ছিলেন তুমি ও এই বাদসাহর অধীন ছিলে, গ্রহবৈগুণ্যজন্য এখন তোমার শরণাগত হইয়াছেন, ইহাকে নষ্টকরা উচিত হয় না, সর্ব্বশক্তিমান্ ঈশ্বরকে শরণ করিয়া মনোমধ্যে বিবেচনা কর, আর যদি তোমার নিতান্ত জোহাকের নিকটে পাঠাইবার মানস হইয়া থাকে তবে প্রথমতঃ আমার মস্তক ছেদন কর, পরে তোমার মনে যাহা উদয় হয় তাহাই করিও, ইহা কহিয়া কন্যা বিস্তর রোদন করিতে লাগিল তাহা দেখিয়া আপন কন্যার প্রতি স্নেহ জন্মিল তখন তাহাকে কহিল তুমি আর রোদন করিও না আমি জমসেদকে নষ্ট করিব না বরঞ্চ আমার ধন ও রাজ্য তাহাকে দিব, এবং আপন প্রাণ পর্য্যন্ত দিয়াও তাহাকে রক্ষা করিব, তুমি আমার এই কথা জমসেদকে গিয়া কহিবা আর

আমি কল্য প্রাতে উদ্যানে গমন করিয়া তাহার সহিত সাক্ষাৎ করিব, তখন সাহজাদী পিতার নিকটে বিদায় হইয়া জমসেদের নিকটে গিয়া আপন পিতার আগমনের বার্ত্তা কহিয়া তুষ্ট করিলেন। পরে জাবলের বাদসাহ পরদিন প্রাতে উদ্যানে আসিয়া জমসেদের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া কহিলেন হেবাদসাহ! তোমার এভৃত্য থাকিতে আপনার কোন মতে মন্দ হইবেক না, এবং আমার কন্যাকে আপনি দাসী জ্ঞান করিবেন। জাবলের বাদ সাহ জমসেদকে অভয় প্রদান করিলেন কিন্তু তাহাতেও জমসেদের মনের আশঙ্কা দূর হইল না, কারণ কোন লোক তাহাকে কহিল যে জাবলের রাজসংক্রান্ত মন্ত্রী আদি ও দেশস্থ প্রধান লোক সকলে যুক্তি করিয়াছেন যদি আমারদিগের বাদসাহ জমসেদকে ধৃত করিয়া জোহাকের নিকটে না পাঠান তবে আমরা সকলে ঐক্য হইয়া জমসেদকে জোহাকের নিকটে লইয়া যাইব কেননা জোহাক কোন ক্রমে এই সংবাদ শুনিতে পাইলে আমারদিগের রাজ্যে আসিয়া সকলকে নষ্ট করিবেন, অতএব একের নিমিত্ত সকলে নষ্ট হওয়া উচিত নহে, এত দ্বাক্য শুনিয়া জমসেদ অত্যন্ত ভীত হইয়া সমস্ত দিবস বিমর্ষ থাকিল।

---

## জমসেদের জাবল হইতে চীনদেশে গমন।

রাত্রিকালে সকলে নিদ্রিত হইলে ওস্থান হইতে প্রস্থান করিয়া চীনদেশে গমন করিয়া কয়েক দিবস তথায় থাকিয়া হিন্দুস্থানে গমন করিলেন, কিঞ্চিৎ দূর গিয়া এক বৃক্ষমূলে শয়ন করিয়া আপনার দুর্দ্দশা ও দুর্ভাগ্যতা স্মরণ করিতে২ নিদ্রা আকর্ষণ হইল ঐ সময়ে জোহাক বাদসাহর এক দূত চীনের বাদসাহর নিকটে গমন করিয়াছিল, তাহার সঙ্গি এক জন জমসেদকে চিনিত

সে ঐ দূতকে কহিল যে ঐ বৃক্ষমূলে এক জন শয়ন করিয়া রহিয়াছে ঐ জমসেদ বাদসাহ, এই কথা শুনিয়া সে জমসেদকে ধৃতকরতঃ বন্ধন করিয়া এক শকটারোহণে জোহাকের নিকটে লইয়া গেল, যখন জমসেদকে লইয়া জোহাকের সম্মুখে উপস্থিত হইল তখন জোহাক হাস্য করিয়া কহিল এখন তোর সে তাজ তক্ত কোথায়, আর রাজ্যস্পদ কি হইল, জমসেদ কহিল ওরে মূর্খ পৃথিবীতে চিরপদ কাহারো থাকে না, এই রাজ্য ও তক্ত পূর্ব্বে আমার অধীন ছিল এইক্ষণে পরমেশ্বর তোকে দিয়াছেন, কিন্তু তুই কখনও এমত জ্ঞান করিস্‌না যে ঐ রাজ্যস্পদ তোর চিরদিন থাকিবেক। ইহা শুনিয়া জোহাক জমসেদকে কহিলেক কি প্রকারে তোকে মারিব অসি দ্বারা মস্তক ছেদন করিব কি শূলে দিব, তোর যাহা ইচ্ছা তাহা বল! জমসেদ কহিল এইক্ষণে আমি রাজ্যচ্যুত তুই সপদস্ত তোর যেরূপ বাঞ্ছা হয় সেইরূপে বধ কর, আমি তাহাতে ভীত নহি। জোহাক তখন আপন লোককে কহিল দুই খণ্ড তক্তা আনিয়া জমসেদের বক্ষে ও পৃষ্ঠে বান্ধিয়া মস্তকে করাত দিয়া চিরিয়া দুই খণ্ড কর, তাহারা ঐমত করিল। যখন এই সংবাদ জাবল স্থানে পঁহুছিল জমসেদের রাণী অনেক রোদন করিয়া পরে বিষ পানকরত প্রাণ ত্যাগ করিল।

---

## জোহাকের বিবরণ।

জোহাক নির্ভয় হইয়া তক্তে বসিয়া জমসেদের দুই ভগ্নী এক জনার নাম সহরনাজ, দ্বিতীয়ার নাম আরনওয়াজ সেই দুই জনকে আপন ভোগ্যাস্ত্রী করিয়া রাখিল, আর সমস্ত পৃথিবীর বাদসাহ হইয়া অতিশয় দৌরাত্ম্য ও অন্যায় আরম্ভ করিল, বিশেষতঃ প্রত্যহ দই জন মনষ্যকে হত করিয়া

তাহারদিগের মর্জা আপন স্কন্ধের দুই সর্পকে খাওয়াইত কয়েক দিন পরে জোহাক এক রাত্রে স্বপ্ন দেখিল যে তিন জন অতিবলবান্ বীর জোহাককে আক্রমণ করিল তাহার সর্ব্বকনিষ্ঠ যে সেই জোহাকের মস্তকে এক গদা প্রহার করিল এবং দুই হস্তে ও গলদেশে রজ্জুসংযুক্ত করিয়া আকর্ষণ করিতেছে, আর অনেক মনুষ্য তাহার পশ্চাৎ আসিতেছে, জোহাক এই দুঃস্বপ্ন সন্দর্শনে অত্যন্ত ভীতহইয়া চিৎকারধ্বনি করিয়া উঠিল, বেগম ও সইলিনী যাহারা সে স্থানে ছিল তাহারা বাদসাহকে কহিল হে বাদসাহ তুমি কি নিমিত্ত এমত ভীত হইয়া চিৎকার শব্দ করিলে তখন তাহারদিগকে কহিল যে আমি বড় দুঃস্বপ্ন দেখিয়াছি যদি কহি তবে তোমরা আমার জীবনের আশা ত্যাগ করিবে পর দিবস প্রাতে জ্যোতিষবেত্তা ও গণক ও পণ্ডিত দিগকে ডাকাইয়া রাত্রের স্বপ্ন বিবরণ তাহারদিগের নিকটে কহিল, এবং এই স্বপ্নের কি ফল তাহা জিজ্ঞাসা করিল তাহারা আপন আপন বিদ্যার দ্বারা জানিলেন যে জোহাক শীঘ্র নিপাত হইবেক, কিন্তু ভয়প্রযুক্ত কেহ প্রকাশ করিয়া কহিতে পারিলেন না, পরস্পর কহিলেন যদি আমরা এ স্বপ্নের ফলের কথা সত্য কহি তবে এখনি আমারদিগকে নষ্ট করিবেক এই নিমিত্ত গোলযোগ করিয়া তিন দিবস গত করিল, চতুর্থ দিবসে বাদসাহ রাগত হইয়া উক্ত পণ্ডিত গণকে কহিলেন যে স্বপ্নের কি ফল যেপর্য্যন্ত না কহিবা সে পর্য্যন্ত সকলে কয়েদ থাকহ, এই কথা শুনিয়া সকলে ঐক্য হইয়া কহিলেন, যে বাদসাহের আয়ু শেষ হইয়াছে। ফরেদূঁ নামে এক জন বাদসাহ হইবেক, কিন্তু এইক্ষণ পর্য্যন্ত সে জন্ম গ্রহণ করে নাই। জোহাক কহিল আমার মস্তকে গদা প্রহার কে করিয়াছে! তখন পণ্ডিতেরা কহিলেন তাহারি নাম ফরেদূঁ। জোহাক কহিল সে কি

নিমিত্ত আমাকে মারিবেক? পণ্ডিতেরা কহিলেন আপনি তাহার পিতাকে নষ্ট করিবেন, সে আপন পিতার বধের পরিবর্ত্তে তোমাকে নষ্ট করিবেক, ইহা শুনিয়া জোহাক অজ্ঞান হইয়া তক্ত হইতে ভূমে পতিত হইল ক্ষণেক কালপরে চৈতন্য প্রাপ্তহইয়া তক্তে বসিয়া পুনরায় ফরেদুঁর অনুসন্ধান গোপনেও প্রকাশ্যরূপে করিতে সকল লোককে আজ্ঞা করিলেন, ফরেদুঁর নাম শ্রবণ করণাবধি জোহাকের মনে এক ভয় প্রবেশ হইয়া আহার ও নিদ্রা ঐ ভাবনায় উত্তমরূপে হইত না, এবং সর্ব্বদা অসুখি থাকিত। ফরেদুঁর পিতার নাম ওব্বতিন, মাতার নাম ফরানক, তহমুরছের বংশোদ্ভব ছিল। জোহাক আপন অধীনস্থ চরগণকে আজ্ঞা করিয়াছিলেন যে কয় বংশের লোক যেখানে দেখিতে পাইবা তৎক্ষণাৎ তাহাকে আমার নিকটে ধৃত করিয়া আনিবা, কয়বংশায় যেং ছিল এই সংবাদ শুনিয়া আর কেহু বাটী হইতে বাহির হইত না, অনেক দিবসের পর ওব্বতিন কেবল গৃহ মধ্যে সর্ব্বদা বাসকরত বিরক্ত হইয়া এক দিবস উদ্যান ভ্রমণে গমন করিল, দৈবাধীন জোহাকের এক জন চর তাহাকে দেখিতে পাইয়া ধৃত করিয়া জোহাকের নিকটে আনিলে জোহাক তৎক্ষণাৎ তাহার শির ছেদন করিল।

---

## জোহাকের ভয়ে ফরেদুঁর পলায়ন।

ফরেদুঁর মাতা ফরানক এই সংবাদ শ্রুত মাত্র ফরেদ ও তাহার আর দুই ভ্রাতা এই তিন জনকে লইয়া সেখান হইতে পলায়ন করিল। ফরেদুঁ তখন দুইমাস বয়স্ক বালক ছিল সমস্ত দিবস পর্য্যটন করিয়া এক মাঠে পৌছিল সে স্থান এক জন গোপের তাহার অনেক দুগ্ধবতী গো ও মহিষ সে স্থলে থাকিত ফরানক ঐস্থানে পৌছিয়া ঐ গোপের শরণাপন্ন হইয়া আপ-

নার বিবরণ তাহাকে কহিল, এবং জোহাকের ভয়ে ও পথ-শ্রান্তে তাহার স্তন্যদুগ্ধ শুষ্ক হইয়াছে, তাহাও জ্ঞাত করিল, ঐ গোরক্ষক এই কথা শুনিয়া পোরমায়া নামে একটি দুগ্ধবতী গাভী ছিল ফরেদুঁকে দুগ্ধপান জন্য ঐ গাভী প্রদান করিল, এবং কিয়ৎকাল উক্ত স্থানে অবস্থান করিল, কিন্তু পরে তাহারা জোহাকের ভয়ে অতি ভীতা হইয়া ঐ গোপালকের নিকটে ফরেদুঁকে অর্পণ করিয়া আপনি আর দুই পুত্রকে লইয়া আলবোর্জ্জ পর্ব্বতে গমন করিল ঐ গোরক্ষক তিন বৎসর ফরে-দুঁকে প্রতিপালন করিল।

## ফরেদুঁর আলবোর্জপর্ব্বতে গমন।

তিন বৎসরের পর ফরানক আসিয়া ফরেদুঁকে লইয়া পুনরায় ঐ আলবোর্জ পর্ব্বতে প্রস্থান করিল, তখন গোপ কহিল এমত দুগ্ধপোষ্য বালককে কেন পর্ব্বতে লইয়া যাও দুগ্ধাভাবে ক্লেশ পাইবেক। ফরানক কহিল আমার মনে এব প্রকার উদয় হইতেছে যে এ স্থলে থাকিলে মৃত্যু সম্ভাবনা ইহাকে লোকালয় হইতে লইয়া পর্ব্বতে গোপন হইয়া থাকিব, ইহা কহিয়া ফরেদুঁকে লইয়া পর্ব্বতে গমন করিল, তাহার কিঞ্চিৎ দিবসান্তে জোহাকের নিকটে কেহ কহিল যে ফরেদুঁকে অমুক স্থানের গোরক্ষক প্রতিপালন করিতেছে, এইকথা শ্রুত মাত্র জোহাক কতক গুলীন সেনা সমভিব্যাহারে সেই স্থানে গিয়া ঐ গোরক্ষকের সবংশে নিপাত করিল, এবং গো মহি-যাদি যাহা সেখানে ছিল তাহাও বধ করিল, ফরেদুঁর অনেক অন্বেষণ করিল তাহাকে না পাইয়া বাটীতে আইল, ওঁখানে আলবোর্জ পর্ব্বতের উপরে এক জন সিদ্ধ তপস্বী ছিলেন, ফরেদুঁর মাতা ফরেদুঁকে লইয়া তাহার পদতলে নিঃক্ষেপ

করিয়া রোদন বদনে আশ্রয় প্রার্থনা করিল, আর কহিল যে ইহার এক প্রবল শত্রু আছে, আপনি অনুগ্রহ করিয়া রক্ষা করুন। ঐ তপস্বী অনুগ্রহপূর্ব্বক কহিলেন তুমি এই বালককে লইয়া এই স্থানে বাস কর। কিয়ৎকাল পরে এক দিবস সেই তপস্বী ফরেদুঁর মাতাকে কহিলেন যে পণ্ডিতেরা জোহাকের হন্তারক এই বালককে কহিয়াছেন সে বাক্য সত্য বটে, এই জোহাককে বিনাশ করিয়া তাহার রাজ্য লইবে, এবং পৃথিবীর বাদসাহ হইবেক। যখন ফরেদুঁ ষোড়শ বৎসর বয়ঃপ্রাপ্ত হইল তখন আপন মাতাকে এক দিবস জিজ্ঞাসা করিল যে জোহাক আমার পিতাকে কি নিমিত্ত মারিয়াছে? ফরানক সমস্ত বৃত্তান্ত জানাইল, ফরেদুঁ শুনিয়া কহিল আমি পিতার পরিবর্ত্তে জোহাকের প্রাণ দণ্ড করিব, ফরেদুঁর মাতা কহিল তুমি বালক, একা, দরিদ্র, সেনা এবং ধন সম্পত্তি কিছুই নাই, সে পৃথিবীর বাদসাহ তুমি এখন ব্যাস্ত হইবা না যদি তোমার অদৃষ্টে রাজ্য থাকে তবে পরমেশ্বর উপায় করিয়া দিবেন। ফরেদুঁ কহিল আমি জোহাকের সহিত যুদ্ধ করিতে যাত্রা করিলাম ঈশ্বর আমাকে অবশ্যই কৃপা করিবেন. এখানে জোহাকের মনে ফরেদুঁর ভয় ক্রমেং বৃদ্ধি হইয়া অতিশয় কৃশ ও দুর্ব্বল হইতে লাগিল, এবং তাবৎ লোক কহিতেছে যে ইহার দৌরাত্ম্য আর সহ্য হয় না, ফরেদুঁ আইলেই ভাল হয় আর আপামর সাধারণ সকল লোকেই ফরেদুঁর তত্ত্ব করিতে লাগিল এক দিবস জোহাক সভাস্থ ও নগরস্থ প্রধান লোক সকলকে আনয়ন করিয়া কহিল যে আমার অতিক্ষুদ্র এক শত্রু আছে, কিন্তু শত্রুকে কদাচ ক্ষুদ্র জ্ঞানকরা উচিত নহে, আমি শুনিয়াছি সে হিন্দুস্থানে আছে, যদ্যপি সে ক্ষুদ্র বটে কিন্তু তাহার বুদ্ধির প্রাখর্য্যতা ও যুদ্ধের প্রশংসা অনেকে করে, এনিমিত্ত আমি

মানস করিয়াছি যে কতক গুলীন সৈন্য সঙ্গে লইয়া তাহার অনুসন্ধান করিতে হিন্দুস্থান যাইব, তোমরা আমার সুবিচার, সদ্বিবেচনা ও ধার্ম্মিকতা, সত্যবাদী ও দাতা এইরূপ এক সুখ্যাতি পত্র লিখিয়া স্বাক্ষর করিয়া দেও, বাদসাহর এই কথা শুনিয়া সকলেই স্বীকার করিলেন, তৎক্ষণাৎ এক প্রতিষ্ঠাপত্র লিখিয়া সকলে স্বাক্ষর করিলেন।

---

## জোহাকের প্রতিষ্ঠাপত্রে স্বাক্ষরকরা কাওয়া কর্ম্মকার তাহা খণ্ড২ করিবার বিবরণ।

কাওয়া নামে এক জন প্রধান সাহসিক বলবান্ লৌহ কর্ম্মকার তাহার পুত্রকে সর্পের আহারের নিমিত্ত ধরিয়া আনিল, কাওয়া তাহার পশ্চাতে আসিয়া কহিল হে বাদসাহ তুমি আমার পুত্রকে মারিয়া সর্পকে খাওয়াইবে এবং প্রত্যহ এই মত মনুষ্যদিগকে নষ্ট করহ, আর নানামত দৌরাত্ম্য কর, আর কহিতেছ ধার্ম্মিক ও সত্যবাদী এবং সদ্বিবেচক ও সুবিচারক তাহারি সুখ্যাতিপত্রে নগরের প্রধান লোক সকলে স্বাক্ষর করিয়াছেন, কাওয়া লৌহকারের এই সকল বাক্য শ্রবণ মাত্র তাহার পুত্রকে ত্যাগ করিয়া তাহাকে কহিলেন তুমি এখনএই সুখ্যাতিপত্রে স্বাক্ষর কর। কাওয়া ঐ প্রতিষ্ঠাপত্র পাঠ করিয়া সভাস্থ প্রধান লোক ও পণ্ডিতদিগকে কহিল, যে আপনারা এই রাক্ষসস্বরূপ দুরাত্মার বাক্যে ধর্ম্মপথ ত্যাগ করিয়া মিথ্যা লিপি পত্রে সকলে স্বাক্ষর করিয়াছেন, আমি ইহাতে কদাচ স্বাক্ষর করিব না, ইহা কহিয়া সেই পত্র খণ্ড২ করিয়া পদতলে নিঃক্ষেপ করিয়া রাজসভা হইতে বাহির হইল, তাহার পুত্র সেই সঙ্গে চলিল, সভাস্থ সকলে বাদসাহকে কহিল হে বাদসাহ কাওয়া এক জন তুচ্ছ কর্ম্মকার আপনাকে ও সভাস্থ সকলকে

কটুকাটব্য কহিল, এবং রাজ আজ্ঞা উল্লংঘন করিয়া প্রশংসা-পত্র খণ্ড২ করিয়া তদুপরে পাদার্পণ করিল, ইহাতে আপনি তাহাকে কিছু না কহিয়া নিরব হইয়া রহিলেন ইহার কারণ কি? অনুমান হয় ফরেদুঁর রাজ্য হইল। জোহাক কহিল কাওয়াকে দেখিয়া ও তাহার বাক্য শুনিয়া আমার মনে ভয় জন্মিয়াছে, ইহাতে দেবতা কি দুর্ঘটনা ঘটান তাহা আমি কহিতে পারি না, যখন কাওয়া রাজসভা হইতে বাহির হইল তখন সভার ও নগরীয় অনেক লোক তাহার পশ্চাৎগামী হইল, কাওয়া আপন দোকানে গিয়া ধমকার চর্ম্ম লইয়া এক বাঁসেতে বান্ধিয়া কহিল আমি এই পতাকা লইয়া ফরেদুঁকে আনয়ন করিতে গমন করিলাম, এবং অনেক লোক তাহার পশ্চাৎ গমন করিল, কিন্তু কোথায় ফরেদুঁ তাহা কেহু জানে না, কতক দূর যাইতে২ ফরেদুঁর সহিত সাক্ষাৎ হইল, ফরেদুঁ ঐ সকল লোক ও সেনা এবং পতাকা আপনা হইতে উপস্থিত হওয়া কেবল ঈশ্বরের অনুগ্রহ জানিয়া ঈশ্বরকে ধন্যবাদ করিয়া পরে ঐ ধ্বজাকে অতি সুন্দর রূপে সাজাইয়া তাহার নাম ( কাবিয়ানিদরফ্স ) রাখিলেন। ( ফরেদুঁর পরে যে২ বাদসাহ হইয়াছেন তিনি লৌহকারের জাঁতার চর্ম্ম আনিয়া ধজিতে বান্ধিয়া স্বর্ণ মুক্তা দিয়া সুন্দররূপে সাজাইয়া কাবিয়ানিদরফ্স নাম করিয়াছেন )

## ফরেদুঁর জোহাকের যুদ্ধে যাত্রা ॥

ঐ সকল সৈন্যাদি দেখিয়া আপন মাতার নিকটে বিদায় হইয়া ঐ সকল সেনা সঙ্গে লইয়া কাওয়াকে ঐ নিশান সহিত অগ্রগামি করিয়া জোহাকের সহিত যুদ্ধে চলিলেন, ফরেদুঁর জ্যেষ্ঠ দুই সহোদর ছিল, তাহারদিগকে সঙ্গে লইল, মহিষের

মস্তকাকার লৌহ গদা নির্ম্মাণ করাইয়া লইলেন। কয়েক দিবস পরে এক দিন সন্ধ্যার সময়ে এক গোরস্তানে পৌছিলেন, ফরেদুঁ গোরস্তানে একা গিয়া যুদ্ধে জয়যুক্ত হওনের নিমিত্ত বিস্তর মিনতিপূর্ব্বক প্রার্থনা করিলেন, ক্ষণেককাল পরে ফরেদুঁকে দৈববাণী হইল যে তুমি এই মন্ত্র স্মরণ করহ যখন তোমার কোন বিপদ উপস্থিত হইবেক তখন এই মন্ত্র স্মরণ মাত্রেই বিপদ হইতে মুক্ত হইবে, এবং মতান্তরে এক জন দৈবপুরুষ আসিয়া ফরেদুঁকে ঈশ্বরের কোন পবিত্র নাম শিখাইয়া তাহার ক্রম উপদেশ করিয়া গেলেন। ফরেদুঁর ভ্রাতারা উত্তরোত্তর তাহার প্র দুর্ভাব দেখিয়া হিংসান্বিত হইয়া দুই জনে পরামর্শ করিল, যে কোন উপায় দ্বারা ইহাকে নষ্ট করিতে হইবে। পর দিন ওস্থান হইতে প্রস্থান করিয়া এক দিন সন্ধ্যার সময়ে এক পর্ব্বতের নিকটে আসিয়া আহারাদি করিয়া ঐ শিখরের নিম্নে শয়ন করিলেন, কতক রাত্রে ফরেদুঁর ভ্রাতারা উঠিয়া গোপনে পর্ব্বতোপরি গমন করিয়া এক খান পাতর গড়াইয়া ফেলিল তাহার শব্দে ফরেদুঁর নিদ্রা ভঙ্গ হইল, ঐ শব্দ শুনিয়া ফরেদুঁ ত্রাসযুক্ত হইয়া ঈশ্বরের সেই নাম স্মরণ করিতে লাগিল, ঐ নামের গুণে উক্ত পাষাণ না পড়িয়া ঐ স্থানে স্থকিত রহিল। ফরেদুঁর ভ্রাতারা ইহা দেখিয়া বিস্ময়াপন্ন হইয়া অত্যন্ত চিৎকার করিতে লাগিল, যে সকলে সাবধান হও পর্ব্বত হইতে পাষাণ পতিত হইতেছে, ফরেদুঁ যেন না মরে তাহাকে এস্থান হইতে স্থানান্তর কর, কিন্তু ফরেদুঁ জানিল যে ভ্রাতারা একর্ম্ম করিয়াছেন, কিন্তু প্রকাশ না করিয়া তাহারদিগের অধিক মান ও মর্য্যাদা বৃদ্ধি করিতে লাগিল। পরে কাওয়া ফরেদুঁকে পর্ব্বতীয় পথ দ্বারা বগদাদে উপস্থিত হইল, পর দিবস বগদাদের নীচে দজলা নামে সমুদ্রতুল্য এক প্রবল নদী ছিল সেই

নদী পার হইবার নিমিত্ত নাবিকদিগকে ডাকিল, তাহারদি-গকে জোহাকের বারণ ছিল সেই জন্য কেহ ফরেদুঁকে পার করিলেক না।

ফরেদুঁ সন্তরণ দ্বারা নদীপার ॥

তখন ফরেদুঁ ক্রোধান্বিত হইয়া অশ্বারোহণে নদী পার হইল ইহা দেখিয়া আর২ সকলে তাহার পশ্চাৎগামি হইল। ঈশ্বর ইচ্ছায় সেই ভয়ানক নদী হইতে সকলে অক্লেশে পার হইয়া তীরে উত্তীর্ণ হইল, পরে তথা হইতে গমন করিয়া অতি নিকটে এক বৃহৎ অট্টালিকা দেখিলেন তাহার নাম বয়তলমক-ছদ আর ( পহলবি ভাষায় তাহার নাম গঙ্গদজ ) জোহাক সেই বাটীতে আপনার ধন সম্পত্তি ও রত্নাদি নির্ম্মিত তক্ত ( তলছমাত ) অর্থাৎ ইন্দ্রজাল করিয়া অনেক দৈত্য প্রভৃতিকে তথায় রক্ষক রাখিয়া আপনি ফরেদুঁর অন্বেষণ করিতে হিন্দুস্থানে গিয়াছিল। ফরেদুঁ কাওয়াকে জিজ্ঞাসা করিল এ বাটী কাহার? সে সকল বিস্তারিত করিয়া কহিল। ফরেদুঁ শুনিল যে জোহাক আপন সেনা লইয়া তাহার অন্বে-ষণে হিন্দুস্থানে গিয়াছে, অতি আহ্লাদিত হইয়া ঈশ্বরের ধন্য-বাদ পূর্ব্বক সেই বাটীতে প্রবেশ করিয়া উক্ত ধনাদি সকল গ্রহণ করিলেন, এবং অন্তঃপুরের মধ্যে প্রবেশ করিয়া জোহা-কের বেগমদিগকে দেখিয়া তাহার মধ্যে জমসেদ বাদসাহের দুই ভগ্নী সহরনাজ ও আরনওয়াজ নাম্নী ছিল, তাহারদিগকে ডাকিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন যে জোহাক হিন্দুস্থানে কি নিমিত্ত গিয়াছে? তাহারা কহিল সে দুই কারণে গিয়াছে, প্রথমতঃ সে শুনিয়াছে যে তুমি হিন্দুস্থান দিয়া এখানে আসিবা যদি সেই খানে কিম্বা পথিমধ্যে কোন প্রকারে তোমাকে দেখিতে পায় তবে নষ্ট করিবে, আর যদি তোমার সহিত সাক্ষাৎ না হয়

কিম্বা নষ্ট করিতে না পারে তবে হিন্দুস্থানে অনেক উত্তমোত্তম জ্ঞানি লোক আছে তাহারদিগকে আনিয়া কোন উপায় করিবেক, তোমার ভয়ে জোহাক সদা শসঙ্কিত আছে। তখন ফরেদুঁ জোহাকের তক্তে বসিয়া তাহার সমস্ত ধন ও রাজ্যের অধিকারি হইলেন এবং তথাকার যত প্রধান লোক ও সেনা এবং প্রজা ছিল সকলে তুষ্ট হইয়া ফরেদুঁর সহিত আসিয়া সাক্ষাৎ করিল। কিন্তু কন্দ্রু নামে যে জোহাকের বাটীর প্রধান রক্ষক ছিল তথা হইতে পলায়ন করিয়া জোহাকের নিকটে গিয়া কহিল যে তিন জন যুবপুরুষ কথকগুলিন সেনা সঙ্গে করিয়া আসিয়া তোমার আলয়ে প্রবেশ করিয়া যে সকল দৈত্য প্রভৃতি রক্ষক যাহার দিগকে আপনি রাখিয়া আসিয়া-ছিলেন তাহারদিগকে নষ্ট করিয়া তোমার সকল বিষয় গ্রহণ করিয়াছে। জোহাক এই কথা শুনিয়া অতিশয় ভীত হইল, এবং মনে বিবেচনা করিল যে ফরেদুঁ আসিয়াছে আর রক্ষা নাই, কিন্তু প্রকাশ করিল না, যেহেতু সঙ্গের সেনাগণ ও আর আর লোক ভীত হইয়া তাহার নিকটে যাইবেক, পরে কন্দ্রুকে কহিল বুঝি কোন অতিথি আসিয়াছে, সে কহিল অতিথি বটে, কিন্তু গদা হস্তে তোমাকেই গ্রাস করিবেক এবং তোমার বেগম দিগকে লইয়া রঙ্গ রসে মগ্ন হইয়াছে, জোহাক এই সকল মন্দবাক্য শুনিয়া ক্রোধান্বিত হইয়া কন্দ্রুকে কহিল তুই তাহার ভয়ে বুঝি পলাইয়া আসিয়াছিস, অতএব আমি আর তোকে ধনাগারের রক্ষক করিব না, কন্দ্রু কহিল যে তোমার রাজ্য ও ধন না থাকিলে আমাকে কি বস্তুর রক্ষক করিবা। এই কথা শুনিয়া অতি রাগান্ধ হইয়া সকল সেনা সমভিব্যাহারে আপন বাটীতে গমন করিল, কিন্তু সকল লোকেই জোহাকের দৌরাত্ম্য কারণ জ্বালাতন ছিল, ফরেদুঁর নাম ও আসিবার

সংবাদ শুনিয়া আহ্লাদিত হইয়া কহিল যে আমরা আর এই সর্পযুক্ত অপবিত্র জোহাককে আর তক্তে বসিতে দিব না ও নগর বাসি সকলে নূতন বাদসাহ অর্থাৎ ফরেদূঁর সহিত সাক্ষাৎ করিতে গমন করিল, ইহা দেখিয়া মনোমধ্যে বিবেচনা করিল যে আমি রাজ্য করি এমত বাসনা কি নগরস্থ কি সেনা দিগের নাই সমস্ত দিবস এই রূপ চিন্তা করিতে২ আপন বাটীর নিকটে গিয়া অন্য এক গোপনীয় স্থানে অবস্থান করিয়া রাত্রি-যোগে ফরেদূঁর শয়নাগারে ( কমন্দ ) অর্থাৎ এক প্রকার রজ্জু নির্ম্মিত সোপান দ্বারা উঠিল, মানস ছিল যদি ফরেদূঁকে অসাবধান কিম্বা নিদ্রিত পায় তবে তাহাকে নষ্ট করিবে, কিন্তু উক্ত স্থানে উপস্থিত হইয়া দেখিল যে ফরেদূঁ জোহাকের বেগমদিগকে লইয়া হাস্য কৌতুক করিতেছে, ইহা দেখিয়া অতি ক্রোধিত হইয়া গৃহ মধ্যে যাইবার মনন করিল, ফরেদূঁ তাহা দেখিয়া গদা হস্তে করিয়া তাহার মস্তকে প্রহার করিল, তাহাতে তাহার মৃত্যু হইল না কারণ জোহাকের লৌহময় টুপি ও জামা পরিধান পূর্ব্বক আসিয়াছিল, কিন্তু তাহার মস্তকে গুরুতর আঘাত হইল, ফরেদূঁ পুনর্ব্বার মারিবার নিমিত্ত গদা তুলিলেন ঐ সময়ে দৈব বাণী হইল যে আর আঘাত করিবা না ইহার মৃত্যুর বিলম্ব আছে ইহাকে বন্ধ করিয়া রাখ তাহাতেই মৃত্যু হইবেক, পরে জোহাককে বন্ধন করত কারাগারে রাখিলেন। জোহাকের বিবরণ এই পর্য্যন্ত সমাপ্ত হইল এক দিবস ন্যূন এক সহস্র বৎসর বাদসাহি করিয়া শেষে কারাগারে পঞ্চত্ব প্রাপ্ত হইল।

## ফরেদূঁ বাদসাহের বিবরণ ॥

ফরেদূঁ বাদসাহ হইয়া জোহাকের দৌরাত্ম ও অবিচারের ক্লেদ সকল সদ্বিচার ও শিষ্টতার জলে ধৌত করিলেন, সদ্বিচার ও দাতব্যের নিমিত্ত ফরেদূঁর নাম অদ্যাবধি জাগৃত আছে।

যদ্যপি ফরেদুঁ বাদসাহ বহুকাল গত হইয়াছেন ফরেদুঁ বাদসাহ দেবতা ছিলেন না এবং শুক্র শোণিত ব্যতিরিক্ত কস্তুরি অগুরুতে তাঁহার জন্ম হয় নাই, দান ও সৎবিবেচনা ও সুশীলতার প্রভাবে অদ্যাবধি তাঁহার সুখ্যাতি আছে, অতএব যাহার দান ও সদ্বিবেচনা থাকে সেই ফরেদুঁ ॥

পবিত্র ফরেদুঁ সেতো দেবতা না ছিল।
মৃগনাভি অম্বরেতে জন্ম না লভিল ॥
দাতব্য দ্বারায় তার হইল সুখ্যাতি।
তুমি সেই মত হবে কর সেই নীতি ॥

ক্রমে ফরেদুঁর তিন পুত্র হইল, প্রথম পুত্রের নাম ছলম, দ্বিতীয়ের নাম তুর, তৃতীয়ের নাম এরচ, যখন তাহারা উপযুক্ত হইল তখন চন্দল নামে এক জন বিজ্ঞকে আজ্ঞা করিলেন যে তুমি এক বাদসাহর তিন কন্যা এবং সুন্দরী হয় তাহা অনুসন্ধান করিয়া আইস পুত্রের দিগের বিবাহ দিব, চন্দল অনেক অনুসন্ধান করিয়া এমন দেশের বাদসাহর পরম সুন্দরী তিন কন্যা ছিল, ইহা শুনিয়া তাহার নিকটে গিয়া বিবাহের কথা স্থির করিয়া ফরেদুঁকে আসিয়া জানাইল, ফরেদুঁ তিন পুত্রকে ঐ চন্দলের সহিত উক্ত স্থানে বিবাহ করিতে পাঠাইলেন, তাহারা বিবাহ করিয়া আইল ॥

## ফরেদুঁ তিন পুত্রকে রাজ্য বিভাগ করিয়া দেওনের বিবরণ ॥

ফরেদুঁ আপনার রাজ্য তিন অংশ করিয়া তিন পুত্রকে বিভাগ করিয়া দিলেন। রোমদেশ ও খাওর জ্যেষ্ঠ পুত্র ছলমকে ॥ তুরান দেশ ও চিন দেশ দ্বিতীয় পুত্র তুরকে আর ইরান দেশ কনিষ্ঠ পুত্র এরচকে দিলেন, পরে আপন আপন কৃতাংশ রাজ্যে তাহারদিগকে বিদায় করিলেন, আর২ দেশ

হইতে ইরান ধনাঢ্য ও আবাদ ও নানা প্রকারে সুন্দর, এ জন্য জ্যেষ্ঠপুত্র ছলম আপন অংশে সম্মত না হইয়া মধ্যম ভ্রাতা তুর কে পত্র লিখিয়া দূতদ্বারা পাঠাইল, যে আবাদ ও ধনি পৈত্রিক রাজধানী ইরানদেশ তাহা পিতা আমারদিগের কনিষ্ঠভ্রাতা এরচকে দিলেন ও আর২ যে সকল দেশ মরুভূমি ও পর্ব্বত বন জঙ্গল ও সর্ব্বদা ভয় ও যুদ্ধবিগ্রহ সেই সকল দেশ আমারদিগকে দিয়াছেন, আমি এ অংশে কোনমতে সম্মত নহি। তোমার কি মত তাহা লিখিবা, তুরের নিকট এই পত্র পৌছিলে সে পাঠ করিয়া হর্ষ হইয়া দূতকে কহিল যে আমরা দুই জন একত্র হইয়া এরচকে নষ্ট করিব কিন্তু একথা পিতাকে প্রথম জ্ঞাত করা উচিত, যদি যথার্থ অংশকরিয়া দেন, ছলমকে এই রূপ পত্র লিখিল যে এই সকল কথা লিখিয়া এই দূতকে পিতার নিকটে পাঠাইয়া দেও, আমারদিগের মানস পিতা জ্ঞাত হইয়া যেমত বিবেচনা করেন সেই মত করা যাইবেক, ছলম তুরের প্রতি উত্তর লিপি পাইয়া সেই দূতকে ফরেদুঁর নিকট ঐ সকল বৃত্তান্ত কহিয়া পাঠাইল, দূত ফরেদুঁর নিকটে উপস্থিত হইলে তাহাকে জিজ্ঞাসা করিলেন যে পুত্রেরা কেমন আছেন, দূত আপনার ও তাহার দিগের প্রণাম জানাইয়া কহিল যে বাদসাহর আশীর্ব্বাদে সকলে স্বচ্ছন্দে আছেন, পরে দূত কহিল হে বাদসাহ আমি তাঁহারদিগের নিকট হইতে কোন সংবাদ আনিয়াছি আপনার বিনা আজ্ঞাতে আমি কহিতে অশক্ত যদি আমার অপরাধ মার্জ্জনা করেন তবে নিবেদন করি। ফরেদুঁ কহিল দূতের অপরাধ নাই তোমাকে তাঁহারা যেমত আজ্ঞা করিয়াছেন তাহা নিবেদন করহ, তখন দূত পূর্ব্বোক্ত কথা সকল বিস্তারিত করিয়া কহিল তাহা শুনিয়া ফরেদুঁ ক্রুদ্ধ হইয়া দূতকে কহিতে লাগিলেন যে আমি তাহারদিগকে আপন রাজ্য অংশ

করিয়া দিয়াছি তাহারদিগের পক্ষে মন্দ করি নাই আমি বৃদ্ধ হইয়াছি এবং রাজ্য বাঞ্ছাও ত্যাগ করিয়াছি তোমারদিগের হিতোপদেশ কহিতেছি যে আপনং কৃতাংশে সম্মত হইয়া তিন সহোদরে হৃদ্যতা করহ। দূত ইহা শুনিয়া বিদায় হইয়া গেল, ফরেদুঁ এরচকে ডাকাইয়া কহিলেন তোমার জ্যেষ্ঠ দুই ভাই ঐক্য হইয়া সৈন্য লইয়া তোমার সহিত যুদ্ধ করত তোমাকে নষ্ট করিয়া তোমার অংশ লইবেন দূতের কথায় বোধ হইল, তোমার পরিবর্ত্তে যদি আমি গমন করি তবে আমার সঙ্গেই যুদ্ধ করিবেন, তুমি কি বিবেচনা কর? এরচ কহিল বাদসাহ যে মত আজ্ঞা করিবেন তাহাতে আমি স্বীকৃত আছি, ফরেদুঁ কহিল তাহার এক জনার সঙ্গে তুমি যুদ্ধ করিতে পার না এখন দুই জন একত্র হইয়াছে আর আমিও বৃদ্ধ হই-য়াছি কেবল ভজনা করিতে পারি। সৎ পরামর্শ তাহারদিগের সহিত তোমার সন্ধি করা উচিত, অথবা আপন অংশ তাহাদিগকে সমর্পণ করহ। এরচ তাহাতে সম্মত হইয়া কহিল আমি তাহারদিগের নিকটে গিয়া রাজ্য ও তক্ত উপঢৌকন প্রদান পূর্ব্বক তাহারদিগের আজ্ঞাবহ হইয়া থাকিব। ফরেদুঁ ইহা শুনিয়া কহিল তবে আমি পত্র লিখি তৎ পত্রের বিবরণ এই যে তোমার দিগের কনিষ্ঠ ভ্রাতা তোমারদিগের নিকটে যাইতেছে ইহার মানস আপনার অংশ তোমারদিগের সমর্পণ করিয়া তোমারদিগের আজ্ঞাবর্ত্তি থাকে, তোমরা জ্যেষ্ঠ তোমারদিগের উচিত যে মনে হইতে শক্রতা দূর করিয়া আপন কনিষ্ঠ ভ্রাতাকে অনুগ্রহ ও স্নেহ করিবা, পরে শিরোনামা লিখিয়া আপন নামের চিহ্ন তাহাতে দিয়া এরচকে বিদায় করিলেন, এরচ কতিপয় মনুষ্যকে সঙ্গে করিয়া গমন করিলেন॥

## এরচের তোরক স্থানে ছলম ও তুরের নিকট গমন ও তথায় শিরোচ্ছেদ হওনের বিবরণ॥

ছলম ও তুর উভয়ে একত্র হইয়া সৈন্য প্রস্তুত ও যুদ্ধের আয়োজন করিয়া ইরানে এরচের সঙ্গে যুদ্ধ করিতে যাইবার মানসে ছিলেন, এই সময়ে ফরেদুঁর পত্র লইয়া এরচ আসিয়া পৌঁছিল, ইহা শুনিয়া দুই ভ্রাতা নগর হইতে কতক দূর অগ্রসর হইয়া পিতার পত্র এরচের নিকট হইতে লইয়া জ্ঞাত হইয়া এরচের সহিত আলিঙ্গন পূর্ব্বক তাহাকে আপন বাটীতে আনিয়া রাখিলেন, এরচ পরম সুন্দর এবং অল্প বয়স ছলম ও তুরের সেনা ও সভাস্থ ও প্রজাবর্গ এরচকে দেখিয়া পরস্পর কহিতে লাগিল যে এই ব্যক্তি বাদসাহর উপযুক্ত, পরে এরচ আপন ভ্রাতাদিগের নিকটে হইতে গাত্রোত্থান করিয়া আপন বাসস্থানে গেল, তৎসময়ে সভাস্থ অনেক প্রধান লোক ও সেনাপতি গণ তাহার সঙ্গে গমন করিল। ছলম ও তুরের সভাস্থ এক ব্যক্তি এই কথা জানাইল যে তোমারদিগের সকল সেনা এরচের বাধ্য হইয়াছে। এবং তাহাকে বাদসাহ করিবে এমত মানস করিয়াছে, ছলম ও তুরের হিংসাগ্নি এরচের আসাতে স্নেহজলে প্রায় নির্ব্বাণ হইয়াছিল কিন্তু এই সকল লোকের এরচের প্রতি অধিক স্নেহ দেখিয়া সেই হিংসাগ্নি প্রবল হইয়া উঠিল তখন ছলম ও তুর দুই ভ্রাতায় কহিল যে এরচ থাকিলে আমারদিগের বাদসাহি কোনমতে থাকিবেক না ইহাকে নষ্ট না করিলে আমারদিগের ধন ও রাজ্য ও প্রাণ সকলই যাইবে, সভাস্থ সকল ও সেনাপতি গণ আমারদিগের বিনা অনুমতিতে তাহার নিকটে সর্ব্বদা

যাইতেছে, হে তুর! শীঘ্র ইহাকে নষ্ট করহ। ছলম তুরকে নষ্ট করিতে কহিল তাহার কারণ এই যে এরচ তুরের বাটীতে আসিয়াছিল তুর তাহা স্বীকার করিল। পরদিবস এরচ তুরের নিকটে আইলে তুর তাহাকে কহিল তুই ইরানের তক্তে বসিয়া বাদসাহি করিতে কেন স্বীকার করিলি, আমরা জ্যেষ্ঠ হইয়া বন ও পর্ব্বত ও শত্রুবেষ্ঠিত দেশ লইয়া সর্ব্বদা যুদ্ধবিগ্রহ করিয়া তোর অধীন থাকিব, আর কনিষ্ঠ তুই পৈতৃক নিষ্কণ্টক ইরানের রাজ্যের বাদসাহি করিবি, পিতা বৃদ্ধ হইয়া তোর স্নেহে ধর্ম্ম বিরুদ্ধ কর্ম্ম করিলেন, অর্থাৎ জ্যেষ্ঠকে পৈতৃক রাজ্যে অভিষিক্ত না করিয়া কনিষ্ঠকে রাজ্য দিলেন, তুই আমারদিগের সম্মান না রাখিয়া সেই অংশ কেন গ্রহণ করিলি এরচ এই সকল কথা শুনিয়া কহিল হে ভ্রাতঃ আমি এমত প্রার্থনা কখন করি নাই পিতা অংশ করিয়াছিলেন তাহা তোমরা লও আমি তোমারদিগের কনিষ্ঠ ভ্রাতা তোমারদিগের নিকট অধীন হইয়া থাকিলাম, এরচ এই রূপ বিস্তর মিনতি করিতে লাগিল কিন্তু তুর তাহা না শুনিয়া ক্রমে আরো ক্রোধ যুক্ত হইয়া যে স্বর্ণ নির্ম্মিত চৌকিতে বসিয়াছিল তাহা হইতে উঠিয়া সেই চৌকি লইয়া এরচের মস্তকে মারিল। পরে এরচের হস্তপদ বন্ধন করিল তখন এরচ প্রাণের আশা ত্যাগ করিয়া কহিল যে পরমেশ্বরকে ও বৃদ্ধ পিতাকে স্মরণ করিয়া আমাকে নষ্ট করিও না রক্ষা করহ, বিশেষতঃ তোমাদিগের শরণাগত হইয়া আশ্রয় লইয়াছি, শরণাগত ও আশ্রিতকে নষ্ট করিলে ঈশ্বর অবশ্যই তাহার প্রতিফল দিবেন। এরচের এই করুণাবাক্য কোন মতে কর্ণে স্থান না দিয়া এক সুতীক্ষ্ন অস্ত্র দ্বারা তৎক্ষণাৎ এরচের মস্তক ছেদন করিল, এবং সেই ছিন্ন মস্তক এক সিন্ধুকের মধ্যে রাখিয়া মৃগনাভি দ্বারা ঢাকিয়া

সিন্দুক বন্ধ করিয়া ফরেদুঁর নিকটে কহিয়া পাঠাইল যে এখন এরচের মস্তকে যেমন রাজ মুকুট দিয়া সুসজ্জিভূত করিতে বাঞ্ছা থাকে তাহা করহ, এখানে ফরেদুঁ এরচের নিমিত্ত ফিরোজার এক তক্ত ও নানা বিধ রত্নের নির্ম্মিত এক মুকুট প্রস্তুত করিয়া পথ নিরীক্ষণ করিতেছিলেন এই সময়ে এরচের সমভিব্যাহারির মধ্যে এক জন আসিয়া কান্দিয়া কহিল যে ছলম ও তুর একত্র হইয়া এরচের মস্তক ছেদন করিয়াছে, এই অশুভ বাক্য শ্রুতমাত্র ফরেদুঁ তক্ত হইতে অধৈর্য্য হইয়া ভূমে পড়িয়া রোদন করিতে লাগিল। এবং সভাস্থ সকলেও রোদন করিতে লাগিল, কিঞ্চিদ্বিলম্বে সম্বিত পাইয়া আপনি ও সভাস্থ. সকলে কৃষ্ণবর্ণ বস্ত্র পরিধান করিলেন, আর নানা বিধ বাদ্য যন্ত্র পতাকাদি এরচের সঙ্গে গিয়াছিল তাহা ভাঙ্গিয়া ও ছিঁড়িয়া ফেলিতে আজ্ঞা করিলেন। ফরেদুঁ তদবধি কৃষ্ণবর্ণ বস্ত্র ভিন্ন অন্য বস্ত্র পরিধান করেন নাই, পরন্তু এরচের পুষ্পোদ্যানে ঐ মৃত পুত্রের গোর দিলেন, এবং ঈশ্বরের নিকটে সর্ব্বদা রোদন করিতে লাগিলেন, আর সর্ব্বদা এই প্রার্থনা করিতেন যে হে ঈশ্বর! আমাকে কিছু দিন জীবদ্দশায় রাখ এবং এরচের বংশ হইতে এমত এক সন্তান দেও যে তাহার পিতৃশত্রু গণকে নষ্ট করে।

---

## এরচের অন্তঃপুরে বেগমদিগের গর্ভ অনুসন্ধানের বিবরণ॥

কিছু দিন পরে ফরেদুঁ এরচের অন্তঃপুরে গমন করিয়া বেগমদিগকে ডাকাইয়া জিজ্ঞাসা করিলেন যে তোমরা কেহ গর্ভবতী হইয়াছ কি না? তাহারা কহিল যে মাহ আফরিদ নামে বেগম এরচ হইতে গর্ভ ধারণ করিয়াছে, ফরেদুঁ ইহা

শুনিয়া তুষ্ট হইয়া কহিলেন যে পরমেশ্বরের নিকটে এই প্রার্থনা যে এক পুত্রসন্তান হইয়া আপন পিতৃ শত্রু গণকে নিপাত করুক, কিয়দ্দিবস পরে ঈশ্বর ইচ্ছায় মাহ আফরিঁদ বেগম এক কন্যা প্রসব হইল যখন ঐ কন্যা বিবাহের যোগ্যা হইল তখন ফরেদুঁর ভ্রাতৃষ্পুত্র পসঙ্গ নামে এক জন ছিল তাহার সঙ্গে বিবাহ দিল।

---

## মনুচেহরের জন্ম ও বাদসাই ॥

কিছু দিন পরে তাহার এক পুত্র হইল তাহার নাম মনুচেহর সাহ রাখিলেন তাহাকে দেখিয়া ফরেদুঁর এমত আহ্লাদ হইল যেমত এরচকে পুনরায় পাইলেন। ক্রমে তাহাকে বিদ্যাভ্যাস ও রাজ নীতি ও যুদ্ধ শিক্ষা করাইল, যখন ঐ মনুচেহর যুবক হইল তখন রাজ্যাভিষেক করিয়া তক্তে বসাইয়া আপনি বাদসাহি তাজ তাহার মস্তকে দিয়া মন্ত্রিবর্গ ও সেনাপতিদিগকে কহিলেন মনুচেহর তোমারদিগের বাদসাহ, তোমরা ইহারি আজ্ঞাবহ ও অধীন হইয়া কর্ম্ম করহ, সকলেই ফরেদুঁর আজ্ঞা শিরধার্য্য করিয়া স্বীকার করিল। তদনন্তর ফরেদুঁ কহিলেন যে তুমি আপন মাতামহর বধের পরিবর্ত্তে তাহার শত্রুদিগের নিকটে লও, ইহা কহিয়া ফরেদুঁ আপন ভাণ্ডার হইতে সেনা-দিগকে বহু ধন দিলেন, এবং নূতন সেনা অনেক রাখিলেন আর আপনরাজ্যে যত প্রধান ও বলবান্ লোক ছিল সকলকে ডাকাইয়া যুদ্ধে সহায় হইতে কহিলেন। ছলম ও তুর শুনিল যে এরচের সন্তানকে ফরেদুঁ তক্তে বাদসাহ করিয়া বসাইয়া অনেক সেনা সংগ্রহ করিয়া যুদ্ধের আয়োজন করিতেছে ইহাতে তাহারা অতি ভীত হইয়া দুই ভ্রাতা পরামর্শ করিলেন যে এক জন দূত কিছু রাজভেট যোগ্য দ্রব্য লইয়া ফরেদুঁর নিকটে

গিয়া জ্ঞাতকরে যে আমরা রাগান্ধ হইয়া কুকর্ম্ম করিয়াছি আর দৈব ঘটনা এই ছিল আপনি পিতা আমরা সন্তান আমার-দিগের এ অপরাধ মার্জ্জনা করিবেন যদ্যপি আমারদিগের উৎকট অপরাধ বটে কিন্তু আপনি পিতা সন্তানের অপরাধ অবশ্য ক্ষমা করিতে হইবেক। এইমত কহিয়া ফরেদুঁর নিকটে এক দূত পাঠাইলেন দূত তথায় পৌছিয়া বাদসাহকে প্রণাম করিয়া ঐ ভেটদ্রব্য রাখিল, বাদসাহ তাহাকে এক চৌকিতে বসিতে আজ্ঞা করিলেন, আর মনুচেহরকে কহি-লেন যে তোমার শত্রুগণ ভীত হইয়া ভেট পাঠাইয়াছে এ তোমার সুমঙ্গল শুভদায়ক হইল। পরে দূত ছলম ও তুরের স্তুতি ও মিনতির যে সকল কথা তাঁহারা কহিতে আজ্ঞা করি-য়াছিলেন তাহা নিবেদন করিল, আর কহিল তাহারদিগের অপ রাধ মার্জনা করিয়া মনুচেহরকে তথায় পাঠাইলে তাঁহারা আপ নার আজ্ঞাকারি হইয়া মনুচেহরের অধীন থাকেন। ফরেদুঁ এই কথা শুনিয়া হাস্য করিয়া দূতকে কহিলেন তোমার প্রমু-খাৎ তাহারদিগের কথা শুনিলাম ইহার উত্তর যেমত কহি তাহা সেই দুই পাপিষ্ঠ নির্দ্দয়কে গিয়া কহ যে এখন মনুচেহরের উপর তাহারদিগের অত্যন্ত স্নেহ হইয়াছে, এরচ তাহারদিগের কনিষ্ঠ সহোদর তাহারদিগের সহিত সাক্ষাৎ করিতে গিয়াছিল তাহার মস্তক কি অপরাধে তাহারা ছেদন করিল, আরবার আমি মনুচেহরকে তাহারদিগের নিকটে কি প্রকার পাঠাই যদি পুনরায় এরচের ন্যায় ইহার মস্তক ছেদন করে। ভাল তাহারা মনুচেহরকে দেখিতে বাঞ্ছা করিয়াছে মনুচেহর আপ নি অতিশীঘ্র সেনা সঙ্গে লইয়া তাহারদিগের সহিত সাক্ষাৎ করিতে যাইতেছে, এই কথা দুই পাপিষ্ঠকে কহিব? পরে প্রধান সেনাপতি ও যোদ্ধাদিগের ( কাওয়া। তাহার পুত্র

সাপুর, সেরোষয়, কারণ, নরিমান, ছাম, করসাস্প, কস্তো-স্নাদ, গোদরজ, গেও প্রভৃতি সকলকে ডাকাইয়া ঐ দূতকে দেখাইয়া কহিলেন ইহারদিগের সঙ্গে মনুচেহরকে রণস্থলে অবিলম্বে দেখিতে পাইবে, ইহা কহিয়া পরে দূতকে কহিলেন এরচের প্রাণের ও মস্তকের পরিবর্ত্তে আমি এই ধন ও রত্ন সেই দুই দুর্ভাগ্যদিগের নিকট হইতে কি গ্রহণ করিব? তুমি এসকল ফিরিয়া লইয়া যাও এরচের রক্তে যে বৃক্ষ জন্মিয়াছে তাহার ফল অতিশীঘ্র পাইবেক, দূত ফরেদুঁর এই সকল বাক্য শুনিয়া ভীত হইয়া প্রস্থান করিল। ছলম ও তুর একত্র বসিয়াছিলেন এই সময়ে দূত আসিয়া সমুদয় বৃত্তান্ত বিস্তারিতরূপে কহিল, ছলম ও তুর ইহা শুনিয়া বড় ভীত হইয়া ছলম তুরকে কহিল যে মনুচেহর আমারদিগের প্রতি আক্রমণ করিবার পূর্ব্বে আমরা তাহার উপর আক্রমণ করি, যেহেতু এখানে সে আইলে আমরা সশঙ্কিত থাকিব, আর আমরা সেখানে আক্রমণ করিলে সে ভীত হইবেক অতএব আর বিলম্ব করা উচিত নহে। পরে আপনং দেশ হইতে সেনা সকলকে আনাইয়া ইরানে মনুচে-হরের প্রতি আক্রমণ করিলেন ফরেদুঁ ইহা শুনিয়া কহিল যে উত্তম হইয়াছে যে ইহারা আপনা হইতেই আসিয়াছে, যেমন যে মৃগের মৃত্যু উপস্থিত হয় সে আপনি ব্যাধের গৃহে আইসে ইহাও সেইরূপ জানিবা। যখন ছলম ও তুর সসৈন্যে ইরানের নিকটে পৌছিল তখন ফরেদুঁ সেনাপতিগণকে কহি-লেন তোমরা ধৈর্য্য হও পেসদস্তি অর্থাৎ তোমরা প্রথমে আঘাত করিবা না, যখন তাহারা নগরের সন্নিকটে আইল তখন মনু-চেহর ফরেদুঁর নিকট যুদ্ধের অনুমতি চাহিলেন।

## মনুচেহর তুর ও ছলমের যুদ্ধে গমন।

ফরেদুঁ প্রধান সেনাপতি ও সেনাদিগকে ডাকাইয়া যে যে দিগের সৈন্যাধক্ষ ও যেরূপ যুদ্ধ করিবেক তাহা পরামর্শ দিয়া মনুচেহরকে যুদ্ধে পাঠাইলেন, এবং আপনার জয়যুক্ত যে কাবিয়ানি নিশান ছিল তাহা অগ্রে করিয়া যাইতে আজ্ঞা করিলেন। তিনলক্ষ সেনা তীর ধনুক তলয়ার গদা ইত্যাদি নানা অস্ত্র লইয়া রণবাদ্য বাজাইতে২ মনুচেহর বাহির হইয়া যেখানে ছলম ও তুর শিবির করিয়া রহিয়াছিল তাহার দুই ক্রোশ ব্যবধানে মনচেহর শিবির করিয়া থাকিলেন, এবং আপনার সেনার চতুর্দ্দিগে রক্ষক রাখিলেন যেমন বিপক্ষগণ কোনমতে সৈন্য মধ্যে প্রবেশ করিতে না পারে। তুর ইহা শুনিয়া তাহার নিকটে আসিয়া কোবাদ নামে এক সেনাপতির চৌকি সেই দিগে ছিল তাহাকে ডাকিয়া কহিল এই নূতন বাদসাহ যাহার পিতার নাম কেহ জ্ঞাত নহে তাহাকে গিয়া বল আমারদিগের এক জনের সঙ্গে তাহার যুদ্ধ করা সুকঠিন আমরা দুই জন আসিয়াছি সে কি করিবে! কোবাদ কহিল তুমি ক্ষণেক স্থির হও তোমার এই কথা আমারদিগের বাদসাহকে জানাইলে যাহা কহিবেন তাহা শীঘ্র আসিয়া তোমাকে কহিব, কিন্তু তোমরা অতি কুকর্ম্ম করিয়াছ তোমারদিগের নিকটে এরচ গিয়া শরণাগত হইয়াছিল তাহাকে তোমরা নষ্ট করিয়াছ ইহাতে ইহলোক ও পরলোকে মন্দ হইবেক। আর রণ স্থলে আমরা যুদ্ধে হত হইলে সকলে প্রশংসা করিবে, এবং পরে স্বর্গলাভ হইবে। তুর এই কথা শুনিয়া লজ্জিত হইয়া আপন শিবিরে গমন করিল, কোবাদ আসিয়া মনুচেহরকে সকল সম্বাদ জানাইল সে রাত্রি উভয় সৈন্য সতর্ক থাকিয়া রাত্রি

প্রভাত করিলেন, প্রাতে যুদ্ধ আরম্ভ হইয়া উভয়ের অনেক সেনা নষ্ট হইল, তাহাতে সেই রণক্ষেত্রে রক্তের শ্রোতবহিতে লাগিল, সন্ধ্যার সময় যুদ্ধ স্থকিত হইয়া উভয় পক্ষের সৈন্যের রক্ষক বসিল, সন্ধ্যার পর ছলম ও তুর একত্র বসিয়া পরামর্শ করিল যে অদ্য যুদ্ধে মনুচেহ্‌রের সেনাগণ প্রবল হইয়াছে কি জানি যদি কল্য আরো প্রবল হয়, অতএব আমার মত এই যে রাত্রে যখন বিপক্ষ গণ নিদ্রিত হইবে তখন আমরা তাহারদিগের উপর পড়িয়া সকলকে নষ্ট করি, জাসুসেরা তৎ-ক্ষণাৎ আসিয়া এই সম্বাদ মনুচেহ্‌রকে জানাইল মনুচেহ্‌র শুনিয়া কারণ নামে সেনাপতিকে ডাকিয়া সমস্ত বিবরণ কহি-য়া কহিল তুমি সমস্ত সেনা লইয়া অতি সাবধানে থাকহ, আমি ত্রিশসহস্র সেনা লইয়া কিঞ্চিৎ দূরে থাকি সেইরূপ করিল, যখন অধিক রাত্রি এবং অন্ধকার হইল তখন তুর একলক্ষ সেনা সমভিব্যাহারে মনুচেহ্‌রের সেনার মধ্যে আসিয়া পড়িল, ইহারা পূর্ব্ব সম্বাদ পাইয়া সতর্ক ছিল যুদ্ধ করিতে প্রবর্ত্ত হইল, এবং মনুচেহ্‌র এই যুদ্ধের সমাচার পাইয়া আপন সেনা লইয়া তুরের পৃষ্ঠদেশে আসিয়া তুরের সঙ্গে যুদ্ধ আরম্ভ করিল, তখন তুর কাতর হইয়া পলাইবার পথ অন্বেষণ করিতে লাগিল। এই সময়ে মনুচেহ্‌র তুরের পৃষ্ঠদেশে এক বর্শা আঘাত করিয়া তাহাকে ঘোটক হইতে উঠাইয়া ভূমে পতিত করিয়া তাহার শিরচ্ছেদ করিয়া তৎক্ষণাৎ ফরেদুঁর নিকটে পাঠাইল আর আপনি ছলমের পশ্চাৎ ধাবমান হইল ছলম মনুচেহ্‌র তুরকে যেরূপ করিয়া নষ্ট করে তাহা দেখিয়া ভীত হইয়া পলায়ন করিয়া নিকটস্থ এক দুর্গ মধ্যে প্রবেশ করিয়া প্রাণ রক্ষা করিল, কিন্তু মনুচেহ্‌র তাহার পশ্চাৎগামি হইয়া সেই স্থান সৈন্যদ্বারা বেষ্টিত করিলেন। ছলমের এক সেনাপতি কাকোয় নামে

ছিল সে দুর্গ হইতে বাহির হইয়া মনুচেহরের সঙ্গে যুদ্ধ করিতে প্রবর্ত্ত হইল, মনুচেহরের কটীবন্দে কাকোয় এক বরছিমারিল কিন্তু তাহাতে কটীবন্দভেদহইলনা, পরে মনুচেহর তাহার কটিরবন্দধরিয়া বলপ্রকাশকরিয়া অশ্বহইতে ভূমে ফেলিয়া তাহার মস্তক ছেদন করিল, ইহা দেখিয়া আর কেহু যুদ্ধে আইলনা। মনুচেহর সেইদুর্গ বেষ্টন করিয়া কয়েক দিবস থাকিয়া একদিন ছলমকে কহিয়া পাঠাইলেন জে বাহির হইয়া আমার সঙ্গে যুদ্ধ করহ যদি আমাকে জয় করিতে পার তবে পৃথিবীর বাদসাহ হইবে, আর যদি যুদ্ধে প্রাণ ত্যাগ কর সর্গ লাভ হইবে স্ত্রিলোকের ন্যায় লুকা ইয়া থাকায় কেবল দুর্নাম ছলম এই বাক্যে ঘৃনাযুক্ত হইয়া বাহির হইয়া মনুচেহরের সঙ্গে যুদ্ধে প্রবর্ত্ত হইল ঃ মনুচেহর অতি আশু এক তলওয়ার তাহাকে মারিলেন তাহাতে তাহার মস্তক দুই খণ্ড হইয়া ভূমে পড়িল তাহা দেখিয়া তাহার সেনাপতি ও প্রাধন সৈন্যাধক্ষ সকলে আসিয়া মনুচেহরের শরণাগত হইয়া উপঢৌকন দিলেন মনুচেহর যুদ্ধে জয়ি হইয়া ফরেদুঁর নিকট আইলেন ফরেদুঁ অগ্রসার হইয়া বাহু উত্তোলন পূর্ব্বক ঈশ্বরের ধন্যবাদ করিয়া মনুচেহরকে ক্রোড়ে লইয়া শিরে চুম্বন করিলেন ; আর মনুচেহর ফরেদুঁর পদধুলি লইয়া প্রণাম করিল পরে দুইজনে একত্রে তক্তে বসিয়া নৃত্যগীত ও মাঙ্গলিক কর্ম্ম করিতে অনুমতি করিলেন ঃ কিছুদিন পরে ছামের হাতে মনুচেহরকে সমর্পণ করিয়া ফরেদুঁ চিরস্থানে প্রস্থান করিলেন জমসেদের বংসোদ্ভব ওর্ব্বাতিনের পুত্র ফরেদুঁ পাচ সত্ত বৎসর বাদসাহি করিয়া লোকান্তর হইলেন ॥

॥ ৬ ॥

মনুচেহর বাদসাহর বাদসাহির বিবরণ ।।

মনুচেহর বাদসাহ বাদসাহি তক্তে বসিয়া ফরেদুঁর ন্যায় বিচার ও দান ও প্রজাগনকে স্নেহ পূর্ব্বক প্রতিপালন করিতে লাগিলেন রাজ কর্ম্মের ভার বিসেষ রূপে ছামকে অর্পণ করিলেন, তদনন্তর আপনি ঈশ্বরের আরাধনার পথ প্রদর্শক হইয়া তাবত লোককে সিক্ষ্যা করাইতে লাগিলেন কিছুদিন পরে ছামের এক পুত্র হইল ।।

জালের জন্ম ও ছিমোরগ দ্বারা প্রতিপালন হইবার বিবরণ

ঐ পুত্রের মস্তকের কেশ সমুদয় শ্বেতবর্ণ এনিমিত্ত্য. সপ্তাহ পর্য্যন্তছামকে কেহ জানাইতে পারিলনা তাহার পর এক প্রাচীনা ধাত্রী ছামের নিকট আসিয়া কহিল যে পরমেশ্বর তোমাকে এক আশ্চর্য্য সন্তান দিয়াছেন কেবল তাহার মস্তকের কেশ শ্বেত বর্ণ, ছাম পুত্রকে দেখিয়া বিমর্ষ হইলেন ছামের স্ত্রী ঐ বালকের নাম জাল রাখিল ( জাল সব্দের অর্থ বৃদ্ধ ) ছামের বন্ধু বান্ধব প্রভৃতি সকলে কহিল তোমারঅতি কুলক্ষনযুক্ত পুত্র জন্মিযাছে এপুত্রকেরাখিলে তোমার বিপদ ঘটীবে ইহাকে ত্যাগ করহ; এবং সকল লোকেই উপহাস করিতে লাগিল যে ছামের গৃহে দৈত্যের ন্যায় একসন্তান জন্মিযাছে এইবালক দৈত্যর জন্মিত হইবে ছামের সন্তান নহে, ছাম ঐ বিকৃতি রূপ পুত্র দেখিয়া আর সকল লোকের উপহাসে ভিত্ত হইয়া আপন ভৃত্ত দিগের আজ্ঞা করিল জে এইবালককে নগরের প্রান্তে আলবোরজ পর্ব্বতে রাখিয়া আইস তখন ঐ সকল ভৃত্তরা সেই দুগ্ধ পোস্য বালককে লইযা আলবোরজ পর্ব্বতে রাখিয়া আইল

ঐ পর্ব্বতোপরি এক ছিমোরগ নামে একবৃহৎ পক্ষির বাশা ছিল তাহার দুইটি সাবক হইয়াছিল তাহারদিগের আহার আনিতে ঐ পক্ষ রাজ গিয়াছিল আহারের দ্রব্য লইয়া আসিবার সময়ে উক্ত পর্ব্বতের অধঃস্থানে বালকের রোদন শুনিয়া ঐখানে আসিয়া ঐ বালককে নষ্ট নাকরিয়া জীবত মান ওষ্টে করিয়া আপন সাবকের দিগের নিকটে দিলএবং আর ২ খাদ্য দ্রব্য যাহা আনিযাছিল তাহাও দিল, পক্ষর সাবকেরা ঐ বালককে নষ্ট নাকরিয়া স্নেহ করিতে লাগিল তাহা দেখিয়া ঐ ছিমোরগ তাহাকে আপন সন্তান দিগের সঙ্গে প্রতিপালন ও স্নেহ করিতে লাগিল কয়েক বৎসর পরে ছিমোরগ এক দিন জালকে পর্ব্বত হইতে নামাইয়া দিল, ঈশ্বর ইচ্ছায় ঐসময়ে একজন সওদাগর ঐস্থান দিয়া জাইতে ছিল জালকে দেখিয়া আপনার সঙ্গে লইয়া গেল ঐ রাত্রে জালের পিতা ছাম স্বপ্ন দেখিল যে একজন অতি প্রাচীন ব্যক্তি কহিতেছে তোমার পুত্র জাল ঈশ্বর ইচ্ছায জীবদ্দশায আছে; ছামের নিদ্রাভঙ্গ হইয়া পুত্রের স্নেহে ব্যাকুল হইয়া আপন অনুচর গণকে জালের অন্যা সন করিতে পাঠাইল তাহার পর রাত্রেপুনর্ব্বায় ছাম স্বপ্ন দেখিল যে একজন প্রাচান কহিতেছে যদি বালকের মস্ত কের কেশ শ্বেতবর্ণ এনিমিত্ত্য ঐ বালক তোমার নিকট দোশী তবে তোমার মস্তকের কেশ শেতবর্ণ হইযাছে তবে তুমি দোশী নাহও কেন আর তাহার স্নেহ ত্যাগ করিয়া পর্ব্বতে ফেলিযা দিয়াছ কিন্তু পরম পিতা পরমেশ্বর তিনি তাহাকে প্রতিপালন করিতেছেন, ছাম এই সপ্ন সন্দর্শন করিয়া সসঙ্কিত হইয়া উঠিয়া আলাবোরজ পর্ব্বতে জালের

অনুসন্ধানার্থে গমন করিল, এবং ঈশ্বরের নিকট আপন অপরাধের মার্জনাজন্য অনেক রোদন করিল ছামের ক্রন্দন ধ্বনি ছিমোরগ শুনিয়া ছামের নিকট আইল; ছাম আপন পুত্রের সমাচার ঐ পক্ষরাজকে জিজ্ঞাসা করিল এবং অনেক স্তব করিল ছিমোরগ তথাহইতে উড়িয়া সওদাগরের নিকট গিয়া জালকে আনয়ন করিয়া ছামকে দিল এবং আপনার কয়েকটি পালক জালকে দিয়া কহিল যখন তুমি বিপদগ্রস্ত হইবে তখন এই পালকের একটা অগ্নিতে দগ্ধ করিবা মাত্র তৎখনাত আমিসেই স্থানেগিয়া আপদহইতে তোমাকে উদ্ধার করিব, এপ্রতিপালিকাকে বিস্মৃত হইবানা, পরে ছিমোরগ ছামকে কহিল তোমার এ পুত্ররাজের তুল্য হইবে ছাম জালকে সঙ্গে লইয়া ছিমোরগের নিকট বিদায় হইয়া বাটিতে যাত্রা করিলেন মনুচেহর বাদসাহ এই সম্বাদ পাইয়া আপন পুত্র নৌদর ও সভাস্থ প্রধান লোক সকলকে ছাম ও জালের আগবাডান পাঠাইলেন ছাম ও জাল তাহা দিগেরসঙ্গে বাদসাহার নিকট আসিয়া প্রণাম করিল, বাদ সাহ জ্যোতিষবেত্তা দিগের আজ্ঞা করিলেন যে জালের লক্ষনালক্ষন বিচার করহ, তাহারা জালকে দেখিয়া বিচার করিয়া কহিলেন যে এঅতি বলবান্ হইবে ইহার তুল্য বল বান তোমার রাজ্য মধ্যে এপর্য্যন্ত জন্মে নাই, মনুচেহর এই বাক্য সুনিয়া তুষ্ট হইয়া রত্নালঙ্কার ও নানাপ্রকার অস্ত্র ওঘোড়া জালকে প্রসাদ করিলেন ও ছামকে জাবল দেশের কর্ত্তৃত্বভার অর্পণ করিলেন, আর ছামের গমন কালীন কহিলেন তুমি কিছুদিন জাবল স্থানে থাকিয়া কর্গছারান দেশের সুশাসন করিতেজাইবা। পরে ছামও জাল জাবলে

স্থানে আগমন করিয়া পণ্ডিত ও বলবান দিগকে আনায়ন করিয়া জালকে বিদ্যাশিক্ষ্যা ও মল্লবিদ্যা ও অস্ত্র বিদ্যা শিক্ষ্যা করাইতে লাগিলেন, কিয়ৎকাল পরে জাবলের কর্ম্মাধক্য জালকে করিয়া, ছাম, বাদসাহের আজ্ঞামত কর্গছারান দেশে শাসন করণার্থ যাত্রা করিলেন। জাল সকল বিদ্যা পারদর্শি হইয়া ও রাজকর্ম্ম করিতে লাগিলেন কিছুদিন পরে জোহাকের বংশের মেহরাব নামে একজন কাবল দেশের কর্ত্তাছিল রূদাবা নামা তাহার এক কন্যা পরম সুন্দরি ছিল জাল তাহাকে বিবাহ করিয়া কিছুদিন পরে রূদাবা গর্ব্ভবতী হইল, কিন্তু প্রশব কালিন অতি কষ্ট পাইয়া অচেতন হইল ॥

রোস্তমের জর্ম্মা বিবরণ ॥

তখন জালের ছিমোরগের পালকেরকথা স্মরণহইয়া তাহার একটি পালক দগ্ধ করিল তৎখনাত ছিমোরগ আসিয়া উপস্থিত হইল জাল তাহাকে প্রণাম করিয়া উপস্থিত বিশয় জানাইল তাহাসুনিয়া পক্ষরাজ কহিল এই স্ত্রির গর্ব্ভে যে সন্তান আছে সে মহাবির হইবেক তাহার নাম সুনিয়া ভয়ে ভীত হইয়া অনেক বিরের ও দৈত্য ও সিংহ ব্যাঘ্যাদির প্রাণ ত্যাগ ও অজ্ঞ্যান হইবেক। এসন্তান অতি বৃহদকায় হইয়াছে এইস্ত্রির গর্ভ বিদীর্ণ করিয়া বাহির করহ জাল কহিল এমত উপায়কর যে কেহ নষ্ট নাহয়, পক্ষরাজ ইহা শুনিয়া উড়িয়া গেল কিঞ্চৎ কাল পরে কথকগুলি বৃক্ষমুল আনিয়া দিয়া কহিল ঐ স্ত্রিলোককে মদিরা পান করাইয়া অজ্ঞ্যান করিয়া উদর বিদীর্ণ করত সন্তান বাহির করিয়া এই

সকল মুস পেশন করিয়া উহার উদরোপরি প্রলেপ করিয়া দিবা তৎক্ষণাত পূর্ব্বমত হইবেক। তখন জাল পক্ষ রাজের উপদেশ মত সন্তান বাহির করিয়া ঐ ঔষধ প্রদান মাত্রেই আরোগ্যহইল, তখনবালকদেখিয়া সকলেই আশ্চর্য্য জ্ঞান করিল তাহারনাম রোস্তম রাখিল, জাল ঐ বালকের প্রতিমূর্ত্তি লেখাইয়া করগছারান দেশে জালের পিতা ছামের নিকট পাঠাইল, এবং মেহরাবের নিকটে রোস্তমের জন্ম বিবরণ লিখিয়া সওগাত সমেত পাঠাইলেন রোস্তমকে সাত জন স্ত্রিলোকে স্তন্য দুগ্ধ পান করাইত তদ্ভিন্ন্য গো মহিষ্যাদি পসু দুগ্ধ পান করিত, যখন দুগ্ধ ভিন্নঅন্য ২ দ্রব্য আহার করিতে সিখিল তখন প্রত্যহ পাঁচ টা ছাগ খাইত ঐ দুগ্ধ পোস্য বালকের আহার দেখিয়া সকলে চমৎকৃত হইল কিছুদিন পরে ছাম রোস্তমকে দেখিবার নিমিত্ত্য জাবলে আইল, এবং মেহরাব কাবলের অধিপতি ছামের আগমনের সম্বাদ শ্রবণ করিয়া জাবল স্তানে যাত্রা করিলেন। জালের বাটীতে পৌছিয়া রোস্তম কে দেখিল ইতোমধ্যে ছামের আগমন সংবাদ দিল তাহা শুনিয়া জাল ও মেহরাব ছামকে আনিতে চলিলেন রোস্তম কেও বেশভূষা পরাইয়া হস্তি আরোহনে আপনার দিগের সঙ্গে লইয়া চলিলেন, যখন উভয়ে সাক্ষ্যাত হইল তখন জাল ও মেহরাব অশ্ব হইতে নামিলেন এবং রোস্তম হস্তি হইতে নামিতেছিল তাহাকে ছাম বারণ করিল পরে সকলে একত্র হইয়া বাটীতে আসিয়া তক্তে ছাম বসিলেন দক্ষিণপাশে মেহরাব বামভাগে জাল সম্মুখে রোস্তম কে বসাইয়া শিরচুম্বন করিয়া সকলেআহ্লাদে

মগ্ন হইয়া কয়েক দিবশ আছেন ইতোমধ্যে করগছারানে যে সকল সেনা ও কন্ধাধ্যক্ষ ছাম রাখিয়া আসিয়াছিলেন তাহার দিগের উপর সত্রুরেরা আক্রমন করিতে উদ্যত হই য়াছে এই সংবাদ লইয়া এক জন ধাবক পৌছিল ; ছাম এই সংবাদ শুনিয়া সকলের নিকট বিদায় হইয়া করগছারান দেশে যাত্রা করিলেন জাল ও রোস্তম ছয়স্তানে থাকিলেন মেহরাব কাবলে গেলেন জাবল দেশের রাজধানী যে গ্রামে তাহার নাম ছয়স্তান ; সেইখানে জালদিগের বসত বাটি ছিল ঐ ছয়স্তানে মনুচেহর বাদসাহার এক বৃহৎ শেতহস্তি থাকিত দৈবাত্ত একরাত্রে ঐ হস্তি বন্ধনছির্ণ করিয়া বাহির হইয়া লোকের দিগের তাড়া করিতেছে গৃহদ্বার এবং তার বৃক্ষাদি ভগ্ন করিতেছে ইহাতে সকল লোক শশাঙ্কিত হইয়া কলরব করিতেছে ইহা শুনিয়া জালের বাটির দ্বার পালেরা দ্বার বদ্ধ করিল ঐ কলরবে রোস্তমের নিদ্রা ভঙ্গ হইয়া যেসকলব্যক্তি সেখানে ছিল তাহাদিগের জিজ্ঞাসা করিল যে কিজন্য গোলযোগ হইতেছে তাহারা কহিল বাদ সাহার শ্বেত হস্তি রজ্জু ছিড়িয়া গৃহ হইতে বাহির হইয়া লোক সকলকে তাড়া করিতেছে ॥

রোস্তম বাল্যাবস্থায় হস্তিবধ করিবার বিবরণ

এইকথা শুনিয়া তাহার পিতামহের এক লৌহ গদা লইয়া বাহিরে আসিয়া দ্বার খুলিতে কহিল, দ্বারপালেরা কহিল হস্তি ক্ষিপ্ত হইয়া ভ্রমণ করিতেছে তাহে অন্ধকার রাত্র আর তুমি বালক এইমত রোস্তম কে অনেক বুঝাইল তাহা না শুনিয়া পুনর্ব্বার কহিল শীঘ্র দ্বার মোচন কর কিন্তু দ্বার

পালেরা ঐবাক্যসুনিলনা তখন আপনি দ্বারমুক্ত করিতে অগ্রসর হইল তাহা দৃষ্টকরিয়া তাহারা রোস্তমকে ধারণ করিতে উদ্যত হইল রোস্তম রাগত হইয়া তাহার একজনকে এক মুষ্টিঘাত করল তৎক্ষণাত ঐ ব্যক্তি প্রাণ ত্যাগ করিল। ইহা দেখিয়া আর ২ সকলে পলায়ন করিল, তখন রোস্তম দ্বারের চাবী ভাঙ্গিয়া বাহিরে গিয়া হস্তিরপশ্চাতে চিৎকার করিতে ২ গমন করিল তখন হস্তি সম্মুখ হইয়া রোস্তমের প্রতি আক্রমণার্থে ধাববাণ হইল, রোস্তম সেই গদা তুলিয়া হস্তির মস্তকে প্রহার করিল তাহাতে ঐ পর্ব্বতাকার বারণ ভূমে পড়িয়া প্রাণত্যাগ করিল রোস্তম হস্তি বধ করিয়া গৃহে আইলে জাল এইসকল শ্রবণ করিয়া বিস্ময়াপর্ণ হইয়া ঈশ্বরের স্তব ও প্রণাম ও ধন্যবাদ করিলেন। পরে রোস্তমকে ক্রোড়ে লইয়া শির চুম্বন করিলেন এবং জাল তখন আপন মনে বিচার করিল যে আমার পিতামহ নরিমানের বধের প্রতিফল রোস্তম দিতে পারিবেক ॥

## নরিমানের মৃত্যুর বিবরণ

ফরেদুঁ নরিমানকে অনেক সৈন্য সমভিব্যাহারে ছপন্দ পর্ব্বতে এক ক্ষুদ্র বাদসাহছিল সেই বাদসাহরসহিত যুদ্ধ করিতে পাঠাইয়াছিলেন। নরিমান সেই পর্ব্বতীয় দুর্গ মধ্যে প্রবেশের পথ অনুসন্ধান করিতেছিলেন। ঐ দুর্গস্থ লোক তাহা জানিতে পারিয়া তৎস্থান হইতে একখান বৃহদপাষান উপর হইতে গড়াইয়া ফেলিল সেই বৃহৎপাষাণ নরিমানের উপর পড়িল তাহাতে নরিমানের মৃত্যু হয়। তৎপরে তাহার পুত্র ছাম সৈন্য সামন্ত লইয়া ঐ ছপন্দ পর্ব্বতে যুদ্ধকরিতে গিয়া

তিনবৎসর ঐ দুর্গ বেষ্টন করিয়া ছিল কিন্তু কেল্লাঘেরিয়া থাকিয়া তন্মধ্যে প্রবেশ করিতে নাপারিয়া ফিরিয়া আইলেন। জালএই সকল বৃত্তান্ত রোস্তমকে জ্ঞাত করিয়া অনেক সৈন্য দিয়া ছপন্দ পর্ব্বতে রোস্তমকে পাঠাইলেন, জালের পিতা ছাম কর্গছারনদেশেছিল তাহাকে ও এই বৃত্তান্ত লিখিলেন, ছাম এই সংবাদ প্রাপ্ত হইয়া অত্যন্ত ভাবিত হইয়া মনোমধ্যে বিবেচনা করিল যে রোস্তম বালক কখন যুদ্ধ করেনাই কি জানি কিঘটে এই মনে চিন্তা করিয়া আপন সৈন্য লইয়া রোস্তমের সহায়ার্থে তথায় আসিয়া ঐ দুর্গ বেষ্টন করত কিয়ৎকাল থাকিয়া দুর্গ মধ্যে প্রবেশের কোন উপায় নাদেখিয়া নিরাসা হইয়া রোস্তমকে বাটীতে বিদায় করিয়া ছাম কর্গছারন দেশে গেলেন। ইহারা ঐ স্থান হইতে প্রত্যাগমম করিলে পর্ব্বতের বাদসাহ পূর্ব্বমত দুর্গস্থ দ্বার মুক্ত করিয়া গতাআত ও ক্রয় বিক্রয় করিতে লাগিল, জাল এই সংবাদ শুনিয়া রোস্তমকে কহিল যে তুমি ছদ্ম বাণিজ্য কারি বেশ ধারণ করিয়া গমন করিলে দুর্গমধ্যে অনায়াশে প্রবেশ করিতেপারিবা, তথায় প্রবেশ হইলে অনেক উপায় করিতে পারিবা।

### রোস্তম ছপন্দ পর্ব্বতে সওদাগর বেশে গমন করিয়া পর্ব্বত দখল করিবার বিবরণ॥

রোস্তম ইহা শুনিয়া সম্মত হইয়া সে স্থানে লবন অতি দুষ্প্রাপ্য ও দুর্ম্মূল্য জানিয়া কয়েকটা উষ্ট্রেলবন বোঝাইকরিয়া কয়েকজন বলবান্ ব্যক্তি ও আপনি সওদাগরের ন্যায় বস্ত্র পরিধান করিয়া অস্ত্র শস্ত্র ও যুদ্ধ সজ্জা লুক্কাইত করিয়া

হুপন্দ পর্ব্বতে যাত্রা করিল ; কএক দিনপরে দুর্গদ্বারে উপ স্থিত হইলেন তথাকার রক্ষকেরা বাদসাহকে জ্ঞাত করিল যে একজন বানিজ্যকারি লবন বিক্রয় করিতে আসিয়াছে , বাদ সাহ ইহা শ্রবণে আনন্দিত হইয়া ঐ বানিজ্যকারি দিগকে দুর্গমধ্যে আনিতে আজ্ঞা করিলেন। রোস্তম দুর্গমধ্যে আসি য়া একস্থানে বাসা করিলেন পরে লবনের ব্যাপারি আসি য়াছে এই জনরব হওয়াতে আবালবৃদ্ধ বনিতা লবন ক্রয় ক রিতে আইল , সমস্ত দিবস রোস্তমের অনুচরেরা লবনবিক্রয় করিয়া সন্ধ্যার পর রোস্তম মল্লগণকে লইয়া যুদ্ধের বেশ ধারণকরিয়া অস্ত্রশস্ত্রলইয়া দুর্গস্থমনুস্যদিগর প্রতিঅত্যাচার করিতেআরম্ভ করিল, তথাকাররক্ষক ইহাশুনিয়াকথকগুলীন লোকসঙ্গেকরিয়া আইল, রোস্তম একগদাঐ রক্ষকের মস্তকে প্রহার করিল; তাহাতে ঐ রক্ষক তৎক্ষণাত প্রাণত্যাগ করিল বাদসাহএইসংবাদ শ্রুতমাত্রকতিপয় সৈন্যলইয়া আপনি যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্তহইল। রোস্তমসমস্তরাত্রিদুর্গস্থ লোকের সহিত যুদ্ধ করিয়া অনেক মনুস্যকে নষ্ট করিয়া তৎপরে বাদসাহকে বিনাশকরিল তাহা দেখিয়া অবশিষ্ট সেনাও আর ২ লোক সকলে পলায়ন করিল। পরে রোস্তম সেই বাদসাহার বাটীতে গিয়ে যতধন ওরত্নাদি তাবৎ করস্থ করিয়া আপন পিতার নিকটে লিপি প্রেরণ করিলেন , যে হুপন্দ পর্ব্বতস্থ বাদসাহকে বধ করিয়া উক্তস্থান গ্রহণ করিয়াছি , অধুনাআপনি যেমতঅনুমতি করিবেন সেইমত করিব। জাল এই পত্র পাইয়া অত্যান্ত আহ্লাদিত হইয়া পুত্রকে লিখিলেন যে সেই দুর্গ ভগ্নকরত সমভূমি করিয়া তথাকারধন ও রত্নাদি যাহা আনিবার যোগ্য তাহাই লইয়া বাটীতে আসিবা ;

রোস্তমএমত করিল যথন রোস্তম বাটীতেআইল তথন জাল অগ্রসর হইয়া রোস্তমকেআলিঙ্গন ও সির চুম্বন করিয়া অনেক ধন বিতরণ করিল। রোস্তম যুদ্ধ জয় করিয়া আসিবার সময়ে আপন পিতামহ ছামকে এই শুসংবাদ লিখিয়াছিল পরে বাটীতে পৌছিলে জাল ঐ লুটীত বহুমুল্যরত্নাদি কথক গুলিন আর এক পত্র লিখিয়া ছামের নিকট পাঠাইল, ছাম এই শুসংবাদ ও ধন প্রাপ্ত হইয়া আহ্লাদিত হইল, এবং ইরানের সকললোক ইহাশুনিয়া সন্তুষ্টহইয়া ধন্যবাদ ও প্রশংসা করিল। তথন মনুচেহর বাদসাহর একশত বিসতি বৎসর বাদসাহি হইল ঐসময়ে পণ্ডিত ও জ্যোতিষ বেত্তারা মনূচেহর বাদসাহাকে জানাইলেন যে আপনকার নিত্যধামে গমনের কাল নিকট হইয়াছে ইহা শুনিয়া মনচেহর বাদসাহ আপন পুত্র নওদর কে রাজনীত ও হিতোউপদেশ শিক্ষা করাইয়া রাজ্যে অভিসিক্ত করিলেন, ঈশ্বরের ভজনার যেসকল নিয়ম আমি করিয়াছি তুমি ও সেই নিয়ন মত ভজনা করিবা শুনিতেছি মূছা নামে একজন আপনাকে ঈশ্বরের পেগম্বর (অর্থাৎ অবতার বিশেষ) বলিয়া আপনাকেপ্রকাশ করিয়া অনেক মনস্যকে আপন মতাবলম্বি করিযাছে; আর ফরউন বাদসাহ কে নষ্ট করিযাছে শুনিলাম তুমি তাহর মতাবলম্বিহইবা, এবং আর কহিল ছলম ও তূরের পুত্রেরা পসঙ্গ প্রভৃতি তোমার প্রতি আক্রমণ করিবে; তাহারদিগের সহিত যুদ্ধে তুমি অসক্ত অতএব যথন তাহারা আসিবে তথন ছাম ও জালকে এখানে আনাইয়া তাহারদিগের পরামর্ষ মত কর্ম্ম এবং সেনাপতি তাহাদিগে কে করিবা আর জালের পুত্র রোস্তম এইক্ষণে বালক ক্রমে সে ও তোমার দিগের অনেক উপ

কার করিবে, এইমত বহুবিধ হিত বাক্য ও নীতিশিক্ষা নও দর কে করাইয়া তৎপর আপনি চিরস্থানে গমন করিলেন। মনুচেহর বাদসাহ একশতবিংশতি বৎসর বাদসাহি করেন॥

মনুচেহর বাদসাহর পুত্র নওদর বাদসাহর বিবরণ॥

নওদর বাদসাহি তক্তেবসিয়া অত্যল্প দিবস তাঁহার পিতা মনুচেহরের আজ্ঞাওনীতিমত রাজকার্য্য ওধর্ম্মানুষ্টান ও ঈশ্বরের আরাধনা করিলেন। তাহার পর ক্রমে দুর্বুদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া প্রজার প্রতি দৌরাত্ম্যআরম্ভ করিলেন, তাহাতে প্রধান ২ লোক ও প্রজারা ভিত্তহইয়া অন্য ২ বাদসাহ দিগে কে পত্র লিখিল যে আপনারা আসিয়া ইরানের বাদসাহি গ্রহণ করিয়া আমাদিগে কে রক্ষ্যাকর, নওদর শুনিলেন যে সেনা ও প্রজা সকলেই তাঁহার বিপক্ষ হইযাছে। শত্রুরা শীঘ্র আমার রাজ্য আক্রমণ করিবেক ঃ ইহা বিবেচনা করি যা ছামকে পত্র লিখিলেন যে আপনি ইরানের বাদসাহ দিগের পূরুষানুক্রমের হিতাভিলাষি বন্ধু রক্ষক এবং বীর আপনার ভরসা প্রযুক্ত আমি অন্য বাদসাহ দিগকে গন্য করিনা; কিন্তু এইক্ষণে এখানকার প্রধানেরা প্রজার দিগের সহিত ঐক্য হইয়া আমার বিরুদ্ধাচরণ করিতেছেন। এই সন্দেহ প্রযুক্ত আপনাকে লিখিতেছি আপনি আসিয়া হিতা হিত বিবেচনা করিয়া যে কর্ত্তব্য তাহা করিবেন; ছাম নও দর বাদসাহার এই লিপি প্রাপ্তে ভাবিত হইয়া মাজন্দরান দেশহইতে ইরানে যাত্রা করিল। যখন ইরানের নিকটে উপ স্থিত হইল তখন ইরানের প্রধান লোক সকল একত্র হইয়া ছামের নিকটে গিযা কহিলেন যে আপনি নওদর কে বন্ধ

করিয়া বাদসাহ হও; আমরা সকলে সন্মত আছি; আপনার আজ্ঞাবর্ত্তি হইয়া তাবৎ কর্ম্ম সমপন্ন করিব। ছাম ইহা শুনিয়া কহিল আমি মনুচেহর বাদসাহর অন্নে পুরুষানুক্রমে প্রতিপালন হইয়া আসিতেছি ও হইতেছি; মনুচেহর বাদসাহর যদি কন্যাও থাকিত তাহাকে আমি এই তক্তে বাদসাহ করিয়া বসাইতাম, নওদর তাহার উপযুক্ত পুত্র রাজ্য করিতেছে ইহাকে বদ্ধ কি নষ্টকরা এমত কৃতঘ্নতা কর্ম্ম আমাহইতে কখনই হইবেকনা। আর নওদরেতে ও রোস্তমেতে আমার তুল্য স্নেহ ভিন্ন বোধ নাই, আপনারা আমার অনুরোধ ক্রমে নওদরের প্রতি প্রসন্ন হও। ছামের এতৎ বাক্য হেলন করিতে নাপারিয়া সন্মত হইলেন, তখন ছাম প্রধান বগ সকলকে লইয়া নওদরের নিকটে গিয়া বাদসাহকে ও প্রজার দিগের সকলকেই সুস্থির করিল, কিন্তু অন্য২ বাদসাহরা পত্র পাইয়া আর কেহআইলনা। কেবল তুরানের বাদসাহ তুরের পুত্র পসঙ্গ পত্র পাইয়া তাহার জ্যেষ্ট পুত্র আফরাছিয়াব অতি বলবান ও যোদ্ধা তাহাকে ডাকাইয়া কহিল যে তোমার পিতামহ তুরকে মনুচেহর, তাহার পৈত্রিক শত্রু বলিয়া নষ্ট করিয়াছে। অতএব মনুচেহর তোমার পৈত্রিক শত্রু সে অবর্ত্তমানে তাহার পুত্র নওদর আছে সেও শত্রুবটে তোমার উচিত এই যে তোমার পিতামহর বধের পরিবর্ত্তে ইরানে গমন করিয়া মনুচেহরেরপুত্র নওদরের মস্তক ছেদন করহ। মনচেহর বর্ত্তমান থাকিতে আমি তাহার সম যোগ্য যোদ্ধা নহে বুঝিয়া ক্ষান্ত ছিলাম, এক্ষণে নওদর বালক এবং প্রজারা ও প্রাধান লোক সকল তাহার প্রতি অ

সন্তুষ্টহইয়া আমাকেইরানের বাদসাহহইতে পত্র লিখিয়াছে এনিমিত্ত্য এইসময়ে তোমাকে যাইতে কহিতেছি। আফরাছিযাব ইহা শুনিয়া কহিল নওদর যদ্যপি বালক ও অযোগ্য বটে কিন্তু মনুচেহরের সময়েরপ্রধান সেনাপতি ছাম ওকারণ প্রভৃতি সকলেই বর্ত্তমান আছে, আমার দিগের যে সকল সেনাপতি তাহারা তাহার দিগের শম যোগ্য নহে, কিয়ৎ কাল পরে এই যুদ্ধ উপস্থিত করিলে ভালহয়; পসঙ্গ ইহা শুনিয়া রাগত হইয়া আফরাছিযাব কে কহিল পিতার কি পিতামহর শত্রুরের সহিত আপনার প্রাণের ভয়ে ভীত হইয়া যে যুদ্ধ করিতে নাযায় তাহার ধর্ম্মের ব্যতিক্রম আছে; আফরাছিযাব এই কথা শুনিয়া পিতার আজ্ঞা শিরধার্য্য করিয়া অনেক সৈন্য সামন্ত লইয়া ইরানে যাত্রা করিল। পসঙ্গ দুইজন বলবান ব্যক্তিকে সেনাপতিকরিয়া আফরাছিযাবের সহিত পাঠাইলেন তাহার এক ব্যক্তির নাম সমাছহ আর দ্বিতীয় ব্যক্তির নাম এরজান; এই দুইজন সৈন্য লক্ষ ও ত্রিশশহশ্র বলবান সেনা লইয়া আফরাছিযাব যাত্রা করিল ॥

আফরাছিযাব যুদ্ধার্থে ইরানের আগমনের ওনৌদরের মস্তক ছেদনের বিবরণ ॥

কয়েক দিবস পরে জাসুসেরা আসিয়া আফরাছিযাবকে কহিল যে ছালের মৃর্ত্যু হইযাছে) আফরাছিযাব ইহা শুনিযা শুমঙ্গল জ্ঞান করিল। নওদর আফরাছিযাব সেনা লইযা আসিতেছে ইহা শ্রবণকরিয়া অনেক সেনা লইয়া যুদ্ধেযাত্রা করিল, আফরাছিযাব নওদরের বিস্তর সেনাশুনিয়া আপন

পিতা পসঙ্গকে লিখিল যে আমার সহিত অত্যল্প সেনা শত্রুরের সৈন্য অধিক আর শত্রুরেরপ্রধান সেনাপতি ছামের মৃত্যু হইয়াছে, এইক্ষণে অস্মদাদির ভয় নাই, কিন্তু আর কথক গুলিন সেনা শিঘ্র পাঠাইবেন। পরে দুই দলের সেনা একত্রীভূত হইয়া যুদ্ধ আরম্ভ করিল ঃ তখন আফরাছিযাব বারমান নামে একজন বলবানকে আজ্ঞা করিল যে তুমি প্রথমত রণক্ষেত্রে গমন কর বারমান তৎক্ষণাৎ আসিয়া নওদরের সেনা দিগকে যুদ্ধ করিতে আহবান করিল, কাওয়া কর্ম্মকারের দুই পুত্র কারণ ও কোবাদ ইহারা দুইজন নওদর বাদসাহের সেনাপতি তাহার মধ্যে কোবাদ বারমানের সহিত যুদ্ধ করিতেআইল বারমান তাহাকে দেখিয়া ক্রোধাবিষ্ট হইয়া এক ইষ্টকাঘাত করিল সেই ইষ্টক কোবাদের মস্তকে লাগিল তাহাতেই কোবাদ প্রাণ ত্যাগ করিলেন; কারণ দেখিল যে তাহার ভ্রাতা কোবাদ রণস্থলে প্রবেশ করিবা মাত্রেই প্রাণ ত্যাগ করিল; তখন কারণ আপনার সৈন্য লইয়া একবারে বারমানের প্রতি ধাবমান হইল আফরাছিযাব তদ্দর্শনে আপন সেনা সমভিব্যাহারে বারমানের সহায়ার্থ গিয়া দুইসেনা একত্রহইয়া ঘোরতর যুদ্ধ করিতে ২ সন্ধ্যা হইল তখন সকলে আপন আপন শিবিরে গমন করিয়া রজনী যাপন করিল; পরদিবসপ্রাতে কারণ আপন সেনা লইয়া রণক্ষেত্রে উপস্থিত হইল তাহা দেখিয়া আফরাছিযাব আপন সেনা লইয়া কারনের সম্মুখে আসিয়াযুদ্ধে প্রবৃত্ত হইল. দুইপক্ষের সেনাতে ঘোরতর যুদ্ধকরিল; আফরাছিযাব অতি বলবান নওদরের অনেক সেনাকে বধ করিল ঃ নও

দর দেখিলযে অনেকসেনাহত হইয়াছে আর যাহারাআছে তাহারাওক্ষিত্তহইয়াছে ইহাদেখিয়াআপ নঅশ্বারোহণ পূর্ব্বক শুল হস্তে লইয়া আফরাছিযাবের সম্মুখে গিয়া কহিল যে ঈশ্বরের সৃজিত এত জীবকে নষ্টকরার কোন আবিস্যক নাই তোমায় আমায় যুদ্ধ করি ইশ্বর যাহাকে অনুগ্রহ করিয়া জয়ি করেণ সেই বাদসাহ হইবে। আফরাছিযাব ইহা শুনিয়া নওদরের সঙ্গে যুদ্ধেপ্রবর্ত্ত হইল; সন্ধ্যা পর্য্যন্ত উভয়ে নানাপ্রকার যুদ্ধ করিল কিন্তু কেহু কাহাকেও পরাস্ত করিতে পারিলনা সন্ধ্যার সময় দুইজনে আপন ২ শিবিরে গেলেন গমন কালীনঃ নওদরের মস্তক হইতে মুকুট ভুমে পতিত হইল; আফরাছিযাব হেয় বোধে তাহালইলনা। নওদরের একজন ভৃত্ত ঐ মুকুট উঠাইয়া নওদরকে দিল নওদর তাহা দেখিয়া কুলক্ষণ জানিয়া অতি ম্লান হইয়া পিতৃবাক্যস্মরণকরতরোদন করিয়া সৈন্যাধ্যক্ষদিগকে কহিলেন যে আমি জয়ের কোন চিহ্ন দেখিতে পাইনা যদি পলায়ন করি তবে শত্রুরেরা আমার পশ্চাৎধাবান হইয়া আমাকে ধৃত্ত করিবে - অতএব যুদ্ধ করা শ্রেয় যদি ঈশ্বরের অনুগ্রহতে জয়ি হই ভালই নত্তুবা সম্মুখ যুদ্ধে মৃত্যু হইলে স্বর্গ লাভ হইবে। সেনাপতিগন ইহা শুনিয়া কহিল আপনি যে বিবেচনা করিয়াছেন সে উত্তম ) কিন্তু আপনার দুইপুত্র তুছ ও কেস্তুহম কে এদেশ হইতে ফারস দেশে পাঠান ভাল কারণ আপনকার বংশ থাকিলে উত্তরকাল আসা থাকে ) পরে তুছ ও কেস্তুহমকে ঐ রাত্রে ফারস দেশে পাঠইলেন ) আর প্রাতে কারণও সাপুর কে সন্যাধ্যক্ষ করিয়া যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন ) সাপুর বিপক্ষর

হস্তে অতি শীঘ্র প্রাণ ত্যাগ করিলেন। ইরানের সেনা তাহা দেখিয়া ভীত হইয়া নিকটস্থ এক ক্ষুদ্র দুর্গ ছিল তাহাতে প্রবেশ করিয়া দ্বাররুদ্ধ করিল; আর কারন্ ফারসদেশে গমন করিল আফরাছিয়াব তাহা দেখিয়া ঐ দুর্গ বেষ্টন করিয়া থাকিল; এবং বারমানকে নওদরের পুত্র দিগকে ধৃত করিতে পাঠাইল; কিন্তু পথিমধ্যে কারণের সহিত বারমানের সাক্ষ্যাৎ হইয়া উভয়ে যুদ্ধ হইল; বারমান এই সংবাদ আফরছিয়াবের নিকট পাঠাইল তাহা শুনিয়া আফরাছিয়াব কথকগুলীন সেনা বারমানের সাহয্যার্থে পাঠাইল। নওদর ইহা শুনিয়া দুর্গ হইতে বাহির হইয়া কোন গুপ্ত পথ দিয়া রাত্রি মধ্যে পলায়ন করিলেন। আফরাছিয়াব তাহা শুনিয়া নওদরের পশ্চাদ্ধাবমান হইয়া সূর্য্যোদয়ের কালে দুই জন একত্র হইয়া যুদ্ধ আরম্ভ করিলেন যুদ্ধ করিয়া নওদর ধৃত হইলেন। ইত্তিমধ্যে আফরাছিয়াবের নিকটে সংবাদ আইল যে বারমান কারনের সহিত যদ্ধে প্রাণ ত্যাগ করিযাছে; আর কারন নওদরের পুত্র তূছ ও কেস্তহমকে লইয়া ফারসের দুর্গ মধ্যে অবস্থান করিযাছে। নওদর সাতবৎসর বাদসাহি করিয়া আফরাছিয়াবের যুদ্ধে ধৃত হইলেন, তাহার পর আফরাছিয়াব ইরানে বাদসাহ হইয়া সমাছাছ ও খেজরান এই দুইজন সেনাপতিকে ত্রিশ সহস্র সৈন্য সহিত কাবল জাবল দেশ আক্রমণ করিতে পাঠাইল। জাল এই সংবাদ শুনিয়া কাবলের বাদসাহ মেহরাবের সহিত ঐক্য হইয়া সেনা সমূহ একত্রিত করিয়া আফরাছিয়াবের সেনা দিগের সঙ্গে যুদ্ধ আরম্ভ করিল, জাল খেজরানকে এক গদাঘাতে নিপাত করিল তাহা দেখিয়া সমাছাছ রাগত হইয়া

জাসকে বধ করণাশয়ে ধাবমান হইল. তদ্দর্শনে জাল গদা হস্তে করিয়া তাহার নিকট গমন করিল ইহা দেখিয়া সমাছাছ ভীত হইয়া পলায়ন করিল; তাহার সেনা সকলে তাহা দেখিয়া পলায়ন করিল, জাল তাহারদিগের পাশ্চাৎ ধাবমান হইয়া অনেক সেনা নষ্ট করিল। আফরাছিয়াব এতৎ সংবাদ প্রাপ্ত মাত্রে নওদরকে কারাগার হইতে মুক্ত করিয়া তৎক্ষণাৎ তাহার মস্তক ছেদন করিল। পরে আফরাছিয়াব সৈন্য লইয়া ফারসদেশে নওদরের পুত্র তুছ ও কেস্তহমকে ধৃত করিতে গমন করিল। তাহারা ইহা শুনিয়া তথা হইতে জাবলস্তান দেশে জালের বাটিতে যাত্রা করিল; জাল এতৎ শ্রবণে অগ্রসর হইয়া তাহারদিগকে আনয়ন করত আপন বাটিতে রাখিয়া তাহারদিগকে অভয় প্রদান করিলেন। তৎপরে মনোমধ্যে বিবেচনা করিলেন যে আমি ইরানের বাদসাহি করিব না, তুছ ও কেস্তহম বালক এবং অসম্ভ্রম হইয়াছে প্রজারা ও সেনারা মান্য করিবেক না, অতএব এক জন বলবান ও সদ্বিবেচক বাদসাহ বিচার করিয়া তক্তে বসান উচিত; তবে আফরাছিয়াবকে পরাভব করা যাইবেক জাল আর ? প্রধানদিগের সহিত এই পরামর্শ স্থৈর্য্য করিয়া আফরাছিয়াবের কনিষ্ঠ ভ্রাতা আগরিরছ নামে সর্ব্বাংশে উপযুক্ত ছিল তাহাকে পত্র লিখিল যদি আপনি আমার নিকটে আইসহ তবে ইরানের বাদসাহ আপনাকে করিব। আগরিরছ এই পত্র প্রাপ্ত হইয়া রয়দেশের অধিপতি ছিল তথাহইতে ছয়স্থানে যাত্রা করিল। কাবলদেশ পর্য্যন্ত আসিয়াছিল এমত সময়ে আফরাছিয়াব এই সকল মন্ত্রণা জানিতে পারিয়া অতি শীঘ্র সেই স্থানে গিয়া তাহার সহিত সাক্ষাত করিয়া কহিল যে তোমাকে রুদ্র

দেশের বাদসাহি দিয়াছি তাহাতে ধৈর্য্য না থাকিয়া ইরানের বাদসাহি লওনের মানসে ছুরস্তানে যাইতেছ, আগরিরছ কহিল আপনাকে কেহ মিথ্যা জানাইয়াছে. আফরাছিয়াব এতৎ বাক্যে রাগত হইয়া তলওয়ার বাহির করিয়া তৎক্ষণাত আগরিরছ কে নষ্ট করিল পরে জাল ইহা শুনিয়া কহিল আফরাছিয়াবের বাদসাহি আর কখন থাকিবেক না, অদ্যাবধি আমি আফরাছিয়াবের শত্রু হইলাম, কিন্তু তুছ ও কেস্তহম বালক যদি ফরেদুর বংশের কেহ বাদসাহর উপযুক্ত পাত্র থাকে তাহা অনসন্ধান করিয়া আমাকে জ্ঞাত কর ? তন্মধ্যে এক ব্যক্তি কহিল যে ছলম যখন মনুচেহরের হস্তেহত হয় তখন তাহার পুত্র তহমাছ পলাইয়া এক উপদ্বীপে ছিল তাহার মৃত্যু হইয়াছে, তাহার এক পুত্র উপযুক্ত সেইস্থানে বাস করিতেছে তাহার নাম জু জাল এই কথা শুনিয়া কারণকে তাহার নিকট পাঠাইয়া জুকে আনায়ন করিয়া আপন বাটিতে রাখিয়া পরে শুভক্ষণে তাহাকে ইরানের বাদসহিতে অভিষেক করিলেন ॥

---

## জু বাদসাহর বিবরণ ॥

পরে জুকে বাদসাহ করিয়া জাল আপন সেনাগণ সঙ্গে লইয়া ইরানে আফরাছিয়াবের প্রতি আক্রমণার্থে গমন করিলেন। আফরাছিয়াব ভয়ে ভীত হইয়া যুদ্ধ না করিয়া ইরান হইতে পলায়ন পূর্ব্বক তুরানে প্রস্থান করিল। জাল জুকে ইরানের তক্তে বসাইলেন। জু পাঁচ বৎসর অতি সুবিচার পূর্ব্বক বাদসাহি করিয়া আপন পুত্র করসাস্পকে রাজ্যে অভিষেক করিয়া আপনি নিত্যধামে গমন করিলেন ॥

## করসাম্প বাদসাহর বিবরণ ॥

করসাম্প বাদসাহ হইয়া জালকে সমস্ত কর্ম্মাধ্যক্ষ করিলেন. এই সংবাদ তুরানের বাদসাহ পসঙ্গ শুনিয়া তাহার পুত্র আফরাছিয়াব যখন ইরান হইতে যুদ্ধে পরাজয় হইয়া আপন দেশে প্রত্যাগমন করিলে তদবধি তাহার পিতা তাহার মুখাবলোকন করিল না। ইহার কারণ এই যে আফরাছিয়াব আপন সহোদর আগরিরছকে নষ্ট করিয়াছিল। ইরানের নূতন বাদসাহ করসাম্প অতি অনুপযুক্ত শুনিয়া তখন আফ-রাছিয়াবের অপরাধ মার্জ্জনা করিয়া অনেক সেনা সমভি-ব্যাহারে ইরানে যুদ্ধ করিতে পাঠাইলে ইরানবাসি লোকেরা এই সংবাদ শুনিয়া জালকে কহিল যে আফরাছিয়াব পনরায় সৈন্য লইয়া সুসজ্জিভূত হইয়া যুদ্ধ করিতে আসিতেছে আপনি ইহার বিহিত উপায় করহ। জাল কহিল এইবার রোস্তমকে সেনাপতি করিয়া আফরাছিয়াবের সহিত যুদ্ধে পাঠাইব ॥

## রোস্তম সেনাপতি হইবার বিবরণ ॥

ইহা কহিয়া রোস্তমকে ডাকিয়া কহিল আমার মানস তুমি এইবার সেনাপতি হইয়া আফরাছিয়াবের সহিত যুদ্ধে যাত্রা কর, কিন্তু তুমি বালক আফরাছিয়াব যুদ্ধের কৌশল অনেক প্রকার জানে। রোস্তম কহিল যুদ্ধের কৌশল আমি সকল শিক্ষা করিয়াছি ঈশ্বরের কৃপায় তাহাকে আমি ভয় করি না, তাহা শুনিয়া জাল দই চারি জন সেনাপতিকে রোস্তমের যুদ্ধ পরীক্ষা লইতে আজ্ঞা করিলেন ; তখন তিন চারি ব্যক্তি প্রধান সেনাপতি জালের সম্মুখে রোস্তমের সহিত যুদ্ধ করিয়া ক্রমে তাহারা সকলেই রোস্তমের নিকটে পরাভব হইল

তদ্দর্শনে জাল তুষ্ট হইয়া অস্ত্রাগার হইতে নানা প্রকার উত্তম ২ অস্ত্র বাহির করিয়া দিলেন, রোস্তম অস্ত্রাগারে প্রবেশ করিয়া ছামের একবৃহৎ গদা ছিল তাহাও লইল, তদনন্তর জালকে কহিল আমার এইসকল অস্ত্রশস্ত্র বহন করিয়া যাইতে পারে এমত এক অশ্ব আমাকে আনাইয়া দেও জাল অশ্ব রক্ষককে আজ্ঞা করিলেন যে মাঠের অশ্বশালা হইতে অত্যুত্তম ঘোটক আন সে সেই মত করিল, রোস্তম যে ঘোটকের পৃষ্ঠদেশে হস্তার্পণ করে তাহার পৃষ্ঠ নিম্ন হইয়া যায় এই রূপে অনেক ঘোটক রোস্তমের অযোগ্য হইল। পরে এক মাদওয়ানের সহিত পীতবর্ণের গোলদারযুক্ত এক ঘোটক রোস্তম দেখিয়া তুষ্ট হইয়া কমন্দ (অর্থাৎ দড়ির ফাঁস) বাহির করিল, তাহা দেখিয়া অশ্বরক্ষক কহিল যেএ ঘোটকের নিকটে যাইবেন না কারণ ইহার মাতা তিন চারি জনকে নষ্ট করিয়াছে, রোস্তম তাহা না শুনিয়া ঐ অশ্বের স্কন্ধে ফাঁস নিক্ষেপ করিল তাহা দেখিয়া তাহার মাতা চিৎকার করিয়া রোস্তমের নিকটে আইল তদ্দৃষ্টে রোস্তম চিৎকার করিয়া মারিতে গেল তখন ঐ মাদওয়ান ভীত হওত দণ্ডায়মান রহিল। কিন্তু ঐ বৎস রোস্তমকে কিঞ্চিদ্দূর আকর্ষণ করিয়া লইয়া গেল। পরে রোস্তম বলপূর্ব্বক তাহাকে ধৃত করিয়া আপনার আরুঢ় যোগ্য বুঝিয়া রাখিল। তৎপরে জাল অনেক বলবান সেনা সমভিব্যাহারে রোস্তমকে আফরাছিয়াবের যুদ্ধে পাঠাইল। দুই দিন পরে সন্দিগ্ধ হইয়া আপনিও রোস্তমের নিকটে গেল, ওখানে আফরাছিয়াব আপন প্রধান সেনাপতিদিগেকে লইয়া মন্ত্রণা করিতেছে যে জু

বাদসাহেরপুত্র করসাস্প যে নূতন বাদসাহ হইয়াছে সে বালক আর প্রধান সেনাপতি জাল সেও বৃদ্ধ। জালের পুত্র রোস্তম সেও বালক এইবার ইরান দেশ বিনা যুদ্ধে গ্রহণ করিব। এই সংবাদ জাল শুনিয়া অত্যন্ত ভীত হইয়া আপনার মন্ত্রিগণকে কহিল যে করসাস্প বালক আফরাছিয়াবের সম যোদ্ধা নহে, অতএব ফরেদুঁর বংশীয় একজন বাদসাহের উপযুক্ত আনিতে হইল॥

কোবাদকে আনিবার বিবরণ॥

ইহা কহিয়া জাল পূর্ব্বে এই সন্ধানে যে সকল লোক পাঠাইয়াছিল তাহারদিগেকে ডাকিয়া জিজ্ঞাসা করিলে তাহারদিগের এক জন কহিল যে আলবোরজ পর্ব্বতোপরি ফরেদুঁর বংশোদ্ভব কোবাদ নামে এক ব্যক্তি বুদ্ধিমান ও সদ্বিবেচক এবং বলবান বাদসাহার উপযুক্ত আছে, জাল এই কথা শুনিয়া রোস্তমকে কহিল তুমি গিয়া একপক্ষ মধ্যে তাহাকে লইয়া এখানে আইস তুমি তাহাকে কহিবা যে ইরানে এইক্ষণে কেহ উপযুক্ত বাদসাহ নাই আপনকার সৌর্য্য বীর্য্য ও গাম্ভীর্য্য ও বুদ্ধির প্রাখর্য্যতা ইরানের প্রধান কর্ম্মাধ্যক্ষ ও সেনাপতি জাল শুনিয়া আপনাকে লইতে আমাকে পাঠাইয়াছেন বিলম্বকরা উচিত নহে আপনি শীঘ্র শুভাগমন করুণ? রোস্তম তৎক্ষণাৎ যাত্রা করিল কয়েক দিবসান্তে উক্ত পর্ব্বতের নিকটাবর্ত্তিহইয়া পর্ব্বত নিরক্ষণ করিয়া যাইতেছে, পর্ব্বতের নিম্ন দেশে কোবাদের এক উদ্যান ও গৃহ ছিল কোবাদ সেইস্থানে ছিলেন রোস্তমকে অতি বলবানেরন্যায়

এবং পরম সুন্দর যুবা পুরুষ একা কোথা যাইতেছে জিজ্ঞাসা করা উচিত ইহা মনোমধ্যে স্থৈর্য্য করিয়া রোস্তমকে ডাকিলেন আরও কহিলেন অহে যুবা এত শীঘ্র কোথা জাইতেছ! ক্ষণেককাল এস্থলে বিশ্রাম করিয়া কিঞ্চিৎ আহার করিয়া প্রস্থানকর? রোস্তম তাহাকে কহিল আমি কয়কোবাদের অনুসন্ধান করিতে যাইতেছি, যদি আপনি তাহার বাসস্থান জ্ঞাত থাকেন তবে অনুগ্রহ করিয়া আমাকে কহিলে বাধিত হইব। ইহা শুনিয়া কোবাদ কহিলেন তুমি এইস্থানে আহারাদি করিয়া ক্ষণেককাল বিশ্রাম করহ। পরে একজন জানিত লোক তোমার সহিত দিব।" রোস্তম ইহা শ্রবণে তুষ্ট হইয়া অশ্ব হইতে নামিয়া তাঁহার নিকটে বসিল। কোবাদ এক পেয়ালা মদিরা রোস্তমের হস্তে দিয়া কহিলেন ওহে যব! কোবাদের অনুসন্ধান আমাকে জিজ্ঞাসা করিলে তুমি কোথা হইতে আইলে কি নিমিত্ত তাহার তত্ত্ব করিতেছ, কোবাদ কে তাহার নাম কিপ্রকারে তুমি জানিলে? তখন রোস্তম কহিল আমি ইরানদেশ হইতে আসিতেছি বীরগণাগ্রগণ্য ইরানের প্রধান সেনাপতি আমার পিতা তাঁহার নাম জাল তিনি কোবাদকে ইরানের বাদসাহের উপযুক্ত জানিয়া তাঁহাকে লইয়া যাইতে আমাকে পাঠাইয়াছেন; ইহা শুনিয়া কোবাদ হাস্য বদনে কহিলেন আমারি নাম কোবাদ ফরেদুর বংশোদ্ভব, রোস্তম এইকথা শুতমাত্র উঠিয়া প্রণাম করিয়া সকল বৃত্তান্ত জ্ঞাপন করিয়া কহিল যে আমার পরিশ্রম সফল হইল, কোবাদ কহিলেন গতরাত্রে আমি স্বপ্নে দেখিয়াছি ইরান হইতে দুই শ্বেত

বাজ (অর্থাৎ পক্ষবিশেষ) আমার মস্তকে এক মুকুট অর্পণ করিল, এই নিমিত্তে অদ্য আমি এই উদ্যানে আসিয়া আহ্লাদিত হইয়া পথ নিরক্ষণ করিতেছি ইতিমধ্যে তোমার সহিত সাক্ষ্যাত হইল। রোস্তম কহিল শ্বেতবাজ আমি ও আমার পিতা জাল আমরা তোমার মস্তকে বাদসাহি মুকুট দিব অতএব আপনি শীঘ্র যাত্রাকরূণ বিলম্বের কালনহে কোবাদ আপনার অশ্ব ও অস্ত্র ও বস্ত্রাদি আনাইয়া রোস্তমের সহিত ইরানে যাত্রা করিলেন। যখন ইরানের নিকট উপস্থিত হইলেন কলউন নামে একজন সেনাপতি কয়সাম্প বাদসাহ জনশ্রুতিদ্বারা ঐ সংবাদ অবগত হইয়া নগর প্রান্তে পথি মধ্যে কথকগুলীন সৈন্য রাখিয়াছিল যে কোবাদ না আসিতে পারে সেই পথেই রোস্তম ও তাহার সহিত একজন যাইতেছে তাহা দেখিয়া জানিল যে রোস্তম কোবাদকে লইয়া আইল তখন কলউন সৈন্য সহিত গিয়া পথ রুদ্ধ করিয়া রোস্তমকে এক বরছি আঘাত করিল রোস্তম সেই বরছি তাহার হস্ত হইতে বলপূর্ব্বক গ্রহণ করত তাহার বক্ষে নিক্ষেপ করিলে কলউনতৎক্ষনাৎ প্রাণত্যাগ করিল, তাহার সমভিব্যাহারি ব্যক্তিরা দেখিয়া পলায়ন করিল। পরে রোস্তম কোবাদকে লইয়া রাত্রি যোগে জালের নিকটে আইলেন, জাল এক সপ্তাহ কোবাদকে অপ্রকাশ রাখিয়া পরে প্রধান সকলকে ডাকাইয়া বিস্তারিত কহিয়া কোবাদকে বাদসাহ করিয়া তক্তে বসাইলেন ॥

---

## কয় কোবাদের বাদসাহির বিবরণ ॥

কয় কোবাদ বাদসহ হইয়া প্রধান মন্ত্রি ও সেনাপতি-

দিগের সহিত পরামর্শ করিয়া সকলের ঐক্যমতে আফরাছি-য়াবের সহিত যুদ্ধে যাত্রা করিলেন, যখন উভয় সৈন্য একত্র হইল তখন ইরানের সেনাপতি কারন অগ্রসর হইয়া তুরানের সেনাপতিকে যুদ্ধে আহ্বান করিল; তাহা শুনিয়া তুরানের সমা-ছছ নামে একজন বলবান্ আসিয়া কারনের সহিত যুদ্ধারম্ভ করিল কারন অতি শীঘ্র তাহাকে নষ্ট করিল, পরে রোস্তম জালকে কহিল যে আমি আফরাছিয়াবের সহিত যুদ্ধ করিতে চলিলাম। (তখন এই নিয়ম ছিল যে যাহাকে যুদ্ধে আহবান করিত তাহাকে আসিয়া যুদ্ধ করিতে হইত) জাল কহিল আফারাছিয়াব একজন বলবান্ রণ পণ্ডিত বীর গণের অগ্র গণ্য অনেক যুদ্ধ করিয়াছে যুদ্ধের অনেক কৌশল জ্ঞাত আছে, আর ২ যোদ্ধারা তাহাকে কেহ রণ কুম্ভির কেহ রণ অজাগর কহে, তুমি বালক কখন যুদ্ধ কর নাই অন্য কোন যোদ্ধার সহিত যুদ্ধ প্রার্থনা কর? রোস্তম কহিল ঈশ্বর অবশ্য কৃপা করিবেন - ইহা কহিয়া রণস্থলে উপস্থিত হইয়া আফরাছিয়াবের সম্মুখে গিয়া যুদ্ধ প্রার্থনা করিল, আফরাছিয়াব রোস্তমকে দেখিয়া আপন প্রধান সেনাপতিদিগকে জিজ্ঞাসা করিল যে একটি দুগ্ধ পোষ্য বালক রণস্থলে আসিয়া আমাকে যুদ্ধে ডাকিতেছে এবালক টী কে? তাহারা কহিল জালের পুত্র ইহারই নাম রোস্তম। তাহা শুনিয়া আফারছিয়াব রোস্তমের নিকটেআসিয়া কহিল যে তুমি বালক তোমার সহিত যুদ্ধে আমি অস্ত্র ধারণ করিব না, তোমাকে ক্রোড়ে করিয়া লইয়া যাইব? পরে উভয়ে উভয়ের কোটি বদ্ধ ধরিয়া বল করিতে লাগিল,

আফরাছিয়াব অনেক চেষ্টা করিল কোনমতে রোস্তমকে নাড়িতে পারিলনা, শেষে রোস্তম বলপূর্ব্বক আফরাছিয়াব-কে অশ্ব হইতে উঠাইয়া কোবাদের নিকটে লইয়া গমন করিল, কথক গুলান সেনা আফরাছিয়াবকে ছাড়াইয়া লইতে পাশ্চৎ গমন করিল, কথক দূর যাইয়া আফরাছিয়া-বের কোটি বন্ধ বস্ত্র ছিন্ন হইয়া রোস্তমের হস্ত হইতে আফ-রাছিয়াব ভূমে পতিত হইল; এই অবকাশে তাহাকে সেনারা লইয়া পলায়ন করিল। আর কথক গুলান সেনা রোস্তমকে বেষ্টন করিল তাহা দেখিয়া ইরানের অনেক সেনা রোস্তমের সহায়তার নিমিত্তে আইল, তখন উভয় সেনায় ঘোরতর যুদ্ধ হইতে লাগিল। রোস্তম তুরানের বহু বিধ সেনা নষ্ট করিল তাহা দেখিয়া আফরাছিয়াব ভীত হইয়া পলায়ন করিয়া স্বদেশে গমন করিয়া, আপন পিতাকে কহিল যে ইরানিরা এরচের সম্পর্ক ভিন্ন অন্যকে বাদসাহ করিতে সম্মত নহে, এনিমিত্তে আলবোর্জ পর্ব্বত হইতে কোবাদ নামে এক জনকে আনিয়া করসাস্পর পরিবর্ত্তে তাহাকে বাদসাহ করিয়াছে। তৎপরে কহিল আপনি জ্ঞাত আছেন আমি হস্তি ও ব্যাঘ্রা-দির সহিত যুদ্ধ করিয়াছি, এবং অনেক বলবানদিগের সহিতও যুদ্ধ করিয়াছি, কখন ভীত ও পরাজয় হই নাই, কিন্তু এইবার জালের পুত্র রোস্তম নামে এক বালক যুদ্ধে আসি-য়াছিল আমি অনেক বল ও চেষ্টা করিয়াছিলাম কোনমতে তাহাকে অশ্ব হইতে চালনা করিতে পারিলামনা; শেষে রোস্তম অনায়াসে আমাকে মসকের ন্যায় ঘোটক হইতে আমার কটি বন্ধ ধারণ করিয়া লইয়া গেল; ঈশ্বর ইচ্ছায় আমার ঐ কটি বেষ্টনীয় বস্ত্র ছিন্ন হইয়া ভূমে পড়িলাম তখন আমার

সেনারা আসিয়া আমাকে লইয়া আইল। আমার আর এমত বাসনা নাই যে রোস্তম থাকিতে ইরানে যুদ্ধ করিতে গমন করি, অতএব এইক্ষণে আমার মত এই যে পূর্ব্বগত বিবাদ স্মরণ না করিয়া ও মনের মালিন্য ত্যাগ করিয়া কোবাদের সহিত সলা (অর্থাৎ সন্ধি করা উচিত) আফরাছিয়াবের পিতা পসঙ্গ ইহা শুনিয়া প্রধান সেনাপতি পিরানওয়াছা ও আমীর ও উজিরদিগের সহিত পরামর্শ করিয়া সন্ধি করাই স্থির হইল। তখন এই সকল বিবরণ সম্বলিত পত্র লিখিলেন যে তুর এরচের প্রতি প্রথমতঃ যে অত্যাচার করিয়াছিলেন তাহার পরিশোধ এরচের সন্তান মনুচেহর লইয়াছেন, অর্থাৎ ছলম ও তুরকে কাটিয়াছেন, তৎপরে তাহার পরিবর্ত্তে আমার পুত্র আফরাছিয়াব মনুচেহরের পুত্র নওদরকে নষ্ট করিয়াছে, পুনঃ পুনঃ যুদ্ধে শত্রুতার বৃদ্ধি এবং লোক হিংসা ও দেশ উচ্ছন্ন হয়, অতএব পূর্ব্বে ফরেদূঁ যে অংশ করিয়া উভয় অংশের মধ্যে যে নদী ব্যবধান করিয়া এপারে তুরান দেশের সীমা ওপারে ইরান দেশের সীমা নির্দ্ধারিত করত অংশ করিয়া দিয়াছিলেন আমার মানস সেই নিয়ম বলবান রাখিয়া ধর্ম্মত সপত দ্বারা নূতন লিপিবদ্ধ করিয়া বিবাদ ভঞ্জন করা উচিত; কারণ উভয়েই ফরেদূঁর সন্তান ভ্রাতায় ভ্রাতায় বিবাদ থাকা ক্রমে অমঙ্গল বৃদ্ধি, এই পত্র নিজ চিহ্নিত করিয়া কোবাদের নিকট পাঠাইলে কোবাদ তাহা জ্ঞাত হইয়া উত্তর লিখিলেন যে এরচ ছলম ও তুরের সহিত সাক্ষ্যাৎ করিতে গিয়াছিলেন ছলম ও তুর তাঁহাকে বধ করিয়াছিলেন তাঁহার সন্তান মনুচেহর সেই

ক্রোধে আপন পৈতৃক শত্রুকে নষ্ট করিয়াছিলেন পুনরায় তোমার পুত্র আফরাছিয়াব ইরানে আগমন করিয়া মনূচেহ্রের পুত্র নওদরকেসংহার করিল; এবং তোমার কনিষ্ট পুত্র আগরিরছকে ইরানের বাদসাহ করিবার মানসে জাল পত্র লিখিয়াছিল? এই কথা শুনিয়া আফরাছিয়াব তাহার সহোদর আগরিরছকে নষ্ট করিল, তোমরা পুনঃ ২ অন্যায় করিতেছো অতএব তুমি ও তোমারপুত্র আফরাছিয়াব একত্র হইয়া ধর্ম্মত সপথ যুক্ত লিপি করিয়া সেই নিয়ম মত স্থির হইয়া থাক তবে আমি সন্ধি করি, রোস্তম কয়কোবাদকে কহিল এইক্ষণে আপনি সন্ধি কদাচিৎ করিবেন না, তাহারা কেবল আমার ভয়ে সন্ধি করিতে উদ্যত হইয়াছে, জাল ও মেহরাব (কাবলের বাদসাহ) প্রভৃতি সকল সরদার দিগকে লইয়া পরামর্শ করিলেন, তাহারা সকলে কহিল আপনি নূতন তক্তে বসিয়াছেন কিছু দিন বিবাদ না করিয়া ফরেদুঁর বিভাগ করা অংশে স্থির থাকিয়া প্রণয় বদ্ধ করা উচিত; পরে তাহারা নিয়ম বহির্ভূত আচরণ করে তখন যাহা কর্ত্তব্য হয় তাহাই করা যাইবেক, এই স্থির করিয়া তুরানের বাদসাহ পসঙ্গর সহিত প্রণয় বদ্ধ করিলেন; পরে কয়কোবাদ দান ও সুবিচার এমত করিলেন যে সকলে ফরেদুঁকে বিস্মৃতি হইল, আর কোবাদের সুবিচার দ্বারা সুখ্যাতি হইয়া অনেক দেশ তাহার অধিকার হইল, একশত বৎসর বাদসাহি করিয়া পরে তাহার চারি পুত্রছিল জেষ্টর নাম কাউছ, দ্বিতীয়ের নাম আরস; ত্রিতীয়ের নাম রুছ; চতুর্থের নাম এরমিন; তাহারদিগকে ডাকাইয়া জেষ্ঠ কয়কাউছকে বাদসাহিতে

অভিষেক করিলেন। আর তিনজন কেহ মন্ত্রি কেহ সৈন্যাধ্যক্ষ এইমত নিযুক্ত করিয়া কাউছের আজ্ঞাবহ থাকিতে আজ্ঞা করিলেন। এবং আর কহিলেন ফরেদূর ন্যায় রাজ্য অংশ করিলে বিবাদ হইবে, তৎপরে কিয়দ্দিবস গতে কয়কোবাদ স্বর্গারোহণ করিলেন ॥

---

কয় কাউছ বাদসাহের বিবরণ ॥

কয়কাউছ তক্তে বসিয়া পিতার নীতি মত দান ও সুবিচার ও প্রজারদিগেকে প্রতিপালন করিতে লাগিলেন, কিয়ৎ দিবসান্তে মাজন্দরান দেশের এক জন গায়ক তাঁহার নিকটে আসিয়া সে দেশের বিস্তর প্রশংসা করিল তাহা শুনিয়া কাউছ আনন্দিত হইয়া আপন মন্ত্রি ও সেনাপতি দিগেকে কহিলেন যে জমসেদ ও জোহাক হইতে আমার অধিক রাজ্য ও ধন হইয়াছে, কিন্তু বাদসাহ লোকের গৃহে বসিয়া শুদ্ধ কাল হরণ করা উচিত নহে, আমি একবার দেশ ভ্রমণ করিতে যাইব? আমীর ও উজিরেরা সকলেই সম্মত হইলেন, কিন্তু তাহারা গোপনে পরামর্শ করিল যে মাজন্দারাণ দেশ দৈত্যদিগের দেশ সে স্থানে গমন করিলে তাহারা আমারদিগেকে নষ্ট করিবেক, অতএব সেস্থানে যাওয়া উচিত নহে যেহেতু পূর্ব্বকার বাদসাহরা সে দেশে গমনেচ্ছুক কেহ কখন হয়েন নাই, বিশেষতঃ ফরেদূঁ বাদসাহ অনেক দৈববিদ্যা জানিত যাহার প্রভাবে সে অনয়াসে অক্লেশে জোহাককে পরাজয় করিল; তুছ; কেস্তহম; করসাস্প; গোদরজ; ও গেও প্রভৃতি প্রধান সেনাপতি ছিলেন, কিন্তু কাউছকে নিষেধ করিতে কেহ পারিলেন না; শেষে সকলে পরামর্শ করিয়া

জালকে পত্র লিখিলেন যে আপনি শীঘ্র এখানে আসিয়া কয় কাউছ বাদসাহকে মাজন্দারান দেশে যাইতে নিষেধ কর, জাল এই পত্র পাইবা মাত্র ভাবিত হইয়া ইরানে আইল, কয়কাউছ শুনিয়া কহিল জাল কি নিমিত্তে এস্থানে আসিয়াছে, সরদারেরা সকলে জালের নিকটে গিয়া পরামর্শ স্থির করিলেন যে বাদসাহকে উপস্থিত বিষয় হইতে ক্ষান্ত রাখিতে হইবে, পরে জাল সরদারদিগকে লইয়া বাদসাহর নিকটে গিয়া বাদসাহকে অনেক স্তব ও প্রসংসা করিলেন, এবং কাউছ বাদসাহ জালকে সমাদর করিয়া জালের পরিবারের ও রোস্তমের কুশলাদি জিজ্ঞাসা করিলেন, কিঞ্চিৎ কাল পরে জাল কহিলেন আপনকার মাজন্দারান-দেশে যাওনের কথা শুনিয়া আমি অত্যন্ত ব্যাস্ত হইয়া আসিয়াছি জমসেদ ও ফরেদুঁ ইহারদিগের এতদ্দেশ লইবার মানস ছিল কিন্তু সে দেশে দৈত্যাদিগের বাস স্থান, আর তাহারা নানাবিধ কুহক জানে ইহা জ্ঞাত হইয়া ক্ষান্ত হইয়াছিলেন, তখন আর আর সকলে বাদসাহকে নিষেধ করিলে কাউছ কহিল আমি মাজন্দারান দেশে অবশ্য যাইব, ঈশ্বরের কৃপায় দৈত্য সকলকে নষ্ট করিব? জমসেদ ও ফরেদুঁ হইতে আমার লোকবল অধিক আছে, পরে জালকে কহিলেন আমি যে পর্য্যন্ত মাজন্দরান দেশ হইতে পুনঃরাগমন না করি সে পর্য্যন্ত আপনি আমার পরিবর্ত্তে এই স্থানে অবস্থান করিয়া তাবৎ রাজ কর্ম্ম নির্ব্বাহ করহ? জাল কহিল আমি বৃদ্ধ হইয়াছি পারিবনা? অন্য কোন ব্যক্তিকে এতদ্ভার অর্পণ করুন, আমি ছয়স্তানে প্রস্থান করি সেইস্থান হইতে সর্ব্বদা তত্ত্বাবধারণ ও কর্ত্তব্যা কর্ত্তব্য বিবেচনা করিব, তখন মিলাদ নামে এক জন অতি সুপণ্ডিত ও সংবি-

বেচক এবং প্রধান সেনাপতি তাহাকে রাজ্য কর্ম্মের ভার অর্পণ করিয়া কয়কাউছ বাদসাহ মাজন্দরান দেশে যাত্রা করিলেন, আর মিলাদকে কহিলেন যদি কোন শত্রু উপস্থিত হয় আমাকে শীঘ্র জ্ঞাপন করিবা ।।

কয়কাউছ মাজন্দরান দেশে বদ্ধহওনের বিবরণ ।।

কয়কাউছ বাদসাহ অনেক সেনা সঙ্গে লইয়া গেওকে সেনাপতি করিয়া মাজন্দরান দেশে গমন করিলেন, গেওকে আজ্ঞা করিলেন যে মাজন্দরান দেশে প্রবেশ করিয়া যুদ্ধ আরম্ভ করিবা, যখন কাউছ সাহ মাজন্দরান নগরে উপস্থিত হইলেন গেও পূর্ব্ব আজ্ঞামত যুদ্ধ আরম্ভ করিল। মাজন্দরান দেশের বাদসাহ, কাউছ বাদসাহর আগমনের কোন সংবাদ পুর্ব্বে পায় নাই এজন্য নিশ্চিন্ত ছিল, কিন্তু হটাৎ কাউছের সেনার সহিত যুদ্ধ করিতে অসক্ত হইয়া দুর্গ মধ্যে প্রবেশ করিয়া দ্বার রুদ্ধ করিয়া রহিল। দেওসফেদ নামক এক দৈত্য তাহার বন্ধু ছিল ঐ মাজন্দরান দেশের নিকটস্থ এক পর্ব্বতে বাস করিত তাহার নিকটে সঞ্জা নামক এক জন দূত দ্বারা কহিয়া পাঠাইল যে কাউছ বাদসাহ আমার দেশে আগত হইয়া অনেক মনুস্য ও দৈত্যকে বিনাশ করিয়াছে আমি তাহার যুদ্ধে অসক্ত হইয়া দুর্গ মধ্যে লুক্কায়িত হইয়া দ্বাররুদ্ধ করিয়া রহিয়াছি, যদি এসময়ে আপনি আসিয়া আমাকে রক্ষা না কর তবে আমি ও দেশস্থ সকলে একে বারেই হত হইলাম দেওসফেদ এই কথা শুনিবা মাত্র আপন

দৈত্য সেনা সঙ্গে লইয়া কাউছ বাদসাহর সহিত যুদ্ধ আরম্ভ করিল। কাউছের সেনাগণ দৈত্যদিগকে দেখিয়া ভীত হইয়া যুদ্ধে অসক্ত হইল, তখন দৈত্যেরা কাউছ বাদসাহকে এবং তাহার সেনাপতি দিগেকে সমস্ত ধৃত করিয়া কারাগারে বদ্ধ করিল। পরে মাজন্দরান দেশের বাদসাহ বার সহস্র দৈত্য কাউছের রক্ষক রাখিয়া জীবন ধারণ উপযুক্ত আহার প্রদানের আজ্ঞা করিল, কাউছ এক লিপি জালকে লিখেলেন যে আমি তোমার বাক্য অগ্রাহ্য করিয়া এখানে আসিয়া কারাবদ্ধ হইয়াছি, যদি আপনি অনুগ্রহ করিয়া আমারদিগেকে মুক্ত নাকর তবে আমরা আর কোনমতে উদ্ধার হইতে পারিব না, এই পত্র কোন কৌশলক্রমে পাঠাইলেন। জাল এই পত্র পাইয়া অত্যন্ত ভাবিত হইলেন কিন্তু শত্রু মিত্র কাহর নিকটে একথা প্রকাশ না করিয়া রোস্তমকে ডাকিয়া কহিল যে এ অতি খেদের বিষয় যে আমারদিগের বাদসাহ কয়কাউছ শত্রুর হস্তে পতিত হইয়া কারগারে বদ্ধ থাকিলেন আর আমরা ইহা শুনিয়াও সুখে সচ্ছন্দে রহিলাম। আমি অতি বৃদ্ধ হইয়াছি অধুনা এমত শক্তি নাই যে বাদসাহকে কারাগার হইতে মুক্ত করিয়া আনি, তুমি যুব পুরুষ যদি পার তবে অগ্রসর হও ঈশ্বর তোমাকে যেরূপ শক্তি দিয়াছেন তাহার উপযুক্ত কর্ম্ম কর, রোস্তম ইহা শুনিয়া স্বীকার করিয়া কহিল সে অনেক দূর দেশ পাছে বাদসাহকে নষ্ট করে যদি জীবদ্দসায় থাকেন তবে অবশ্য আনিব। জাল কহিল দুই পথ আছে এক পথে অনেক বিলম্ব হয় আর এক পথে সপ্তাহে যাওয়া যায়, কিন্তু এই পথে নানা প্রকার উপদ্রব আছে

অতি সাবধান পূর্ব্বক যাইবা, ঈশ্বরের নিকটে এই প্রার্থনা করি যে সকল উৎপাৎ হইতে মুক্ত হইয়া বাদসাহকে শীঘ্র আনয়ন কর ইহা কহিয়া রোস্তমকে বিদায় করিল। রোস্তম কহিল ঈশ্বরের অনুগ্রহেতে আর আপনার আশির্ব্বাদে দেওসফদকে নষ্ট করিয়া কাউছ বাদসাহকে অতি শীঘ্র আনিব, রোস্তমের মাতা পিতা ইহা শুনিয়া বিস্তর রোদন করিয়া কহিল সে দৈত্যদিগের স্থান তুমি বালক? রোস্তম কহিল আপনি কোনমতে ভাবিত হইবেন না, ঈশ্বরের অনুগ্রহে ও তোমারদিগের আশীর্ব্বাদে অতিশীঘ্র বাদসাহকে আনিব ইহা কহিয়া মাজন্দরান দেশে যাত্রা করিল॥

---

## রোস্তমের মাজন্দরান দেশে গমনের প্রথম দিনের বিবরণ।

পর দিবস প্রাতে রোস্তম ঈশ্বরকে স্মরণ করিয়া নিকটস্থ পথ দিয়া মাজন্দরান দেশে যাত্রা করিল, সমস্ত দিবস চলিয়া সন্ধ্যার সময় একটা হরিণ শীকার করিয়া অশ্ব হইতে নামিয়া ঘোটককে চরিতে দিয়া আপনি হরিণ দগ্ধকরত আহার করিয়া সয়ন করিল, সেই বনে এক অতিবৃহদ ব্যাঘ্র বাস স্থানছিল তাহার ভয়ে সেই বনে কোন মনুষ্য কি পশু যাইত না, ঐ ব্যাঘ্র কোন স্থানে গিয়াছিল ক্ষণকাল পরে আসিয়া দেখিল যে একজন মনুষ্য শয়ন করিয়া রহিয়াছে আর একটা ঘোটক আছে ঐব্যাঘ্র প্রথমত ঘোটককে তাড়া করিল ঘোটক সম্মুখস্থ দুইপদ ব্যাঘ্রের মাথায় এমত মারিল যে ব্যাঘ্র ভূমে পড়িয়া গেল তখন ঐ অশ্ব তাহার কণ্ঠে দন্তাঘাত করিল তাহা-

ক্কে ব্যাঘ্রচিৎকার করিতে লাগিল, ঐশব্দে রোস্তমের নিদ্রা ভঙ্গ হইয়া দেখিল ঘোটক ব্যাঘ্রের সহিত যুদ্ধ করিতেছে, তখন ঘোটককে কহিল তুই কেন ব্যাঘ্রের সহিত যুদ্ধকরিলি যদি তুই মরিয়া যাইতিস তবে আমি কিপ্রকারে এইসকল অস্ত্র শস্ত্র লইয়া মাজন্দস্থানে যাইতাম, পুনরায় এমত কর্ম্ম আর করিস না, যদি আর কোন উৎপাৎ উপস্থিত হয় তবে আমাকে জাগ্রত করিস, ইহা কহিয়া ব্যাঘ্রকে মারিয়া পুনরায় নিদ্রা গেল প্রথম দিবসের পথের বিবরণ এই ॥

---

## দ্বিতীয় দিবসের পথের বিবরণ ॥

দ্বিতীয় দিবস রোস্তম প্রাতে অশ্বারোহণে সমস্ত দিবস পথ শ্রান্ত ক্লান্ত ও তৃষ্ণাযুক্ত হইয়া ঈশ্বরের স্মরণ করিতে লাগিল এমত সময়ে কিছু দূরে একটা হরিণ দৃষ্টি করিয়া তাহার পশ্চাতে ২ গমন করত এক সরোবর দেখিয়া ঈশ্বরকে প্রণাম করিয়া সেইস্থানে জলপান করিয়া সেই বন হইতে একটা হরিণ শীকারকরিয়া ঐ সরোবরের তীরে দগ্ধ করিয়া আহার করত শয়ন করিল; ঘোটক সেইস্থানে তৃণ আহার করিতে লাগিল। এক বৃহৎ অজাগর ঐ স্থানে থাকিত তাহার ভয়ে পশুপক্ষাদি সে বনে যাইতনা অজাগর আহার অন্বেষণে গিয়াছিল কথক রাত্রে আসিয়া উপস্থিত হইলে, অশ্ব তাহাকে দেখিয়া চিৎকার করিল তাহাতে রোস্তমের নিদ্রাভঙ্গ হইয়া চতুর্দিগকে নিরীক্ষণ করিয়া কিছু দেখিতে পাইল না; তখন ঘোটককে কহিল অকারণে আমার নিদ্রা ভঙ্গ করিসনা আমি ক্লান্ত হইয়াছি ক্ষণেক বিশ্রাম করি। ইহা কহিয়া পুনরায় নিদ্রা

গেল, অজাগর পুনর্ব্বার বাহির হইল তদ্দৃষ্টে ঘোটক পুনরায় চিৎকার করিবাতে রোস্তম জাগৃত হইয়া চতুর্দ্দিকে দৃষ্টি করিয়া কিছু দেখিতে নাপাইয়া রাগত হইয়া ঘোড়ার প্রতি কহিল পুনঃ পুনঃ অকারণে কেন আমার নিদ্রাভঙ্গ করিস্ যদি আর অকারণে আমাকে জাগাইস তবে তোর মস্তক ছেদন করিয়া পদব্রজে মাজন্দরানে যাইব ইহা কহিয়া নিদ্রাগেল ঘোড়া যে স্থানে চরিতেছিল সেস্থান হইতে রোস্তমের নিকট দাঁড়াইয়া রহিল, অজাগর ক্ষণেক কাল পরে ঘোটকের নিকট আসিতে লাগিল যখন অতি নিকট হইল তখন ঘোড়া অতি চিৎকার করিয়া অজাগরকে মারিতে চলিল ঐ শব্দে রোস্তম উঠিয়া দেখিল যে অশ্বের নিকটে এক বৃহৎ অজাগর রহিয়াছে তখন রোস্তম তলওয়ার বাহির করিয়া অজাগরের উপরে এক আঘাত করিল তাহাতে অজাগরের কিছু হইলনা পুনবার মারিতে গেলে অজাগর বদন বিস্তার করিয়া রোস্তমকে গ্রাস করিতে আইল, ঐ ঘোটক তাহা দেখিয়া অজাগরের পুচ্ছে কামড়িয়া টানিতে লাগিল, তখন অজাগর ঘোড়ার দিগে ফিরিল সেই সময়ে রোস্তম অজাগরের মস্তকে তলওয়ার মারিয়া দুই খণ্ড করিল, তখন রোস্তম অজাগরের শরীর দেখিয়া বিস্ময়াপন্ন হইয়া ঈশ্বরকে প্রণাম করত ধন্যবাদ ও স্তব করিয়া পরে সরোবরে হস্তাদি ধৌত করিয়া অজাগরের শরীর মাপ করিলেন, সত্তরী গজ দীর্ঘ তাহারি উপযুক্ত স্থুল দ্বিতীয় দিবসীয় পথের বিবরণ সমাপ্ত হইল ॥

### তৃতীয় দিবসের বিবরণ।

তৃতীয় দিবস প্রাতে ঘোটকারোহণে অনেক দূর গিয়া

দিবা অবসানে এক বনের প্রান্তে পুষ্করিনী দেখিয়া সেই স্থানে ঘোটককে চরিতে দিয়া আপনি সেই স্থানে বিশ্রাম করিল, এই সময়ে এক পরম সুন্দরী যুবতী সুকেশা সুবেশা এক হস্তে এক সোরাহি, এক হস্তে তানপুরা লইয়া আইল সেই রমণী দৈত্য কন্যা রোস্তম না জানিয়া তাহাকে নিকটে বসাইয়া তাহার সুরাপাত্র হইতে সুরা লইয়া পান করিলেন। সেই যুবতী গান আরম্ভ করিল তাহা শুনিয়া রোস্তম তুষ্ট হইল, তখন সেই যুবতী বন মধ্যে আসিবার কারণ ও নাম জিজ্ঞাসা করিল? রোস্তম ঈশ্বরের নাম স্মরণ করিয়া সমস্ত বিবরণ কহিতে আরম্ভ করিলেন। ঈশ্বরের নাম শ্রবণ করিয়া ঐ যুবতী বিবর্ণা ও কম্পিত হইল, তখন রোস্তম জানিল যে এ মনুষ্য নহে অতি শীঘ্র কমন্দ অর্থাৎ পাস দ্বারা তৎক্ষণাৎ তাহাকে বন্ধন করিয়া কহিল? তুইকে তাহা বল সে কহিল আমি দৈত্য কন্যা এবং কুহকী আমাকে তুমি নষ্ট করিও না সঙ্গে লইয়াচল আমা হইতে অনেক কর্ম্ম পাইবা রোস্তম তাহা না শুনিয়া তাহাকে বিনাশ করিয়া সেই স্থানে আহারাদি করিয়া নিদ্রা গেল ॥

চতুর্থ দিবসের পথের বিবরণ ॥

চতুর্থ দিবস রোস্তম প্রাতে উঠিয়া তথা হইতে গমন করিয়া সায়ংকালে এক স্থানে উত্তম ক্ষেত্র ও নদী দেখিয়া সেইস্থানে ঘোটককে ক্ষেত্রে ছাড়িয়া আপনি কিঞ্চিৎ আহার করিয়া শয়ন করিল, ক্ষণেককাল পরে ক্ষেত্রের রক্ষক আসিয়া অশ্ব দেখিয়া নিকটে গিয়া দেখে একজন যুবা পুরুষ শয়ন করিয়া রহিয়াছে, সেই রক্ষক রোস্তমের পাদে

বেত্রাঘাত করিল তাহাতে রোস্তমের নিদ্রা ভঙ্গ হইবায় রক্ষক কহিল তুই জানিস্ না যে উলাদ নামে দৈত্যর সেনাপতির এ ক্ষেত্র এখানে ঘোড়া ছাড়িয়াছিস। পক্ষীগণ ভয়ে এ ক্ষেত্রের নিকটে আইসে না তোর কি প্রাণে ভয় নাই শীঘ্র এখান হইতে পলায়ন কর তুই অতি সুন্দর বালক দেখিয়া আমার দয়া হইতেছে; ইহা শুনিয়া রোস্তম তাহার মুখেতে এক চপেটাঘাত করিল তাহাতে তাহার নাসিকা ও মুখ ও দন্ত ভাঙ্গিয়া গেল পরে তাহার দুইটা কান ছিঁড়িয়া ফেলিল তখন রক্ষক রোদন করিতে২ (উলাদ কথক গুণীন দৈত্য লইয়া সিকার করিতে ছিল) তাহাকে ঐ সকল বৃত্তান্ত কহিল, সে তাহা শুনিয়া সেনা সহিত উক্ত স্থানে আইল তাহা দেখিয়া রোস্তম ঘোটকারোহণে তাহার নিকটে আইলে উলাদ কহিল তোরনামকি এখনি আমারহস্তেমরিবি রোস্তম কহিলআমার নাম শুনিলে তোর পিত্ত গলিয়া যাইবেক পরে উলাদ কহিল তুই কোন পথ দিয়া এখানে আসিয়াছিস ? রোস্তম কহিল হস্তখানের পথ (অর্থাৎ সাত দিনের পথে) তাহার তিন দিবসের পথের আপদ সকল নষ্ট করিয়া আসিয়াছি, আর অদ্য তোকে মারিয়া এখানকার আপদোদ্ধার করিব। এই কথা শুনিয়া উলাদের মনে ভয়হইল তখন আপন সেনাদিগ্যে কহিল ইহাকে ধর, তাহারা রোস্তমকে তৎক্ষণাৎ বেষ্টন করিল তখন রোস্তম তাহার মধ্যে যে প্রধান ছিল অতি শীঘ্র তাহাকে ধরিয়া বিনাশ করিয়া আর সকলের হস্তপদ গদা দ্বারা ভগ্ন করিল, অবশিষ্ট ব্যক্তিরা প্রাণ লইয়া পালাইল। রোস্তম তাহারদিগের পশ্চাৎ২ তাড়না করিয়া চলিল, কথক

দূর গিয়া কমন্দ ফেলিয়া উলাদকে বান্ধিয়া আকর্ষণ করিতে লাগিল তাহাতে সে অশ্ব হইতে ভূমে পড়িল, রোস্তম ঘোড়া হইতে নামিয়া তাহার দুই হস্ত বন্ধন করিয়া কথক দূর লইয়া গিয়া তাহাকে এক বৃক্ষে বান্ধিয়া আপনি নিদ্রা গেল।

## পঞ্চম দিবসের পথের বিবরণ ॥

প্রাতে রোস্তম গাত্রোত্থান করিয়া উলাদকে কাউছের ও দেওসফেদের সম্বাদ জিজ্ঞাসা করিলে সে সকল কথা সত্য কহিল; পরে রোস্তম তাহার মস্তক ছেদনে উদ্যত হইলে সে রোস্তমের পায়ে ধরিয়া শরণাগত হইয়া কহিল, আমার প্রাণ রক্ষা করিলে জন্মের মত তোমার দাস হইয়া থাকিব আর আমা হইতে দেওসফেদের সমস্ত অনুসন্ধান পাইবেন এবং কাউছ বাদসাহ যে স্থানে বন্ধ আছে ও যে প্রকারে সে স্থানে যাইতে হইবেক তাহার সকল সন্ধান বলিয়া দিব ইহা শুনিয়া রোস্তম তাহাকে নামারিয়া বন্ধন পূর্ব্বক লইয়া চলিল, আর কহিল যদি সত্য সকল কথা কহ তবে পুরস্কার করিব; পরে উলাদ কহিল কাউছ প্রভৃতি যে স্থানে বন্ধ আছে সে এ স্থান হইতে নিকট এবং মাজন্দরান দেশে যাইবার পথ সেই স্থানে তাহার মধ্যেং দৈত্যদিগের রক্ষক আছে পরে রোস্তম উলাদের কথিত মত সমস্ত দিবস ও অদ্ধ রাত্রি পর্য্যন্ত গমন করিয়া এক পর্ব্বতের উপর অগ্নি দেখিয়া উলাদকে জিজ্ঞাসা করিল এ অগ্নি পর্ব্বতে কি নিমিত্তে ? সে কহিল এই দেওসফেদের থাকিবার স্থান, পরে উলাদকে এক বৃক্ষে বান্ধিয়া আপনি নিদ্রা গেল।

## ষষ্ট দিবসের পথের বিবরণ

ষষ্ট দিবস প্রাতে উঠীয়া উলাদকে সঙ্গে লইয়া কথকদ্বয় গিয়া দেখিল কথক গুলীন দৈত্য রহিয়াছে, রোস্তম উলাদ কে বৃত্তান্ত জিজ্ঞাসা করিল ? সে কহিল এই খানে দুই জন প্রধান দৈত্য আছে একজনের নাম আরজঙ্গ, আর একজনের নাম বেদরঙ্গ ইহারা বলবান ও যোদ্ধা আপনি সাবধান থাকিবেন, ইহা শুনিয়া রোস্তম অতি শীঘ্র আরজঙ্গের নিকট গিয়া মেঘের ন্যায় গর্জন করিল, তাহা শুনিয়া আরজঙ্গ রোস্তমের কোটী বেষ্টন দুই হস্তে বলপূর্ব্বক ধারণ করিল রোস্তম এক হস্ত তাহার স্কন্ধে রাখিয়া আর এক হস্তে তাহার মস্তক ধরিয়া ছিঁড়িয়া তাহার সৈন্যমধ্যে ফেলাইয়া দিল, আর আর দৈত্য তাহা দেখিয়া কাহার ও সাধ্য হইল না যে রোস্তমের সম্মুখে আইসে. তাহারা ভয়ে ভীত হইয়া পলায়ন করিল। রোস্তম তথা হইতে শিখরোপরি এক বৃক্ষ ছায়ায় ক্ষণেক কাল বিশ্রাম করিয়া উলাদকে কহিল যে স্থানে কাউছ সাহ বদ্ধ আছেন আমাকে সেই স্থানে লইয়া চল, উলাদ রোস্তমকে যে খানে কাউছ বাদসাহ ছিল সেইখানে লইয়া গেল প্রহরিগণে সে সময়ে নিদ্রিত ছিল অনায়াসে রোস্তম ঐ বাটির মধ্যে গিয়া দেখিলেন যে লৌহ শৃঙ্খলে কাউছ প্রভৃতি সকল প্রধানেরা বদ্ধ আছেন, রোস্তমকে দেখিয়া কাউছ বাদসাহ বিস্তর রোদন করিয়া পরে ইরানেরও জালের ও পথের সকল সংবাদ জিজ্ঞাসা করিলেন। রোস্তম সমুদয় বিস্তারিত করিয়া কহিল এই সময়ে প্রহরিরা জাগ্রত হইয়া তাহারদিগের প্রধান বেদরঙ্গের নিকটে জ্ঞাপন করিবায় সে

অতি রাগত হইয়া যুদ্ধ করিতে উদ্যত হইল; তাহা দেখিয়া রোস্তম কহিল আরজঙ্গ দৈত্যর মস্তক যেরূপ ছিঁড়িয়াছি তাহা দেখিয়াছ অতএব যদি তুমি অকৌশল নাকরিয়া আমার আজ্ঞা বর্ত্তি থাক এবং যখন যাহা জিজ্ঞাসা করিব তাহা সত্য কহ প্রবঞ্চনা না কর তবে তোমার প্রাণদান দিব নচেৎ যুদ্ধ কর? বেদরঙ্গ রোস্তমের আকার প্রকার দেখিয়া ও আরজঙ্গের মস্তক ছিড়িয়াছিল তাহা স্মরণ করিয়া মনে ভীত হইল এবং বুঝিল যে ইহার সহিত যুদ্ধে পারিব না ইহা বিবেচনা করিয়া রোস্তমের শরণাগত হইয়া আর২ দৈত্য দিগের বিপক্ষতা না করিয়া সাপক্ষ হইতে কহিল, পরে ঐ বেদরঙ্গকাউছ প্রভৃতি সকলকে মুক্ত করিয়া রোস্তমকে কহিল যে আপনি দেওসফেদের নিকটে জাও আমি এইখানে এখন থাকি রোস্তম উলাদকে সঙ্গে লইয়া দেওসফেদের নিকট গেল কিছুদুরে গিয়া অনেক দৈত্য দেখিয়া উলাদকে কহিল ইহারা কে? উলাদ কহিল দেওসফেদের সেনা আর কহিল দৈত্যেরা দিবসে নিদ্রা যায় রাত্রেসমস্ত কর্ম্মকরে ঈশ্বর ইচ্ছায় আপনি দেওসফেদের সহিত দিবসে যুদ্ধ করিলে অক্লেশে জয়ি হইবেন। রোস্তম ঐ পর্ব্বতের নিচে উলাদকে এক বৃক্ষে বান্ধিয়া কিঞ্চিৎ আহার করিয়া নিদ্রা গেল॥

## সপ্তম দিবসের বিবরণ॥

সপ্তম দিবস প্রাতে রোস্তম উঠিয়া উলাদকে সঙ্গে লইয়া তথা হইতে দিবা দুই প্রহরের সময় দেওসফেদের বাস স্থানে পৌঁছিয়া দেখিল দৈত্য সেনারা অনেকেই নিদ্রিত, দুই চারিজন জাগ্রত রোস্তম তাহারদিগেকে গদা প্রহার করল

তাহাতে তাহারা আর আর দৈত্যদিগ্যে জাগৃত করিয়া অনেক একত্রা ভুত হইয়া রোস্তমকে বেষ্টন করিল রোস্তম তাহা দেখিয়া তাহারদিগের সঙ্গে যুদ্ধ করিয়া অনেক দৈত্যকে সংহারকরিল আরকথক পলাইয়া দেওসফেদকে সংবাদদিতে গেল তখন রোস্তম উলাদকে কহিল দেওসফেদ যে খানে আছে সেইখানে আমাকে লইয়া চল, উলাদ রোস্তমকে সঙ্গে করিয়া পর্ব্বতের এক বৃহদ গুহার নিকটে লইয়া গিয়া কহিল এই গুহার ভিত্তর দেওসফেদ নিদ্রিত আছে। রোস্তম গুহার দ্বার হইতে অনেক নিরক্ষণ করিয়া কিছু দেখিতে নাপাইয়া তাহার-মধ্যে প্রবেশ করিলেন ঐ সময়ে দেওসফেদ গুহার মধ্য হইতে আসিয়া রোস্তমের সর্ম্মুখে স্বেত পর্ব্বতের ন্যায় দণ্ডয়মান হইল রোস্তম তাহার বিকটাকার দেখিয়া ভিত্ত হইয়া মনে ২ চিন্তা করিল যে আমি অনেকবলাধান্ ও দৈত্য দেখিয়াছি কিন্তু এমন বিকটাকার কখনদেখিনাই;এবং কখন ভিত্ত ও হই নাই ইহা ভাবিয়া ঈশ্বরকে মনে মনে অনেকচিন্তা করিয়া অতি শীঘ্র একতীক্ষ্ন অস্ত্র দেওসফেদকে প্রহার করিল দেওসফেদের উরুদেশে লাগিয়া অর্দ্ধেক কাটিয়া গেল অন্ধকার প্রযুক্ত রোস্তম তাহা দেখিতে পাইল না দেওসফেদ আঘাত্তি হইয়াও রোস্তমকে ধরিল তখন দুইজনে সেই গুহার দ্বারে মল্লযুদ্ধ আরম্ভ করিল, উভয়েই মনে ভিত্ত হইয়াছেন, অনেক ক্ষণ যুদ্ধ করিতে ২ সেই ভূমি ক্রমে কর্দ্দমের ন্যায় রোস্তম অনুমান করিয়া দেওসফেদের সরির নিরক্ষণ করিয়া দেখিল যে দেওসফেদকে প্রথম যে তলওয়ার মারিয়াছিল শাহাতে তাহার একউরু প্রায় দুইখণ্ড হইয়া গিয়াছে, তাহারি

রক্তে কর্দ্দম হইয়াছে ইহা দেখিয়া তখন সাহস করিয়া দেওসফেদের কোটি বন্ধ ধরিয়া ভুমে ফেলিয়া অতি শীঘ্র খঞ্জর বাহির করিয়া তাহার বক্ষে মারিল তাহাতে দেওসফে-দের হৃদয় পর্য্যন্ত কাটিয়া দুইখণ্ড হইল তাহাতেই দেওসফেদ প্রাণ ত্যাগ করিল, তখন রোস্তম গুহার ভিতর হইতে বাহিরে আসিয়া দেখিল অনেক দৈত্য ভূমিতে পডিয়া রহিয়াছে তাহা দেখিয়া রোস্তম উলাদকে কহিল ইহারদিগেকে কে মারিয়া-ছে উলাদ কহিল ইন্দ্রজাল বিদ্যার দ্বারা কোন প্রকরণ দেও সফেদ করিয়াছিল যে দেওসফেদ নামরিলে তাহার পরিবার ও আত্মীয় কেহ মরিবেকনা, আর দেওসফেদ মরিলে তাহার আত্মীয় সকলে তৎখনাৎ প্রাণ ত্যাগ করিবে, আপ-নি দেওসফেদকে বধ করিয়াছ তাহার বন্ধু বান্ধব পরিবার সকলে তখনি মরিয়াছে। পরে উলাদ রোস্তমকে কহিল আ-পনি পূর্ব্বে আমাকে পুরুষ্কার দিবেন আজ্ঞা করিয়াছিলেন এখন দেওসফেদকে আপনি মারিলেন আমায় কি পুরুষ্কার দিবেন তাহা আজ্ঞা হউক। রোস্তম কহিল তোকে এই মাজ-ন্দরান দেশের বাদসাহ করিব ইহা কহিয়া উলাদকে সঙ্গে লইয়া কাউছ সাহর নিকটে আসিয়া দেওসফেদের যুদ্ধের সমস্ত বৃত্তান্ত কহিল; তখন বেদরঙ্গ দৈত্য ভীত হইয়া রোস্তমের পদানত হইল, রোস্তম তাহাকে এক তক্ত আনিতে কহিলেন সে এক স্বর্ণ নির্ম্মিত তক্ত আর এক চৌকি আনাইল রোস্তম কাউছ সাহকে ঐ তক্তে বসাইলেন, আর আপনি চৌকিতে বসিলেন এবং তুছ ফরেবোরজ গোদরোজ গেও রুহাম খোরগিন প্রভৃতি সেনাপতি যাহারা কাউছ সাহর

সহিত আসিয়া বদ্ধ ছিল তাহারাও দক্ষিণ পার্শ্বে বসিল, আর বেদরঙ্গ দৈত্য আপন সেনাগণ লইয়া একপার্শ্বে দণ্ডায়মান রহিল এক সপ্তার পর মাজন্দরানের বাদসাহকে একপত্র লিখিয়া ফরহাদ নামে একজনকে দুত করিয়া পাঠাইলেন সে পত্রের বিবরণ এই ॥

কাউছ বাদসাহর পত্র মাজন্দরানের
বাদসাহ প্রতি ॥

ঈশ্বরকে প্রণতি পূর্ব্বক ধন্যবাদ করিয়া তোমাকে লিখিতেছি হে মাজন্দরানের বাদসাহ পরমেশ্বর তোমাকে শুমতি দেন এবং রোস্তম নামে পুরুষ সিংহ ইরানের প্রধান সেনাপতি আমার কারাগারে বদ্ধ হওয়ার সমাচার পাইয়া একা হপ্তাখানের পথের সকল উপদ্রব নষ্ট করিয়া এখানে আসিয়া তোমার পরম বন্ধু ( দেওসফেদকে তাহার সৈন্য সহিত মারিয়া আমাকে ও আমার সেনাগনকে কারাগার হইতে মুক্ত করিয়াছে ) অতএব তোমার হিতার্থে লিখিতেছি যে আমার নিকট আসিয়া কর নির্দ্ধারিত করিয়া পরম সুখে এখানে বাদসাহি কর, ইহাতে মতান্তর হইলে তোমার ধনপ্রাণ নষ্ট করিব। ইরানের কয়কাউছ বাদসাহর এই আজ্ঞা পত্র জ্ঞাত হইয়া শিঘ্র আমার এখানে আসিবা ইতি ॥

মাজন্দরানের বাদসাহ এই পত্র জ্ঞাত হইয়া রাগত হইয়া দুতকে কহিল যে কাউছ হইতে রাজ্য ও সেনা আমার অধিক এবং বারসত হস্তি আমার সৈন্যার সহিত আছে কাউছের সঙ্গে একটাও হস্তি নাই আমি মনে করিলে তাহাকে বাঁধিয়া ইরান এখনি লইতে পারি, আমি কুকর্ম করিয়াছি যে কাউছ

কে প্রাণে নামারিয়া বন্ধ রাখিয়া ছিলাম এবার যুদ্ধ করিলে তাহাকে প্রাণে নষ্ট করিব, আর সে আমাকে ভয় প্রদর্শন করাইতেছে যে রোস্তম নামে তাহার সেনাপতি আসিয়া দেও-সফেদকে নষ্ট করিয়াছে তাহাতে আমি ভিত্ত নহি, একজন মরিয়াছে কিন্তু তদপেক্ষা বলবান্ দৈত্য আমার আশ্রিত অনেক আছে; দূত এই উত্তর শুনিয়া কাউছ বাদসাহর নিকট আসিয়া কহিল, কউছসাহ এই সকল কথা শুনিয়া প্রধান দিগের কহিলেন আর বিবাদে আবিস্যক নাই চল ইরানে গমন করি। রোস্তম কহিল পুনরায় আর এক পত্র লেখ আমি দূত হইয়া যাইব ইহা শুনিয়া পুনরায় পত্র লিখিলেন তাহার বিবরণ এই ॥

ঈশ্বরকে প্রণতি পূর্ব্বক তোমাকে পুনর্ব্বার লিখিতেছি যদি কেহু অজ্ঞান কিম্বা উন্মত্ত হয় তবে তাহাকে হিতোপদেশ দেওয়া জ্ঞানির কর্ম্ম, তুমি অবিলম্বে আসিয়া আমার পদানত হও তবে তোমার প্রাণ রক্ষ্যা করিয়া শদেশ তোমাকে প্রসাদ করিব, নত্তবা তোমার মস্তক ছেদনকরিয়া এইদগের উপর টাঙ্গাইব কাউছ বাদসাহর এই পত্র জ্ঞাত হইয়া সিঘ্র এখানে আসিবা ইতি ॥

রোস্তম দূত হইয়া ঐ পত্র লইয়া মাজন্দরানের বাদসাহর নিকটে গমন করিল, যখন নগরের নিকট পেঁাছিল রক্ষকরা বাদসাহকে জানাইল যে পুনরায় কাউছের নিকট হইতে এক দূত আসিতেছে সে অতি বলবান্ বোধ হয় বাদসাহ শুনিয়া আপনার সভাস্ত কয়েক জন বলবান্‌কে আজ্ঞা করিলেন যে তোমরা অগ্রসর হইয়া তাহাকে আন যখন তাহারা রোস্তমের

নিকট পৌঁছিল রোস্তম তাহার দিগকে দূরে হইতে আসিতে দেখিয়া বৃহদ এক বৃক্ষ উৎপাটনকরত হস্তে লইয়া ঘুরাইতে ২ চলিল. যখন তাহারা রোস্তমের নিকট উপস্থিত হইল তখন ফেলিয়া দিল. তাহারা ইহা দেখিয়া পরামর্শ করিল যে আমার দিগেকে আপন শক্তি দেখাইল আমারাও আপন শক্তি উহাকে দেখাই, এইস্থির করিয়া মিলিত হইবার সময় রোস্তমের হস্ত ধরিয়া বল করিল তাহাতে রোস্তম হাস্য করিয়া তাহার হস্ত পীড়ন করিল তাহাতে সে অচৈতন্য হইয়া ঘোটক হইতে ভূমে পড়িল এবং তাহার হস্তের অস্তি পর্য্যন্ত চুর্ন হইল. এই কথা একজন সিঘ্র গিয়া বাদসাহকে জানাইল তখন কলাহুর নামে একজন অতি পরাক্রমি ছিল তাহাকে কহিলেন অনুমান হয় রোস্তম আসিতেছে, তুমি গিয়া মিলিবার সময় তাহার হস্ত ধরিয়া ভাঙ্গিয়া দেও, সে আসিয়া মিলিবার উপলক্ষ্যে রোস্তমের পঞ্জা ধরিয়া জোর করিল তাহা দেখিয়া রোস্তমদৃঢ়রূপে তাহার হস্ত ধারণ করিল এমন যে কলাহুরের পঞ্জা ফাটিয়া রক্তপাত হইতে লাগিল। পরে কলাহুর বাদসাহর নিকট আসিয়া হস্ত দেখাইয়া কহিল যে কাউছ বাদসাহর সঙ্গেবিবাদ করা আমারদিগের কর্ত্তব্য নহে যে হেতু সন্ধি করাই ভাল, বাদসাহ এই কথা শুনিয়া কলাহুর প্রতি রাগান্বিত হইলেন, পরে রোস্তমকে নিকটে আনিতে কহিলেন রোস্তম আসিয়া কাউছের পত্র দিল তাহা শুনিয়া কহিলেন তুমি বুঝি রোস্তম? রোস্তম কহিল আমি তাহার সিস্যার যোগ্য নহি। পরে পত্রের উত্তর লিখিল যে আমি কখন তোমার অধীন হইবনা বরংতুমি দাসও স্বিকারকর

তোমার পিতা পিতামহ এ দেশের প্রার্থনা কখন করে নাই তোমার এমন ভ্রম কেন হইয়াছে, আর কাহার পরামর্শে এ দেশে আইলে যাহা হউক তোমাকে সত পরামর্শ দিতেছি সিঘ্র আপন দেশে প্রাণ লইয়া প্রস্থান কর নচেৎ অতি শীঘ্র আমার সেনাগন গিয়া তোমার সৈন্য সহিত তোমাকে নষ্ট করিবে এই পত্র রোস্তমকে দিয়া বিদায় করিল। রোস্তম বিদায় হইবারসময় কহিল যে আপনি বিবচনা না করিয়া রাগান্বিত হইয়া ধন প্রাণে মজিলে কাউছসাহ রোস্তমকে লইয়া যুদ্ধে আইলে তোমার সবংশে নষ্ট করিবেক বাদসাহ এতদ্বাক্য শুনিয়া রাগত হইয়া কহিলেন কাউছকে বল শীঘ্র আসিয়া যুদ্ধ করুক, রোস্তম তথা হইতে আসিয়া কাউছকে সকল কথা কহিয়া সেনাগন সঙ্গে লইয়া যুদ্ধে গমন করিল, এবং মাজন্দরানের বাদসাহ কথক গুলিন দৈত্য সেনা সঙ্গে লইয়া রণস্থলে আসিয়া জোয়ানামে একজন প্রধান দৈত্য, কাউছের যোদ্ধাকে ডাকিল কাউছ শুনিয়া আপন সেনাপতি দিগেকে যুদ্ধে যাইতে আজ্ঞা করিলেন। রোস্তম তখন এক শুল হস্তে লইয়া অতি শীঘ্র তাহার নিকট গিয়া তাহার বক্ষে আঘাত করিল তাহাতে সেই দৈত্য ভূমে পড়িয়া প্রাণ ত্যাগ করিল তাহা দেখিয়া মাজন্দরানের বাদসাহ আপন সেনা দিগেকে কহিলেন সকলে একত্র হইয়া ঐ যোদ্ধাপতিকে মারহ তখন মাজন্দরানের অনেক সেনা রোস্তমকে বেষ্টন করিল তাহা দেখিয়া কাউছসাহ আপন সেনাপতি ও সেনাগনকে রোস্তমের সহায় নিমিত্ত পাঠাইলেন, উভয় সেনাতে সপ্তাহ দিবারাত্রি অনবরত যুদ্ধ হইল তাহা দেখিয়া কাউছ

সাহ ভিত্ত হইয়া বিস্তর রোদন করিতেং ঈশ্বরের নিকটে জয় প্রার্থনা করিলেন। অষ্টাহ প্রাতে রোস্তম রাগত হইয়া মাজন্দরানের বাদসাহর নিকট গিয়া তাহার কোটি দেশে শুসামাস্ত করত হস্তি হইতে তাহাকে ভূমে ফেলিয়া তাহার মস্তক ছেদন করিল, তাহা দেখিয়া সকল সেনা পলায়ন করিল। তখন কাউছসাহ রোস্তমকে সঙ্গেলইয়া দুর্গমধ্যে গিয়া তক্তে বসিলেন, মাজন্দরানের সকল লোক ভয়ে সরনাগত হইল, পরে রোস্তমের বাঞ্ছামত্ত উলাদকে তথাকার বাদসাহ করিয়া অনেক ধন ও রত্নাদি লইয়া ইরানে আইলেন এই সম্বাদ শুনিয়া অনেক বাদসাহ ভয়েতে সরনাগত হইল। পরে রোস্তমকে অনেক পুরস্কার করিয়া জাবুল স্থানে বিদায় করিলেন ॥

---

কাউছ বাদসাহর হামওরান দেশে কয়েদ হওনের বিবরণ ॥

কাউছ বাদসাহকে অনেক বাদসাহরা উপঢৌকন পাঠাইল হামাওরান দেশের বাদসাহ উপঢৌকনাদি কিছু পাঠাইলনা এ নিমিত্ত্য কাউছসাহ রাগত হইয়া গেও গোদরজ তুছ প্রভৃতি সেনাপতিদিগের সসন্য সঙ্গে লইয়া হামওরান দেশের বাদসাহর প্রতি আক্রমন করিয়া নগর বেষ্টন করিলেন, পরে লোক দ্বারা শুনিলেন যে সেই বাদসাহর ছুদাবানামে পরম সুন্দরী যুবতী এক কন্যা আছে কাউছ ঐ বাদসাহকে কহিয়া পাঠাইলেন যে তোমার ছুদাবা কন্যাকে আমার সহিত বিবাহ দেও নতুবা যুদ্ধ কর, সে বাদসাহ এই কথা শুনিয়া আপন কন্যাকে পরামর্শ জিজ্ঞাসা করিলে সে কহিল যদি

আমাকে দিলে এ বিপদ হইতে মুক্ত হও তবে এইক্ষণে আমা-
কে পাঠাইয়া দেও, ছুদাবার এই বাক্য শুনিয়া কাউছসাহকে
কহিয়া পাঠাইলেন যে আমার ছুদাবা কন্যাকে অতি ত্বরায়
আপনার নিকটে পাঠাইতেছি। কাউছ শুনিয়া অতি তুষ্ট
হইল, পরদিন হামওরান দেশের বাদসাহ অনেক রত্নালঙ্কার
বস্ত্র ও দাস দাসী এবং আপন মন্ত্রিগনকে সঙ্গেদিয়া ছুদাবা
কে কাউছসাহর নিকটে পাঠাইলেন। কাউছ ছুদাবাকে পা-
ইয়া নিয়ম পূর্ব্বক বিবাহ করিয়া ঐ বাদসাহর পৃতি তুষ্ট হইয়া
তাহার দেশ ছাড়িয়া দিলেন এবং অনেক পুরস্কার করিলেন,
তাহার পর ঐ বাদসাহ কাউছসাহকে আপন বাটিতে ভোজ-
নার্থে নিমন্ত্রন করিল, ছুদাবা শুনিয়া কহিল আমার পিতা
অনেক ছলনাদি করিতে জানে তুমি সেস্থানে গমন করিলে
কোনছল ক্রমে তোমাকে বন্ধ করিবে, অতএব তোমার জাও
য়া উচিতনহে, কাউছতাহা নাশুনিয়া কয়েকজন প্রধান সেনা
পতিদিগকে সঙ্গে লইয়া ঐ বাদসাহর দুর্গমধ্যে গেলেন, সে
সম্বাদ পাইয়া অগ্রে আসিয়া আপন বাটির মধ্যে লইয়া আ-
পনতক্তে বসাইয়া দাসেরন্যায় সেবা করিয়া কাউছকে বসি
ভুত করিয়া কয়েদকরিল, এবং গোদরজ গেও ও তুছ প্রভৃতি
কেও স্থানান্তরে ধৃতকরিয়া রাখিল আর২ লোক ইহা শুনিয়া
সেনাসহিত তথা হইতে ইরানেগেল। আদরাছিয়াব কাউছ
বাদসাহর হামাওরান দেশে বন্ধন হইয়াছে ইহা শুনিয়া
আপন সৈন্য সামন্ত লইয়া আসিয়া ইরান দেশ গৃহণ করিল
সকলে ভীত হইয়া তাহার অনুগত হইল যাহারা কাউছের
অতি বাধ্য ছিল তাহারা পলাইয়া জাবলস্তানে রোস্তমের
নিকট গিয়া কাউছসাহর হামাওরান দেশে ধৃত হইবার

বিবরণ ও আফ্রাসিয়াব আসিয়া ইরান দেশ অধিকার করিয়া লইবার বিবরণ সকল বিস্তারিত করিয়া কহিল ॥

রোস্তম হামাওরান দেশ হইতে কাউছকে মুক্ত করিবার বিবরণ ।

রোস্তম কাউছের কারাবদ্ধ হইবার কথা শুনিয়া হামাওরান দেশের বাদসাহকে লিখিল যদি তুমি আমার পত্র পাইবা মাত্র কাউছ সাহকে মুক্ত কর তবে আমি তুষ্ট হইয়া তোমার ভাল করিব, নতুবা আমি সেখানে গিয়া তোমাকে সেনা সহিত নষ্ট করিয়া রাজ্য সমভুমি করিব, যেমত মাজন্দরান দেশে গিয়া দেওসফেদকে ও মাজন্দরানের বাদসাহকে একা স সৈন্যে নষ্ট করিয়া কাউছসাহকে মুক্ত করিয়া আনিয়াছি তাহা শুনিয়াছ, তোমার সভার বিজ্ঞ লোকেরদিগকে লইয়া বিবেচনা করিয়া শীঘ্র উত্তর লিখিবা, হামওরানের বাদসাহ এইপত্র শুনিয়া তাহার উত্তর লিখিল যে তুমি এখানে আইলে তোমাকেও কারাগারে বদ্ধ করিব; রোস্তম এই পত্র প্রাপ্তে রাগত হইয়া কথকগুলীন সৈন্য সঙ্গে করিয়া হামাওরান দেশে যাত্রাকরিল হামাওরানদেশের বাদসাহ মেছরদেশের বাদসাহকে ও বরবর দেশের বাদসাহকে এবং নিকটস্থ বাদ সাহদিগের স্থানে এই সংবাদ লিখিয়া তাহারদিগের সঙ্গে মিলিত হইয়া যুদ্ধের সাহার্য্য প্রার্থনা করিল; যখন রোস্তম হামাওরান দেশে পৌছিল তখন ঐ সকল বাদসাহ আপন ২ সেনা সঙ্গে করিয়া রোস্তমের সহিত যুদ্ধ করিতে আইলে

রোস্তম ঘোটকারোহণে রণ ভূমিতে গিয়া বিপক্ষদিগকে যুদ্ধার্থে আহ্বান করিলে; সকল সেনা রোস্তমের নাম শুনিয়াই ভীত হইয়াছিল তাহাকে দেখিয়া কাহারাও সাহস হইলনা যে রোস্তমের সহিত কেহ যুদ্ধ করে, ইহা দেখিয়া হামাওরানের বাদসাহ আপন সেনাদিগেকে অনেক তিরস্কার ও ভৎসনা করিলে কয়েক জন বলবান্ অশ্বারূঢ় হইয়া রণস্থলে আইল তাহা দেখিয়া রোস্তম অগ্রসর হইল, তাহারা রোস্তমকে দেখিয়া পলায়ন করিল; তাহাতে মেছর ও বরবর দেশের বাদসাহরা লজ্জিত হইয়া আপনারা রোস্তমের সহিত যুদ্ধ করিতে ধাবমান হইবায় রোস্তম অতি শীঘ্র তাহাকে একগদা প্রহার করিল সে আপনাকে বাঁচাইয়া পলায়ন করিল; রোস্তম তাহার পশ্চাৎ তাডনা করিয়া কমন্দ ফেলিয়া তাহাকে ধরিয়া আপন সৈন্য মধ্যে রাখিয়া বরবর দেশের বাদসাহকে তাড়া করিল

তাহা দেখিয়া সে ও পলায়ন করিল। রোস্তম তাহার পশ্চাৎ২ কথকদূর গিয়া চল্লিশজন প্রধানকে বেষ্টন করত আপন সৈন্য মধ্যে আনিয়া বদ্ধ করিল, তাহা দেখিয়া হামাওরান দেশের বাদসাহ ভীত হইয়া রোস্তমের নিকট আসিয়া পদানত হইয়া আশ্রয় প্রার্থনা করিল। রোস্তম কহিল কাউছসাহকে আমার নিকট আন নতুবা তোমার সপরিবারকে এখনি বিনাশ করিব ইহা শুনিয়া তৎক্ষণাৎ লোক পাঠাইয়া কাউছসাহ, তুছ, গোদরজ, গেও, প্রভৃতি যে ২ বদ্ধছিল, তাহারদিগকে আনাইয়া রোস্তমের নিকটে সমর্পণ করিল, তখন রোস্তম কাউছসাহাকে বন্দীস্থান হইতে হামাওরানের বাদসাহর বাটিতে লইয়া তক্তে বসাইলেন, আর ঐ তিনজন বাদসাহ উপঢৌকন প্রদান করত

শরণাগত হইল, তাহারদিগের রাজ্যে নিয়ম পূর্ব্বক কর নির্দ্ধারিত করিলেন। অপরঞ্চ আফরাছিয়াব বাদসাহ কাউছ হামাওয়ান দেশে বদ্ধ হইলে আপন সেনা সহিত তুরান হইতে আসিয়া ইরান অধিকার করিয়াছে, রোস্তম প্রভৃতি সকলের নিকটে শুনিয়া ঐ তিনজন বাদসাহকে সসৈন্য আপনি সঙ্গে লইয়া ইরানে যাত্রা করিলেন। আফরাছিয়াব কাউছ বাদসাহর আগমনের সংবাদ শুনিয়া সমস্ত সেনাপতি ও প্রধান যোদ্ধাদিগকে ডাকাইয়া সকলের সাক্ষ্যাতে প্রতিজ্ঞা করিয়া কহিল যে কেহ রোস্তমকে মারিবে কিম্বা আমার নিকট ধৃত করিয়া আনিবেক তাহাকে আমার এক কন্যার সহিত বিবাহ দিব, আর আমার রাজ্যের চতুর্থাংশের এক অংশ তাহাকে দিব, এবং প্রধান সেনাপতি ও কর্ম্মাধ্যক্ষ তাহাকে করিব; ইহা শুনিয়া অনেকে মনে ২ করিলেন যে রোস্তমকে মারিবেন কেহবা ধৃত করিবেন, ইতোমধ্যে যখন কাউছ বাদসাহ রোস্তমকে অগ্র করিয়া ইরানে আসিয়া পৌঁছিল ইহা শুনিয়া আফরাছিয়াবের প্রধান সেনাপতি ও বলবানেরা রোস্তমের সহিত যুদ্ধ করিতে আইল, রোস্তম অতি তৎপর হইয়া তাহারদিগের কয়েকজনকে নষ্ট করিল অবশিষ্ট যে কয়েক জন ছিল তাহারা ভয়ে ভীত হওত পলায়ন করিয়া আফরাছিয়াবের নিকট গিয়া যুদ্ধের সমস্ত বৃত্তান্ত বিস্তারিত রূপে জানাইয়া সকলে একত্র হইয়া পরামর্শ করিত আফরাছিয়াব সকল সৈন্য লইয়া রোস্তমকে বেষ্টন করিল, তাহা দেখিয়া রোস্তম গদা পাণি হইয়া আফ-রাছিয়াবের প্রতি ধাবমান হইল তদ্দৃষ্টে আফরাছিয়াব

ভীত হইয়া পলায়ন করিল, তখন আর আর সেনা সকলে ও পলায়ন করিল পরে রোস্তম, গেও, গোদরজ প্রভৃতি সেনাপতিদিগের সেনা সহিত আফরাছিয়াবের পশ্চাত২ বেগে গমন করিয়া অনেক সেনা নষ্ট করিল, কিন্তু এতসেনা হত হইল যে লোকেরদিগের গমনা গমনের পথ একেবারে রুদ্ধ হইল। আফরাছিয়াব অতি দ্রুত গামি হইয়া প্রাণ রক্ষা করিয়া আপন বাদসাহি তুরানে পৌছিল। কাউছ বাদসাহ ইরানেআসিয়া তক্তেবসিয়া বাদসাহি করিতেলাগিলেন, অনেক বাদসাহ, এবং দৈত্যও পরি ভয়ে কাউছ বাদসাহর নিকট আশ্রিত হইয়া থাকিলেন, পরে রোস্তমকে জাবলস্তানে বিদায় করিয়া সুখে বাদসাহি করেণ। একদিন কাউছ বাদসাহ দৈত্যদিগকে ডাকাইয়া আজ্ঞা করিলেন যে আলবোর্জ পর্ব্বতের উপরিভাগে আমার নিমিত্তে রত্নাদির একঅট্টালিকা নির্ম্মাণ করহ, তাহারা এই সকল অসম্ভাবনীয় অনুজ্ঞা শ্রবণ করত ভীত হইয়া তাহারদিগের গুরু ইবলিছ সয়াতন তাহাকে এই সকল জানাইলেসে তাহাদিগকে কহিল যে তোমরা কাউছকে কহ যে আপনি কেবল পৃথিবীর বাদসাহ হইয়াছ তোমার তুল্য বাদসাহ আর কেহ নাই দৈত্য ও পরী প্রভৃতি তোমার আজ্ঞাবহ কিন্তু এঅতি খেদের বিষয় যে এতরূপ বাদসাহহইয়া স্বর্গের আশ্চর্য্য শোভা প্রভৃতি কিছুই আপনি দেখিলেন না, যখন এই কথা শুনিয়া স্বর্গ দেখিবার বাঞ্ছিত হইবে তখন আমাকে জানাইবা এমন উপায় কহিয়া দিব যে তাহাতেই কাউছ অনায়াসে বিনাশ হইবেক, ইহা শুনিয়া দজখিম নামে দৈত্য দিগের একজন প্রধান এক দিন কাউছের সভায় নানাবিধ

কখোপ কথন্তার ইবলিছের উপদেশ মত স্বর্গের প্রসঙ্গ উপ স্থিত করিল, তাহা শুনিয়া কাউছ অতি চঞ্চল হইয়া দজখিম দৈত্যকে কহিলেন যদি আমাকে স্বর্গে লইয়া তথাকার শোভা সন্দর্শন করাইতে পার তবে তোমাকে অনেক পুরস্কার করিব, সে কহিল অতি শীঘ্র তাহার উপায় করিব। তৎপরে বিদায় হইয়া ইবলিছ সয়তানকে জানাইয়া উপায় জিজ্ঞাসা করাতে সে কহিল কয়েকটা করগছ পক্ষের সাবক (অর্থাৎ কোন বৃহদ পক্ষ বিশেষ) আনাইয়া প্রতিপালন ও শিক্ষ্যা করাও তাহারা আজ্ঞাবহ হয়, যখন ঐ পক্ষ, শাবক সকল বশীভুত হই বেক তখন তাহার দিগের পৃষ্ঠদেশে রজ্জু সংলগ্ন করিয়া এক খান ক্ষুদ্র তক্ত ঝুলাইয়া তাহাতে কাউছ বসিবেন, আর ঐ তক্তের চারিকোণে অতিউচ্চতর চারিটা লৌহশলাকা তাহাতে মাংস বান্ধিয়া পূর্ব্বদিন ঐ পক্ষিদিগকে ক্ষুদিত রাখিয়া কথিত তক্তে উপবেশন করিলে পক্ষেরা মাংসের লোভে উর্দ্ধে উড্ডী য়মান হইবেক, পরে তাহারা কথকক্ষণ উড়িয়া ক্লান্ত হইয়া কাউছসাহকে তক্ত সহিত পৃথিবীতে পড়িবে উর্চ হইতে পড়ি লে কাউছ মরিবেক। দৈত্যগণ কাউছকে ইবলিছের কথিত মত কহিয়া কয়েকটা করগছ পক্ষের শাবক আনাইয়া ঐমত শিক্ষা করাইতে আজ্ঞা করিলেন, যখন পক্ষীগণ সুশিক্ষিত হইল তখন একখান ক্ষুদ্র তক্ত তাহারদিগের পৃষ্ঠে ঝুলাইয়া উড়িতে শিক্ষাইলেন ॥

---

কাউছ বাদসাহর উড়িবার বিবরণ ॥

পক্ষিদিগে্য একদিন উপবাসি রাখিয়া শলাকায় মাংসবান্ধিয়া

কাউছ্‌সাহ সয়তান্‌ নের উপদেশ মত তক্তে বসিয়া সর্গ দেখিতে চলিলেন মতান্তরে স্বর্গে ঈশ্বরের সহিত যুদ্ধ করিয়া স্বর্গাধিকার করিতে গেলেন, ঐ পক্ষি সকল পূর্ব্বদিবসের উপবাসি আহারের লোভে লোভাবিষ্ট হইয়া শিকেতে মাংসখণ্ড দেখিয়া ঐ মাংস লইবার মানসে ক্ষণেককাল উড্ডীয়মান হইয়া ক্ষুধায় কাতর প্রযুক্ত তক্তসহিত ভুমে পড়িতে লাগিল, কাউছ ঐ সময়ে অতি তৎপর হইয়া উক্ত তক্তের একটা পায়া ধরিয়া থাকিল। পক্ষি সকল কাউছসাহকে তক্ত সহিত চিন দেশের এক বনমধ্যে পড়িল কিন্তু কাউছসাহ তক্ত ধরিয়া ঝুলিয়াছিল এ নিমিত্তে মরিলনা; চল্লিশ দিন পর্য্যন্ত ঐ বনের মধ্যে ফল মূল আহার করিয়া দিবা রাত্রি ঈশ্বরের নিকট আপনার অপরাধ মার্জ্জনার প্রার্থণা করিয়া রোদন করিতে লাগিল। এখানে যখন প্রধানেরা দুইতিন দিবস গতে হইল বাদসাহ আইলেন না তখন উজীর আমীর প্রভৃতি সকলে উদ্বিগ্ন হইয়া পরামর্শ করিয়া যেই দৈত্য বাধ্য ছিল তাহারদিগকে ডাকাইয়া বাদসাহর অন্বেষণ করিতে আজ্ঞা করিলেন। তাহারা নানা দেশ দেশান্তরীয় বন, পাহাড়, পর্ব্বত, নদ, নদী প্রভৃতি স্থানেং ভ্রমণ করিয়া বাদসাহর অনুসন্ধান না পাইয়া ফিরিয়া আইল, কিন্তু তন্মধ্যের একজন আইলেন; তাহারা তখন সকলে এই সমাচার রোস্তমকে লিখিয়া পাঠাইল। রোস্তম পত্র পাইয়া অত্যন্ত ভাবিত হইয়া ইরানে আইল; সেই সময়ে ঐ দৈত্য আসিয়া কহিল যে কাউছ বাদসাহ চিন দেশের এক বনের মধ্যে পড়িয়াছিলেন মরেন নাই জীবদ্দসায় আছেন। ইহা শুনিয়া কথক গুলীন অশ্বারোহি সেনা ঐ দৈত্যর সঙ্গে দিয়া

ছিন,দেশ হইতে বাদসাহকে ইরানে আসিয়া তক্তে বসাইলেন রোস্তম কাউছকেবিস্তর ভৎর্সনা করিয়াকহিল যে সমুদয়পৃথিবী তুমি বাহুবলে জয় করিয়া শাসিত করিয়াছ এই নিমিত্তে স্বর্গ শাসিত করিতে গিয়াছিলা; কাউছ অতিশয় লজ্জিত হইয়া রোস্তমকে সন্তুষ্ট করিয়া জাবলস্তানে বিদায় করিল আর আপনি তক্তে বসিয়া উজির আমিরদিগের পরামর্শ ক্রমে প্রজা দিগের প্রতি সুবিচার দ্বারা প্রতিপালন করিতে লাগিল এবং অনেক দান করাতে ফরেদু অপেক্ষা কাউছের সুখ্যাতি হইল

রোস্তমের পুত্র ছোরাবের বিবরণ ॥

রোস্তম কোন সময়ে একদিন অশ্বারূঢ় হইয়া মৃগয়া করিতে তুরানের অন্তপাতি ছমনগান দেশের নিকটস্থ এককনে একা কি প্রবেশ করত একটা গোরখর শীকার করিয়া কাবব করত আহার করিয়া ঘোটককে মাঠে ছাড়িয়া আপনি এক বৃক্ষের ছায়ায় শয়ন করিল। কিছুকাল পরে সেই দেশের কয়েকজন সেনাপতি ঐ স্থানে শীকার করিতে আসিয়া রোস্তমের ঘোটক দূরেচরিতেছে তাহা দেখিয়া তাহারনিকটেগিয়া কমন্দফেলিয়া ধৃতকরিল; কিন্তু ঘোটক পদাঘাতে তাহারদিগের দুইতিন জনকে গুরুতর আঘাত করিল কিন্তু তথাপি তাহারা ঐ অশ্বকে না ছাড়িয়া আর দুইতিন কমন্দ ফেলিয়া বান্ধিয়া লইয়া এক অশ্বিনীর সহিত সংগম করাইল। পরে রোস্তমের নিদ্রাভঙ্গ হইল চারিদিগে ঘোটকের অন্বেষন করিতে২ একস্থানে অনেক অশ্বের পদচিহ্ন ওরুধির দেখিয়া জানিল যে কেহ অশ্বকেলইয়া গিয়াছে; তখন ঐ পদচিহ্ন লক্ষ করিয়া যাইতে যাইতে ছমনগান নগরের মধ্যে প্রবেশ করিল; তথাকার রক্ষকেরা রোস্ত-

মকে দেখিয়া তাহারদিগের বাদসাহকে জানাইল যে রোস্তম একাপদবুজে আসিয়া নগর মধ্যে পৌছিয়াছে; বাদসাহ এই বাক্যশুনিয়া তৎক্ষনাৎ আপনি আমীরদিগেকে সঙ্গেলইয়াঅগ্রসর হইয়া রোস্তমের সহিতসাক্ষ্যাৎ করিয়া অনেক সিষ্টাচারি করিলেন। রোস্তম বাদসাহকে কহিল আমি শীকার করিতে আসিয়া ঘোটককে তৃণাহার করিতেদিয়া শয়নকরিয়াছিলাম তোমার নগরস্থ লোকে আমার ঘোটক চুরিকরিয়া আনিয়াছে তাহারি পদচিহ্ন দৃষ্টে আমি এখানে আসিয়াছি আমার অশ্ব শীঘ্রআনিয়া দেও নতুবা আমি তোমার দেশনষ্টকরিব। বাদসাহ কহিল আপনি রাগত নাহইয়া অদ্য আমার বাটিতে বিশ্রাম কর আমি ঘোটক তত্তকরিয়া আনিয়া দিব ইহাকহিয়া তৎক্ষনাৎ নানাস্থানে ঘোটকের অন্বেসনে অনেকলোক পাঠাইল; রোস্তম তুষ্ট হইয়া তাহার বাটীতে আইল; পরেবাদাসাহ নানা প্রকার আহারের দ্রব্য ও মদিরা আনাইয়া একত্রে বসিয়া আহারাদি করিল কথক রাত্রি পর্য্যন্ত নৃত্যগীত দ্বারা রোস্তমকে তুষ্ট করিয়া রাত্রি দুই প্রহরের সময়ে বাদসাহর অন্তঃপুরস্থ এক উত্তম স্থানে শয্যা প্রস্তুত করিয়া রোস্তমকে শয়ন করিতে আজ্ঞা করিলেন; রোস্তম তথায় শয়ন করিল তাহারিই কিঞ্চিৎ পরে এক বিদ্যুতাকার পরমাসুন্দরী যুবতী দুইদিগে দুইদাশি বাতি ধরিয়া ঐ গৃহে আসিয়া রোস্তমের শর্য্যোপরি বসিল; রোস্তম তাহাকে দেখিয়া বিস্ময়াপন্ন হইয়া অনেক কাল পরে কহিল আপনি যুবতী কুলবতী বোধ হইতেছে আপনি কে এবং রাত্রিকালে একা অজ্ঞাত পুরুষের নিকটে কি নিমিত্তে আইসে তাহা বল? তখন সেই যুবতী

কহিল আমি এই বাদসাহর কন্যা আমার নাম তহমিনা, আমি আপনকার গুনানুবাদ ও বীরত্ব শ্রবণ করিয়া আপনাকে বিবাহ করিব এই মানসে আপনাকে বহুদিবশাবধি মনেতে বরণ করিয়া আপনকার অন্যাসনে লোক রাখিয়াছিলাম, তাহারা আপনাকে একথা জানাইতে নাপারিয়া আপনকার অশ্ব ধৃত করিয়া আনিয়াছে বুঝি ঈশ্বর আমাকে অনুকুল হইয়া আপনাকে এখানে আনিয়াছেন যদি আপনার মতহয় তবে কল্য আমার পিতাকে জানাইয়া বিবাহ কর। রোস্তম ইহা শুনিয়া সম্মত হইয়া তহমিনাকে বিদায় করিয়া নিদ্রা গেল, প্রাতে গাত্রোত্থান করিয়া বাদসাহর কোন সভাসতকে ডাকাইয়া রাত্রের বিবরণ কহিয়া বাদসাহকে জানাইতে কহিল, বাদসাহ শুনিয়া তুষ্ট হইয়া রোস্তমের সঙ্গে আপন কন্যা তহমিনার বিবাহ দিলেন। রোস্তম কিছুদিন সেইস্থানে অধিকবাস করিল তহমিনার গর্ভ প্রকাশ হইলে আপন চিহ্নিত অঙ্গুরী ও আরং অনেক রত্নালঙ্কার আপনার চিহ্নযুক্ত তহমিনাকে দিয়া কহিল যদি পুত্র হয় তবে উপযুক্ত হইলে আমার সচিহ্ন অঙ্গুরী যাহা তোমাকে দিতেছি ঐ পুত্রের হস্তেদিয়া আমার নিকট পাঠাইবা, আর যদি কন্যা হয় তবেসুপাত্র দেখিয়া বিবাহ দিবা, তহমিনাকে ইহা কহিয়া বাদসাহর নিকট বিদায় হইয়া আপনার দেশে আইল। কিছু দিন পরে তহমিনার এক পুত্র সন্তান হইল ক্রমে ঐ পুত্র নয় দশ বৎসরের হইল তখন তাহার সম বয়স্ক বালকেরা দূরে থাকুক যুবা পুরুসেরাও তাহার পরাক্রমে স্থিরহইতে পারিতনা,

তাহার নাম বাদসাহ ছোহরাব রাখিলেন। এক দিবস ছোহরাব আপন মাতা তহমিনাকে কহিল আমার পিতা কে; তাহার নাম কি, এবং কোথায় আছেন, তাহা বিস্তারিত করিয়া আমাকে বল? সে কহিল তোমার পিতার নাম রোস্তম জাবলস্তানে তাহার বাটি এবং জাল প্রভৃতি সকলের বৃত্তান্ত বিস্তারিত রূপে ছোহরাবকে কহিলে ছোহরাব কহিল আমার পিতাকে দেখিতে বাঞ্ছা হইয়াছে আমি তাঁহাকে পত্র লিখিয়া পাঠাই তিনি তাহার উত্তর যেমত লেখেন সেই মত করিব। তহমিনা কহিল এমত অন্তঃকরণে কখন করিবনা তোমার পিতা শুনিবা মাত্র এখান হইতে তোমাকে লইয়া জাইবেক; আমি তোমায় না দেখিয়া কান্দিয়া ২ প্রাণত্যাগ করিব। রোস্তম এই দশ বার বৎসরের মধ্যে তিন চারি বার নানা প্রকার দ্রব্য অলঙ্কার বস্ত্র ও পত্রাদি লিখিয়াছিলেন যে কি সন্তান হইয়াছে, পরন্তু আমি তাহা গোপন করিয়াছি কারণ পুত্র হইয়াছে শুনিলে লইয়া জাইবে এই ভয় প্রযুক্ত পুনঃ পুনঃ কন্যা হইয়াছে উত্তর লিখিয়া রোস্তমের নিকট পাঠাইয়াছি এ নিমিত্তে রোস্তম মনযোগ করিত না; পরে তহমিনা ছোহরাবকে কহিল তুমি রোস্তমের পুত্র এ কথা প্রকাশ করিবানা যেহেতু আফরাছিয়াব বাদসাহ রোস্তমের সত্রু সে শুনিতে পাইলে তোমাকে ধৃত করিয়া লইয়া যাইবেক ছোহরাব কহিল আমি আপন পিতার নাম কখন গোপন করিবনা এবং তাহার সহিত সাক্ষ্যাৎ করিতে জাইব ইহা শুনিয়া তহমিনা বিস্তর নিষেধ করিল কোনমতে শুনিলনা ॥

ছোহরাবের ইরানের যুদ্ধে যাত্রা ও মৃত্যু ॥

ছোহরাব আপন মাতাকে কহিল আমাকেউত্তম এক ঘোটক আনাইয়া দেও তখন রোস্তমের ঘোটকের বৎস আনাইয়া দিল, তাহা দেখিয়া তুষ্ট হইয়া আপন মনোমত অস্ত্র শস্ত্র প্রস্তুত করিয়া আপনার মাতমহের সেনা ও আর কথক তুরান সেনা সংগ্রহ করিয়া প্রকাশ করিল যে কাউছ বাদসাহের সহিত যুদ্ধ করিতে যাইব; আপন মাতাকে কহিল যে আমি কাউছ ও আফরাছিয়াব দুই বাদসাহকে রণে হত করিয়া রোস্তমকে বাদসাহ করিয়া তক্তে বসাইব, ইহা শুনিয়া তাহার মাতা কহিল তুমি এমত বাক্য কথন করিবানা, আর ইরানে কাউছ বাদসাহেরসহিত যুদ্ধ করিলে রোস্তম কাউছের পুরুষানুক্রমের প্রতিপালিত আশ্রিত এবং ইরানেরসেনাপতি সে অবশ্য যুদ্ধ করিবে, তবে তোমার অদৃষ্টে কি ঘটনা ঘটে তাহা আমি কহিতে পারিনা; তুমি আমার বাক্য হেলন করি ওনা। ছোহরাব তাহা কোন মতে গ্রাহ্য নাকরিয়া ইরানে যাইবার আয়োজন করিতে প্রধানদিগেকে আজ্ঞা করিল।

এই খবর আফরাছিয়াব শ্রবণ করত আনন্দিত হইয়া আপ নার দুইজনপ্রধান সেনাপতি বারমান ও হোমান এই দুইজন কে অনেক সেনা সমভিব্যাহারে ছোহরাবের নিকটে কহিয়া পাঠাইল যে কাউছ সাহ আমার শত্রু হয়, আমি এ যুদ্ধে তোমার সর্ব্ব প্রকারে সাহায্য করিব। ছোহরাব ইহা শুনিয়া তুষ্ট হইয়া সম্মত হইল। ঐ দুইজন সেনাপতি তথা হইতে তুরাণে আফরাছিয়াবকে জানাইলে তিনি তুষ্টহইয়া, তাহার

দিগকে কহিলেন যে তোমরা এমত সতর্ক থাকিবা যে ইহারা পিতা পুত্র তাহা উভয়ে জানিতে নাপারে এবং উভয়ে যুদ্ধ করে; ছোহরাব যুবক রোস্তম বৃদ্ধ ছোহরাব যদি রোস্তমকে নষ্ট করে তখন তোমরা কোন কৌশলে ছোহরাবকে বধ করিবা। ইহারা দুইজন হত হইলে অনায়াসে ইরানদেশ আমি অধিকার করিতে পারিব, এই পরামর্শ স্থির করিয়া তাহারদিগেকে ছোহারাবের সহিত ইরানের যুদ্ধে পাঠাইল কয়েক দিবস পরে ইরান রাজ্য সীমানায় পৌছিল ।

ছোহারাবের সহিত হজিরের যুদ্ধ ॥

ইরানের রক্ষার্থে সেইস্থানে এক দুর্গছিল তথায় কথক গুলীন সেনাসহিত হজির নামে একজন সেনাপতি রক্ষকরূপে থাকিত, যখন ছোহরাব সসৈন্য ঐ স্থানে পৌছিল তখন হজির তাহা দেখিয়া সেনা সঙ্গেকরিয়া পথ রুদ্ধ করিল, ইহা দেখিয়া ছোহরাব তাহার নিকট আসিয়া তাহার নাম জিজ্ঞা-সা করিল সে কহিল আমার নাম হজির ইরানের রক্ষক; যদি তুমি ইরানের মধ্যে প্রবেশ কর তবে এইক্ষণে তোমার মস্তক ছেদন করিব ইহা শুনিয়া ছোহরাব হাস্য করিতে লাগিল; হজির এক বরছি ছোহরাবের কটিদেশে বিদ্ধ করিয়া অনেক চেষ্টা করিল কোনমতেতাহাকে চালনা করিতে পারি লনা; ছোহরাব তাহাকে বরছি বিন্ধিয়া ঘোটক হইতে ভূমে ফেলিয়া বান্ধিয়া আপন সৈন্য মধ্যে লইয়া গেল; এইসংবাদ দুর্গে পৌছিলে গোরদাফরিদ নামে কুজদহম সেনাপতির কন্যা যুদ্ধের সজ্জা করিয়া ছোহরাবের সহিত যুদ্ধ করিতে আইল ছোহরাব তাহার সমুখে, আইলে গোরদাফরিদ

কয়েকটা বরছির আঘাত করিলে ছোহরাব ঢালেতে আচ্ছা-দন করিয়া তাহার কটিতে বরছি মারিয়া ঘোটক হইতে ভূমে পতিত করিবার চেষ্টা করিতে লাগিল; তখন গোরদা ফরিদ তলওয়ার বাহির করিয়া বরছি কাটিয়া পলায়ন করিল। ছোহরাব তাহার পশ্চাদ্ধাবমান হইয়া কমন্দ ফেলিয়া আকর্ষণ করাতে গোরদাফরিদ ঘোড়া হইতে ভূমে পড়িল; সেই আঘাতে তাহার মস্তকের খুদ (অর্থাৎ লোহার টুপি যুদ্ধের সময় মস্তকোপরি ধারণ করে) পড়িয়া গেলে তখন তাহার বেণী দৃষ্ট হইল, অদৃষ্টে বুঝিল যে স্ত্রিলোক। ছোহরাব পরম সুন্দরি যুবতী দেখিয়া কামবাণে মত্তহইলগোরদাফরিদ কোনমতে তাহার হস্ত ছাড়াইতে অক্ষম হইয়া অনেক শপথ করিয়া কহিল আমাকে এক্ষণে ছাড়িয়া দেও আমি আপন পিতাকে জানাইয়া তাহার মত করিয়া তোমার নিকট রাত্রি কালে আসিব। ছোহরাব তাহার সত্যের প্রতি নির্ভর করিয়া ত্যাগ করিল; গোরদাফরিদ আপন পিতাকে সমুদয় বৃত্তান্ত জানাইয়া পরামর্শ করিল যে আর এস্থানে থাকা নহে ইহাই ভাবিয়া পলায়ন করিল।

কাজদহম কাউছশাহের নিকট ছোহরাবের বৃত্তান্ত কহিলে রোস্তমকে আসিতে লিখিলেন। রাত্র যোগে দুর্গের দ্বার বন্দকরিয়া কোন গোপনীয় পথ দিয়া কজদহম পলাইয়া কাউছ বাদসাহর নিকটগিয়া বৃত্তান্তকহিল যে তুরান হইতে একজন অল্প বয়স্ক বলবান্ ছোহরাব নামক আসিয়াছিল হজির তাহাকে না আসিতে দিবার মতলবে সেনা সহিত গিয়া পথ রুদ্ধ করিলে ছোহরাব তাহার সঙ্গে যুদ্ধ

করত ধৃত করিয়া রাখিয়াছে; আমরা তাহার যুদ্ধে অক্ষেম হই য়া পলাইয়া আসিয়াছি। কাউহসাহ ইহা শুনিয়া ভীত হইয়া তথনি একপত্র লিখিয়া গেওকে রোস্তমের নিকট পাঠাইলেন; পত্রের বিবরণ এই ছোহরাব নামে একজন যোদ্ধা তুরান হইতে সেনা সঙ্গে করিয়া এখানে যুদ্ধ করিতে আসিতেছে; কজদহমের প্রমুখাত জ্ঞাতহইলাম যে হজিরকে বদ্ধকরিয়াছে সে ব্যক্তি অতিশয় বলবান্ তাহার সম যোদ্ধা ইরানে কেহ নাই অতএব আপনি পত্রপাঠ মাত্রেই শিঘ্র এখানে আসিবা নচেত আমরা সকলে তাহার হস্তে নষ্ট হইব; ইরানের রক্ষক তুমি তোমারই বাহুবলে আমার বাদসাহি জানিবা কোন মতে বিলম্ব করিবানা; রোস্তম এইপত্র পাইয়া অনেক চিন্তা করিয়া গেওকে ছোহরাবের আকার প্রকার ও কোথায় বাটী সমুদয় জিজ্ঞাসা করিলেন সে কহিল কজদহমের প্রমখাত শুনিয়াছি তোমার পিতামহ ছামের ন্যায় অবয়ব ইহাশুনিয়া মনে ভাবিল বুঝি আমার সন্তান হইবেক; পরে কহিল ছমন গান দেশের বাদসাহরকন্যা তহমিনা আমারস্ত্রি সে আমাকে দুই তিনবার পত্র লিখিয়াছে যে তাহার এক কন্যা হইয়াছে সে মিথ্যা কি নিমিত্তে লিখিবে পরে গেও কহিল বাদসাহ আজ্ঞা করিয়াছেন যে তুমি রোস্তমকে পত্র দিয়া তৎক্ষনাত তাহাকে সঙ্গে লইয়া বাহির হইবা সে স্থানে আহারাদি করি বানা। রোস্তম কহিল এত ব্যস্ত হইবার বিষয় কি? গেও আসাতে তুষ্টহইয়া নৃত্যগীত করিতে লাগিল তাহাতে সাতদিন গতো হইলে পুনরায় গেওকহিল তত্রাপি আর দুইতিন দিবস ন ত্যগীতাদিতে বিলম্ব করিয়া দশদিন পরে আপন ভ্রাতা

জওয়ারাকে সসৈন্য সঙ্গেলইয়া ইরানে যাত্রা করিয়া রোস্তম কে সঙ্গেলইয়া গেও কাউছ সাহর নিকটে পৌছিল।

কাউছ সাহ অতি রাগত হইয়া সভাস্থ তাবৎ বলবান্‌দিগকে কহিলেন যে রোস্তম ও গেও আমার আজ্ঞা হেলন করিয়াছে ইহারদিগের দুইজনকে লইয়া শুলে দেও একথা শুনিয়া সকলে নিরব রহিল, পুনরায় কাউছ তুছকে কহিল শীঘ্র ইহারদিগের দুইজনকে শূলে দেও তুছ রাজাআজ্ঞানুসারে রোস্তমের হস্ত ধারণ করিল, রোস্তম রাগান্বিত হইয়া তুছের হস্ত নিক্ষেপ করিয়া কাউছকে কহিল তোর বুদ্ধি নাস হইয়াছে এখানে কাহার সাধ্য আছে যে আমাকে ধৃত করিতে পারে আমি তোকে তৃণবত্ জ্ঞান করি, আর তুছ প্রভৃতিকে মসকের ন্যায় এখনি মারিতে পারি কেবল আমার পূর্ব্বপুরুষ এইকয় বংশীয় ফরেদুঁ বাদসাহর আশ্রিত ও প্রতিপালিত এই অনুরোধ মাত্র তোমার ভৃত্যনহি নওরা যখন নওদরসাহ মনুচেহর বাদসাহর পুত্র দুরাত্মা হইয়া প্রজাদিগের পিডন করিয়াছিল সকলে তাহাকে অসন্তুষ্ট হইয়া অন্য২ বাদসাহকে ইরানে আসিয়া বাদসাহ হইতে লিখিয়াছিল; পরে আমার পিতামহ ছামকে নওদর সাহ এই সমাচার লিখিয়া ইরানে আসিতে লিখিলেন ছাম ঐ পত্র পাইয়া উদ্বিগ্ন হইয়া ইরানে আইলেন; তাহা দেখিয়া প্রধান সকলে ছামকে ইরানের বাদসাহ করিতে প্রার্থনা করিলেন, ছাম তাহা কোন মতে শীকার নাকরিয়া সকলকে বুঝাইয়া এবং নওদরকে হিতোপদেশ কহিয়া স্থির করিয়া তাহাকেই বাদসাহ রাখিল। এইমত অনেক ভৎর্সনা করিয়া বাহির হইয়া গেল। পরে সভাস্থ, প্রধান সেনাপতি,

আমির, উজির, সকলে কাউছসাহকে বুঝাইলেন যে এক্ষণে সত্র আসিয়া দ্বারে উপস্থিত হইয়াছে এখন রোস্তমের সহিত অকৌসল করিলে তাঁহার সঙ্গে যুদ্ধ করে এমত ক্ষেমতা আর কাহার নাই, ছোহরাব আসিয়া একথা শুনিলে সর্ব্ব শুদ্ধবন্ধন করিয়া কিম্বা নষ্ট করিয়া রাজ্য অধিকৃত করিবেক, এ অতি অনুচিত কর্ম্ম করিয়াছেন, সকলের এই কথা শুনিয়া কাউছ লজ্জিত হইল কিন্তু ক্রোধবশত অনেক তর্জ্জন গর্জন করিল শেষে গোদরজকে কহিল তুমিগিয়া রোস্তমকে সমাদর করিয়া ফিরাইয়া আন। গোদরজ রোস্তমের নিকটে গিয়া কহিল তুমিজান কাউছসাহ নির্ব্বোধ বিজ্ঞলোকে কোনকথা কহিলে তাহা প্রথমত রাগত হইয়া গ্রাহ্য করেনা, পরিশেষে বিপদ গ্রস্ত হইলে লজ্জিত হইয়া তাহাকরে; অতএব কাউছের কথায় তোমার ক্রোধ করা অনোচিত। আর দ্বিতিয়ত যদি কাউছের প্রতি ক্রোধ করিয়া নিজালয়ে গমনকর তবে তুরানিরা আসিয়া সমুদয় ইরানিরদিগের বিনাশ করত সমভূমি করিবে, অতএব আপনার জাতি কুটম্ব বন্ধু বান্ধব আত্মীয় গনের প্রতি দয়াবান হইয়া রাগ ত্যাগ করিয়া ফিরিয়া আইস। তৃতিয়ত যদি আপনি ক্রোধ করিয়া জান তবে সকলে কহিবে যে ছোহরাবের ভয়ে ভীত হইয়া পলাইয়া গেল, এই কথা শুনিয়া ক্ষণকাল মৌনথাকিয়াপরে গোদরজেরসঙ্গেকাউছের নিকটে আইল, কাউছ রোস্তমকে দেখিয়া তক্ত হইতে উঠীয়া বিস্তর সমাদর করিয়া কহিলেন তুমি জান হটাৎ আমার রাগ উপস্থিতহয় সে আমারস্বভাব ঈশ্বর করিয়াছেন, তাহাতে তোমার ক্রোধ অনোচিত, অতএব আমি মাটি খাইয়া যেমত কহিয়াছি

তাহার উচিত যাহা হয় তাহা করহ। রোস্তম কাউছ সাহকে ছেলাম করিয়া কহিলেন এ ভৃত্যকে কিনিমিত্তে ডাকিতে পাঠাইয়াছিলেন তাহা আজ্ঞা করুণ, বাদসাহ কহিলেন অদ্য সভা করিয়া অহ্লাদ কর কল্য উপস্থিত মতে যাহা হয় করা যাইবেক পর দিবস অনেক সেনা সঙ্গে দিয়া রোস্তমকে ছোহরাবের যুদ্ধে পাঠাইলেন; এবং কাউছ সাহ আর২ সেনাপতি ও সেনা সঙ্গে লইয়া রোস্তমের পশ্চাতে আশিয়া সেই দুর্গের নিকটস্থ মাঠে শিবির করিলেন ॥

ছোহরাব হজির দ্বারা রোস্তমের অনুসন্ধান
লওন ও হজির তাহা ব্যক্ত নাকরণের বিবরণ ॥

ছোহরাব দুর্গহইতে সৈন্য দেখিয়া হোমানকে ডাকিয়া কহিল দেখ অনেক সৈন্য এই দুর্গ সর্ম্মুখস্থ মাঠে আসিয়াছে হোমান তদ্দর্শনে ভীত হইল; ছোহরাব কহিল এখন ভয় করিলে কি হইবে ঈশ্বরের মনে জাহা আছে তাহাই হইবে। সত্রু দেখিয়া ভয় করা বিরের ধর্ম্ম নহে, পরে রাত্রি হইলে আহার নিদ্রার চেষ্টায় সকলে ব্যাস্তরহিল, রোস্তম অতি গোপনে সামান্য লোকের ন্যায় বস্ত্র পরিধান করিয়া বিপক্ষের সৈন্যমধ্যে কোনছলক্রমে প্রবেশ করিয়া দেখিল এক শিবির মধ্যে একতক্তে ছোহরাব বসিয়াছে আর২ প্রধানেরা চতুর্দিগে বসিয়া মদ্যপান করিতেছে; রোস্তম এক পার্শ্বে লুকায়িত হইয়া দেখিতেছে, এই সময়ে জন্দানামে একজন সেনাপতি কোন কর্ম্মের নিমিত্ত্য সভাহইতে উঠীয়া বাহিরে যাইতে

দেখিল একজন পথের পার্শ্বে দাঁড়াইয়া রহিয়াছে তাহাকে কহিল কে তুমি? রোস্তম তাহার স্কন্দে এক মুষ্টী প্রহার করিয়া সেখান হইতে বাহির হইয়া কাউছের নিকটে আসিয়া ছোহরাবের অনেক প্রসংশা করিল; ওখান হইতে রোস্তম আইলে আর একজন সেইপথে জাইতেছিল দেখিল একজন মনুস্য পড়িয়া রহিয়াছে অনেক ডাকিল্ল সে উত্তর করিলনা পরে হাতদিয়া নাড়িল তাহাতে ও চেতনা হইলনা তখন আলোক আনিয়া দেখিল যে জন্দানামক সেনাপতি মরিয়া পড়িয়া রহিয়াছে সে তৎখনাত ছোহরাবকে জানাইল, ছোহরাব আসিয়া দেখিয়া ভাবিতহইয়া কহিল বিপক্ষের দলহইতে কেহ আসিয়া ইহাকে নষ্ট করিয়া গিয়াছে, অতএব ইহার পরিবর্ত্তে কল্য ইরানি দিগের কোন প্রধান ব্যক্তিকে অবস্য আমি বধ করিব; ইহা কহিয়া আপন শিবিরে গিয়া সয়ন করিল। প্রাতে ছোহরাব উঠিয়া হজিরকে সঙ্গেলইয়া দুর্গের প্রশাদউপর উর্থিত হইয়া তাহাকে অভয়প্রদান করিয়া কহিল আমি তোমাকে যেহ কথা জিজ্ঞাসা করিব তুমি যদ্যাপি সত্য ও প্রকৃত উত্তর কর তবে তোমাকে কারাগার হইতে মুক্ত করিব, এই ব্যাঘ্র চর্ম্মের ন্যায় শিবির জাহার নিকট অনেক হস্তি আছে এ কাহার? হজির কহিল এ কাউছ বাদসহর শিবির। তাহার দক্ষিণদিগে কাহার শিবির? কহিল তুছ ও নওদরের। রক্তবর্ণা শিবির কাহার? কহিল গোদরজের। হরিৎ বর্ণের শিবির জাহার মধ্যে এক তক্ত ও সম্মুখে এক ধ্বজা পোথিত আছে এ কাহার শিবির? হজির মনে করিল যদি প্রকৃত বাক্য কহি আর ছেহরাব এখনি

জায় আর রোস্তম অসাবধানে থাকে তবে অনাআসেই নষ্ট করিবে তবেই ইরান দেশ সমভূম করিবে, অতএব রোস্তমের শিবির কিম্বা রোস্তমকে দেখাইবনা এইমানস করিয়া কহিল খাকানচিন অর্থাৎ চিনের বাদসাহ একজন প্রধান সেনাপতিকে কাউছের সাহর্য্যে পাঠাইয়াছে, তাহারই শিবির এই ছোহরাব কহিল উহার নাম কি? হজির কহিল জ্ঞাতনহি। পরে ছোহরাব কহিল আমার মাতা রোস্তমের যেং চিহ্ন সকল কহিয়াছিলেন তাহা সমূদয় এই শিবিরে দেখিতেছি বোধ হয় এই রোস্তমের শিবির, হজির কহিল রোস্তমের শিবিরাকৃতি বটে কিন্তু এ চিনের সেনাপতির শিবির। ছোহরাব কহিল তবে রোস্তমের শিবির কোথায়? হজির কহিল রোস্তম জাবল হইতে বুঝি এখন পর্য্যন্ত আসিয়া পৌছেনাই ইহা শুনিয়া ভাবিত হইল, আর আসন্নকাল উপস্থিত প্রযুক্ত তাহার মাতা রোস্তমের যে সকল চিহ্ন কহিয়া দিয়াছিল তাহা সমুদয় প্রতক্ষ দেখিয়াও বিশ্বাস হইলনা, পুনরায় হজিরকে বিস্তর স্তুতি ও বিনয় পূর্ব্বক কহিল রোস্তমের শিবির আমাকে দেখাইয়া দেও তোমাকে তুষ্ট করিব; আমার বোধ হয় যে এই রোস্তমের শিবির সে কহিল রোস্তমের তাম্বু হইতে অভেদ কিন্তু সে আইসে নাই। আর কহিল রোস্তমের সম যোদ্ধা এখানে কে আছে যে সে যুদ্ধ করিতে আসিবে এই নিমিত্ত্য কহিতেছি সে আইসে নাই, ইহা শুনিয়া ছোহরাব কহিল যে তুই রোস্তমের প্রশংসা আমার নিকটে করিস না, আমি তাহাকে দেখিতে পাইলে ধরিয়া আনিব, তখন হজির মনে করিল আমি যাহা মনে ভাবিয়াছি যদি রোস্তম কিম্বা তহার শিবির ইহাকে দেখাইতাম তবে অধনা রোস্তম

কে নষ্ট করিত, পুনরায় হজিরকে অধিক তাড়না করিয়া ও ভয় প্রদর্শণ করাইয়া কহিল যদি রোস্তমের শিবির আমাকে নাদেখাও তবে এখনি তোমার মস্তক ছেদন করিব। হজির মনে ভাবিল আমি সামান্য লোক মরিলেও ক্ষতিনাই; আমি এক প্রকার মরিয়াআছি, ইহারসঙ্গেযুদ্ধ করিয়া বদ্ধহইয়াছি আমাকে কখন ও ছাড়িবেকনা রোস্তমকে দেখাইলে এখনি গিয়া মারিবে তবে কাউছসাহ ও আর ২ সকলকে বিনাশ করত ইরান দেশ অধিকার করিবে তবে প্রাণের আশার ভরসা আর নাই; আমি তো মরিয়াছি এইস্থির করিয়া কহিল রোস্তম আইসে নাই আমি কিপ্রকারে তাহার শিবির তোমাকে দেখাইয়া দিব তবে এই উপলক্ষ করিয়া আমাকে নষ্ট করিতেহয় কর তখনছোহরাব রোস্তমের চিহ্ন নাপাইয়া নিরাস্রাহইয়া দুর্গোপরিহইতে নিম্নে আসিয়া যুদ্ধসজ্জা করিয়া সেনা সমিব্যাহারে যুদ্ধ করিতে রণস্থলে আসিয়া উচ্চৈস্বরে কহিল আমি গতো রাত্রে সপথ করিয়াছি যে জন্দা সেনাপতির পরিবর্ত্তে কাউছ সাহর মস্তক ছেদন করিব। যদি কাউছের ক্ষমতা থাকে আমার সহিত আসিয়া যুদ্ধ করুক। ছোহরাবকে দেখিয়া সমস্ত সেনার এমত ভয়হইল যে কেহ তাহার সমুখে আসিতে পারিলনা, পুনর্ব্বার ছোহরাব কহিল ওহে কাউছ ব্যাঘ্র দেখিয়া শৃগালের ন্যায় ভয়ে লুকায়িত হইলে এইমুখে ইরানের বাদসাহি কর ওহে কাউছ একবার আমার সহিত যুদ্ধ কর॥

রোস্তমের সাহত ছোহরাবের প্রথম যুদ্ধ॥

তখন কাউছসাহ প্রধান সেনপতিদিগে কহিলেন কেহ গিয়া রোস্তমকে কহ যে তরানি যোদ্ধাকে দেখিয়া সকল সেনা

ভীত হইয়াছে। রোস্তম ইহা শুনিয়া ঈশ্বর স্মরণ পূর্ব্বক যুদ্ধ করিতে ছোহরাবের সম্মুখে গেল, ছোহরাব কহিল তোমায় আমায় উভয়ে কিঞ্চিৎদূরে গমন করিয়া যুদ্ধ করি, রোস্তম তাহা স্বীকারকরিয়া দুইজনে এক পাসে গেল, তখন ছোহরাব কহিল তুমি বৃদ্ধ আমার সঙ্গেযুদ্ধ করিতে অসক্ত হইবে কেবল প্রাণ দিতে আসিয়াছ। ইহা শুনিয়া রোস্তম কহিল তুমি বালক যোদ্ধাদিগের যুদ্ধ কখন দেখনাই, আমি দেও সফেদকেসৈন্য সহিত একা বিনাশকরিয়াছি; এবংসিংহ ব্যাঘ্র অজাগর প্রভৃতি অনেক আমি মারিয়াছি তোমাকেঅতি বালক দেখিয়া আমার স্নেহ হইতেছে, আমার বাঞ্ছা হয়না যে তোমার কোমল গাত্রে আঘাত করি। এই কথা শুনিয়া ছোহরাব কহিল তুমি বুঝি রোস্তম? রোস্তম কহিল আমি তাহার দাস, তখন ছোহরাব নিরাশা হইয়া উভয়ে বরছি লইয়া যুদ্ধ আরম্ভ করিয়া কিয়ৎকাল দুইজনে ঘোরতর যুদ্ধ করিলেন তাহাতে কাহার কিছুই হইলনা, তৎপরে অস্ত্রযুদ্ধ তদনন্তর গদাযুদ্ধ করিতে ২ গদা সকল বক্র হইল কাহারও শরীরে আঘাত হইলনা, তখনউভয়ে শ্রান্তহইয়া কিঞ্চিৎকাল বিশ্রাম করিলেন। রোস্তম মনোমধ্যে বিবেচনা করিলেন যে আমি দৈত্য প্রভৃতি অনেকের সঙ্গেযুদ্ধ করিয়াছি কিন্তু এমত বলবান কখন দেখিনাই, এই সময়ে ছোহরাব আসিয়া কহিল কতক্ষণ বিরাম করিবে উঠ বিরের ন্যায় যুদ্ধ করি, পরে দুইজনে তীরের যুদ্ধ করিলেন; উভয়ের তুণ শুন্য হইল তখন উভয়ের কটি বন্ধ উভয়ে ধারণ করিয়া বলপূর্ব্বক আকর্ষণ করিতে লাগিলেন কিন্তু কেহ কাহাকেও চালনা করিতে

পারিলনা এই অবসরে ছোহরাব এক গদা রোস্তমের মস্তকে মারিল তাহাতে রোস্তমের কিছু বেদনা বোধ হইল, ছোহরাব কহিল ওহে বীর তুমি দৈত্যআদি অনেককে মারিয়াছ; আমার এক গদার আঘাত সহিতে অশক্ত হইলে? রোস্তম কহিল অদ্য বেলা অবসান হইল কল্য তোমার সঙ্গে যুদ্ধ করিব। ছোহরাব কহিল অদ্যপ্রস্থান কর কিন্তু আমি কাউছের সৈন্য মধ্যে যুদ্ধকরিতে চলিলাম ইহা কহিয়া সেই দিগে চলিল, এবং রোস্তমও তুরানের সৈন্য কধ্যে প্রবেশ করিয়া যুদ্ধকরিতে আরম্ভকরিল; দুই দলের সৈন্য ইহাদিগে যুদ্ধে অস্থির হইয়া পলাইল তখন রোস্তম মনো মধ্যে চিন্তা করিল যে ছোহরাব অতি বলবান্ যদি কাউছকে ধৃত করে অতএব, আমার এখানে থাকাঅকর্ত্তব্য, পরে সেখান হইতে কাউছের নিকটে আসিয়া দেখিল অনেক সেনা হত হইয়াছে তাহাদেখিয়া ছোহরাবকে কহিল যদি রাত্রে যুদ্ধ করিতে ক্ষেন্ত হও ভাল নত্তবা আমারসহিত যুদ্ধকর উভয়েই ক্লান্তহইয়াছিল ইহা শ্রবণে ক্ষ্যন্তহইয়া আপনং শিবিরে গমন করিল, কথক রাত্রি গত্যে হইলে কাউছ রোস্তমকে ডাকাইয়া যুদ্ধের বিবরণ জিজ্ঞাসা করিলেন, রোস্তম কহিলএকাল পর্য্যন্ত অনেক যুদ্ধ করিয়াছি কিন্তু এই বালকের মত বলবান্ কোন যোদ্ধা কে দেখিনাই,ঈশ্বর উহার শরির প্রস্তর কিলৌহ দ্বারা নির্ম্মান করিয়াছেন তাহা বলিতে পারিনা, আমি তলওয়ার, তীর; বরছি, ও গদা প্রভৃতি অস্ত্র দ্বারা বিধিমতে যুদ্ধ করিয়াছি কিছুই করিতে পরিনাই, পরমেশ্বর কল্য যুদ্ধে কি ঘটানতাহা বলিতে পারিনা। ইহা শুনিয়া রোস্তমকে অনেক আশা ভরসা

দিয়া কহিলেন তোমার কোন চিন্তা নাই পরে রোস্তম আপন শিবিরে আসিয়া আপন ভ্রাতা জওয়ারাকে কহিল এ যোদ্ধাকে অদ্য বিধিমতে বুঝিয়াছি আমাহইতে বলবান্ কল্যযুদ্ধে ঈশ্বর ইচ্ছায় যদি বিপরীত হয় তবে তুমি ইহার সঙ্গে যুদ্ধ নাকরিয়া আপন দেশ জাবলে যাত্রা করিবা যদি ঈশ্বর মতান্তর করেণ তবে ইরানে ওতুরানে এমত যোদ্ধা কেহ নাই যে ইহাকে পরাজয় করে: ওখানে ছোহরাব আপন শিবিরেগিয়া হোমানকে ডাকিয়া কহিল এই বৃদ্ধ যোদ্ধা যাহার সঙ্গে আমি অদ্য যুদ্ধ করিয়াছি আমার বোধ হয় এই রোস্তম; আমার মাতা রোস্তমের যে২ চিহ্ন কহিয়াছিলেন সে সকল চিহ্ন এই পুরুষে দেখিতেছি বোধ করি আমার পিতা ইনি হইবেন; হোমান কহিল আমি তাহাকে উত্তম রূপে জানি অনেকবার দেখিয়াছি এ রোস্তম নহে ॥

রোস্তমের ছোহরাবের যুদ্ধ ॥

পর দিবস প্রাতে দুইজনে রণস্থলে একত্র হইলেন ছোহরাবের মন রোস্তমকে দেখিয়া তাহার মাতা যে২ চিহ্ন রোস্তমের কহিয়াছিল তাহা স্মরণ করিয়া চঞ্চল চিত্ত হইয়া প্রণয় করিবার বাঞ্ছা হইল, তখন ছোহরাব হাস্য করিয়া রোস্তমকে কহিল রাত্রে কেমন ছিলে আর অদ্য যুদ্ধ বিষয়ে কি বিবচনা করিতেছ আমার মানস তোমায় আমায় প্রীতিকরি আর উভয়ে অস্ত্র সস্ত্র পরিত্যাগ করিয়া একত্র বসিয়া মদ্য পান করি আর ২ সেনাদিগের ও সেনাপতিদিগের যুদ্ধের বাঞ্ছা থাকে উভয় দলে যুদ্ধ করুক আমরা কৌতুক দেখি আর আপনকার নাম অনেককে জিজ্ঞাসা করিলাম কেহ কহি

লনা আপনি আপন নাম অনুগ্রহ করিয়া আমাকে কহ, আমি
অনুভাবে অনুমান করিতেছি আপনি রোস্তম হইবেন ॥
রোস্তম সন্দেহ করিল যে এবালক ইহার কথায় বিশ্বাস করিলে
পাছে বিপরীত হয় এই সন্দেহ প্রযুক্ত প্রণয়ের কোন প্রসঙ্গ
না করিয়া কহিল কল্য দুইজনে মল্লযুদ্ধ করিবার কথাছিল
অদ্য নূতন প্রসঙ্গ উপস্থিত করিতেছ এ বীরের ধর্ম্ম নহে, আর
আমি তোমার মত বালক সহি যদি প্রণয় করিতে বাঞ্ছা
থাকে তবে রিতি মত বাদসাহকে জ্ঞাপন কর যেমত আজ্ঞা
করিবেন তাহাই শিরধার্য্য করিব আমি দাস বিনা আজ্ঞায়
সন্ধি করিতে পারিবনা। যদি সন্ধির মানস হইয়া থাকে তবে
কাউছ সাহর নিকটে দূত প্রেরণ কর। কিম্বা আমি গিয়া জানা
ইয়া আসি নতুবা যুদ্ধ করিতে আসিয়াছি যুদ্ধ কর, ছোহরা-
বের মৃত্যু উপস্থিত এ নিমিত্ত্যে মাতৃ উপদেশ ও তাহার
কথিক চিহ্ন সকল প্রত্যক্ষ দেখিয়াও ভ্রম উপস্থিত হইল,
তখন অশ্ব হইতে নামিয়া উভয়ে মল্ল যুদ্ধ আরম্ভ করিল,
কিয়ৎকাল যুদ্ধ করিতে ২ ছোহরাব বলপূর্ব্বক রোস্তমের
কোটির বন্দ ধরিয়া শুন্যে তুলিয়া ভুমে নিক্ষেপ করিয়া তাহার
বক্ষস্থলে বসিয়া খঞ্জর বাহির করিয়া বিনাশ করিতে উদ্যত
হইল তখন রোস্তম কহিল যোদ্ধা দিগের এই নিয়ম আছে
যে প্রথমবার মল্লযুদ্ধে পরাভব করিলে অতি সত্রু হইলেও
তাহাকে প্রাণে নামারিয়া ছাড়িয়া দেয়, দ্বিতিয় বার পরাজয়
করিলে তাহার মস্তক ছেদন করে; ছোহরাব রোস্তমের এই
কথা শুনিয়া খঞ্জর রাখিয়া রোস্তমকে ছাড়িয়া দিল। বেলা

অবসান দেখিয়া উভয়ে আপন ২ শিবিরে গেল; ছোহরাব আপন শিবিরে গিয়া হোমানকে যুদ্ধের সমস্ত বিবরণ কহিল সে শুনিয়া অতি খিদ্যমান হইয়া কহিল তুমি বালক সত্রর কথায় বিশ্বাস করিয়া তাহাকে ছাড়িয়া দিয়াছ এ দুঃখের শেষ নাই আর এবার যুদ্ধে তাহার হস্তে তোমার রক্ষ্যা পাওয়া ভার সিংহকে বদ্ধ করিয়া ছাড়িলে এঅতি কুকর্ম্ম করিয়াছ; ছোহ-রাব কহিল আমি তাহার বল বিলক্ষণ রূপে বুঝিয়াছি কোন মতে আমি তাহাকে ভয় করিনা কল্য যুদ্ধে অক্লেশে আমি তাহাকে নষ্ট করিব। হোমান কহিল বিজ্ঞ লোকে সত্রুকে কখন অল্প জ্ঞান করেনা ও করিবেনা আপনি এ মন্দকর্ম্ম করিয়াছ অতএব এইক্ষণে ঈশ্বরের নিকটে এই প্রার্থণা করি যে তিনি তোমাকে রক্ষ্যা করুণ। ওখানে রোস্তম আপন শিবিরে গিয়া শুচি হইয়া সমস্ত রাত্রি ঈশ্বরের নিকটে স্তব ও ভজন এবং রোদনকরিয়া কহিল হে পরমেশ্বর; আমাকে এমন বল প্রথমতঃ দিয়াছিলেন যে চলিবার সময়ে পৃথিবীতে আমার পা বসিয়া জাইত অগ্নিমিত্তে আমি তোমার নিকটে কিঞ্চিৎ বল হ্রাস হইবার প্রার্থণা করিলে অনুগ্রহ করিয়া বল হ্রাস করিয়াছ কিন্তুএখন তোমার নিকটে পুনরায় এই প্রার্থণা যে আমাকে পূর্ব্বমত বলব ন্ করহ এইমত অনেকক্ষণ কান্দি-তেং রোস্তম জানিতে পারিল যে ঈশ্বর কৃপা করিলেন।

---

## রোস্তমের হস্তে ছোহরবের মৃত্যু ॥

পর দিন প্রাতে উঠিয়া যুদ্ধের সজ্জা করিয়া ও অস্ত্র শস্ত্র

লইয়া রণস্থলে গিয়া উপস্থিত হইল, ছোহরাব রোস্তমকে দেখিয়া তাহার নিকটে আসিয়া চিৎকার ধ্বনি করিয়া কহিল কল্য ব্যাঘ্রের মুখহইতে প্রাণ লইয়া গিয়াছ অদ্য কি ভরসায় আমার সঙ্গেপুনরায় যুদ্ধ করিতে আসিয়াছ। রোস্তম কহিল ঈশ্বরের অনুগ্রহেতে আমি কখন পলায়ন করিনাই এবং প্রাণ থাকি তও পালাইবনা, আর তাঁহারিই কৃপায় সর্ব্বত্র জয়ি হইয়াছি অদ্য তিনি জয়যুক্ত করিবেন; ইহা কহিয়া দুইজন পুনর্ব্বার মল্লযুদ্ধ করিতে প্রবর্ত্ত হইল; কিয়ৎ কাল যুদ্ধকরিয়া রোস্তম চিৎকারধ্বনি করিয়া দুইহস্ত দ্বারা ছোহরাবের কোটি বন্ধ ধরিয়া শূন্যে তুলিয়া ভূমে নিক্ষেপ করিয়াতাহার বক্ষো-পরি উর্দ্ধিখতহইয়া খঞ্জরবাহির করিয়া ছোহরাবের বক্ষস্থলে মারিল তাহাতে তাহার হৃদয় বিদির্ণ হইল, তখন ছোহরাব অতি কাতর হইয়া আঃ শব্দ করিয়া কহিল এই খেদ আমার মনে থাকিল যে পিতার সঙ্গে সাক্ষ্যাত করিতে এখানে আসি-য়াছিলাম তাহা নাহইয়া তোমার সহিত যুদ্ধ করিয়া প্রাণ দিলাম কিন্তু ইহার প্রতিফল আমার পিতা অবশ্য দিবেন তুমি যদি মৎস্য হইয়া সমুদ্রের মধ্যে প্রবেশ কর কিম্বা তারা হইয়া আকাশের তারার সঙ্গে মিশ্রিত হইয়া থাক তত্রাপি আমার পিতা তোমাকে ছাড়িবেনা অবশ্য নষ্টকরিবেন। ইহা শুনিয়া রোস্তম কহিল তোমার পিতাকে তাহার নাম কি? ছোহরাব কহিল আমার পিতা রোস্তম মাতা তহমিনা ছমনগান দেশের বাদসাহার কন্যা; এই কথা শুনিবা মাত্র রোস্তম দশদিগ্‌অন্ধ কার দেখিয়া অজ্ঞান হইয়া ভূমে পড়িল; কিঞ্চিৎকাল পরে ছোহরাবকে কহিল রোস্তমের কোন চিহ্ন তোমার নিকটে

আছে আমারিনাম রোস্তম; ছোহরাব কহিল এ অতি আশ্চার্য্য পুনঃ পুনঃ আমি তোমার সঙ্গে পুণয় করিতে প্রার্থণা করিলাম কিন্তু তোমার স্নেহ কোনমতে আমার প্রতি হইলনা, সে যাহা হউক এইক্ষণে সে সকল কথার কোন প্রয়োজন নাই, আমার সাঁজওয়া অর্থাৎ লৌহময় জামা খুলিয়া দেখ আমার মাতাকে রোস্তম তাঁহার স্বচিহ্ন যে মনি দিয়াছিলেন তাহাই আমার হস্তে বান্ধা আছে; আমারমাতা কহিয়াছিলেন এইমনি রোস্তমকে দেখাইলে সে তোমাকে জত্ন করিয়ে লইবেক. তখন তাহার সাঁজওয়া খুলিয়া আপন চিহ্নযুক্ত মনি দেখিয়া ভূমে পড়িয়া রোদন করিতে ২ কহিল হে পুত্র তুমি পিতার হস্তে প্রাণ ত্যাগ করিলে তোমায় ধন্য কিন্তু আমার মত দুর্ভাগ্য পিতা আর কে পৃথিবিতে আছে, আর কেব পৃথিবীতে আপন পুত্রকে নষ্ট করিয়াছে আমার আর বাঁচিবার কোন প্রয়োজন নাই; তোমার সাক্ষ্যাতে প্রাণ ত্যাগ করি। ইহা শ্রবণে ছোহরাব কহিল আমার অদৃষ্টে ঈশ্বর জাহা লিখিয়াছিলেন তাহা হইল এইক্ষণে তুমি আমারনিমিত্ত্যে প্রাণত্যাগ করিলে আমি বাঁচবনা; অতএব এমত কর্ম্ম করা অনোচিত অনেকক্ষণ পর্য্যন্ত দুইজনে ভূমে পড়িয়া রহিল। কাউছের সেনাপতিরা দুইজন ভূমে পড়িয়া রহিয়াছে, দুরে হইতে দেখিয়া কাউছ সাহকে কহিল অনুমান হয় রোস্তম আমাদিগেকে ত্যাগকরিয়া স্বর্গ যাত্রা করিয়াছেন বুঝি ইরান দেশের এতদিনে দুর্ভাগ্য ঘটিল; কাউছ কহিলেন তোমরা অগ্রসার হইয়া তথ্য জানিয়া আইস, তৎক্ষণাৎ তাহারা নিকটে আসিয়া দেখে যে রোস্তম ভূমে পড়িয়া রোদন করিতেছে আর ছোহরাব পড়িয়া আছে

ইহারা অনুমান করিল যে দুইজনেই গুরুতর আঘাত প্রাপ্ত হইয়াছে, কেহ কহিল কি হইয়াছে বল ? রোস্তম কহিল আমি আপনার প্রাণে আপনি আঘাত করিয়াছি আর প্রাণ রাখিতে বাঞ্ছা নাই এইবৃদ্ধাবস্থায় ছোহরাব হেনবীর পুত্রকে আপন হস্তে নষ্ট করিয়াছি; অওয়ারা ইহা শুনিয়া রোদন করিতে ২ ভূমে পড়িল। রোস্তম ও সেনাপতি সকলে রোদন করিতে লাগিলেন; ছোহরাব তাহার দিগকে সান্তনা করিয়া কহিল আমার সঙ্গে তুরানের যে সকল সৈন্য আসিয়াছে তাহারদিগের প্রতি আর আঘাত করিও না এই ভিক্ষা আমাকে দেও তাহারা কেবল আমার ভরসায় আসিয়াছিল রোস্তম তাহা স্বীকার করিল পরে রোস্তম গোদরজকে কহিল তুমি কাউছের নিকট গিয়া আমার নাম করিয়া নোস দারু ( কোন ঔষধ বিশেষ ) তাহাতে আসাধ্য পিড়া ভালহয় কাউছসাহর নিকটে আছে তাহা আনয়ন কর যদি ছোহরাব আরাগ্যহয় তবে আমা অপক্ষ্যা তাঁহার আজ্ঞাবদ্ধ হইয়া থাকিবেক।

গোদরজ আসিয়া কাউছসাহকে সমস্ত বিবরণ জানাইয়া নোস দারু চাহিল কাউছ কহিল নোস দারু দিলে ছোহরাব অবস্য আরোগ্য হইবে ইহাতে কোন সন্দেহনাই তাহা আমি জানি, কিন্তু এই যদ্ধের পূর্ব্বে রোস্তম আমাকে যত ভৎসনা ও দুর্ব্বাক্য কহিয়াছে তাহা তুমি সকলি জান তোমরা তাবৎ প্রধানেরা সেইখানে ছিলা কাহার সাধ্য হইলনা যে রোস্তমকে কেহ কিছু বল; আর ছোহরাব সকলের সাক্ষ্যাতে রণ স্থলে প্রতিজ্ঞা করিয়া কহিয়াছিল যে তক্ত হইতে আমাকেউঠাইয়া বাদসাহি লইবে তাহাও শুনিয়াছি অতএব ইহারা পিতা

পুত্র একত্র হইলে আমাকে মারিবে কিম্বা কারাগারে বদ্ধ করিয়া আপনারা বাদসাহ হইবে; অতএব নোস দারু দেওয়া হইবে কনা গোদরজ গিয়া রোস্তমকে কহিল আপনি না গেলে নোস দারু পাওয়া ভার রোস্তম কাউছের নিকটে গমন করিল; তখন কাউছ নির্জ্জন স্থানে শয়ন করিয়াছিল রোস্তম সংবাদ পাঠাইল কাউছ শুনিয়া তখনি বাহিরে আইলেন, এই সময়ে এক জন আসিয়া কহিল ছোহরাব প্রাণ ত্যাগ করিয়াছে ইহা শুনিয়া রোস্তম রোদন করিতে২ তথায় গেল, কাউছসাহ তাহার সঙ্গে সেইখানে গিয়া দেখিল ছোহরাবের প্রাণ বায়ু নিঃসরণ হইয়াছে রোস্তমকে অনেক সান্তনা করিল; পরে ছোহরাবের মৃত্যুদেহ তাবুতের মধ্যে অর্থাৎ কাষ্টের সিন্ধুকে রাখিয়া পরে কাউছসাহকে কহিল যে তুরানের সেনার উপর ইরানিরা দৌরাত্ম্য না করে আপনি বারণ করহ, আর হোমানকে ডাকাইয়া সন্তোষ করিয়া আফরাছিয়াবের সঙ্গে ছোলে কর ( অর্থাৎ সন্ধি ) বাদসাহ তখনি হোমানকে ডাকাইয়া নানাবিধ তুষ্টজনক বাক্য কহিয়া বিদায় করিলেন। রোস্তম ছোহরাবের তাবুত লইয়া আপন দেশ ছয়স্তানে গেল; যখন বাটিতে পৌঁছিল জাল ও রোস্তমের মাতা প্রভৃতি সকলে শুনিয়া বিস্তর রোদন করিয়া ছোহরাবকে গোর দিয়া তাহার উপরে এক মসজিদের মত করিয়া যুদ্ধের বিবরণ সমস্ত লিখিয়া রাখিল। হোমান তুরানে পৌঁছিলে ছোহরাবের মৃত্যুসংবাদ তাহার মাতা শুনিয়া অগ্নিকুণ্ড করিয়া তাহাতে ঝাঁপ দিল তাঁহার আত্মীয়েরা ধরিয়া তুলিল ও অনেক চিকিৎসা করিল কিন্তু এক বৎসর পীড়িতা থাকিয়া ছোহরাব ছোহরাব বলিয়া প্রাণত্যাগ করিল ॥

মৃত্যান্তর ছোহরাবের মাতার বিবরণ ॥

তহমিনা ছোহরাবের মৃত্যুসংবাদ শুনিয়া সোকে ও রাগে পরিপূর্ণা হইয়া আপন পিতাকে কহিল তুমি আপন সেন্য লইয়া জাবলস্তানে গিয়া রোস্তমের সঙ্গে যুদ্ধ করিয়া তাহার মস্তক ছেদন করিয়া আন, সে কহিল রোস্তমের সঙ্গে যুদ্ধ করিবার ক্ষেমতা আমার নাই; ইহা শুনিয়া তহমিনা ছোহরাবের সেনাদিগে সঙ্গেকরিয়া আপনি জাবলস্তানে গেল যখন নিকট পৌছিল তখন জাল ও রোস্তম এই কথা শুনিয়াঅতি ভাবিত হইল, রোস্তম অত্যন্ত সোকাকুল ছিল কিছু নাকহিয়া গৃহে থাকিল, জাল রুদাবাকে সঙ্গে লইয়া অগ্রসর আসিয়া তহমিনার সঙ্গে সাক্ষ্যাত করিয়া অনেক হিতোপদেশ বুঝাইয়া ঘরে লইতে জাইতে চাহিলেন তাহা কোন প্রকারে না গিয়া ছোহরাবের গোরস্থানে একমাস থাকিল; পরে রোস্তমের মাতা রুদাবা ও জাল অনেক বুঝাইয়া তাহাকে ঘরে লইয়া রোস্তমের সঙ্গে সাক্ষ্যাত করাইয়া উভয়ে মিল ও পৃতি করিয়া দিলেন কিছুদিন পরে তহমিনার আর এক পুত্র সন্তান হইল তাহারনাম ফরামোরজ রাখিলেন ॥

ছিয়াওস নামে কাউছ বাদসাহের এক পুত্র হয় তাহার বিবরণ ॥

ইরানের দুই প্রধান সেনাপতি তুছ ও গেও একত্রিত হইয়া জয়হুন নামে-সমুদ্রতুল্য এক নদী তত্তীরে নিবীড় বন ছিল সেইস্থানে শীকার করিতে গেলে, কিছুদিন সেইস্থানেথাকিয়া শীকার করিল একদিবসএক বনের নিকটে এক পরমাসুন্দরী যুবতী অলঙ্কার বস্ত্রে ভূসিতা দুইজনেদেখিয়া তাহাকেজিজ্ঞাসা

করিল তুমি কে কোথা হইতে কিনিমিত্যে এই বন মধ্যে আইলে? সে কহিল করসেওজ নামে ফরেদুর বংসোদ্ভব বলগার দেশের বাদসাহের কন্যা আমি আমাকে বিবাহ করিতে অনেক বাদসাহ প্রার্থনা করিয়াছিল কিন্তু আমি পিতাকে কহিলাম যে এইক্ষেণে বিবাহ করিবনা; এই কথা শুনিয়া আমার পিতা রাগত হইয়া আমাকে অনেক প্রহার করিয়া পরে বধ করণে উদ্যত হইলে আমি প্রাণের ভয়ে পলাইয়া এইবনে আসিয়াছি বোধ হয় আমার পিতা আমার অন্বেষণে লোকপাঠাইয়া থাকিবেন. তুছ ও গেও ইহা শুনিয়া তাহাকে সঙ্গেলইয়া আপনাদিগের শিবিরে আনিয়া উভয়েই তাহার গ্রাহক হইয়া কলহ হইল তুছ কহিল আমি আনিয়াছি আমি লইব, গেও কহিল প্রথমত আমি দেখিয়াছি আমি লইব, এইরূপে পরস্পার উভয়ে বিবাদ হইয়া দুইজনে কহিলেন এই যুবতীর নিমিত্যে মিত্র বিছেদ করা অকর্ত্তব্যকর্ম্ম ইহাকে বধ করিলে বিবাদ ভঞ্জন হয়; অতএব ইহাকে বধকর ইহা শুনিয়া তাহারদিগের মর্ম্মব্যাহারি কোন লোক কহিল এমত শুন্দরি যুবতীকে বিনা অপরাধে নষ্টকরা অনোচিত ইহাকে কাউছসাহের নিকটে লইয়াচল বাদসাহবিচার করিয়া জাহাকে দেন সেই পাইবে। এই যুক্তি স্থির করিয়া তাহাকে কাউছের নিকট আনিলেন। কাউছ সাহ পরম সুন্দরী যুবতী দেখিয়া এবং ফরেদুর বংসোদ্ভব জানিয়া তুছ ও গেওকে কহিলেন তোমরা দুইজনে শীকার করিতে গিয়া কয়েক দিন নানাপ্রাকার শীকার করিয়া আপনারা গ্রহণ করিয়াছ অবশেষ এই শীকার পাইয়া উভয় বিবাদী হইয়া আমার নিকট

আনিয়াছ, অতএব উভয়ের বিবাদ ভঞ্জনার্থে এ শীকার আমি গ্রহণ করিলাম ইহা শুনিয়া দুইজনেইসম্মত হইল, পরে কাউছ সাহ তাহাকে বিবাহ করিল কিছুদিন পরে তাহার একপুত্র সন্তান হইল কাউছসাহ গণক ও পণ্ডিতদিগকে কহিলেন এ বালকের লক্ষণা লক্ষণ বিচার করিয়া আমাকে কহ? তাহারা অনেক বিচার করিয়া কহিলেন এই বালক রূপবান্ গুণবান্ ও বলবান্ হইবেক এবং ইহার সন্তানপৃথিবীর পতিহইবে কিন্তু ইহারশেষাবস্থার কথা বক্তব্যনহে। বাদসাহ শুনিয়াবিমর্স হইলেন, পরে তাহার নাম ছিয়াওস রাখিলেন কাউছ তাহার নিমিত্তে সর্ব্বদা অসুখি থাকিতেন, একদিন রোস্তম ছিয়াওসকে দেখিয়া কাউছসাহকে কহিল তোমার এই পুত্রটি আমি আপন বাটীতে রাখিয়া লিখন পঠন ও রাজনিতী ও মল্লযুদ্ধ ও যুদ্ধ কৌসলাদি সমস্ত বিদ্যায় সুশিক্ষিত করিতে বাঞ্ছা করি আপনার যেমত অভিপ্রায় হয় তাহা আজ্ঞা করুণ, কাউছ ইহা শুনিয়া তুষ্ট হইয়া রোস্তমের হস্তে ছিয়াওসকে সমর্পণ করিলেন। রোস্তম বাদসাহের নিকটে বিদায় হইয়া ছিয়াওসকে লইয়া আপন বাটিতে গিয়া আপন পুত্রের ন্যায় প্রতিপালন বিদ্যাভ্যাস করাইতে লাগিল, ক্রমে রাজনিতী ও যুদ্ধ এবং মৃগয়াদি সিক্ষ্যা করাইল। ছিয়াওস যখন শিকার করিতে জাইত ব্যাঘ্র শিকার করিয়া আনিত, কিছুকাল পরে ছিয়াওস এক দিন রোস্তমকে কহিল আমি পিতার দরসণাকাঙ্খা করি? রোস্তম সম্মত হইয়া নানাবিধ দ্রব্য ও অলঙ্কার বস্ত্র দিয়া অনেক সৈন্য সামন্ত সঙ্গে দিয়া বিদায় করিল, ছিয়াওস কহিল আমি আপনার সঙ্গে জাইতে ইচ্ছা করি, রোস্তম

তাহার অনুরোধে তাহার সঙ্গে গমন করিল যখন ইরানের নিকটে পৌছিল কাউছ সাহ প্রধানেরদিগেকে অগ্রসর হইয়া আনয়ন করিতে পাঠাইলেন, ছিয়াওস আসিয়া কাউছকে প্রণাম করিল কাউছ ক্রোড়ে লইয়া সির চুম্বন করিয়া অনেক স্নেহ করিলেন, পরে বিদ্যার পরিক্ষ্যা লইয়া রোস্তমকে অনেক প্রশংসা করিলেন, আর ছিয়াওসকে অতিশয় স্নেহ করিতে লাগিলেন। ছয়সাত বৎসর গতো হইলে এক দিবস কাউছ সাহ কহিলেন ছিয়াওসকে মাওরননহর দেশে পাঠা ইতে হইবেক, কাউছ সাহর এক স্ত্রী ছুদাবা নামা সে ছিয়াও-সের প্রতি মনে মনে আসক্তছিল সে ঐ কথা শুনিয়া কাউছ সাহকে কহিল যে ছিয়াওসের বিবাহ দিয়া পাঠান উচিত; আমি দুই তিনটি কন্যা প্রতিপালন করিয়াছি তাহারি সঙ্গে বিবাহ দিব কাউছ কহিল ছিয়াওসকে সর্ম্মত করিতে হইবেক পরদিন ছুদাবা ছিয়াসকে ডাকিয়া পাঠাইবায় ছিয়াওস কাউছকে জানাইল কাউছ কহিল তোমার মাতা ডাকিয়াছে তুমি একবার তাহার নিকটে গমন কর, ছিয়াওস গিয়াছুদাবা কে প্রণাম করিয়া সর্ম্মুখে দাঁড়াইল ছুদাবা ছিয়াওসের গলা ধরিয়া মুখ চুম্বন করিতে লাগিল, ছিয়াওস মনে করিল মাতা স্নেহ পূর্ব্বক চুম্বন করিতেছেন, পরে কএক জন যুবতী শুন্দরী আনাইয়াকহিল ইহারমধ্যে জাহাকে তোমার বিবাহ করিতে বাঞ্ছা হয় তাহাকে বিবাহ কর; আমি কাউছের নিকটে শুনিয়াছি তোমার সন্তান পৃথিবির বাদসাহ হইবেক এ নিমিত্ত্যে আমার মানস যে আমার পালিত কন্যার গর্ব্ভে সেই সন্তান হয়, ইহ শুনিয়া ছিয়াওস নিরবহইয়া রহিল আর

মনে করিল এ মাতৃ স্নেহর বিপরিত দেখিয়াছি কিন্তু ছুদাবা অনেক জাদু, তন্ত্র, মন্ত্র, ঔষধ, জানে এমত প্রচার ছিল এই ভয়ে উত্তর করিল না, ছুদাবা কহিল আমার কথার উত্তর না কর কেন আর কহিল কাউছ বৃদ্ধ হইয়াছে সে মরিলে আমি তোমাকে বাদসাহ করিব তাবত সেনা প্রভৃতি আমার আজ্ঞা বর্ত্তি তাহা তুমি জান ছিয়াওস তত্রাপি কোন কথা কহিলনা তখন ছুদাবা দাসিদিগের বাহির করিয়া কহিল আমি তো-মাকে প্রাণ তুল্য ভাল বাসি তোমার জাহা বাঞ্ছা থাকে তাহা পূর্ণকর আমি অবাধ্য নহি, এইমত অনেক কহিলতখন ছিয়াওস পলায়ন করিবার মানস করিয়া গাত্রোত্থান করিল তদ্দৃষ্টে ছুদাবা জড়াইয়া ধরিয়া চুম্বন করিতে আরম্ভ করিল ছিয়াওস তাহাকে ছাড়াইতে না পারিয়া কহিল তুমি আমার মাতা আমাকে পরিত্যাগকর তোমার পালিত কন্যাকে বিবাহ করিব এইমত কহিয়া বিদায় হইল। রাত্রে ছুদাবা কাউছকে কহিল আমার কন্যাকে ছিয়াওস বিবাহ করিতে অঙ্গিকত হইয়াছে, কাউছ এতৎ শ্রবণে তুষ্ট হইয়া অলঙ্কার বস্ত্র ও নানা প্রকার দ্রব্য বিবাহের উপযুক্ত প্রস্তুত করিতে আজ্ঞা করিলেন ॥

---

ছুদাবা ছিয়াওসকে ঘরে আনিয়া পরে কাউছের নিকট অপবাদ দেয়ার বিবরণ ॥

ছুদাবা কর্ত্তৃক ছিয়াওসের অপবাদ ॥

পর দিবস ছুদাবা ছিয়াওসকে ডাকিয়া পাঠাইল সে আইলনা, পুনর্ব্বার লোক পাঠাইল ছিয়াওস ব্যাকুলান্তকরণে

আইলে জুদাবা সকলকে গৃহ হইতে বাহির করিয়া বিরলে ছিয়াওসকে কহিল আমি তোমাকে প্রথমে দেখিয়া অবধি আসক্ত হইয়া সাতবৎসর হইল কামানলে দগ্ধ হইতেছি অদ্য আমার আসা পূর্ণকর নতুবা বাদসাহের নিকটে এমত কুপছন্দ করিব যে তোমার প্রাণ রক্ষ্যা করা ভার হইবেক। ছিয়াওস কহিল তুমি আমার পিতার ভোগ্যা আমার মাতার স্বরূপ আমি কখন এমত গর্হিত কর্ম্ম করিতে পারিবনা, রাজ্যলোভে কিম্বা প্রাণেরভয়ে ধর্ম্মপথ ত্যাগ করিয়া এমন কুকর্ম্ম করিতে পারিবনা ইহা কহিয়া উঠিয়া পলায়ন করিল। জুদাবা তাহার পশ্চাতে গিয়া জামা ধরিল তথাপি ছিয়াওস অতি বেগে চলিল তাহাতে জামা ছিঁড়িয়া গেল; তখন জুদাবা আপন হস্তে কাঁচাল ছিঁড়িয়া কহিল আমার আশা পূর্ণ করিলেনা ইহার উচিত ফল সিঘ্র তোমাকে দিব, ইহা কহিয়া দাসিদিগকে ডাকিয়া ক্রন্দন ধ্বনি ও চিৎকার সব্দ করিতে কহিল আপনিও বস্ত্রাদি ছিঁড়িয়া ভুমে পড়িয়া রহিল ঐ ক্রন্দনধ্বনি কাউছ শুনিতে পাইয়া জুদাবার নিকট আসিয়া জিজ্ঞাসা করিল জুদাবা কহিল ছিয়াওস আমাকে বলাৎকার করিতে উদ্যত হইয়াছিল কিন্তু অনেক জত্নে ও দাসিগণের আসাতে আমার ধর্ম্ম রক্ষ্যা হইয়াছে। কাউছ কহিল যদি ছিয়াওস এমন কুকর্ম্ম করিয়া থাকে তবে তাহার প্রাণ দণ্ড করা উচিত পরে ছিয়াওসকে ডাকিয়া কহিল জুদাবা কি কহিতেছে তুমি ইহার যথার্থ যাহা জান তাহা সত্য করিয়া আমাকে কহ? ছিয়াওস প্রথমাবধি শেষ পর্য্যন্ত তাবৎ বিত্তান্ত বিস্তারিত করিয়া কহিল, পরে কাউছ ছিয়াওসের বস্ত্রাদী নিরক্ষণ

করিয়া ঘ্রাণ লইলেন তাহাতে কোন শুগন্ধর ঘ্রাণ পাইলেননা তখন ছুদাবার বস্ত্রের ঘ্রাণ লইলেন তাহাতে আতর গোলা- বের সৌগন্ধ পাইয়া তাহাকে ত্রিস্কার করিয়া বধ করিবার মানস করিলেন কিন্তু তাহারপিতা জাদুকর কুহকী ও ছুদাবর একটী পত্র অত্যন্ত শদিবস হইয়াছিল, এবং ছুদাবার তুল্য রূপবতী বেগম আরছিলনা এইসকল ভয় ও স্নেহপ্রযুক্তক্ষেন্ত হইয়া কহিলেন আমি জানিলাম ছিয়াওস নিরাপরাধি তুমি এতদ্রুপ কুবাক্য আর প্রকাস করিবানা; ছুদাবা তাহা না শুনিয়া ছিয়াওসকে কূকর্ম্মর প্রতিফল দিতে সর্ব্বদা বাদসাহকে কহিত কাউছ তাহা কোনমতেই গ্রাহ্য করিতেন না ॥

ছুদাবা প্রকারন্তরে ছিয়াওসের পরিবাদ দেয়া

এই রূপে কিয়ৎকাল গত হইল একদিন ছুদাবা শুনিলযে বাদসাহর অন্তপুরের কোন দাসির গর্ব্ভ হইয়াছে তাহাকে ডাকাইয়া কহিল তুমি ঔষধিদ্বারা আপন গর্ব্ভ পাতকর, কিন্তু সেই সময়ে আমাকে সমাচার করিবা কিন্তু তোমাকে কেহ জিজ্ঞাসা করিলে এই কহিবা ছিয়াওস যে দিবস এখানে আসিয়াছিলেন হস্ত পদ ধৌত কারণ জল চাহিলেন আমি জল পাত্রলইয়া তাঁহারনিকট গেলে জলপাত্ররাখিয়া আমাকে ধরিয়া বলাৎকার করিলেন তাহাতে আমার গর্ভ হইয়াছিল আমার উপদেশ মত কহিলে তোমাকে অনেক ধন দিব তাহা না করিলে তোমাকে প্রাণে মারিব, সে লোভে ও ভয়ে কথিত মত করিল। দাসীরা তাহাজানিয়া গোলযোগ করিতে আরম্ভ করিল কাউছ ছুদাবার সহিত সয়ন করিয়াছিলেন ঐ গোলযোগে নিদ্রা ভঙ্গ হইলে দাসিদিগকে ডাকিয়া জিজ্ঞাসা

করিলে তাহারা ছুদাবার উপদেশমতকহিল যেঅমুক যুবতীর গর্ভ পাত হইয়া মৃতসন্তান দুইটা নির্গত হইয়াছে; কাউছ কহিলেন সেই দুইটি মৃত বালক আন আমি দেখিব তাহারা সেই দুই মৃত বালক ও সেই যুবতীকে লইয়া আইল ছুদাবা কপট নিদ্রায় নিদ্রিতছিল কাউছ তাহাকে জাগ্রত করিয়া দেখাইলেন আর সেই যুবতীকে জিজ্ঞাসা করিলেন কতদিন তোমার গর্ভ হইয়াছিল ? সে ছুদাবার পূর্ব্ব উপদেশ মত ছিয়াওসের কলঙ্ক করিল, তখন ছুদাবা বাদসাহকে কহিল আমার কথায় বিশ্বাষ করনাই এখন এই যুবতী কি কহিল, কাউছ বাহিরে আসিয়া গণক দিগকে ডাকাইয়া ঐ দুই মৃত বালক আনাইয়া তাহার দিগের জন্মের ও মৃত্যুর বিবরণ জিজ্ঞাসা করিবাতে তাহারা গণনা দ্বারা বিশেষ বিচার করিয়া জ্ঞাত হইয়া জানাইল যে এ দুই সন্তান রাজা কিম্বা রাজ বংসোদ্ভব হইতে জন্ম গ্রহণ করেনাই এবং রাজার কোন স্ত্রি কি উপস্ত্রির গর্ব্ভের এ দুই সন্তান নহে কোন দুষ্টা স্ত্রির উপপতি হইতে গর্ভ ধারণ করিয়াছিল ধন লোভি হইয়া ঔষধি দ্বারা গর্ভ নাস করিয়া কোন প্রধান ব্যক্তির কলঙ্ক করিয়াছে। কাউছ এই কথা শুনিয়া ছুদাবাকে কহিলেন, সে কহিল গণকের রোস্তমের কিম্বা ছিয়াওসের ভয়ে এমত কহিয়াছে, আর ইহা দিগের কথাতে বিশ্বাষ কি; তুমি আমার কথা গ্রাহ্য নাকরিয়া অসন্তুষ্টকরিলে আমি বিশপান করিয়া প্রাণত্যাগ করিব অথবা তুমি ছিয়াওসকে অগ্নি পরিক্ষা দেও যদি অগ্নি পরিক্ষায় ছিয়াওস উত্তির্ণ হয় তবে সে নির্দ্দোষি বটে কাউছ ছুদাবার অনুরোধে অগ্নি পরিক্ষার সংকল্প হইলেন ॥

## ছিয়াওসের অগ্নি পরিক্ষা

পর দিন কাউছ বাদসাহ ছিয়াওসকে ডাকাইয়া সমুদয় বৃত্তান্ত কহিলে সে কহিল আমি অগ্নি পরিক্ষা করিতে অঙ্গিকৃত আছি, আমি নিরপরাধি হইলে ঈশ্বর অবশ্য আমাকে রক্ষা করিবেন; আর যদি দোসি হয় তবে আমার মরণ শ্রেয়। আপনি অগ্নি কুণ্ড প্রজ্জলিত করিতে আজ্ঞা দেন আমি অগ্নি পরিক্ষা লইব কাউছ বাদসাহের আজ্ঞা ক্রমে তৎখনাত এক বৃহদ অগ্নি কুণ্ড প্রজ্জলিতকরিল তখন ছিয়াওস ঈশ্বরকে স্মরণ করণ পূর্ব্বক পিতাকে প্রণাম করত অনুমতি লইয়া অগ্নি মধ্যে প্রবেশ করিয়া ক্ষণেক কাল পর্য্যন্ত তন্মধ্যে থাকিয়া বাহিরে আইল: সকল লোক ছিয়াওসকে দেখিলেন যে ছিয়াওসের ঐ অগ্নির উত্তাপে দেহের কোন বৈলক্ষণ্য হয় নাই এবং তাহার পরিধেয় বস্ত্র তাহাও দগ্ধ হয়নাই, ইহা দেখিয়া সকলেই ধন্য ২ করিতে লাগিল। বাদসাহ আসিয়া ছিয়াওসকে ক্রোড়ে লইয়া বিস্তর প্রশংসা করিয়া শেষে কহিলেন যে ধর্ম্ম পথে থাকে জল ও অগ্নি তাহার নিকট তুল্য ঈশ্বর ধার্ম্মিক ব্যক্তিকে কাহার মির্থ্যা অপবাদে কখন নষ্ট করেন না; যদিও কেহ কাহার মিথ্যা অপবাদ করে কিন্তু পর মেশ্বর ক্রমে ধার্ম্মিকের ধর্ম্ম ও সত্য প্রকাশ করিয়া শত্রুর দিগের মুখে কালি দেন; ইহা কহিয়া কাউছ রাগত হইয়া ছুদাবাকে বিনাশ করিতে আজ্ঞা করিলেন। রোস্তম ও ছিয়াওস বাদসাহকে অনেক জত্ন পূর্ব্বক নিষেধ করিয়া ক্ষান্ত করিল; কিন্তু বাদসাহ ছুদাবারসহিত আর আলাপ করিলেনা এই সময়ে বাদসাহের নিকটে সম্বাদ আইল যে আফরাছিয়াব

পুনরায় সৈন্য প্রস্তুত করিয়া ইরানে আসিবার উদ্যোগ করি

য়েছে। কাউছ কহিল তুরানিদিগের কথায় বিশ্বাস নাই যে

হেতু যুদ্ধে হারিলে পদানত হইয়া সন্ধি করে সময় পাইলেযুদ্ধ

করিতে প্রস্তুত হয়; এইবার আমি তাহার সমস্ত দেশ অধিকার

করিয়া লইব ছিয়াওস কহিল এবার যুদ্ধে আমাকে প্রেরণ

করুণ, তাহার অভিপ্রায় এই যে কোন প্রকারে ছুদাবার চক্ষু

হইতে মুক্তহয়, কাউছ কহিলেন তুমিকখনযুদ্ধ করনাই আফ-

রাছিয়াব অতিবলবান্ ওযোদ্ধা তুমি তাহার সঙ্গেযুদ্ধকরিতে

পারিবনা, ছিয়াওস কহিল রোস্তমকে সঙ্গে লইয়া জাইব

কাউছ শুনিয়া সম্মত হইলেন ॥

ছিয়াওসের আফরাছিয়াবের যুদ্ধের বিবরণ ॥

কাউছ অনেক সেনাওপ্রধান সেনাপতিদিগের ও রোস্তমকে

সঙ্গেদিয়া ছিয়াওসকে আফরাছিয়াবের যুদ্ধে পাঠাইলেন

যখনইহারা বলখে ( তুরানের কোন প্রধান দেশ ) পৌছি

লেন বারমান সেখানকার রক্ষকছিল সেশুনিয়া সেনা সঙ্গে

করিয়া পথ রুদ্ধ করিল তাহা দেখিয়া ছিয়াওস যুদ্ধ আরম্ভ

করিল, বারমান ক্ষণেক কাল যুদ্ধ করিয়া পলায়ন করিয়া

কথক দূর গেলে, করছেওজ নামক আর একজন তুরানের

প্রধান সেনাপতি বারমানেরনিকটে আসিতেছিল পথিমধ্যে

সাক্ষ্যাৎ হইবাতে বারমান সকল বিবরণ তাহাকে কহিলে

সে বারমানকে সঙ্গেলইয়া পুনর্ব্বার যুদ্ধ করিতে আইল।

ছিয়াওস ইহা শুনিয়া অগ্রসর হইয়া যুদ্ধ আরম্ভ করিলে

তাহারা যুদ্ধে অসক্ত হইয়া দুর্গে আসিয়া দ্বার রুদ্ধ করিয়া

রহিলেন। ছিয়াওস ঐ দুর্গ ভগ্ন করিবায় উদ্যোগ করিলে তাহারা পলাইয়া আফরাছিয়াবের নিকটে গিয়া সকলবৃত্তান্ত কহিল, আফরাছিয়াব শুনিয়া অত্যন্ত ভীত হইল। রাত্রি কালে নিদ্রাবস্তায় কঠোর চিৎকার ও ক্রন্দন ধ্বনি করিল বেগমেরা কহিল হে বাদসাহ কিনিমিত্ত্যে চিৎকার করিলে তাহা আমারদের নিকটে বল আফরাছিয়াব কহিল আমি দুসপ্ন দেখিয়াছি, এক বৃহদ বনমধ্যে প্রবেশ করিয়া দেখিলাম যে তাহারমধ্যে কেবল বৃহৎ২ অজাগর সকল রহিয়াছে আর মস্তকের উপরিভাগে ওকাব সকল (বৃহৎ পক্ষ বিশেষ উড্ডিয়মান হইতেছে আমি ঐ বনে সেনা সহিত তাম্বু ফেলিয়া রহিয়াছি এইসময়ে ইরানের দিগ হইতে অতিসত্ত্ব ঝড়আসিয়া আমার শিবির ও ধ্বজা ফেলাইয়া দিল; তাহার পর আকাশ হইতে বৃষ্টির ন্যায় তীর ও তলওয়ার গদাপ্রভৃতি নানা প্রাকার অস্ত্র বর্ষন হইল তাহাতে আমার অনেক সেনাবিনষ্ট হইল, পরে যে সকল সেনা জীবদ্দসায় রহিল তাহারদিগের সকল কে ও আমাকে বান্ধিয়া কাউছের নিকটে লইয়া গেল; কাউছের সম্মুখে একাট বালক বসিয়াছিল সে আমাকে দেখিয়া অতি সীঘ্র আসিয়া আমার কোটা দেশে এক তলওয়ারের আঘাত করে তাহার বেদনা এখন পর্য্যন্ত আমার বোধ হইতেছে। রজনী প্রভাত হইলে আফরাছিয়াব গণক দিগকে ডাকাইয়া রাত্রের সপ্নের আনুপূর্ব্বিক কাহয়া তাহার ফলাফল গণনা দ্বারা বিচারকরিয়া কহিতে আজ্ঞা করিলেন তাহারা গণনা করিত কারণ বুঝিয়া অনেকক্ষণ নিরব হইয়া থাকিল; আফরাছিয়াব কহিল এ সপ্নের ভাল মন্দ ফলাফল তোমার দিগের সাস্ত্র দ্বারে যেমত বোধ করিলে তাহা আমাকে

শীঘ্র কহ? তখন তাহারিই দুইতিন জন কহিল আপনি এইবার যুদ্ধে জয়ি হইবেন। আফরাছিয়াব তাহার দিগের কথায় বিশ্বাস না করিয়া কহিল তোমরা গণনায় যথার্থ যাহ জ্ঞাত হইয়াছ তাহা কহ? তখন তাহারা কহিল যদি আমার দিগের প্রাণরক্ষা করেন তবে যথার্থ কহিতে পারি, আফরাছিয়াব তাহারদিগকে অভয় প্রদান করিলেন, তখন তাহারা কহিল ছিয়াওসের সহিত যুদ্ধ করিলে অমঙ্গল হইবে প্রাণরক্ষা হওয়া দুষ্কর, এই কথা শুনিয়া সন্ধিপত্র লিখিয়া অনেক উপঢৌকন হয় হস্তি দাস দাসি নানা রত্ন করসেওজের সঙ্গে দিয়া ছিয়াওসের নিকট পাঠাইল, এখানে ছিয়াওস বলখনগর অধিকার করিয়া দুর্গ মধ্যে অবস্থিতি করিয়া কয়েক দিবস পরে আপন সেনাপতি দিগ্যে ডাকিয়া কহিলেন, আফরাছিয়াব যুদ্ধ করিতে সেনা পাঠাইল না আপনিও আইল না, তবে আমরা ছয়হুন নদী পার হইয়া তুরানের রাজধানী আক্রমণ করি, রোস্তম প্রভৃতি প্রধানেরা কহিল এত উৎকণ্ঠিত হওয়া কর্ত্তব্য নহে; আর বলখ দেশ জয় হইয়াছে এই সংবাদ বাদসাহকে লিখহ, কাউছ সাহ জ্ঞাত হইয়া যেমত আজ্ঞা পাঠাইবেন সেই মত করা উচিত। পরে কাউছকে এই সকল বিষয় বিশেষ করিয়া লিখিলেন, কাউছ এই পত্র পাঠানন্তর জ্ঞাত হইয়া উত্তর লিখিল যদি আফরাছিয়াব যুদ্ধ করিতে না আসিয়া খ্যান্ত হইয়া থাকে তবে নদী পার হইয়া তুরানের মধ্যে গিয়া যুদ্ধ করিবার আবিশ্যাক নাই; কাউছের এই পত্র ছিয়াওসের নিকটে পৌছিলে পর আফরাছিয়াবের পত্র ও উপঢৌকনাদি দ্রব্য সহিত করস-

ছেওজ আসিয়া ছিয়াওসের সন্নিকটে উপস্থিত হইল, করছে ওজকে বিস্তর সমাদর করিয়া আফরাছিয়াবের পত্র লইয়া তাহাকে বিদায় করিয়া রোস্তম প্রভৃতি প্রধানদিগকে ডাকিয়া আফরাছিয়াবের পত্র পাঠ করিয়া কহিলেন এইক্ষণে কর্ত্তব্য কি? রোস্তম কহিল যে ভীত হইয়াছে কিন্তু তাহার কথায় বিশ্বাস হয়না; যদি সে আপনার আত্মীয় একশত লোক দেয় আর ইরানের অন্তঃপাতি যে সকল দেশ অধিকার করিয়া লইয়াছে তাহা ছাড়িয়া দেয় তবে তাহার সঙ্গে সন্ধি করিব। পর দিবস করছেওজ আসিয়া পত্রের উত্তর চাহিলে উক্ত পরামর্শ মত একপত্র লিখিয়া দিয়া করছেওজকে বিদায়করিলেন; সে ঐ পত্র আফরাছিয়াবকে দিলে তিনি পাঠ করিয়া জ্ঞাত হইয়া ঐ নিয়মে সম্মত হইয়া আপনার আত্মীয় একশত লোক ছিয়াওসের নিকটে পত্র লিখিয়া পাঠাইল; আর বোখারা ও ছমরকন্দও জাজ ও ছগ্গান এইচারি দেশ ছিয়াওসকে ছাড়িয়া দিল; ছিয়াওস এসকল উপঢৌকনীয় দ্রব্য ও চারিদেশ ছাড়িয়াদিবার সংবাদ লিখিয়া রোস্তমের সমভিব্যাহারে কাউছের নিকটে পাঠাইলেন। রোস্তম ইরানে উপস্থিত হইবার পূর্ব্বে আফরাছিয়াবের সপ্নবিবরণ গণকেরা যাহা কহিয়াছিল তাহা শুনিয়াছিলেন, রোস্তম ঐ সকল দ্রব্য ও পত্র সহিত পৌছিলে সন্ধি করায় অসন্তুষ্ট হইয়া কহিলেন এ সন্ধি করাতে আমি সম্মত নহি, কারণ আমি শুনিয়াছি আফরাছিয়াব কুস্বপ্ন দেখিয়া গণকদিগের স্থানে ফল জিজ্ঞাসাকরিলে তাহারা কহিয়াছে আফরাছিয়াব এবারযুদ্ধে পরাভব হইয়া মরিবেক কিম্বা কয়েদ হইবে। রোস্তম কহিল

আপনি যাহা শুনিয়াছেন আমরাওএই কথা শুনিয়াছি কিন্তু সন্ধি হওনের পূর্ব্বে একথা কেহ জানিতে পারে নাই অতি গোপনে ছিল সন্ধি পত্র লেখা হইলে কিছুদিন পরে এ কথা প্রকাশ হইল, তখন সেসকল লেখা অমান্য করিয়া বিবাদ কি যুদ্ধ করা এ বাদসাহদিগের অনোচিত, এবং আফরাছিয়াব চারিটা দেশ ছাড়িয়া দিয়াছে এতোমার পক্ষে উত্তম হইয়াছে ইহা শুনিয়া কাউছ কহিল তোমার যুদ্ধ করিতে ভয় হইয়াছে, অতএব আমি অন্য সেনাপতি পাঠাইব। রোস্তম অসন্তুষ্ট হইয়া কহিল আপনি যুদ্ধে যাত্রা কর আমি সঙ্গে যাইতে প্রস্তুত আছি; কাউছ তাহা না শুনিয়া তুছকে আজ্ঞা করিলেন যে সেনা লইয়া তুমি আফরাছিয়াবের সহিত যুদ্ধে যাত্রা কর, আর ছিয়াওসকে কহিবা আফরাছিয়াব যে একশত তাহার আত্মিয় গণকে পাঠাইয়াছে তাহার দিগের সঙ্গে লইয়া আমার নিকটে আইসে ॥

ছিয়াওস আফরাছিয়াবের নিকটে গমন ॥

ছিয়াওস পরম্পর শুনিল যে কাউছ এ সন্ধি করায় অসন্তুষ্ট হইয়া আমার ও রোস্তমের পরিবর্ত্তে তুছকে প্রধান সেনাপতি করিয়া পাঠাইয়াছেন সে এ সন্ধি ভঙ্গকরিয়া আফরাছিয়াবের সঙ্গে যুদ্ধ করিবে. ইহাতে অত্যন্ত দুঃখিত হইয়া রোদন বদনে সেনাপতিদিগকে জানাইল। জঙ্গ হেমাওরান নামক একজন প্রধান সেনাপতি সে কহিল বাদসাহের আজ্ঞা রক্ষা করিতে হইবে, ছিয়াওস কহিল এ আজ্ঞা কি প্রকারে রক্ষা করিব এই একশত ব্যক্তিকে আমার সন্ধি ক্রমে ধর্ম্মত লিখন পঠন করায় পাঠাইয়াছে; কাউছ ইহারদিগকে লইয়া যাইতে

কহিয়াছে,পরন্তু ইহারদিগকে লইয়া গেলে কাউছ তৎক্ষণাৎ নষ্ট করিবেক; দ্বিতিয়ত আফরাছিয়াবের সহিত ধর্ম্মত প্রতিজ্ঞা করিয়া উভয়ে সন্ধি করিয়াছি; যদি কাউছ আফরাছিয়াবের লোককে নষ্ট করে তবে সন্ধি ভঙ্গ হইবে, এবং আমি ধর্ম্মচ্যুত হইব আর সকল লোকে কহিবেক ছিয়াওস যুদ্ধে ভিত হইয়া আফরাছিয়াবের সঙ্গে সন্ধি করিয়াছিল তাহাতে কাউছ সম্মত না হইয়া রোস্তমকে এখান হইতে উঠাইয়া লইয়া তাহার পরিবর্ত্তে তুছকে সসৈন্যে যুদ্ধ করিতে পাঠাইল; তবে আমার সম্ভ্রম ও মান কাহারও নিকটে থাকিবেকনা; আর ছুদাবা নানা অপবাদ দিয়া আমাকে মারিবার চেষ্টা করিয়াছিল কেবল ঈশ্বরের অনুগ্রহে এবার রক্ষা পাইয়াছি পুনরায় সেখানে গমন করিলে ছুদাবা কি ছল করিবে তাহা ঈশ্বর জানেন? প্রধানেরা কহিল কাউছের আজ্ঞা হেলন করিলে সে অতি ক্রোধ করে, অতএব আপনি এক লিপি প্রেরণ করু যে রোস্তমকে এখানে পাঠাইবন আমি আফরাছিয়াবের সঙ্গে যুদ্ধে যাইব। ছিয়াওস কহিল কাউছ রোস্তমের পরিবর্ত্তে তুছকে নিযুক্ত করিয়াছে এখন আমার লিখন গ্রাহ্য করিবেনা। এইক্ষণে আমার মত এই যে কাউছের সৈন্য সমস্ত ত্যাগ করিয়া আফরাছিয়াবের নিকটে যাত্রা করি; সরদারেরা সকলে শুনিয়া বিমর্শ হইয়া কহিলেন সে চিরকালের শত্রু তাহাকে বিশ্বাস করা কর্ত্তব্য নহে ছিয়াওস কহিল শত্রু মস্তক ছেদন করিলেও সহ্য হয় কিন্তু পিতার নিকটে অপমান সহ্য হয় না, ইহা কহিয়া আফরাছিয়াবকে এই পত্র লিখিল যে তোমার সহিত সন্ধি করিয়াছি তাহাতে আমার পিতা অসম্মত

হইয়া রোস্তমের প্রতি ক্রোধ করিয়া তাহার পরিবর্ত্তে তুহুকে তোমার সঙ্গে যুদ্ধ করিতে পাঠাইয়াছেন, কিন্তু আমার প্রাণ যায় তাহাও কর্ত্তব্য তথাপি প্রতিজ্ঞা হেলন করিব না, আর ইরানের বাদসাহির আশা ত্যাগ করিয়া কোন বন মধ্যে প্রবেশ করিব যে কাউছ আমার অনুসন্ধান নাপায়; আর আপনি যে একশত লোক আমার নিকটে পাঠাইয়াছিলেন তাহারদিগকে আপনকার নিকটে পাঠাই এই পত্র জঙ্গহে-সাওরানের হস্তে অর্পণ করিয়া ঐ একশত মনুষ্য তাহার সহিতে আফরাছিয়াবের নিকটে পাঠাইল । আফরাছিয়াব এই পত্র পাইয়া অতিশয় দুঃখিত হইয়া কাউছকে বিস্তর নিন্দা করিল, পরে ছিয়াওসের পত্রের উত্তর লিখিল যে আমি তোমার অনুরোধে সন্ধি করিয়াছি কাউছের সহিত সন্ধি করি নাই, আর তুহুকে যোদ্ধার মধ্যে আমি গণনা করি না; তুমি যদি অনুগ্রহ করিয়া আমার এখানে আইস তবে আমার পুত্র হইতে অধিক স্নেহ করিব, আর আমার যে দেশে তোমার থাকিতে বাঞ্ছা হয় সেই দেশ তোমাকে দিব, আর যদি ইরানের বাদসাহি করিতে মানস থাকে রোস্তমের সহিত পরা-মর্শ করিয়া লিখিলে আমার সমস্ত সেনা তোমার নিকটে পাঠা-ইব । আফরাছিয়াবের এই পত্র ছিয়াওসের নিকট পৌঁছিলে পরম অহ্লাদিত হইয়া বলখের দুর্গে যেসকল সেনা ও ধনছিল তাহা সমস্ত বহরাম নামক একজন প্রধানছিল তাহাকে ঐ সকল দিয়া কহিল তুহু এখানে আসিয়া পৌঁছিলে তাহাকে বুঝাইয়া দিবা; পরে আপনি তিনশত অশ্বারূঢ় সেনা সঙ্গে লইয়া কাউছকে এই বিবরণে পত্র লিখিয়া পাঠাইল যে প্রথমে তুমি

ছুদাবার কথায় আমাকে কাটিতে উদ্যত ছিলে গণকেরা সকল বৃত্তান্ত গণনা করিয়া তোমাকে কহিল তাহাতে বিশ্বাস না করিয়া আমাকে অগ্নি পরীক্ষা দিয়াছিলা ঈশ্বর অনুগ্রহ করিয়া আমাকে রক্ষাকরিলেন। এবং আমি এখানে আসিয়া বলখের দুর্গ জয় করিলাম ও আফরাছিয়াবকে এমত অবসন্ন করিলাম যে সে আপনার একশত আত্মীয় ব্যক্তি আমাকে দিয়া আমার সহিত শর্ত্ত সত্য করিয়া সন্ধি করিল তত্রাপি আপনি আমার প্রতি রাগতহইয়া তুছকে যুদ্ধ করিতে পাঠাইলেন, অতএব আপনকার অনুগ্রহের প্রতি আমার কোন মতে বিশ্বাস নাই এই হেতু আমি জানিয়াও শত্রুর নিকটে গমন করিলাম ইহাতে ঈশ্বর আমার ভাগ্যে যেমত ঘটনা ঘটান তাহাই হইবে। এই পত্র কাউছের স্থানে পাঠাইয়া আপনি আফরাছিয়াবের নিকটে যাত্রা করিল, যখন আফরাছিয়াবের দুর্গের নিকটস্থ হইল তখন আফরাছিয়াব ইহা শুনিয়া আপনি প্রধানদিগকে সঙ্গে করিয়া পদব্রজে অগ্রসর আইল ছিয়াওস তাহা দেখিয়া অশ্ব হইতে নামিয়া উভয়ে আলিঙ্গন করিলেন; আফরাছিয়াব অনেক সম্মান পুরঃসর ছিয়াওসকে আপন বাটিতে আনিয়া নগরস্থ সকলকে নৃত্য গীত ও আলোকময় করিতে আজ্ঞা করিলেন, আর ছিয়াওস কে কহিলেন তুমি আমা হইতে তিন অংশে শ্রেষ্ঠ প্রথমত প্রধানের সন্তান, দ্বিতিয়ত তুমি সত্যবাদি, ত্রিতিয় যোদ্ধা, ক্রমাগত উভয়ে একত্রে বাস করত অত্যন্ত প্রণয় হইল, এক বৎসর পরে আফরাছিয়াবের কর্ম্মাধ্যক্ষ ও প্রধান সেনাপতি পিরানওয়াছা ছিয়াওসকে কহিল তুমি এইখানে বিবাহ কর

বিশেষতঃ তোমার পিতা বৃদ্ধ দূরদেশে যাওয়া পরামর্শ নহে পরে পিরানওয়াছার কন্যা তাহার নাম গোলচেহরা এবং ফরিদা তাহারই সহিত বিবাহ দিল; কিছুদিন পরে আফরাছিয়াবের কোন আত্মীয় ছিয়াওসকে কহিল আপনি ব্যাস্ত হইয়া পিরানওয়াছার কন্যা বিবাহ করিলেন আফরাছিয়াবের পরম সুন্দরী এক কন্যা আছে আপনি জানাইলে বিবাহ দিত; ছিয়াওস কহিল বাদসাহদিগের অনেক বিবাহ হয়, পরে আফরাছিয়াবের কোন প্রধান সভাসৎকে ডাকিয়া ঐ বিবাহের কথা কহিলেন, সে ব্যক্তি আফরাছিয়াবকে জানাইলে আফরাছিয়াব শুভমাত্র হর্ষ হইয়া সম্মত হইল; এবং গোলচেহরা শুনিয়া প্রফুল্লা হইয়া কহিল একর্ম হইলে তোমার আর কোন ভয় নাই আমিও ইহাতে তুষ্টা আছি, পরে আফরাছিয়াব এক সপ্তাহ নৃত্যগীত ও সভা করিয়া অনেক অলঙ্কার বস্ত্র দাস দাসী দিয়া আপন কন্যা ফরঙ্গিছকে ছিয়াওসের সঙ্গে বিবাহ দিল। আর চিনদেশ ও খোতন দেশ যৌতুক দিল; কিছুদিন পরে ছিয়াওস ফরঙ্গিছকে লইয়া চিন দেশে গিয়া বাস করিলেন। এখানে কাউছের নিকট ছিয়াওসের পত্র পৌঁছিলে অবগত হইল যে ছিয়াওস আফরাছিয়াবের নিকটে গিয়াছে অতিশোকান্বিত হইয়া অনেক বিলাপ করিয়া রোদন করিল; রোস্তম ইহা শুনিয়া শোক সাগরে মগ্ন হইয়া কাউছকে না কহিয়া স্বদেশে প্রস্থান করিল, তদনন্তর কাউছ বাদসাহ তুছকে একপত্র লিখিল যে তুমি আর আফরাছিয়াবের সঙ্গে যুদ্ধ করিবানা সৈন্যলইয়া ইরানে আসিবা

ছিয়াওসের চিন দেশে বাস ॥

ছিয়াওস চিন দেশে উপস্থিত হইয়া তথাকার জল বায়ু মনোনীত না হওয়াতে নানা দেশে লোক পাঠাইল যে যে স্থানে জল বায়ু উত্তম এবং রম্য স্থান হইবে অনুসন্ধান করিয়া আইলে সেই স্থানে গিয়া বাস করিবেন। কিছু দিন পরে এক জন আসিয়া কহিল গঙ্গার তীরে অতি রম্য স্থান এবং শীতল বায়ু আর অতি সুমিষ্ট জল শীত গ্রীষ্ম সেখানে সমান ও বারমাস বসন্তকাল বোধ হয়, আর সে দেশের মনুষ্য প্রায় পীড়িত নাই ইহা শুনিয়া সেই স্থানে গিয়া এক দুর্গ ও মনো রম্য অট্টালিকা নির্ম্মাণ করিয়া নানা দেশ হইতে চিত্রকর দিগকে আনাইয়া কাউছ, কোবাদ, পসঙ্গ, আফরাছিয়াব, ছাম, নরিমান; জাল, রোস্তম, গোদরজ; গেও, তুছ, প্রভৃতি বাদসাহ ও সেনাপতিদিগের প্রতিমূর্ত্তি লেখাইলেন। কছু দিন পরে আফরাছিয়াব এক পত্র লিখিয়া তাহার আর এক জামাতা করছেওজ নামক একজন প্রধান ছিল তাহাকে ছিয়াওসের নিকটে পাঠাইল; সে পত্রে লিখিল যে তোমার প্রথমাস্ত্রী গোলচেহরা পিরান ওয়াছার কন্যা গর্ভবতী ছিল তাহাকে সঙ্গে না লইয়া আমার এখানে রাখিয়া গিয়াছিলে তাহার একপুত্র জন্মিয়াছে তাহার নাম ফরুদ ছিয়াওস আমি রাখিয়াছি, অনেক উপঢৌকন সহিত এইপত্র লইয়া করছে ওজ ছিয়াওসের নিকটে পৌছিলে তাহাকে আনয়ন জন্য ছিয়াওস আপনি অগ্রসর নাগিয়া আপনার সভাস্থ প্রধান দিগকে পাঠাইয়া বাটিতে আনিয়া অনেক সমাদার করিল,

কিন্তু ছিয়াওস অগ্রসর হইয়া আনিতে না যাওয়াতে করছে-ওজ মনো মধ্যে অভিমান যুক্ত হইয়া হৃদয় ক্ষেত্রে শত্রুতার বীজ রোপণ করিল, যাহেত মিষ্ট আলাপ হাস পরিহাশ করিত, কিয়দ্দিবসান্তে অনেক অলঙ্কার বস্ত্র দিয়া তাহাকে বিদায় করিল। করছেওজ আসিয়া আফরাছিয়াবের নিকট কহিল এখন সেছিয়াওসনাই তাহার আকাঙ্ক্ষা অনুমান করিয়াছি; অনেক সৈন্য সংগ্রহ করিয়া রাখিয়াছে, আমাকে পূর্ব মত মান্য ও সমাদর করে নাই; আমি বোধ করি অতি শীঘ্র তোমার উপর আক্রমণ করিয়া যুদ্ধ করিবেক। আফরাছিয়াব তাহার এতৎ বাক্য গ্রাহ্য করিল না, তখন করছেওজ অনেক শপথ করিয়া কহিল আমি যেমত দেখিয়াছি ও বুঝিয়াছি সেই মত কহিলাম আপনি বিজ্ঞ ও সদ্বিবেচক বিবেচনা করুন; আফরাছিয়াব ভাবিত হইয়া উপায় চিন্তা করিতে লাগল। পরে করছেওজকে কহিল ছিয়াওস আমার শরণাগত হইয়াছে তাহাকে নষ্ট করিতে পারিবনা তাহাকে কোন উপলক্ষে এদেশতেহইতেতাহার পিতার নিকটেপাঠাই; করছেওজ কহিল কাউছ পূর্ব্বেই তোমার রাজ্য লইতে ও তোমাকে নষ্টকরিতে তুছকে সেনা সহিত করিয়া পাঠাইয়াছিল কেবল ছিয়াওস তোমার নিকট আসাতে ক্ষেন্তহইয়া আছে, এখনছিয়াওসকে তাহার নিকট পাঠাইলেঅবিলম্বে দুইজনে আসিয়া তোমাকে নষ্ট করিয়া রাজ্য লইবেক; আফরাছিয়াব কহিল তবে ইহার কি কর্ত্তব্য? করছেওজ কহিল ছিয়াওসকে কোন উপলক্ষে এখানে আনিয়া বদ্ধ রাখ; ইহা শুনিয়া তুষ্ট হইয়া

ছিয়াওসকে আনিতে একপত্র লিখিয়া পুনরায় ঐ করছেওজকে পাঠাইল। ছিয়াওস ঐপত্র পাইয়া অতি হৃষ্টচিত্ত হইয়া কহিল আফরাছিয়াব আমার পিতার তুল্য এবং প্রতিপালন করিতে- ছেন, এইক্ষণে তাঁহার সহিত সাক্ষ্যাৎ করিতে যাইব, করছে- ওজ মনে ভাবিল এ যদি এখানি যায় তবে আমার চাতুর্য্য প্রকাশ হইলে আমার পক্ষে মন্দ, যাহাতে না যায় এমত মন্ত্রণা করি, এই বিবচনা করিয়া কহিল আফরাছিয়াব তোমর প্রতি রাগত হইয়াছেন, অতএব হঠাৎ যাওয়া কর্ত্তব্য নহে, তুমি আমার আত্মীয় সেখানে গমন করিলে অন্যায় মারা যাইবা এনিমিত্তে নিষেধ করিতেছি; ছিয়াওস কহিল আমি তাহার পুত্র তুল্য এবং কোন অপরাধ করিনাই তবে কি নিমিত্তে আমাকে মারিবে? করছেওজ কহিল তুমি সৈন্য রাখিয়াছ শুনিয়া সন্দিগ্ধ মনে রাগতহইয়া তোমাকে মারিবার চেষ্টায় আছে, আমার একথা তুমি কদাচ প্রকাশ করিবানা; ছিয়াওস কহিল আমি তাঁহার শরণাগত এবং জামাতা আমাকে কিঅপ- রাধে বধ করিবেন; আর তুমি সৈন্য রাখিবার যেকথা কহিলে সে অতি অগ্রাহ্য কারণ বাদসাহরদিগের নিকটে কিছু সেনা আত্ম রক্ষার নিমিত্তে অবশ্যই রাখিতে হয়, যুদ্ধ উপযুক্ত অধিক সেনা রাখি নাই তাহাও আপনি দেখিয়াছ; করছেওজ কহিল আগরিরছ তাহার কনিষ্ঠ সহোদর ছিল তাহা অপেক্ষা তুমি নৈকট্যনহে তাহাকে আফরাছিয়াব নষ্ট করিয়াছে তাহা শুনিয়াছ ছিয়াওস কহিল আমি তাহার আজ্ঞা হেলন করি- বনা অবশ্য যাইব ইহাতে আমার অদৃষ্টে ঈশ্বর যাহা করেন তাহাই হইবে। করছেওজ কহিল আত্মীয়লোকে সৎপরামর্শ

কহে যাহার মৃত্যু উপস্থিত হয় সে বিপরীত জ্ঞান করে অত-
এব হটাৎ নাগিয়া কোন উপলক্ষে এক পত্র লিখিয়া পাঠাও
ছিয়াওস গুহ বৈগুণ্য জন্য তাহার বাক্যে ভুলিয়া আফরাছি-
য়াবকে পত্র লিখিল। ফরঙ্গিছ পীড়িতা কিঞ্চিৎ বিশেষ
হইলে আপানকার নিকটে পৌছিব, করছেওজকে এই পত্র
দিয়া বিদায় করিল। সে আফরাছিয়াবের নিকটে আসিয়া
কহিল আমি পূর্ব্বেই আপনাকে জানাইয়াছি এখন সে ছিয়া-
ওস নাই এবার আমার সঙ্গে আলাপন করে নাই। আফরা
ছিয়াব তখন করছেওজের বাক্যে বিশ্বাসকরিয়া সেনাগণকে
সঙ্গে লইয়া করছেওজকে সেনাপতি করিয়া যুদ্ধ করিতে
চলিল। ছিয়াওস এই সংবাদ পাইয়া ফরঙ্গিছকে কহিল কর-
ছেওজ সত্য কহিয়াছিল আমি গেলে আমাকে নষ্ট করিত-
ফরঙ্গিছ কহিল আফরাছিয়াব এখানে না পৌছিতে তুমি
ইরানে প্রস্থান কর; ছিয়াওস কহিল তুমিও আমার সঙ্গে চল;
ফরঙ্গিছ কহিল আমার পাঁচ মাস গর্ব্ভ হইয়াছে এখন দিবা
রাত্রি অশ্বারোহণে যাইতে পারিব না তুমি আমারআশা পরি-
ত্যাগ করিয়াআপনার প্রাণ লইয়া পলায়ন কর; যদি কোন
প্রকারে আমার প্রাণ রক্ষা হয় তবে সাক্ষ্যাৎ হইবে, ইহা
শুনিয়া ছিয়াওস ইরানি এক সহস্র অশ্বারূঢ় সৈন্য লইয়া
ফরঙ্গিছকে কহিল যদি পুত্রহয় তবে কয়খোছরো নাম
রাখিবে ইহা কহিয়া ইরানে যাত্রা করিল ॥

---

## আফরাছিয়াব ছিয়াওসকে বধোদ্যোগ ॥

আফরাছিয়াব নিকটে আসিয়া শুনিল যে, ছিয়াওস এস্থান

হইতে পলাইয়া ইরানে গিয়াছে, তখন করছেওজকে সেনা সঙ্গেদিয়া ছিয়াওসকে ধরিতে তাহার পশ্চাৎ পাঠাইল, সে কথক দূর গিয়া ছিয়াওসের সেনাগণের সহিত যুদ্ধ করিয়া তাবৎ সেনা নষ্ট করিল, এবং ছিয়াওসের ঘোড়া ও খোজা করিল এই সময় আফরাছিয়াব আসিয়া কহিল তরা বৃষ্টি করিয়া উহাকে নষ্ট কর, কথকগুলীন সেনা তীর বর্ষণ করিতে লাগিল তখন ছিয়াওস পলাইবার পথ নাপাইয়া অমুপায় হইয়া ঢাল গুড করিয়া তলওয়ার লইয়া ঐ সেনার মধ্যে প্রবেশ করিয়া বহুবিধ সেনা বিনাশকরিল তখন আর অধিক সেনা পাঠাইয়া ছিয়াওসকে বেষ্টন করিয়া আনিল, আফরা- ছিয়াব কহিল ইহার মস্তক ছেদন কর বেসমনামক একজন প্রধান কহিল সাহজাদাকে কাটিবার নিমিত্তে এত উৎকণ্ঠিত হইবেন না, বাটিতে উপস্থিত হইয়া বিজ্ঞ ব্যক্তিদিগের সহিত পরামর্শ করিয়া যাহা কর্ত্তব্য হয় তাহাই করিবেন। আফরা ছিয়াব ছিয়াওসকে কয়েদকরিয়া ছিয়াওসের বাটিতে আসিয়া নগর ও দুর্গ এবং অট্টালিকা দেখিয়া অতিশয় হৃষ্ট হইল, ফরাঙ্গিছরোদন করিতে ২ আসিয়া আফরাছিয়াবকে কহিল ছিয়াওস ইরান হইতে আসিয়া তোমার শরণাগত হইয়া রহি য়াছে কোন অপরাধ করে নাই ইহাকে নষ্ট করা উচিত নহে; আর ইহার পিতা কাউছসাহ ও রোস্তম প্রভৃতি সরদারেরা একথা শুনিলে তথায় জলগ্রহণ না করিয়া তৎক্ষণাৎ সসৈন্যে এদেশে আসিয়া এখানকার সমস্ত লোককে নষ্টকরিয় এদেশ সমভূম করিবেক। আফরাছিয়াব তাহার কথা গ্রাহ্য করিলনা ফরঙ্গিছ ছিয়াওসের নিকট আসিয়া অনেক রোদন করিল;

পর দিন আফরাছিয়াব গোরদি নামক এক ব্যক্তিকে আজ্ঞা
করিল ছিয়াওসের মস্তক ছেদন কর সে ছিয়াওসকে নষ্ট
করিতে লইয়াগেল ছিয়াওস রোদন করিতেং ঈশ্বরের নিকট
এই প্রার্থণা করিলেন যে হে ঈশ্বর ; আফরাছিয়াব আমাকে
অকৃত অপরাধে নষ্ট করিল ইহার প্রতিফল আমার সন্তান
আফরাছিয়াবকে যেন দেয় ওমি এইরূপএক সন্তান আমাকে
দিও। পরমেশ্বর তাহার প্রার্থণা গ্রাহ্যকরিয়া কয়খোছরোকে
উৎপত্তি করিয়া তাহার প্রার্থণা পূর্ণ করিবেন, সে সকল বিব
রণ পাৎশ্চ বিস্তারিত রূপে জ্ঞাত হইবা গোরদি এক পাত্র
আনাইয়া ছিয়াওসেরমস্তককাটীয়া ঐপাত্রে সেই মস্তক ওরক্ত
রাখিয়া আফরাছিয়াবের নিকট লইয়া গেল; আফরাছিয়াব
তাহা দেখিয়া সেইমস্তক ঐদুর্গেরউপরঝুলাইয়া রাখিতেআজ্ঞা
করিলেন; ঐ মস্তক হইতে যে রক্ত ভূমে পতিত হইল তাহাতে
তৎখনাত এক লতা উৎপত্তি হইল তাহার নাম সকলে খুন
ছিয়াস রাখিল ঐ লতা অনেক ঔষধিতে প্রয়োজন হয় ছিয়া
ওসকে বধ করিলে পরে ফরঙ্কিছ বাদসাহের সম্মুখে আসিয়া
অনেক রোদন করিতে আরম্ভ করিল তচ্ছ্রবণে করছেওজকে
কহিল ইহার গর্ভপাৎ করিয়া পশ্চাৎ ইহাকে ও নষ্ট কর,
পিরান ওয়াক্তা এই কথা শুনিয়া বাদসাহের নিকটে আসিয়া
কহিল গর্ভবতী স্ত্রিলোককে নষ্ট করা অতি কুকর্ম্ম ফরঙ্গিছ
তোমার তক্ত কিম্বা অধিকার প্রার্থণা করেনাই যদি অনুগ্রহ
করিয়া উহাকে আমাকে দেন তবে আমার বাটিতে রাখিয়া
প্রতিপালন করি: বাদসাহ কহিল আমি ফরঙ্কিছকে তোমায়
দিলাম তোমার আলয়ে লইয়া যাও কিন্তু যখন সন্তান হইবে

তদ্দণ্ডেই আমার নিকটে আনিবা; পিরানওয়াছা সর্ম্মত হইয়া নিজাগারে লইয়া রাখিল। পরে সময়েতে ফরিঙ্গচ একপুত্র প্রসব হইল তাহারনাম কয়খোছরো রাখিল; পিরান ওয়াছা আপন বিশ্বাসি প্রধানদির রক্ষককে ডাকাইয়া কহিলেন এই বালককে তোমার বাটিতে রাখিয়া প্রতিপালন ও বিদ্যা অভ্যাসকরাও একউত্তম বিশ্বাবীদাই ঐবালককে সর্ব্বদালইয়া থাকিবার নিমিত্তে সমর্পিব্যাহারে দিল; ঐ রাত্রে আফরা ছিয়াব সপ্ন দেখিল যে একজন এক আলোক হস্তে করিয়া আসিতেছে তাহার পশ্চাতে ছিয়াওস এক তলওয়ার হস্তে করিয়া কহিতেছে ও আফরাছিয়াব সুখের নিদ্রা অদ্যাবধি ত্যাগ কর। কয়খোছরো জর্ম্ম গ্রহণ করিয়াছে সে পৃথিবীর নূতন নিয়ম নির্ধারিত করিবেক। আফরাছিয়াব তৎক্ষণাৎ শর্য্যা ত্যাগ করিয়া পিরান ওয়াছাকে ডাকাইয়া কহিল ফরঙ্গিছের অদ্য এক পুত্র হইয়াছে? সে কহিল গত্যো রাত্রে এক পুত্র হইয়াছিল; বাদসাহ কহিল তাহাকে আন আমি দেখিব পিরান ওয়াছা কহিল আমি তৎক্ষনাত তাহাকে প্রান্তরে ফেলিয়া দিতে কহিয়া ছিলাম দাসীগণ তাহাকে ফেলিয়া আসিয়াছে। বাদসাহ কহিল আমার নিকট কেন আনিলা না পিরান ওয়ছা কহিল আমি শেষ ভাবিয়া আনি নাই যেহেতু ছিয়াওসকে নিরাপরাধে নষ্ট করিয়াছ, আর যদি ইহাকেও নষ্টকর পুনঃ২ এমত কুকর্ম্ম করিলে ঈশ্বর সহিষ্ণুতা করিবেন না কোন আপদ ঘটাইবেন। এই কথা শুনিয়া নিরব হইয়া থাকিল, আর কয়খোছরোর নাম করিলনা। কিছু দিনপরে করছেওজের খলতা ও চাতুর্য্য বাদসাহ জানিতে পারিয়া

তাহাকে আপন নিকটে হইতে দূর করিয়া দিল। পিরান ওয়াছা পণ্ডিত ও বলবান্ পাঠাইয়া কয়খোছরোর বিদ্যা অভ্যাস ও যুদ্ধাদি সিক্ষা করাইতে লাগিল, দশবারবৎসরের হইলে পিরান ওয়াছা এক দিবস বাদসাহকে কহিল কয়খো-ছরোকে মাঠে ফেলিয়া আইলে একজন গোরক্ষক তাহাকে তুলিয়া লইয়া প্রতিপালন করিয়াছে; আমি এই কথা শুনিয়া তাহাকে আমার নিকটে আনাইয়াছি সেবালক অতি নির্ব্বোধ উন্মত্তের মত কথা কহে এক কথা জিজ্ঞাসা করিলে অন্য এক কথার উত্তর করে; আফ্রাছিয়াব কহিল তাহাকে আমার নিকটে আন দেখিব পরদিবস পিরানওয়াছা কয়খোছরোকে কহিল তোমাকে আফরাছিয়াববাদসাহর নিকট লইয়া যাইব রাখালের বেশ ধারণ করহ; বাদসাহ কোন কথা তোমায় জিজ্ঞাসা করিলে তাহার উত্তর যথার্থ রূপে না দিয়া বিপরিত উত্তর করিবা তোমাকে যেন পাগল ও নির্ব্বোধ বোধ করে যখন কয়খোছরোবাদসাহরনিকটেআসিয়াছেলাম নাকরিয়া দাঁড়াইয়া রহিল, আফরাছিয়াব তাহাকে দেখিয়া কিছু লর্জিত হইয়া কোন কথা জিজ্ঞাসা করাতে কয়খোছরো তাহার বিপ পরিত উত্তর করিল, বাদসাহ কহিলেন ওরে রাখাল দিবা রাত্রের কি সন্ধান রাখিস্ আর তোর ছাগ ও মেষ কিকরিলি আর ক্ষেত্রে কিরোপণ করিল? কয়খোছরো কহিল শীকারো নাই আমারো তীর ধনুক নাই। পুনরায় আফরাছিয়াবকহিল তোর বাপের নাম কি আর ইরান তুরানের কি সংবাদরাখিস আর আহার নিদ্রা কোথায় করিস? কয়খোছরো কহিল পর্ব্বত হইতে এক অশ্বারূঢ় আমার নিকট দিয়া গেল আর

বার বাদসাহ কহিলেন ইরানের বাদসাহর নিকটে যাইবি ? কয়খোছরো উত্তর করিল নগরে তৈল নাই আমার ছাগল মাট হইতে আনিব, এই সকল কথা শুনিয়া আফরাছিয়াব হাস্য করিয়া কহিল এ পাগল আমি মাথার কথা জিজ্ঞাসা করিলে পায়ের কথা কহে, পিরান ওয়াছা কহিল যাহারা রাখালদিগের নিকটে থাকে তাহারাও রাখাল, তখন আফরাছিয়াব কহিল ইহা হইতে ভাল মন্দ কিছুই হইতে পারিবে না অতএব ইহাকেও ইহারমাতাকে ছিয়াওসের বাটিতে পাঠাইয়া দেও আর জিবনোপযুক্ত আহারদিয়া সেইখানে রাখিবা

কাউছ ছিয়াওসের মৃত্যু শুনিয়া রোস্তমকে যুদ্ধে পাঠান ॥

কিছুদিবস পরে কাউসাহ শুনিল যে আফরাছিয়াব ছিয়াওসকে বিনাপরাধে নষ্ট করিয়াছে; বিস্তর খেদ ও রোদন করিয়া রোস্তমকে সমস্ত বিবরণ লিখিয়া ইরানে আসিতে লিখিয়া পাঠাইল; আর সমস্ত প্রধান ও সেনাদিগ্যে ডাকাইয়া ছিয়াওসের মৃত্যু বিবরণ কহিল সকলেই খেদান্বিত হইল রোস্তম কাউছের পত্র পাইয়া কাউছ অপিক্ষা অধিক খেদান্বিত হইয়া তৎখনাত জাবলহইতে ইরানে আসিয়া কাউছের সহিত সাক্ষ্যাত করিয়া কহিল ছিয়াওস কেবল ছুদাবার দদুচরিত্রের নিমিত্তে এখান হইতে তুরানে গিয়া মারা পড়িল। কাউছ কহিল সেকথা প্রমান রোস্তম কহিল পুরুষে স্ত্রীলোকের বাধ্য কখন হইবেকনা ইহা সাস্ত্রে নিষেধ, বিশেষত রাজা তবে তুমি এই দুষ্টা স্ত্রীর বশীভূত হইয়া কেন রহিয়াছ,

যে পুরুষ স্ত্রীর বশীভূত হয় তাহার জীবনে ধীক তাহা অপেক্ষা মৃত্যু ভাল। কাউছ কহিল আমি ছুদাবার নিমিত্তে অতিশয় বিবৃত আছি; রোস্তম কহিল ছিয়াওস ছুদাবার দুষ্টতার জন্য নষ্ট হইয়াছে, আমি প্রথমে ছুদাবার মস্তক ছেদন করিয়া পরে আফরাছিয়াবের সঙ্গে যুদ্ধ করিয়া তাহার রাজ্য সমভূমি করিব এই প্রতিজ্ঞা করিয়াছি? কাউছ কহিল এই উচিত হয়, তখন রোস্তম কাউছের নিকট হইতে গাত্রোত্থান করিয়া বাদসাহর অন্তঃপুরে গিয়া ছুদাবার মস্তক ছেদন করিয়া সসৈন্যে আফরাছিয়াবের সহিত যুদ্ধ করিতে তরানে যাত্রা করিল। তুছ গুগেওপ্রভৃতি সকল সেনাপতি স্ব স্ব সেনা লইয়া রোস্তমের সঙ্গে গমন করিল; যখন রোস্তম তূরানের নিকটা-বর্ত্তি সঞ্জাবনগরে পৌছিল তথাকার সুবাদার আজাদ নামে ছিল সে শুনিয়া সসৈন্যে পথরুদ্ধ করিল, রোস্তম ইহা শুনিয়া তৎক্ষণাৎ তাহার সঙ্গে যুদ্ধ করিয়া তাহাকে শমননদনে প্রেরণ করিল, তাহার সেনা সকলে দেখিয়া পলাইয়া গেল। আফ্রাছিয়াব এই কথা শুনিয়া ছোরখা নামক একজন সেনাপতি ত্রিশ সহস্র অশ্বারূঢ় সেনা দিয়া যুদ্ধে পাঠাইল, সে রোস্তমের সৈন্যের নিকট পৌছিলে, রোস্তমের পুত্র ফরামোজ যুদ্ধ করিয়া ছোরখাকে বন্ধন পূর্ব্বক রোস্তমের নিকট লইয়া গেল রোস্তম তুছকে কহিল যে প্রকারে ছিয়াওসের মস্তক আফরাছিয়াব কাটিয়াছে সেইমত করিয়া ইহার মস্তক ছেদন কর; সে বিস্তর রোদন করিয়া কহিল আমি ছিয়াওসের মিত্র ছিলাম কখন তাহার মন্দ করিনাই, এই কথা তুছ রোস্তমকে

জানাইলে. রোস্তমকহিল আমি শপথ করিয়াছি তুরানিদিগকে কখন রক্ষা করিব না; ইহা শুনিয়া তুছ তাহার মস্তক ছেদন করিয়া ঐ ছিন্ন মস্তক কাউছের নিকটে পাঠাইলে কাউছ সেই মস্তক দর্গের উপর ঝুলাইতে আজ্ঞা করিলেন। আফ্রাছিয়াব ছোরখাকে আপন পুত্রের ন্যায় স্নেহ করিত এই সংবাদ পাইয়া অনেক রোদন করিয়া সমস্ত সেনা সঙ্গে লইয়া আপনি যুদ্ধে যাত্রা করিল। পিরানওয়াছার কনিষ্ঠ ভ্রাতা বেলম নামক আফরাছিয়াবকে কহিল আমি রোস্তমের সঙ্গে যুদ্ধ করিব; আফরাছিয়াব কহিল যদি তুমি রোস্তমকে বধ করিতে পার তবে তোমাকে আমার এক কন্যা ও তুরানের অর্দ্ধেক সম্পদ দিব; পিরানওয়ছা শুনিয়া কহিল উহার মৃত্যু উপস্থিত এ নিমিত্তে রোস্তামের সঙ্গে যুদ্ধ করিতে বাঞ্ছা হইয়াছে। পরে বেলম অশ্বারূঢ় হইয়া রণস্থলে গিয়া রোস্তমকে আহ্বান করিলে রোস্তম আসিয়া প্রথমতঃ তীরের যুদ্ধ করিল পরে একশূল তাহার কটিবন্ধে বিন্ধিয়া তাহাকে ঘোটকহইতে ভূমে ফেলিয়া তাহার মুণ্ড ছেদন করিল তাহা দেখিয়া আফরাছিয়াব যুদ্ধ করিতে রোস্তমের সম্মুখে আইল; প্রথমে আফরাছিয়াব রোস্তমকে এক শূলের আঘাত করে তাহা রোস্তমের সাঁজওয়াতে প্রবেশ হইল না; পরে রোস্তম এক শূল মারিল তাহা আফরাছিয়াবকে না লাগিয়া তাহার ঘোটকের মস্তকে বিন্ধিল ঘোটক তৎক্ষণাত ভূমে পড়িয়া গেল ও আফরাছিয়াব ভূমে পড়িল পুনরায় রোস্তম এক বরছি মারিতে গেল [illegible] হোমান সৈন্য সহিত আসিয়া রোস্তমের ঘোটকের মস্তকে এক গদা প্রহার করিল তাহাতে ঘোটক দাঁড়াইল

এই অবকাশে আফরাছিয়াব অন্য এক ঘোটকে আরোহণ করিয়া পলায়ন করিল; তুরানির পদাতিক সেনারা যখন যে আফরাছিয়াব ও হোমান দুইজন পলাইতেছে তাহা দেখিয়া তাহারাও পলাইল। রোস্তম তদ্দৃষ্টে তাহার দিগের পশ্চাতে তিন ক্রোষ পর্য্যন্ত অতিবেগে ধাবমান হইয়া পুনরা-গমন করিল। আফরাছিয়াব কয়খোছরো ও ফরঙ্গিছকে ছয়াওসের বাটি হইতে চিনের সমুদ্রের পারে পাঠাইতে পিরান ওএছাকে কহিল কি জানি পাছে রোস্তম আসিয়া তাহারদিগকে লইয়া যায়, পিরানওএছা সেইমত করিল পরে রোস্তম তুরানের মধ্যে প্রবেশ করত তুরান অধিকার করিয়া তক্তে বসিয়া আজ্ঞা করিল যে ব্যক্তি আফরাছিয়াবের নাম করিবে কিম্বা তাহার কোন প্রসঙ্গ করিবেক তাহার মস্তক ছেদন করিব; রোস্তম সাতবৎসর তুরানে বাদসাহি করিয়া আপন পুত্র ফরামোরজকে তুরানে রাখিয়া আফরা ছিয়াবের ভাণ্ডারের সমস্ত ধন ও রত্নাদি লইয়া ইরানে কাউছ সাহের নিকটে আইল আর গেওকে কয়খোছরোর অনুসন্ধান করিয়া আনিতে পাঠাইল ॥

---

চিন রাজ্য হইতে কয়খোছরোকে আনয়ন।

গেও তুরান হইতে গমন করিয়া যে দেশে পৌছিল সেই দেশস্থ পথপ্রদর্শি লোক সঙ্গে লইয়া যাইত আপনার দেশীয় ভাষা কহিত না তুরকি ভাষা কহিত এরূপ করিয়া চিন দেশ পৌছিয়া কয়খোছরোর অনেক অনুসন্ধান করিল কোনরূপে তাহার সন্ধান না পাইয়া; মনে করিল ফিরিয়া দেশেতেই আর

ভাবিল আমি ফিরিয়া গেলে সকলে কহিবে আকরাছিয়াবের ভয়ে পলাইয়া আসিয়াছে এই বিবেচনা করিয়া চিন দেশ পরিত্যাগ করিয়া কথক দূর গিয়া দেখিল কয়েকজন লোক আসিতেছে তাহারদিগকে জিজ্ঞাসা করিল যে তোমরা কে কোথা যাইতেছ? তাহারা কহিল আমরা পিরান ও এছার লোক কয়খোছরোর সম্বাদ জানিতে যাইতেছি, গেও তাহারদিগের নিকটে কয়খোছরো কোথা রআছে তাহাজ্ঞাত হইয়া পশ্চাৎ কহিল আমি মৃগয়া করিতে গিয়াছিলাম সঙ্গি ও পথ হারাইয়াছি আমাকে সঙ্গে করিয়া লইয়া চল, তাহারা কথক দূর সঙ্গে লইয়া গেল, পরে রজনী যোগে পালাইল, পর দিবস গেও তাহারদিগের কথিত মতে কথক দূর গিয়া এক সরোবরের ধারে এক যুবক পুরুষ দাঁড়াইয়া রহিয়াছে তদ্দৃষ্টে তাহার নিকটে গিয়া অনুমান করিল এইকয়খোছরো হইবেক, গেও তাহাকে ছেলাম করিয়া কহিল ওহেযুবক তুমি কি ছিয়াওসের পুত্র কয়খোছরো? কয়খোছরো কহিল আমি অনুভব করি গোদরজের পুত্র গেও তুমি; গেও ইহা শুনিয়া চমৎকার মানিয়া কহিল হে বাদসাহ; আমাকে কিপ্রকারে জানিলে আমাকে কখন দেখ নাই কয়খোছরো কহিল ইরানের রোস্তম প্রভৃতি সকল প্রধানকে আমি দেখিলে চিনিতে পারি, গেও কহিল তুমি ইরানে কখন যাও নাই এবং তাহারাও তোমার নিকটে কখন আইসে নাই তবে কি প্রকারে জানিতে পারিলা? কয়খোছরো কহিল আমার পিতা ছিয়াওস সাহ ইরানের বাদসাহদিগের ও রোস্তমাদি সরদারদিগের প্রতিমূর্ত্তি লিখাইয়া ছিলেন আমার মাতা

সেই প্রতিমূর্ত্তিদ্বারা আমাকেজ্ঞাত করিয়াছেন; তখন কয়খো-
ছরো কহিলেন তুমি আমাকে কিপ্রকারে চিনিলে? গেও
কহিল আমি তোমার রূপ লাবন্য ও তেজ দেখিয়া চিনিলাম
পরে গেওকহিল তোমার অঙ্গের বস্ত্র ত্যাগ করিয়া অবয়ব
আমাকে দেখাও? কয়খোছরো জামা খুলিলেন; তখন গেও
কয়খোছরের বাহুতে জরুরের চিহ্ন দেখিয়া জানিল কয়-
খোছরো কহিল আমার গায়ের বস্ত্র খসিয়া দেখিবার কারণ
কি তাহা বল? গেওকহিল কয় বংশোদ্ভব সকলেরি বাহুতে
জরুরের চিহ্ন আছে তাহাই দেখিলাম। পরে কয়খোছরো
গেওকে ফরঙ্গিছের নিকটে লইয়া গেলেন গেও তাঁহাকে
ছেলাম করিয়া সমস্ত বিবরণ জানাইয়া ইরানে লইয়া যাই
বার প্রশ্ন করিল? ফরঙ্গিছ সম্মত হইয়া কহিলেন এই বাদ-
সাহর অশ্বশালা আছে সেই স্থানে হইতে বেহজাদ নামে যে
এক উত্তম ঘোটক আছে তাহা আনয়ন কর গেও সেই স্থানে
গিয়া বেহজাদ ঘোটক ও আর এক অশ্ব আনিয়া তিনজন কয়
খোছরো ফরঙ্গিছ ও গেও একত্রে ঈশ্বরকে স্মরণ করিয়া
অশ্বারোহণে ইরানে যাত্রা করিলেন॥

• কয়খোছরোকে ধরিতে পিরানও এছা সেনা পাঠাইল

পিরান ও এছার লোক যাহারা কয়খোছরোর সংবাদ
আনিতে গিয়াছিল তাহারা ফিরিয়া আসিয়া পিরানওয়াছা-
কে কহিল ইরানি একজন অশ্বারোহি বলবান কয়খোছরোর
তত্ত্ব করিতে যাইতে ছিল আমারদিগের সঙ্গে সাক্ষাত হইল
পিরান ও এছা এই কথা শুনিয়া ভীত হইয়া তৎক্ষণাত গোল

বাদ নামক একজন প্রধান ব্যক্তিকে তিনশত অশ্বারূঢ় সেনা
সঙ্গে দিয়া কয়খোছরোকে সাবধানে রাখিবার নিমিত্তে পাঠা
ইল, সে তথায় গিয়া শুনিল যে কয়খোছরো ও ফরঙ্গিছ দুই
জন এক ইরানি অশ্বারূঢ়ের সঙ্গে এস্থান হইতে ইরানে যাত্রা
করিয়াছে, সে এই কথা শুনিয়া অতিশীঘ্র তাহারদিগের অনু
সন্ধানে ইরানের পথে গমন করিল, কয়েক দিবস পরে কয়-
খোছরো ও ফরঙ্গিছ পথ শ্রান্তে ক্লান্ত হইয়া একস্থানে নিদ্রা
গত ছিলেন গেও প্রহরি ছিল; এই সময় কিঞ্চিৎ দূরে কথক
গুলীন অশ্বারোহি আসিতেছে তাহা দেখিয়া অনুমান করিল
যে পিরান ও এছা আমারদিগকে ধরিতে সেনা পাঠাইয়াছে;
এই অনুভব করিয়া অশ্বারূঢ় হইয়া তাঁহারদিগের অগ্রে আসিয়া
যুদ্ধ করিতে আরম্ভ করিল, গেওয়ের যুদ্ধ দেখিয়া তাহারা
ভীত হইল, যেমন ব্যাঘ্র দেখিয়া ছাগ মেষ পালাইয়া যায়
সেইমত ঐ তিনশত অশ্বারোহি সেনা পলায়ন করিল গেও
তাহারদিগেকে দূরীকরণ করিয়া কয়খোছরোর নিকটে
আসিয়া যুদ্ধের সমস্ত বিবরণ জ্ঞাপন করিল; কয়খোছরো
তাহার হস্ত ধারণ করত বহুবিধ প্রশংসা করিয়া কহিলেন যে
আমাকে কেন জাগৃত করিলে না, গেও কহিল তোমরা পথ
শ্রমে ক্লান্ত ছিলে আর ঈশ্বরের অনুগ্রহে ও তোমার প্রতাপে
একাই তাহারদিগকে পরাভব করিয়াছি। পরে আহারের
দ্রব্য যাহা সঙ্গে ছিল আহার করিয়া তথা হইতে যাত্রা করিলেন
এখানে গোলবাদ পিরান ও এছার নিকট পৌঁছিয়া গেওয়ের
যুদ্ধের অনেক প্রশংসা করিল, পিরান ও এছা তাহাকে বিস্তর
ভৎর্সনা ও তিরস্কার করিয়া কহিল যে তুমি তিন শত অশ্বারূঢ়

সেনা লইয়া একজন ইয়ানিকে পরাজয় করিতে পারিলেনা তোমাকে কি ॥ ইহা কহিয়া কখক গুলীন সেনা সঙ্গে লইয়া পিরানওএছা আপনি কয়খোছরোকে ধরিতে চলিল ॥

---

পিরানওএছা কয়খোছরোকে ধরিতে গিয়া যুদ্ধ পরাজয় হয় ॥

কয়খোছরো ও ফরঙ্গিছ অতি শীঘ্র যাইতে না পারিয়া পথ মধ্যে বিশ্রাম করিয়া থাইতেছেন; পিরানওএছা দিবারাত্রি চলিয়া তাহারদিগের নিকটে পৌছিল, তখন কয়খোছরো ও গেও দুইজন নিদ্রিত ফরঙ্গিছ প্রহরি ছিল; পিরানওএছার নিসান দূরে হইতে দেখিয়া তাহাদিগের নিদ্রা ভঙ্গ করিল; কয়খোছরো কহিল এবার আমি যুদ্ধ করিব গেও কহিল তুমি বাদসাহ আর বালক কখন যুদ্ধ করনাই আমি জীবিত থাকিতে তোমাকে যুদ্ধকরিতে দিবনা, কয়খোছরোকহিল তোমার সাহায্যার্থে সঙ্গে যাইব গেও কহিল রোস্তমের সহিত যুদ্ধ করিয়াছি তাহাতে ও কাহার সহায় প্রার্থনা করিনাই রোস্তম প্রতিজ্ঞা করিয়াছিল যে আমার সম যোদ্ধা যে হইবেক তাহার সহিতকন্যারবিবাহদিব এইকথাশুনিয়াঅনেকে তাহারসঙ্গেযুদ্ধ করিয়া পরাজয় হয় পরিশেষ আমার সহিত যুদ্ধ করিয়া আমাকেকন্যা দানকরিল; পরে কয়খোছরোকে কহিল তোমরা এইস্থানে বসিয়া যুদ্ধের কৌতুক দেখ, ইহা কহিয়া ঈশ্বরকে স্মরণ করিয়া যুদ্ধে যাত্রা করিল; পিরান এএছা গেওকে দেখিয়া কহিল তুই একা আমার তিনশত অশ্বারোহি সেনাকে পরাজয় করিয়াছিল এইক্ষণে তোর কি দুর্দশা করি তাহা

দেখিবি, গেও কহিল ওরে নির্ব্বোধ ; সহস্র ২ ছাগে ক্রোধ করিলে কি ব্যাঘ্র মারিতে পারে আর কহিল ওরেপিরান আমি তোর সাক্ষ্যাতে এই প্রতিজ্ঞা করিতেছি তোর সমস্ত সেনাকে পরাস্ত করিয়া তোকে বান্ধিয়া তোর শোণিতে পৃথিবী কদ্দম করিব, আর কয়খোছরোকে ইরানে লইয়া বাদশাহ করিয়া ছিয়াওসের পরিবর্ত্তে আফরাছিয়াবকে নষ্ট করিয়া তুরান দেশ সমভূমি করিব। পিরান ওএছা এই কথা শুনিয়া মৌনাবলম্বি হইয়া মনো মধ্যে চিন্তা করিয়া গেওকে কহিল আমি অদ্য যুদ্ধে নিবর্ত্ত হইলাম তুই চলিয়া যা, গেও কহিল তুই ভয় পাইয়া খ্যান্ত হইলি কিন্তু আমি খ্যান্ত হইবনা পিরান ওয়ছা কোন উত্তর নাকরিয়া ফিরিল, গেও তাহার পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া কমন্দ ফেলিয়া পিরান ওএছাকে বান্ধিয়া ঘোটক হইতে ভূমে ফেলিয়া কয়খোছরোর নিকট লইয়া চলিল পিরানওয়ছার সৈন্যসকলে ইহা দেখিয়া ভয়েপলাইল কেহ ২ পিরান ওএছাকে মুক্ত করিবার চেষ্টায়আইল গেওএক হস্তে পিরানকে ধরিয়া আর এক হস্তে তাহারদিগকে গদা প্রহার করিতে আরম্ভ করিল, তাহারা ভয়ে নিকটে আসিতে পারি লনা; গেও পিরান ওএছাকে কয়খোছরোর নিকটে রাখিয়া পুনরায় পিরানওএছার সেনারউপর আক্রমণ করিতে চলিল তাহারা গেওকে পুনরায় আসিতে দেখিয়া তাবৎ সৈন্য পলায়নকরিল। পিরান ওয়ছা কয়খোছরো ও ফরঙ্গিছের নিকট অনেক মিনতিপূর্ব্বক রোদনকরিতে লাগিল, গেও জয়ি হইয়া আসিয়া কয়খোছরোকে কহিল এখনপর্য্যন্ত পিরানওএছাকে জীবদ্দশায় কেনরহিয়াছ? ফরঙ্গিছ কহিল পিরান ওএছার

নিমিত্ত আমিও কয়খোছরো জীবিত আছি ইহাকে কোন মতে নষ্ট করিতে পারিবানা, আমাকে ইহার প্রাণ দান দিতে হইবেক, তখন গেও কহিল আমি ইহারি সাক্ষাতে সপথকরিয়াছি যে ইহার রক্তে পৃথিবী রাঙ্গা করিব, কয়খোছরো কহিল ইহার দুইকান খঞ্জর দিয়া ছিদ্র করিয়া দেও তবেই তোমার প্রতিজ্ঞা পূর্ণ, হইল পিরানওএছারো প্রাণরক্ষা হইল গেও সেইমত করিয়া পিরানওএছার দুই হস্ত বন্ধন করিয়া ঘোড়া চড়াইয়া ছাড়িয়াদিল। পিরানওএছা তুরানে পৌছিয়া সমস্তবৃত্তান্ত আফরাছিয়াবকে কহিল আফরাছিয়াব শুনিয়া অনেক চিন্তা করিয়া কহিলএ অতি খেদের বিষয় সকলে কহিবে তুরানে পুরুষ নাই একজন ইরানি আসিয়া কয়খোছরোকে লইয়া গেল, পিরানওএছা স্বসৈন্যে গিয়াও কিছু করিতে পারে নাই ইহার পর লজ্জা আর কি সে যাহা হউক এইক্ষণে জয়হুন নামে নদীর খেয়া বন্ধের নিমিত্তে দানিকে অনুজ্ঞা পত্র পাঠাও যে দুইজন পুরুষ একজন স্ত্রীলোক এই তিন অশ্বারূঢ় এদেশ হইতে পলাইয়া যাইতেছে ইহারদিগ্যে কদাচ পার করিবা না আমি পশ্চাৎ যাইতেছি ॥

আফরাছিয়াব কয়খোছরোকে জয়হুন নদী হইতে পার করিতে বারণ ও আপনি যাও নের বিবরণ ॥

আফরাছিয়াব এই অনুজ্ঞা পত্র পাঠাইয়া আপনি অনেক সেনা সঙ্গে লইয়া দিবা রাত্রি আহার নিদ্রা ত্যাগ করিয়া

কয়খোছুরোর অনুসন্ধানে চলিল, কয়খোছরো ও গেও জয়হুন নদীর তীরে পোঁছিয়া খেয়াঘাটের দানিকে কহিল আমারদিগকে পার করিয়াদেও, সে কহিল বাদসাহর আজ্ঞাপত্র দেন গেও কহিল তাহা খোয়া গিয়াছে দানি কহিল যদি তোমারদিগের এই ঘোটক দেও তবে পার করিয়া দিব, গেও কহিল এ সাহাজাদার ঘোটক এই ঘোটক তোমাকে দিলে আমরা চলিয়া কি প্রকারে যাইব, পরে দানি কহিল তোমারদিগের এই দাসীকে দেও; গেও কহিল এ দাসী নহে এই সাহজাদার মাতা তোমাকে অনেক টাকা ও নানা রত্ন দিব পার করিয়া দেহ, ঐ দানি কহিল আমি যাহা চাহি তাহা নাদিলে পার করিবনা; সন্তরণ দ্বারা নদী পার হইয়া যাও: গেও কয়খোছুরোকে কহিল আফরাছিয়াব আমারদিগকে ধরিবারনিমিত্তে অতি শীঘ্র আসিবে ইহার সন্দেহ নাই এখানে বিলম্ব করা অকর্ত্তব্য অতএব শীঘ্র ঈশ্বরকে ধ্যান করিয়া ঘোটক জলে ফেলিয়া সন্তরণ করিয়া চল ঈশ্বর কূলে অবশ্য তুলিবেন; তোমার পূর্ব্ব পুরুষ ফরেদুঁ দজলা নামা সমুদ্র তুল্য নদী; সেই নদীতে পড়িয়া সন্তরণ দ্বারা দজলা পার হইয়া আসিয়া জোহাককে মারিয়া পৃথিবীর বাদসাহ হইয়াছিল। কয়খোছরো এইকথা শুনিয়া ঈশ্বরকে স্মরণ করিয়া ঘোটক সহিত অশ্বারূঢ় হইয়া জয়হুন নদী পারহইয়া চলিল, ঈশ্বর ইচ্ছায় অতিশীঘ্র সেই প্রসয় নদী উত্তীর্ণ হইয়া তিনজন কূলে উত্থিত হইল তদ্দর্শনে দানি প্রভৃতি সকলে দেখিয়া বিস্ময়াপন্ন হইল কয়খোছরো ক্ষণেককাল নদীতীরে থাকিয়া বস্ত্রাদি শুষ্ক করিয়া ইরানে যাইবার উপক্রম করিতেছেন ইতোমধ্যে

আফরাছিয়ার খেয়াঘাটে সেনা কথক গুণীন সঙ্গে লইয়া উপস্থিত হইয়া দেখিল যে কয়খোছরো প্রভৃতি তিনজনে নদী পার হইয়া গিয়াছে; খেয়ার দানিকে অনেক গর্জন করিয়া কহিল ইহার দিগে্যে কি নিমিত্তে পার করিলি আমি নিষেধ পত্র পাঠাইয়া ছিলাম, সে কহিল আমরা পার করি নাই এবং নৌকায় পার হয় নাই এই সমুদ্র তুল্য নদীতে অশ্বারোহণ করিয়া অনায়াসে পার হইল, আমরা এরূপ আশ্চয্য কখন দেখি নাই। আফরাছিয়াব শুনিয়া কিয়ৎকাল নিরব থাকিয়া পরে খেয়ার দানিকে কহিল নৌকা প্রস্তুত কর আমি সেনা সহিত পারে যাইব; হোমান কহিল ওপার ইরানের সীমানা তাহার দিগের অনেক সেনা নিকটে আছে আমার দিগের সঙ্গে অল্প সৈন্য আসিয়াছে যাওয়া মত নহে। আফরাছিয়াব শুনিয়া বিমর্শ হইয়া ফিরিয়া তুরানে গেল। গেও আপনার দিগের অধিকারস্থ ভুম্যাধিকারি দিগের দ্বারা কাউছের নিকট কয়ছোরোর আগত সংবাদ পাঠাইল, কাউছ শ্রুতমাত্র তাবত প্রধান দিগকে সৈন্য সহিত অগ্রসর পাঠাইয়া কয়খোছরোকে বাটীতে আনিয়া ক্রোড়ে করত শিরচুম্বন করিয়া আপন তক্তের পার্শ্বে আর একতক্ত আনাইয়া প্রধান দিগের সম্মতি ক্রমে কয়খোছরোকে তক্তে বসাইলেন কেবল তুছ সম্মত হইস না; সভা হইতে উঠিয়া কাউছের পুত্র ফরেবোরজর নিকট গিয়া কহিল আপনি কাউছের পুত্র বর্ত্তমান এবং উপযুক্ত থাকিতে এই বালককে গেও এখানে আনিল ইহার সম্মুখে দণ্ডায়মান হইয়া সেলাম করিব না বাদসাহ ও কহিবনা; ফরেবোরজ তাহার প্রতি তুষ্ট

হইয়া অনেক পারিতোষিক দিলেন। পরদিবস গোদরজ কয়খোছরোর শুভাগমনের আহ্লাদে কাউছের অনুমতি লইয়া আপন বাটীতে সভাস্থাপন করিয়া নৃত্য গীতাদি করিল? ইরানের সমস্ত প্রধান লোককে নিমন্ত্রণ করিবায় সকলেই আইল কেবল তুছ আইল না? তাহা দেখিয়া আপন পুত্র গেওকে কহিল তুমি তুছকে ডাকিয়া আন; গেও তথায় গিয়া তুছকে সভামধ্যে আসিতে কহিলে তুছকহিল কাউছের পুত্র ফরেবোর্জ থাকিতে আমি অন্যকে বাদসাহ বলিব না আর গেওকে কহিল তুমি নিরর্থক ক্লেশ পাইয়া এক নির্ব্বোধ বালককে আনিয়াছ? গেও কয়খোছরোর অনেক প্রশংসা করিল তুছ তাহা না শুনিয়া নিন্দা করিতে লাগিলা গেও রাগত হইয়া বাটীতে আসিয়া আপন পিতা গোদরজকে কহিল সে রাগান্বিত হইয়া বার সহস্র সৈন্য ও আপন পুত্র পৌত্র আটাত্তর জন সেনাপতি লইয়া তুছের সহিত যুদ্ধ করিতে গেল; তুছ ইহা শুনিয়া আপন সৈন্যলইয়া রণভূমিতে আসিয়া গোদরজকে কহিয়া পাঠাইল, তোমার সহিত আমি অনর্থক বিবাদ করিয়া যুদ্ধ করিলে কেবল আমার দিগের শত্রু আফরাছিয়াবের মনবাঞ্ছা পূর্ণ হইবে? ক্ষণেককাল যুদ্ধ ক্ষান্ত রাখ কাউছকে জ্ঞাত করি সে যেমত কহিবে তাহাই করিব। কাউছকে এইকথা কহিয়া পাঠাইল কাউছ শুনিয়া তৎক্ষণাৎ দুইজনকে ডাকাইয়া পাঠাইল, দুইজন আইলে কাউছ কহিল তোমরা আপনা আপনি কি নিমিত্তে যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইয়াছ; তুছ কহিল আমি আপনার আজ্ঞাবহ আছি এবং থাকিব যদি আপনকার রাজ্য করিবার মানস পূর্ণহইয়া

থাকে তবে আপনকার পুত্র ফরেবোর্জকে বাদসাহ করুণ
পুত্র থাকিতে পৌত্রকে বাদসাহ করিলে ধর্ম্ম বিরুদ্ধ কর্ম্ম হয়,
গোদরজ কহিল ছিয়াওস জ্যেষ্ঠ পুত্র ছিল সেই রাজ্যাধি
কারি তাহার অবর্ত্তমানে তাহার পুত্র কয়খোছরো বাদসাহ
হইবেক, এবং কদুর মত অশ্ব সহিত নদী পার হইয়া
আসিয়াছে ফরেবোর্জর এমত সাহস কই এইমত তুছের
সহিত গোদরজের অনেক বচসা হইল, পরে গোদরজ বাদ
সাহাকে কহিল আপনকার পুত্র ও পৌত্র দুই সমান আপনি
বিবেচনা করিয়া যাহাকে বাদসাহির উপযুক্ত বুঝেন তাহা
কেই রাজ্যাভিষিক্ত করুণ কাউছ কহিল আমার উভয়ই
সমান কাহারো মনখুস্ন করিতে পারিব না; এই এক উপায়
আছে তাহা করিলে কাহারও মনখুন্ন হইবে না। উভয়ের
মনের মালিন্যতা যাইবেক ইহা কহিয়া দুইজনকে ডাকাইয়া
কহিল যে বহমন নামক দৈত্য দিগের এক দুর্গ আছে সেই
দুর্গ গ্রহণ করিয়া যে আসিবেক তাহাকে বাদসাহ করিব,
ইহা শুনিয়া সকলে সম্মত হইল।

ফরোবোজ দুর্গ আক্রমণ করিতে না পারিয়া
ফিরিয়া আইসেন।

ফরেবোরজ কহিল যদি অনুমতি হয় তবে আমি প্রথমত
কথিত দুর্গ অধিকার করিতে যাত্রা করি; কাউছ অনেক সেনা
সঙ্গে দিয়া তুছকে সেনাপতি করিয়া ফরেবোর্জকে বহমনের
দুর্গ গ্রহণ করিতে পাঠাইলেন। যখন ফরেবোরজ সেখানে
পৌছিলেন তখন এমত গ্রীস্ম হইল যে সকলে অস্থির হইল,
আর ক্রমে মৃত্তিকা অগ্নিবৎ উত্তপ্ত হইতে লাগিল;সেই গ্রীস্মে

অনেক সেনা ও অশ্ব মারা পড়িল তথাপি সপ্তাহ পর্য্যন্ত অনেক চেষ্টা ও পরিশ্রম করিয়া দুর্গের নিকটস্থ হওয়াতে ঐ দুর্গ পৃথিবী ছাড়িয়া শূন্যে উঠিতে লাগিল, কয়খোছরো ও প্রধানেরা এই আশ্চর্য্য দেখিয়া নিরাশা হইয়া অনেক সেনা নষ্ট করিয়া এবং আপনারাও ক্লেশ পাইয়া ফিরিয়া আসিয়া কাউছ সাহকে সমস্ত বিবরণ কহিলেন। কাউছ কয়খোছরোকে ঐ বহমনের দুর্গ অধিকার করিতে অনুমতি করিয়া অনেক সেনা সঙ্গেদিয়া গোদরজকে সেনাপতি করিয়া পাঠাইলেন; কয়খোছরো কেবল ঈশ্বরের প্রতি ধ্যান ধারণ করিয়া রোদণ করিতে২ চলিলেন, কয়েক দিবস পরে দুর্গের নিকট পৌছিয়া কয়খোছরো ঈশ্বরের উদ্দেশে অনেকরাত্রি পর্য্যন্ত রোদণ করিয়া নিদ্রিত হইলে স্বপ্নে একবৃদ্ধ কয়খোছ-রোকে কহিল তুমি কোন চিন্তা করিবানা পরমেশ্বরের অমুক পবিত্রনাম লিখিয়া শূলাগ্রে বন্ধন করিয়া দুর্গপ্রতি নিক্ষেপ করিলে দুর্গ তৎক্ষণাৎ ভগ্ন হইবেক এই কহিয়া অদর্শন হইল কয়খোছরো নিদ্রাভঙ্গ হইয়া অতি হৃষ্টচিত্তে সেখান হইতে যাত্রা করিয়া দুর্গের সম্মুখে উপস্থিত হইয়া স্বপ্ন উপদেশ মত ঈশ্বরের সেই পবিত্র নাম লিখিয়া দুর্গেমারিলে ক্ষণেককাল বিলম্বে মেঘের ন্যায় ঘোর অন্ধকার হইয়া ও বজ্রাঘাতের ন্যায় শব্দ হইয়া তাহার কিয়দংশ ভগ্ন হইয়া ভূমিতে পতিত হইল, পুনরায় আর এক শূলাগ্রে সেই পবিত্রনাম লিখিয়াগেওকি কহিলেন এইশূল অন্যপার্শ্বে নিক্ষেপ কর; সে সেইমত করিল তাহাতে পূর্ব্বমত অন্ধকার ও শব্দ হইয়া আর এক অংশ ভাঙ্গিয়া পড়িল, পরে কয়খোছরো আপন সৈন্য দিগকে

আজ্ঞা করিলেন দুর্গমধ্যে যে সকল দৈত্য আছে তাহাদিগের উপরে তীর বরীসন করিতে, তখন অনেক সেনা দুর্গমধ্যে প্রবেশ করিয়া দৈত্যদিগের প্রতি তীর নিক্ষেপ করিতে আরম্ভ করিল? তাহা দৈত্যেরা সহ্য করিতে না পারিয়া পলা য়ন করিল ? তখন কয়খোছরো দুর্গমধ্যে প্রবেশ করিয়া সম স্ত ধন রত্নাদি ভাণ্ডার ভাঙ্গিয়া বাহির করিয়া সেনা দিগকে অনেক দিলেন আর ঐ দুর্গমধ্যে বৃহৎ এক মসজিদ নির্ম্মাণ করিয়া তাহাতে আপনার নাম ও যেরূপে দুর্গ অধিকৃত করি লেন তাহার সমস্ত বিবরণ লিখিয়া রাখিলেন; আর ঐ দুর্গের অধিন যে সকল দেশ ছিল তাহাও অধিকার করিয়া এক বৎ সর ঐস্থানে থাকিয়া সুশাসিত করিয়া কাউছের নিকটে আই লেন বাদসাহ অতিশয় সন্তুষ্ট হইয়া কয়খোছরোকে ক্রোড়ে লইয়া চুম্বন করিয়া আপন তক্তে দুইজনে একত্রিত হইয়া উপ বেশন করিলেন ।

---

### কয়খোছরোর তক্তে বসিবার বিবরণ।

কয়কাঊছ কয়খোছরোকে উপযুক্ত বুঝিয়া ফরেবোর্জ, তুছ, গোদরজ, গেও প্রভৃতি সকল প্রধান দিগকে সম্মত করি‑ য়া কয়খোছরোকে তক্তে বসাইয়া আপন হস্তে তাজ লইয়া কয়খোছরোর মস্তকে রাখিয়া আজ্ঞা করিলেন যে তোমরা যেরূপ আমার আজ্ঞাবহ থাকিতে ও মান্য করিতে সেইরূপ কয়খোছরোর নিকটে আজ্ঞাবহ থাকিয়া কার্য্য করিবা ও মান্যমান সেইরূপ করিবা সকলেই সম্মত হইয়া স্বীকার করি লেন; কয়খোছরো তক্তেবসিয়া দান ও শীলতা ও সৌজন্যতা

সুবিচারের দ্বারা তাবৎরাজ্যস্থ মনুষ্যকে বসিভূত করিলেন আর সর্ব্বদা ঈশ্বরের ভজনা ও আরাধনা অহরহ করিতেন, এবং তাবৎ লোককে ঈশ্বরারাধনা করিতে উপদেশ প্রদান করিতেন এবং প্রত্যহ একবার কয়কাউছের নিকট গিয়া প্রণাম করিয়া সকল কথা বার্ত্তা জ্ঞাত করিয়া তাহার অনুমত্যানুসারে কর্ম্ম করিতেন, আর যেখানে বন ও পতিত ভূমি আছে শুনিবা মাত্র সেইস্থানে লোক পাঠাইয়া অর্থব্যয় দ্বারা নগর ও গ্রাম ও সরাই প্রস্তুত করিত। জাল ও রোস্তম কয় খোছরোর আগমনের ও দিগ্জয় করিয়া ইরানের বাদসাহ হওনের সম্বাদ শুনিয়া অতি হৃষ্টচিত্ত হইয়া অনেক উপ ঢৌকন লইয়া কয়খোছরোর সহিত সাক্ষাৎ করিতে আইলেন কয়খোছরো তাহারদিগের আসিবার সম্বাদ পাইয়া প্রধান দিগকে অগ্রসর পাঠাইলেন। জাল ও রোস্তম বাদসাহর নিকট আসিয়া সাক্ষাত করিলে কয়খোছরো উঠিয়া তাহার দিগের সহিত আলিঙ্গন করিলেন, পরে জাল ও রোস্তমকে বসাইয়া কহিলেন আমি ছিয়াওসের বধের পরিবর্ত্তে আফরা ছিয়াবের প্রাণবধ করিব তোমরা আমার সহকারি হও, রোস্তম কহিল আমি ঈশ্বরের নিকট এই প্রার্থিত ছিলামযে আপনার সঙ্গে অবশ্য যাইব। পরে রোস্তম যে সকল উপঢৌকনীয় দ্রব্য আনিয়াছিল তাহা কয়খোছরোর সম্মুখে আনাইয়া রাখিল তদ্দর্শনে বাদসাহ সন্তুষ্ট হইলেন। পরে খাদ্য দ্রব্য আনাইয়া রোস্তম ও জাল ও আর২ প্রধান দিগকে লইয়া একত্রে আহারাদি করিলেন। পরদিবস জাল ও রোস্তমকে সঙ্গে লইয়া কয়কাউছের নিকট গেলেন, কাউছ রোস্তম

প্রভৃতিকে কয়খোছরোর সঙ্গে দেখিয়া তুষ্ট হইয়া কয়খোছরোকে কহিলেন আপনার পিতা ছিয়াওসের বধের পরিবর্ত্তে আফরাছিয়াবকে নষ্ট করিবা কি না? কয়খোছরো কহিল যেপর্য্যন্ত পিতৃশত্রু নিপাত নাকরিব সে পর্য্যন্ত আমার আহার নিদ্রা বিশ তুল্য জানিবেন ॥

## কয়খোছরো আফরাছিয়াবের যুদ্ধে গমনের বিবরণ

ইহা শুনিয়া কাউছ জাল ও রোস্তমের প্রতি নিরক্ষণ করাতে জাল কহিল আমি বৃদ্ধ হইয়াছি রোস্তম কহিল আমি সঙ্গে জাইতে প্রস্তুত আছি আমি একা আফরাছিয়াবকে দূর করিয়া আসিয়াছি এখন বাদসাহের সঙ্গে অবস্য জাইব, পরে গোদরজ তূছ প্রভৃতি প্রধান সেনাপতিদিগকে জিজ্ঞাসা করিলেন তাহারা কহিল আমারদিগের প্রাণপর্য্যন্ত সংখ্যা তখন ফরেবোর্জ ও তাহার বন্ধু বান্ধব একসত দশ বলবান্ ব্যক্তিকে প্রধান সেনাপতি করিলেন, তূছ ফরেবোর্জর সঙ্গে থাকিলেন; গোদরোজ তাহার পূত্র পৌত্র আটাত্তর জন প্রধানের সহিত দক্ষিণ পার্শ্বের সেনাপতি হইলেন। কেস্তহম আপন দলবল সহিত বামপার্শ্বের সেনাপতি হইলেন। পসঙ্গের বংসের তেত্রিশ জন আমির ও বেজন তাহার দলবল সহিত সর্ব্বদা কয়খোছরোর নিকট থাকিবেন, এই সকল প্রধান ও সেনা ও রোস্তমকে সঙ্গে করিয়া আফরাছিয়াবের সহিত যুদ্ধে যাত্রা করিলেন। ফরেবোরজ ও তুছকে কহিলেন যে ফরুদছিয়াওস আমার জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা কলাত খোররমের দুর্গমধ্যে আছে

তোমরা সেই পথে লাগিয়া অন্যপথে গমন কর, ফরেবোর্জ
অন্যপথে চলিল তুছ কিছুদুর গিয়া কহিল এই পথে বন এবং
খাদ্য দ্রব্য অপ্রাপ্ত এজন্য আমার ও সেনাগণের ক্লেস হইবে
আমি কলাত খোররমের পথে গমন করি ইহা কহিয়া সেই
দিগে গেল, যখন কলাত খোররমের দুর্গের নিকটে পৌছিল
তখন ফরুদ শুনিল তুছ যুদ্ধার্থে আসিতেছে, আপনারা সেনা
লইয়া মাঠে আইল তুছইহাশুনিয়া আপন জামতারেও কে ফরু
দের নিকটে কহিয়া পাঠাইল আমরা তোমারসঙ্গেযুদ্ধ করিতে
আসিনাই আপনি পথছাড়িয়াদেন আমরা এস্থানহইতে;গমন
করি ফরুদ তাহার কথায় বিশ্বাস নাকরিয়া অনুমান করিল
যে ইহারা চাতুরি করিয়া আমার দুর্গ লইবেক শেষে উভয়ে
যুদ্ধ হইবার ফরুদ রেওকে বিনাশ করিল, ইহা শুনিয়া তুছ
আপন পুত্রকে যুদ্ধে প্রেরণ করিল ফরুদ তাহাকেও নষ্টকরিল
তখন তুছ আপনি যুদ্ধে আইল ফরুদ অনেক সেনা দেখিয়া
দুর্গমধ্যে প্রবেস করিল, তখন তুছ দুর্গ বেষ্টন করিল তাহা
দেখিয়া ফরুদের জেসুয়া তমওয়ার নামক সেনাপতি কথক
গুলীন সেনা লইয়া যুদ্ধে আসিবা মাত্রই তাহার অনেক সৈন্য
হত হইলে পলায়ন করিয়া দুর্গমধ্যে প্রবেশ করিল, তুছ
তাহার পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া দুর্গ দ্বার পর্য্যন্ত গেল, ফরুদ
তাহা দেখিয়া দুর্গহইতে একতির নিক্ষেপ করে সেতির তুছকে
না লাগিয়া ঘোটককে লাগিয়া ঘোটক পতিত হইল তুছ পদ
ব্রজ হইল তাহাদেখিয়া গেও ফরুদকে আক্রমন করিলে ফরুদ
তাহার ঘোটককে একতির আঘাতকরিল গেও অশ্ব শুন্যহইল
তখন বেজন ফরুদের সঙ্গেযুদ্ধ করিতে চলিবায় গেও নিষে।

করিল বেজনকহিল উহাকে মারিব বলিয়া দুর্গমধ্যে প্রবেশ করিয়া, ফব্বদ তাহাকে ভৎসনা করিল, ফব্বদ অনবরতো তির ত্যাগ করিতে আরম্ভ করিলে বেজন অতি শীঘ্র গিয়া এক বরাহ তাহার কটি বন্ধে মারিল তখন ফব্বদ সেস্থান হইতে দুর্গোপরি উঠিয়া এমত তিরবৃষ্টী করিতে লাগিল যে বেজন আঘাতি হইয়া পলাইয়া আইল আর কহিল যে অদ্য সায়ংকালউপস্থিত কল্যআসিয়া তোমার দিগকে যমালয়ে পাঠাইব, পিরানওএছার কন্যা গোলচেহরা ফব্বদের মাতা সে কহিল তুমি আর যুদ্ধ করিওনা ক্ষেন্ত হও আমি গতো রাত্রে সপ্ন দেখিয়াছি দুর্গমধ্যে অগ্নি লাগিয়াছে আর সকল লোক মরিয়াছে, ফব্বদ কহিল জন্ম গ্রহণ করিলে অবস্য মৃত্যু হইবে তাহার অন্যথা কখন হইবেকনা আমি কি কাপুরুষের ন্যায় প্রাণ লইয়া পলাইব, আমার পিতাও যৌবনাবস্থায় মরিয়াছেন। পর দিবস তুছ অনেক সেনা সহকারে দুর্গদ্বার ভগ্ন করিয়া প্রবেস করিল, ফব্বদ তাহা শুনিয়া শূল হস্তে লইয়া বেজনের সম্মুখে আসিয়া তাহাকে আঘাত করিল রহাম নামক একজন বলবান ফব্বদকে এক তলওয়ার মারিয়া শমনসদনে গমন করাইল;ফব্বদেরমাতা ইহাশুনিয়াতৎক্ষণাৎ সেইস্থানে আসিয়া মৃতফব্বদকেক্রোড়ে লইয়া আপনার উদরে এক কাটার মারিয়া প্রাণ ত্যাগ করিবায় আর ২ প্রধানেরা তুছকে অনেক ভৎসনা করিল, কয়খোছরো এপথে আসিতে বারণ করিয়াছিল কেবল তাহার ভ্রাতা ফব্বদের নিমিত্তে তুমি তাহাকে মারিলে বাদসাহকে কি কহিবে তুছ পুত্র শোকে ও লজ্জার সোকে ওবাদসাহর ভয়ে নিরব থাকিয়া তথাহইতে গমনকরিয়া অন্যএকদুর্গেরনিকট পৌঁছিলে দুর্গস্থ মলাছাম

নামক একজন প্রধানসেনাপতি বাহির হইয়া যুদ্ধ করিয়া মারা পড়িল। তদনন্তর তুছ তথা হইতে কুচ করিয়া যখন আফরাছিয়াবের রাজধানির নিকটস্থ হইল আফরাছিয়াব তাহা শুনিয়া নজাদা নামক এক ব্যক্তি সেনাপতিকে ত্রিস সহস্র সেনা সঙ্গে দিয়া পাঠাইল, যখন দুইদল একত্র হইল নজাদা রণভূমে আসিয়া যোদ্ধাকে যুদ্ধে অহ্বান করিলে বেজন শীঘ্র গিয়া এক গদা প্রহার করিল তাহাতে সে অশ্ব হইতে ভূমে পতিত হইল তাহা দেখিয়া তাহার সেনাগণ তাহাকে লইয়া পলায়ন করিল পরে আফরাছিয়াব চল্লিষ সহস্র সেনা সঙ্গে দিয়া পিরানওএছাকে পাঠাইল পিরান ঐ রণস্থলে আসিয়া মনে মনে চিন্তা করিল যে ইরানিদিগের সঙ্গে আমরা সম্মুখ যুদ্ধেপারিবনা, যখন রাত্রিকালে উহারা নিদ্রিত হইবে আমরা আসিয়া তাহারদিগকে নষ্ট করিব। ইরানিরা ইহারদিগের পরামর্শ জানিতে নাপারিয়া নিশ্চিন্ত ছিল, কথক রাত্র গতো হইলে তরকীসেনা আসিয়া ইরানিদিগেরমধ্যে পড়িয়া অনেক সেনা কাটিল। ওখানে ফরুদের মৃত্যু সংবাদ কয়খোছরো পাইয়া ফরেবোর্জকে লিখিল যে তুছ আমার আজ্ঞা হেলন করিয়া কলাত খোর রমের পথে গিয়া আমার ভ্রাতাকে নষ্ট করিয়াছে, অতএব তুছকে আপনি কারাগারে রাখিবেন। ফরেবোর্জ এইপত্রপাইয়া তুছকে কারারুদ্ধ করিল, আর পিরানওএছাকে পত্র লিখিল যে রাত্রযোগে ডাকাইতের ন্যায় সৈন্য মধ্যে পড়িয়াছিলা সে যোদ্ধাব্যক্তির কর্ম্মনহে, সম্মুখে দাঁড়াইয়া যুদ্ধ করিতে পার তবে তোমার পুরুসত্ত। পিরান ওএছা এই পত্র পাইয়া তাহার উত্তর লিখিল যে একমাসপরে

তোমার সঙ্গে সম্মুখে যুদ্ধ করিব, গতো রাত্রে অন্যং পদাতি-কেরা যুদ্ধ করিয়াছিল আমি তাহা জ্ঞাত নহি; পরন্তু ঐ স্থানে উভয়ে থাকিল। একমাস গত হইলে উভয় সেনায় সম্মুখ যুদ্ধে প্রবর্ত্ত হইলে প্রথমত গেও রণস্থলেগিয়া অনেক তুরানিসেনা নষ্ট করিয়া আপন শিবিরে আইল তৎপরে বেজন রণস্থলে প্রবিষ্ট হইয়া বহু সেনা বিনাশ করিল, তদ্দৃষ্টে তুরানি সকল সৈন্য ঐক্য হইয়া ইরানের সৈন্যে পড়িয়া অনেক পদাতির প্রাণ নষ্ট করিল, ফরেবোর্জ ইহা দেখিয়া ভীত হইয়া পর্ব্বতো-পরি গেল তাহা দেখিয়া গোদরজ ও কেস্তহম উভয়ে ঐক্য হইয়া যুদ্ধ করিবার মনস্তকরিয়া বেজনকে কহিলেন যে ফরে-বোর্জের নিকট হইতে কাবিয়ানি নিশান আনায়ন কর? বেজন নিশান আনিতে গেলে ফরেবোর্জ বেজনকে কহিল তুরানিসৈন্য অত্যন্ত প্রবলহইয়াছে এখন আমিযুদ্ধে জাইবনা এবং নিশানও দিবনা, বেজন তাহা নাশুনিয়া নিশান লইয়া গোদরজের নিকটে আইলে গোদরজ ও কেস্তহম ঐ নিশান সঙ্গেলইয়া যুদ্ধ করিলেন, অনেক ক্ষণ পর্য্যন্ত দুইসৈন্যে যুদ্ধ করিয়া উভয়েরি অনেক সেনা বিনষ্ট হইল তন্মধ্যে ইরানের অধিক সেনা মরল। গোদরজ নিজ পরিবার পুত্র পৌত্রে আটাত্তর জনেরমধ্যে সত্তরজন মারাপড়িল; আর আফরাছি য়াবের ও পিরানওএছার আত্মীয় বন্ধু কুটুম্ব নয় শত পুরান আর তিনসত মল্ল মরে এতদ্ভিন্ন উভয় দলের কত সেনা মারা গেল তাহার সংখ্যা হইলনা; পিরানওএছা আফরাছিয়াবকে লিখিল যে অদ্য আমারদিগের জয়হইয়াছে। আফরাছিয়াব ইহাশুনিয়া তাবত সৈন্যকে পারিতোষিক দিয়া পিরানওএ-

হাকে পত্রের উত্তর লিখিল যে আপনি অদ্য যুদ্ধে জয়ি হই-
য়াছেন ইহাতে আনন্দিত হইবেন না সাবধান থাকিবেন
কারণ আমি সম্বাদ পাইয়াছি কয়খোছরো রোস্তমকে সঙ্গে
লইয়া যুদ্ধে আসিতেছে, পিরানওএছা এইপত্র পাইয়া তাহার
উত্তর লিখিল আপনি এবিষয়ে নিশ্চিন্ত থাকিবেন সে যুদ্ধে
অক্লেসে জয়ি হইব জানিবেন; ইরানি দিগের মন ভঙ্গবুঝিয়া
করেবোজ কয়খোছরোর নিকটেগেলেন, কয়খোছরো আপন
ভ্রাতা ফরুদ ছিয়াওসের মৃত্যু শুনিয়া অবধি সোকাকুলছিল
এবং যুদ্ধে পরাজয় হইয়াছে শুনিয়া অত্যন্ত ভাবিত হইয়া
দিবা রাত্র সোক সাগরে মগ্ন হইয়া রোদন করিতে লাগিলেন
তাহা দেখিয়া সেনাপতিরা রোস্তমকেকহিল তুমি বাদসাহকে
প্রবোধ বাক্য দ্বারা তাঁহার শান্তনা কর, আর তুছকে কয়েদ
হইতে মুক্ত কর, রোস্তম কয়খোছরোর নিকটে গিয়া অনেক
বুঝাইয়া তুছকে মুক্ত করিলেন। পরে কয়খোছরো রোস্তম কে
কহিলেন পিরানওএছার যুদ্ধে তোমাকে জাইতে হইবে; রো-
স্তম কহিল তুছ পিরানওএছার সঙ্গে যুদ্ধে জাউক আফরাছি-
য়াব আইলে আমি যুদ্ধে জাইব, পরে তুছকে অনেক সেনা
সঙ্গে দিয়া যুদ্ধে পাঠাইলেন তুছ তথায়গিয়া সপ্তাহ দিবারাত্রি
যুদ্ধ করিল অষ্টাহে হোমান আসিয়া অনেক সেনা বিনাশ
করিল তাহা দেখিয়া আর কেহ তাহার সঙ্গে যুদ্ধ করিতে
আইল না, তখন হোমান তুছকে যুদ্ধে অহ্বান করিবায় তুছ
যাইতে উদ্যত হইলে গোদরজ তাহাকে যাইতে নাদিয়া আপন
পুত্র গেওকে পাঠাইল, সেও তথায় গিয়া হোমানের সহিত
অনেক যুদ্ধ করিয়া উভয়ে ক্লান্ত হইয়া আপন২ সৈন্য মধ্যে

প্রবেশ করিল তখন উভয় পক্ষে সেনা সমুহে ঘোরতর যুদ্ধ করিয়া অনেক সেনা মারা পড়িল দিবা অবসান হওয়াতে যুদ্ধ স্থগিত করিয়া সকলে আপন ২ শিবিরে গেল। পিরান ওএছার নিকটে বাজদনামক একজন জাদুকর অর্থাৎ কুহানি ছিল তাহাকে কহিল যে তুমি এমত কোন কুহক প্রকাশ কর যদ্দারায় ইরানি সেনার উপর ঝড়বৃষ্টি বরফ ইত্যাদি উৎপাত হয়, ইরানিদিগ্যে এরূপ প্রকার বিপদে করিতে পারিলে আমরা অনায়াসে জয়ী হইতে পারিব। বাজদ ইহা শুনিয়া পর্ব্বতের উপর উর্থিত হইয়া অনেক প্রকার কুহক আরম্ভ করিল, ক্ষণকাল পরে ঝড়; বৃষ্টি, বরফ আরম্ভ হইয়া ইরানি সৈন্যের দিগে চলিল তাহাতে ইরানিসৈন্যেরা অত্যন্ত কাতর হইয়া অচলের ন্যায় হইল। পিরানওএছা ইরানিদিগকে অত্যন্ত কাবু দেখিয়া আপনি ও হোমান সেনা লইয়া উভয় পার্শে গিয়া অনেক সেনা নষ্ট করিল, তাহা দেখিয়া গোদরজ ও তুছ ঈশ্বরের নিকট অনেক রোদন পূর্ব্বক প্রার্থনা করিতে লাগিলেন কিছুকাল পরে একজন তপস্বির ন্যায় উপস্থিত হইয়া অঙ্গুলী দ্বারায় পর্ব্বত চিহ্ন করিয়া অদর্শন হইল, তাহা দেখিয়া গোদরজ রহাম নামক একজন সেনাপতিকে কহিল তুমি একবার পর্ব্বতোপরি উঠিয়া অনুসন্ধান কর রহাম তদ্বাক্যে শিখরে গিয়া দেখে একজন তথায় বসিয়া নানা প্রকার দ্রব্য লইয়া মন্ত্র করিতেছে। রহাম তাহাকে দেখিয়া বুঝিল যে এই ব্যক্তি জাদুকরিতেছে এতন্নিত্তে আমারদিগের প্রতি এতদ্রূপ উৎপাত হইতেছে। তখন রহাম তাহার হস্তদ্বয় বন্ধন করিয়া কহিল যদি ঝড় বৃষ্টি বরফ শীঘ্র

নিবারণ নাকর তবে এখনি তোমার প্রাণ বিনাশ করিব? সে ইরানি লোক দেখিয়া ভীত হইয়া কহিল যদি আমার প্রাণদান দেন তবে এখনি ঝড় বৃষ্টি নিবারণ করি। রহাম তাহা স্বীকার করিল, তখন ঐ কুহকী ব্যক্তি অন্য কোন প্রকরণ করিয়া ঝড় বৃষ্টী দূর করিল। পরে তাহাকে আনিয়া আপন সৈন্য মধ্যে রাখিল, পরদিন তুরানি সৈন্য আসিয়া যুদ্ধ আরম্ভ করিল। ইরানি সেনা ঝড়বৃষ্টির দ্বারা অতি কাতরাছিল তৎপ্রযুক্ত যুদ্ধে অক্ষম হইয়া পর্ব্বতের উপর এক ক্ষুদ্র দুর্গে ছিল সকলে সেই দুর্গে রহিল আর তাহার চতুর্দিগে রক্ষক রাখিল, পিরানওএছা তাহা দেখিয়া সসৈন্যে তন্নিকটে অবস্থিত করিল, তাহা শুনিয়া তুছ কয়খোছরোকে এই সমাচার লিখিল, আর পিরানওএছা আফরাছিয়াবকে লিখিল যে ইরানিরা পরাজয় হইয়া এক দুর্গমধ্যে রহিয়াছে, আপনি কিছু সেনা শীঘ্র পাঠাইলে সকলকে ধৃত করিয়া লইয়া যাই, ওখানে কয়খোছরো তুছের পত্র পাইবা মাত্র তৎক্ষণাৎ রোস্তমকে তুছের নিকটে প্রেরণ করিলেন; তুছ রোস্তমের আগমন সংবাদ শুনিয়া গোদরজকে অগ্রসর পাঠাইয়া দুর্গমধ্যে লইয়া সকল সমাচার কহিল। আফরাছিয়াব পিরানের পত্রপ্রাপ্তে কামুছ ও আস্কবুছ ও সঙ্গল এই তিনজন বলবান্ ও খাকানচিন চিনদেশীয় বাদসাহ তাহার সৈন্যসহিত পিরানওএছার নিকটে পাঠাইল পিরানওএছা রোস্তমের আগমনের সংবাদ শুনিয়া কামুছের নিকট গিয়া রোস্তমের অনেক প্রশংসা করিবায় সে কহিল তাহার গুণানুবাদ শ্রবণে কি ফল যুদ্ধ হইলেই জানাজাইবেক পরে খাকান চিনের সহিত পরামর্শ করিয়া সে দিবস যুদ্ধ

স্থগিত রাখিয়া পরদিবস প্রাতে পিরানওএছা আপন সৈন্য এবং খাকান চিনের সৈন্য ও কামূছের সৈন্য এই তিন একত্র করিয়া রণস্থলে উপস্থিত হইল। এখানে স্বসৈন্যে রণস্থলে রোস্তম আসিয়া তূরানীর অনেক সৈন্য দেখিয়া ঈশ্বরকে স্মরণ মনন করিয়া দণ্ডায়মান হইল, তখন তুরানের সৈন্য হইতে আস্কবুছ নামক একজন প্রধান যোদ্ধা আসিয়া প্রতি যোদ্ধাকে আহ্বান করিল, ইরানীয় সৈন্য হইতে রহাম অগ্রসর হইয়া তাহার সহিত প্রথমতঃ বাণ যুদ্ধ করিল পরে রহাম আস্কবুছকে এক গদা প্রহার করিল তাহাতে কিছুই হইলনা। তৎপরে আস্কবূছ রহামকে এক গদা প্রহার করিল রহাম ঢাল দ্বারা নিবারণ করে কিন্তু ঐ ঢাল ভাঙ্গিয়া খণ্ড ২ হইয়া তাহার মস্তকে লাগিল, রহাম তাহা সহ্য করিতে নাপারিয়া পলায়ন করিল তাহা দেখিয়া আস্কবুছ আপন সৈন্য মধ্যে চলিল এমত সময়ে রোস্তম চিৎকার করিয়া কহিল এখনি কোথা যাও আস্কবুছ ঐচিৎকারে ভীতহইয়া পুনরাগমন করত রোস্তমের প্রতি তির নিক্ষেপ করিতে আরম্ভ করিল; রোস্তম বক্ষ লক্ষ করিয়া আস্কবুছের বক্ষস্থলে এমত এক তীর মারিল সেই তীর আস্কবুছের পৃষ্টদেশ ভেদ করিয়া বাহির হইল তাহাতে কাতর হইয়া ভূমে পড়িয়া প্রাণ ত্যাগ করিল। রোস্তম আস্কবুছকে একতীরে বধ করিল এজন্য আকাশ মার্গে জয়ধ্বনি হইল এবং চতুর্দিগে ধন্য ২ সব্দ হইতে লাগিল। রোস্তম অচল স্বরূপ দাঁড়াইয়া তুরানিদিগকে পুনঃ২ যুদ্ধার্থে আহ্বান করিতেছে কিন্তু রোস্তমের নিকটে আসিতে

কাহারও সাধ্য হইলনা। রণস্থল হইতে আস্কবুছকে লইয়া খাকান চিন তাহার বক্ষ হইতে তীর বাহির করিতে কহিলেন পরে তীরবাহির করিলে তাহা দেখিয়া আশ্চার্য্য বোধ করত পিরানওএছাকে কহিল রোস্তমের যুদ্ধের প্রশংসা যে করিয়াছে সে যথার্থ এপ্রকার তীর নিক্ষেপ করিতে কোন যোদ্ধাকে কখন দেখিনাই, রোস্তমেরভয় তাহারদিগের মনে প্রবেশ করিল সে দিবস যুদ্ধ স্থকিত করিয়া পর দিবস প্রাতে খাকান চিন আপন সেনাপতিদিগকে কহিলেন যে আস্কবুছের বধের পরিবর্ত্তে রোস্তমকে কে বধ করিবে? কামুছ কহিল আমি তাহাকে বধ করিব; ইহা কহিয়া অশ্বারোহণ পূর্ব্বক রণস্থলে আসিয়া রোস্তমকে ডাকিল তখনরোস্তমের কাবলি একশিষ্য আলওযায় নামক সে কহিল আমি কামুছের সহিত যুদ্ধ করিতে যাইব ইহা শুনিয়া রোস্তম অনমতি করিলেন তখন আলওযায় কামুছের নিকটে আসিবা মাত্র কামুছ তাহাকে শূলাঘাতে অশ্ব হইতে ভূমে ফেলিয়া তাহার মস্তক চ্ছেদন করিল। রোস্তম তাহা দেখিয়া ক্রোধান্বিত হওত কামুছের সর্ম্মুখে উপস্থিত হইয়া মেঘের ন্যায় গর্জ্জন করিল, কামুছ কহিল আমি আস্কবুছ নহি যে তোমার গর্জ্জনে ভীত হইব তোমার এরূপ চিৎকারের আবিশ্যক কি? রোস্তম কহিল ব্যাঘ্র শীকার করিবার সময়ে চিৎকার করিয়া থাকে, ইহা শুনিয়া কামুছ অতি শীঘ্র পাশাস্ত্র বাহির করিয়া রোস্তমের প্রতি নিক্ষেপ করিবায় রোস্তম আপনাকে রক্ষা করিল। কিন্তু তাহার ঘোটকের মাথায় বদ্ধ হইল; পরে রোস্তম সেই কমন্দ ধরিয়াআকর্ষণ করিতেলাগিল আর একদিগে কামুছ টানিতে

লাগিল দুইজনের আকর্ষণে ঐকমন্দছিন্ন হইয়া গেল, কামুছ সেই বেগ সম্বরণ করিতে না পারিয়া অশ্ব হইতে ভূমে পতিত হইল তৎক্ষণাৎ গাত্রোত্থান করিয়া অশ্বারোহণ যেমত করিবে সেইসময়ে রোস্তম তাহার গলদেশে পাশাস্ত্র নিক্ষেপ করিয়া তাহাকে বন্ধকরত আপন সৈন্য মধ্যে আনিয়া মস্তক ছেদন করিল। পিরানওএছা তাহা দেখিয়া খাকান চিনকে কহিল আমার সৈন্য গণ ভীত হইয়াছে রোস্তমের সঙ্গেযুদ্ধ করিতে কেহ সম্মত নহে; খাকানকহিল আপনি ভীত হইবানা কল্য আমি তাহার সঙ্গে যুদ্ধ করিব। পরদিবস খাকানের একজন প্রধান সেনাপতি চঙ্গস সে রণস্থলে উপস্থিত হইলে রোস্তম তাহাকে দেখিয়া হাস্য করিল, তাহা দেখিয়া সে রোস্তমের প্রতি এক তীর নিক্ষেপ করে রোস্তম ঢাল দ্বারা নিবারণ করিল কিন্তু ঐঢাল ভেদকরিয়া রোস্তমের সাজোয়া বিন্ধিবায় রোস্তম তলওয়ার হস্তে লইয়া তাহাকে বধার্থে ধাবমান হইলতাহা দেখিয়া চঙ্গস পলায়ন করিবার সময়ে রোস্তমঅতি বেগে ধাবমান হইয়া তাহার ঘোটকের পুচ্ছ ধরিয়া আকর্ষণ করিল তাহাতে চঙ্গস ঘোটক হইতে ভূমে পড়িল; রোস্তম তৎক্ষণাত তাহার মস্তক ছেদন করিয়া পুনর্ব্বার তুরানিদিগকে যুদ্ধে আহ্বান করিতে লাগিল কিন্তরোস্তমের সম্মুখে আসিতে কাহারও সাধ্য হইল না, কিয়ৎ কাল পরে হোমান রোস্তমের নিকটে আসিয়া কহিল তুমি তুরানের অনেক সরদারদিগকে বধ করিলে আর ক্লেশ দিতেছ তোমার পুত্র ছোহরাব মৃত্যু কালে তুরানিদিগের সঙ্গে যুদ্ধ করিতে নিসেধ করিয়াছিল তুমি তাহা বিস্মৃতি হইলে? রোস্তম কহিল সে কথা সত্য;

কিন্তু তোমরা ছিয়াওসকে অতি অন্যায় করিয়া নষ্ট করিয়াছ আমি ছিয়াওসকে ছোহরাব অপেক্ষা স্নেহ করিতাম তোমরা যদি এ কুকর্ম্ম নাকরিতে তবে আমি আর তোমারদিগের সহিত যুদ্ধ করিতাম না। পিরানের সহিত সাক্ষাৎ হইলে সকল কথাই কহিতাম তোমার যদি আমার সঙ্গে যুদ্ধ করিতে বাঞ্ছা থাকে তবে যুদ্ধ কর নতুবা স্বস্থানে প্রস্থান কর। হোমান তথা হইতে গিয়াপিরানকে সমুদয় বৃত্তান্ত আনপূর্ব্বক কহিয়া কহিল তুমি রোস্তমেরনিকটে গমনকর; পিরানওএছা ইহাশুনিয়া আসিবার মনস্থ করিয়া খাকান চিনের নিকটে গিয়া সমস্ত বিবরণ জ্ঞাত করিলে সে কহিল তোমার যাওয়া অনোচিত ইহা কহিয়া হোমানকে তিরস্কার করিল যে তুমি ভীত হইয়া রোস্তমের শরণাগত হইতে গিয়াছিলা? হোমান রাগত হইয়া কহিল এই তুরানি কিম্বা ইরানি সৈন্যের মধ্যে এমত বলবান্ কেহ নাই যে রোস্তমের সহিত সর্ম্মুখ যুদ্ধকরে অতএব সন্ধি করাই কর্ত্তব্য জানিবেন।

॥ পয়ার ॥

সিংহের স্বরূপ এই রোস্তম জাবলি। ইহার নিকটে তুমি আমি হে ছাগলি ॥ দৈত্যআদি তাহার নিকটে নাহি যায়। সিংহ হস্তি কুম্ভিরাদি দেখিয়া পলায় ॥ আফরাছিয়াব হেন যোদ্ধা সেহ করে ভয়। রোস্তমের ভয়ে ব্যাঘ্র ছাগল চরায় ॥ সন্ধি যদি করে তবে প্রাণ লৈয়া যাবে। নতুবা মাঠেতে দেহ শৃগালেতে খাবে ॥

খাকানচিন ইহাশুনিয়া রাগতহইয়া পিরানকে কহিল ইহাকে আমার সর্ম্মখ হইতে দূর কর এ কাপুরুষ ইহার মখ দেখা

উচিত নহে? পিরান খাকান্‌কে অনেক প্রকার প্রবোধ বাক্যে শান্তনা করিয়া কহিল একবার রোস্তমের সহিত সাক্ষাৎকরা কর্ত্তব্য ইহাকহিয়া রোস্তমের নিকটে গিয়া অনেক প্রশংসা ও শিষ্টাচারি করিয়া কহিল যে আফরাছিয়াব কয়-খোছরোকে নষ্ট করিতে উদ্যত ছিল আমি তাহাকে অনেক হিতোউপদেশ দ্বারা ক্ষান্ত করিয়া আপন বাটিতে কয়খোছ রোকে রাখিয়াছিলাম, রোস্তম কহিল সে বাক্য সত্য বটে কিন্তু আফরাছিয়াব অতি অন্যায় করিয়া ছিয়াওসকে নষ্ট করিয়া পুনরায় ত্তরানে উৎপাৎ ঘটাইয়াছে। পিরান কহিল যদি তুমি গত্তো বিবাদ স্মরণনাকরিয়া পুনর্ব্বার সন্ধিকর তবে চিরকাল তোমার বাধ্য থাকিব এই ধর্ম্মতঃ সত্য করিতেছি রোস্তম কহিল তুমি ও আফরাছিয়াব বিশেষরূপে জ্ঞাত আছ যে আমি সন্ধি করিতে কখন সম্মত নহি তবে তোমার অনু রোধে সন্ধি করি যদি আমার বাক্য রাখ। পিরান কহিল সে কথা কি! তাহা শুনিলে বিবচনা করিব? রোস্তম কহিল করছেওজ শত্রুতাকরিয়া ছিয়াওসকে নষ্টকরে আর গরদোষ ছিয়াওসের মস্তক ছেদন করে সেই দুইজনকে প্রদান কর তাহারদিগের মস্তক আমি স্বহস্তে কাটিব আর গোদরজের পুত্র পৌত্রাদিকে যাহারা নষ্ট করিয়াছে তাহারদিগকে দেও কয়খোছরোর নিকটে লইয়া যাই ইহা হইলে যুদ্ধেক্ষেন্ত হইতে পারি; একথা কেবল তোমার অনুরোধে কহিলাম। পিরান তথা হইতে আসিয়া খাকানচিনকে সমস্ত বৃত্তান্ত কহিল সে সকল সরদারদিগকে ডাকাইয়া ইহার কর্ত্তর্ব্বাকর্ত্তব্য জিজ্ঞাসা করিল? সকলে শুনিয়া নিরব রহিবায় সঙ্গল নামক

খাকান চিনের একজনপ্রধান সেনাপতি সে কহিল আমিসন্ধি করিতে সম্মত নহি, রোস্তম আমারদিগের দুইজন প্রধান বল বান্‌কে মারিয়াছে তাহাতে কিছু ক্ষতি নাই তাহারদিগের অপেক্ষা অধিক বলবান্ আমারদিগের বহুসংখ্যক সেনা আছে ইহার এক জনেওকি রোস্তমকে পরাজয় করিতে পারিবেকনা খাকান ইহা শুনিয়া তুষ্ট হইল কিন্তু পিরানওএছা ভাবিত হইয়া নিরব রহিল। পর দিবস সঙ্গল রণক্ষেত্রে আসিয়া রোস্তমকে যুদ্ধে আহ্বান করাতে রোস্তম আসিয়া তৎক্ষণাৎ একশূলাঘাতে তাহাকে ঘোটক হইতে ভূমে ফেলাইয়া দিলে সে অতি শীঘ্র গাত্রোর্থান করিয়া আপন সৈন্য মধ্যে পালাইয়া গেল, তাহা দেখিয়া রোস্তম তাহার পশ্চাৎ ধাবমান হইল খাকানচিনের সেনাগণেরা পথ রুদ্ধ করিল, সঙ্গল খাকানের নিকটে গিয়া কহিল যে রোস্তমের সহিত যুদ্ধ করা মনুষ্যের সাধ্যকি দৈত্য ও সিংহ হস্তি প্রভৃতির সাধ্য নাই, আর যদি কেহ জায় সে আর ফেরেনা। খাকান কহিল তুমি কল্য কহিয়াছিলা রোস্তমকে পরাজয় করিব। অদ্য এরূপ কহিতেছ, সঙ্গল কহিল আমি একা তাহার নিকটে যাইতে পারিবনা, খাকান পাঁচসহস্র সেনা তাহারসঙ্গেদিয়া পুনর্ব্বার যুদ্ধ করিতে পাঠাইল, তাহা দেখিয়া ইরানের অনেক সেনা রোস্তমের নিকটে আইল উভয় সৈন্যে ঘোরতর যুদ্ধ হইল তৎপরে ছাওয়া নামক কামুছের আত্মীয় এক সরদার রোস্তমের সঙ্গে যুদ্ধ করিতে আইলে রোস্তম তাহাকে আসিবা মাত্র এক গদাঘাতে যমালয়ে পাঠাইল। পরে কাহারকসানি নামক আর একজন বলবান যোদ্ধা আইল তাহাকেও তৎক্ষ

ণাৎ নিপাত করিয়া রণমত্ত হইয়া আপন সৈন্য গণকে কহিল তোমরা আমর পৃষ্ঠ দেশ রক্ষার নিমিত্তে আমার পশ্চাৎআইসহ আমি খাকান চিনকে ধরি ইহা কহিয়া তুরানের সেনার মধ্যে প্রবেশ করিয়া অনেক সেনা সংহার করিল, তাহা দেখিয়া খাকান রোস্তমকে কহিয়া পাঠাইল যে আপনি কি নিমিত্তে এত লোক নষ্ট করিতেছ আমার সঙ্গে সন্ধিকর। রোস্তম কহিল খাকান যদি আপন তাজও তক্ত দেয় তবে তাহার প্রাণ দান দিব নতুবা এইক্ষণে তাহাকে রণভূমে শয়ন করাইব, খাকান ইহা শুনিয়া রাগান্বিত হইয়া উত্তম এক শ্বেক হস্তিতে আরুঢ় হইয়া যুদ্ধে আইল এবংআপনার সেনা সমূহকে কহিল রোস্তমের প্রতি তীর বর্ষণ কর, রোস্তম সেই সকল তীরের আঘাত সহ্য করিয়া অতি শীঘ্র খাকানের নিকটে গিয়া পাশাস্ত্র নিক্ষেপকরিয়া খাকানকে বান্ধিয়া হস্তি হইতে ভূমে ফেলিল। রোস্তমের সঙ্গেযাহারা ছিল তাহারা খাকানের দুই হস্ত বন্ধন করিয়া টানিয়া তুছের নিকটে আনিল, খাকান চিনের লস্কর ও তুরানের সৈন্য তাহাদেখিয়া পলায়ন করিল বেলা অবসান হইয়াছিল এজন্য সকলে আপন২ শিবিরে প্রবেশ করিল যখন রাত্রী ঘোরঅন্ধকার হইলতখন তুরানের সৈন্যরা শিবির ত্যাগ করিয়া পলায়ন করিল। পর দিবস প্রাতে ইরানিরা দেখিল যেতুরানিরা পালাইয়াগিয়াছে তাহারদিগের শিবির অন্বেষণ করিয়া অনেক ধন সম্পত্তি প্রাপ্তহইয়া কয়খোছরোর নিকটে পাঠাইল; কয়খোছরো তাহা দেখিয়া সন্তুষ্ট হইয়া ধন সকল সরদার ও সেফাহিদিগকে অংস করিয়া দিলেন। রোস্তম আফরাছিয়াবের সঙ্গে

যুদ্ধ করিতে তুরানে যাত্রা করিল। পিরানওএছা আফরাছি-য়াবকে যদ্ধের সমস্ত বৃত্তান্ত জানাইলে সে অতি ভাবিত ও তাপিত হইয়া সকল সরদারদিগকে ডাকাইয়া কহিল এখন কি কত্তব্য? তাহারা কহিল আমারদিগকে নাকহিয়া আপনি চিনের বাদসাহকে সহায় করিয়াছিলেন কিন্তুতাহারা অনেক মারা পড়িয়াছে বাকি যাহাছিল তাহারাও পালাইয়াছে, ইহা তেই, আমরা সকলে পালাইয়া আসিয়াছি? পুনর্ব্বার আমা দিগকে পাঠাও আমরা রোস্তমকে মারিব? বাদসাহ কহিল রোস্তমকে মারা সামান্য কথা নহে সে অতি কঠিন। আফরা-ছিয়াবের এক মিত্র পুলাদওন্দ নামক ছিল আফরাছিয়াব এই যুদ্ধের সহায় জন্য তাহাকে লিখিয়াছিলেন সে আসিয়া তাবৎ বৃতান্ত জ্ঞাত হইয়া কহিল আমি রোস্তমকে বধ করিব ইহা কহিয়া তৎক্ষণাৎ রণস্থলে গিয়া যোদ্ধাগণকে যুদ্ধার্থে আহ্বান করিল তখন গেও যুদ্ধ করিতে গেল পুলাদওন্দ অতি শীঘ্র কমন্দফেলিয়া গেওকেবান্ধিয়া আকর্ষণ করিতে লাগিল তাহা দেখিয়া রহাম ও বেজন গেওকে বন্ধন মুক্ত করিতে গিয়া দুইজনে পুলাদওন্দের উপর দুই কমন্দনিক্ষেপ করিল তাহাতে তাহার এক হস্ত এবং গলদেশ বদ্ধ হইল ইহারা দুই জনে আকর্ষণ করিতে লাগিল তখন সেই যোদ্ধা বলপ্রকাশ করিয়া ইহারদিগের দুই কমন্দছিঁড়িয়া গদাপ্রহারে দুইজনকে গুরুতর রূপে আঘাত করিল; তাহা দেখিয়া গোদরজ রোস্তম কে জানাইল, রোস্তম আসিয়া তাহার প্রতি কমন্দ নিক্ষেপ করিল কিন্তু তাহার উপর পড়িলনা সে শীঘ্র আসিয়া রোস্তম কে এক গদাপ্রহার করিল তাহাতে রোস্তমের কস্তকে লাগিল

এবং রক্তপাত হইল রোস্তম তাহাতে কিছু অবসন্ন হইল। পুলাদওন্দ পুনর্ব্বার এক তলওয়ার আঘাত করে তাহা রোস্তমের সাঁজওয়ার প্রবিষ্ট হইল না, তাহা দেখিয়া পুলাদওন্দ ভাবিত হইয়া মনেমধ্যে বিবেচনা করিল যে আমি গদাঘাতে পর্ব্বত চূর্ন করিয়াছি এবং তলওয়ারে পাষাণাদি খণ্ড২ করিয়াছি কিন্তু রোস্তমের কিছুই হইলনা, এখন মল্লযুদ্ধ করিয়া দেখি ইহাই ধার্য্য করিয়া রোস্তমকে কহিল তোমাতে আমাতে মল্ল যুদ্ধ করি? রোস্তম কহিল তোমায় আমায় বাহু যুদ্ধ করিব অন্য কেহ কাহার সাহয্য করিতে পারিবেক না আর উভয়ের সেনা অর্দ্ধ ক্রোস অন্তরে থাকিবে, আফরাছিয়াব এই সত্য করে তবে যুদ্ধ করিব। পুলাদওন্দ শুনিয়া আফরাছিয়াবকে ডাকাইল এই অবকাশে রোস্তম আপনার শরীর সুস্থ করিল। পরে আফরাছিয়াব আসিয়া পূর্ব্বো নিয়ম ধার্য্য করিয়া দুইজনে বাহু স্ফোটন পূর্ব্বক মল্ল যুদ্ধে প্রবর্ত্ত হইল; কিঞ্চিদ্বিলম্বে রোস্তম পুলাদওন্দের কটি বন্দধরিয়া শুন্যে তুলিয়া ভূমে নিক্ষেপ করিবায় পুলাদওন্দ ক্ষণেক কাল মৃত্যু কায়ার ন্যায় নিশ্বাসরুদ্ধ করিয়া রহিল, রোস্তম বোধ করিল মরিয়াছে আপন অশ্ব আনিতে গমন করিল; পুলাদওন্দ দেখিল যে রোস্তম কিছু দূরে গিয়াছে, তখন অতিশীঘ্র উঠিয়া আফরাছিয়াবের নিকটে গিয়া কহিল রোস্তমের সহিত যুদ্ধ করা শ্রেয় নহে আমি চাতুর্য্য করিয়া প্রাণ লইয়া আসিয়াছি। রোস্তম দূর হইতে তাহা দেখিয়া পুনরায় তাহাকে ধরিতে চলিল, অনেক তুরানি সেনা রোস্তমের সম্মুখে আসিয়া পথ

রুদ্ধ করিল তাহা দেখিয়া রোস্তম দাঁড়াইল পুলাদওন্দ ভয়ে ভীত হইয়া আফরাছিয়াবকে না কহিয়া স্বদেশে প্রস্থান করিল ইহা শুনিয়া পিরানওএছা আফরাছিয়াবকে কহে পুলাদ ওন্দর পলায়ন করাতে আমার সকল সেনা ভীত হইয়াছে এইক্ষণে আপনকার এস্থানে অবস্থান করা কর্ত্তব্য নহে, ইহা শুনিয়া আফরাছিয়াব সেস্থান হইতে প্রস্থান করিল। রোস্তম আপন সেনা লইয়া কথক দূর তাহারদিগের পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া ফিরিয়া আসিয়া তুরানিরা যে সকল দ্রব্য ত্যাগ করিয়া গিয়াছিল তাহা আপন সৈন্যকে বণ্টন করিয়া দিয়া গেও রহাম ও বেজন এই তিনজন আঘাত প্রাপ্ত হইয়াছিল এত ন্নিমিত্তে তাহারদিগেকে তুরানে শুশ্রূসার জন্য রাখিয়া আপনি কয়খোছরোর নিকটে গেল। কিছু দিন পরে ঐ তিনজন আরোগ্য হইয়া সেনা সকলকে সঙ্গে লইয়া ইরানে আইল কয়খোছরো তাহার দিগকে দেখিয়া অতিসয় হৃষ্ট হইয়া নগরস্থ সমস্ত লোককে নৃত্য গীত ও আনন্দ করিতে আজ্ঞা করিলেন ॥

---

### আকওয়ান দৈত্যের সঙ্গে রোস্তমের যুদ্ধ

এক দিবস কয়খোছরো রোস্তম প্রভৃতি সরদার ও পণ্ডিত দিগকে লইয়া নানা প্রকার কথোপ কথন করিতেছেন, এমত সময়ে অশ্বাধ্যক্ষ আসিয়া কহিল যে একটা গোরখর (হরিন বিশেষ) আসিয়া কয়েকটা অশ্ব নষ্ট করিয়াছে ? বাদশাহ শুনিয়া আশ্চর্য্য বোধ করিয়া কহিলেন যে গোরখর অশ্বাপেক্ষা বলবান্ নহে কি প্রকার মারিবেক প্রাচিন ও বিজ্ঞ

সকলে কহিল যে সেই স্থানে এক পুষ্করিণী আছে তাহার নিকটস্থ একবন আছে সেই বনে আকওয়ান নামক একদৈত্য থাকে সে মায়াবী নানাপ্রকার রূপ ধারণ করিয়া ভ্রমণ করে সেই ঘোটক মারিয়াছে, ইহা শুনিয়া কয়খোছরো রোস্তমকে কহিলেন তোমাকে এই ক্লেশ লইতে হইবেক দৈত্যর সঙ্গে যুদ্ধ করা কিম্বা দৈত্যকে নষ্ট করা অন্যের সাধ্য নহে। রোস্তম ঐ আশ্বাধ্যক্ষের সমভিব্যাহারে সেস্থানে উপস্থিত হইয়ারাত্রি কালে গোরখরকে দেখিয়া তাহার উপর কমন্দ নিক্ষেপ করিলে গোরখর তৎক্ষণাৎ অদর্শণ হইল ক্ষণেক কাল পরে কিছুদুরে দেখাদিল, রোস্তম তলওয়ার লইয়া তাহার নিকটে গেলে সেই দৈত্য পুনরায় অদর্শন হইল, এইপ্রকার তিন দিবা ও রাত্র তাহার পশ্চাত ২ আহার নিদ্রা পরিত্যাগ করিয়া অতিশয় ক্লান্ত হইয়া চতুর্থ দিবস যৎকিঞ্চিৎ আহার করিয়া ঘোটককে সেইস্থানে চরিতে দিয়া আপনি নিদ্রা গেল; সেই সময়ে আকওয়ান দৈত্য আসিয়া রোস্তমকে লইয়া শূন্যে উঠাল তখন রোস্তমের নিদ্রা ভঙ্গ হইয়া দেখিল যে শূন্যে আনিয়াছে, আকওয়ান কহিল তুমি কি প্রকারে মরিবে তাহা বল তোমাকে পর্ব্বতে কি বনে কি জলে কোথায় নিক্ষেপ করিব? রোস্তম জানিত দৈত্য দিগকে যাহা কহা যায় তাহার বিপরিত করে, এই নিমিত্তে কহিল আমাকে পর্ব্বতে নিক্ষেপ কর, সে একবৃহদ নদীতে ফেলিল তখন জলচর কুম্ভীর প্রভৃতি রোস্তমকে গ্রাস করিতে আইল রোস্তম ঈশ্বর স্মরণ পূর্ব্বক তলওয়ার বাহির করিয়া অনেক জল জন্তু বিনাশ করিয়া সন্তরণ দ্বারা তটে আসিয়া বস্ত্রাদি শুষ্ক করিয়া অশ্ব অন্যাসন করিতে

গিয়া অশ্ব প্রাপ্তানন্তর আরোহণ করিয়া মনে করিল এখানে বাদসাহের অশ্বালয় রাখা উচিত নহে, এই বিবেচনা করিয়া ঐ নদীর তীরে যে সকল ঘোটক ছিল তাহার রক্ষকদিগকে সমস্ত ঘোড়া লইয়া সঙ্গে আসিতে কহিল, তাহারা কহিল এ আফরাছিয়াব বাদসাহের অশ্বালয়। কয়খোছরোর অশ্বশালা অগ্রে আছে তাহা শুনিয়া তাহারদিগের প্রহারাদি করিলে তাহারা অনেক লোক ছিল রোস্তমকে মারিতে উদ্যত হইল তখন রোস্তম কহিল আমি রোস্তম এ সকল ঘোটক আমার সঙ্গেলইয়া চল নতুবা সকলকে প্রাণে নষ্ট করিব। তাহারা ইহা নাশুনিয়া যুদ্ধে প্রবর্ত্ত হইল, রোস্তম তাহারদিগের অনেককে নষ্ট করিলে কেহ২ আফরাছিয়াবের নিকটে সংবাদ দিল যে রোস্তম আসিয়া অমুক স্থানের অশ্বশালা হইতে অশ্ব সকল লইয়া গেল, আফরাছিয়াব তাহা শুনিয়া রণোন্মত্ত হস্তি ও চল্লিশ জন বলবান্ মল্ল ও কঞ্চুক গুলিন সেনা লইয়া আফরাছিয়াব শীঘ্র আসিয়া রোস্তমকে বেষ্টন করিবায় রোস্তম তীর ও তলওয়ার এবং গদা দ্বারায় অনেককে নষ্ট করিল তাহা দেখিয়া আফরাছিয়াব পালায়ন করিল তখন রোস্তম সেই সকল অশ্ব ও যে চারিটা হস্তি আফরাছিয়াবের সঙ্গেআসিয়াছিল তাহা লইয়া ইরানের সীমা রক্ষকের নিকটে আকওয়ান দৈত্য যে স্থানে থাকিত সেইস্থানে গিয়া দৈত্য কে ডাকিয়া কহিল আমারসঙ্গেযুদ্ধ করিতে নাপারিয়া আমাকে নিদ্রাবস্থায় পাইয়া শূন্যেলইয়া গিয়া জলে নিক্ষেপ করিয়াছিলা এ বীরের কর্ম্ম নহে ঈশ্বর আমাকে রক্ষা করিয়া তোমাকে মারিতে পাঠাইলেন, দৈত্য রোস্তমকে একবার

শূন্যে লইয়া গিয়াছিল সেই সাহসে রোস্তমের সম্মুখে আসিয়া কহিল তুমি মরিবার বাঞ্ছা করিয়া আমার নিকট আরবার আসিয়াছ এখনি নষ্ট করিব ইহা কহিয়া যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হইল। রোস্তম শীঘ্র কমন্দ ফেলিয়া তাহার দুই হস্ত বান্ধিয়া গদাঘাতে অস্থি চুর্ণ করিয়া তলওয়ার দ্বারা তাহার মস্তক ছেদন করিয়া কয়খোছরোর নিকট লইয়া গেল। বাদশাহ তাহার আসিবার সম্বাদ পাইয়া আপনি অগ্রসর হইয়া রোস্তমকে আলিঙ্গন করিয়া অনেক প্রশংসা করিল। দৈত্যের মস্তক দেখিয়া সকলেই বিষ্ময়াপন্ন হইল, পরে বাদসাহ রোস্তমকে কয়েক দিন বাটীতে রাখিয়া নৃত্যগীত দ্বারা সন্তোষ করিয়া নানা বিধ অলঙ্কার ওবস্ত্রাদি ও হয় হস্তি প্রদান করিয়া জাবলস্থানে বিদায় করিয়া আর আপনি মৃগয়াছলে দুইদিবস রোস্তমের সঙ্গে গমন করিলেন ॥

বেজন আফরাছিয়াবের কন্যার প্রেমে বদ্ধ হইল

এক দিবস কয়খোছরো পণ্ডিত ও বলবান্ ও প্রধান ২ মনুস্য লইয়া সভায় নানা প্রসঙ্গ করিতেছেন, এমত সময়ে অতিসয় কোলাহলধ্বনি হইল ইহা শুনিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন যে কি জন্য এত জনরব হইতেছে? তাহার অনুসন্ধান কর, কেহ আসিয়া কহিল কথকগুলীন প্রজা নালিস করিতে আসিয়াছে ইহা শুনিয়া তাহারদিগকে ডাকিতে কহিলেন; তাহারা আসিয়া বাদসাহকে ছেলাম ও প্রশংসা করিয়া নিবেদন করিল যে আমারদিগের গ্রামের নিকট এক বৃহদ্বন আছে সেই বন হইতে অতি বিহদাকার শূকরসকল আসিয়া আমারদিগের

ঘরদ্বার ক্ষেত্র উচ্ছিন্ন করিল এবং অনেক মনুষ্য হত করিয়াছে তাহারদিগের ভয়ে আমরা ভীত হইয়া আপনকার নিকটে জানাইতেছি আমাদিগকে এ আপদ হইতে রক্ষা করুণ. বাদসাহ শুনিয়া বীরগণের প্রতি দৃষ্টি করিলেন তখন বেজন উঠিয়া ছেলাম করিয়া কহিল আমাকে আজ্ঞা হইলে আমি তথায় গিয়া শুকর মারিয়া ইহারদিগকে আপদ হইতে মুক্ত করি। গেও কহিল এ বালক একজন প্রবিণ পাঠানউচিত বিশেষতঃ তুরানের নিকটে, বেজন কহিল আমি যুবা বটে কিন্তু বুদ্ধিতে প্রবিন, হে বাদসাহ: আমার মানস পূর্ণকর, বাদসাহ গোরগিনকে তাহার সঙ্গে দিয়া কহিলেন দুইজনে ঐক্য হইয়া কর্ম করিবা, ইহারা দুইজনে সেই প্রজাদিগকে সঙ্গে লইয়া কথিত দেশে আগত হইয়া কিছু দিনের মধ্যে অনেক শূকর মারিয়া বনদগ্ধ করিয়া প্রজাগণকেশুস্থিরকরত তথায় ক্ষেত্র করিতে আজ্ঞা করিল, সেস্থানে অনেক শীকারের যোগ্য পশু দেখিয়া আনন্দমনে দুইজনে কিছুদিন শীকারাশয়েত ভ্রমণ করে, একদিন গোরগিন বেজনকে কহিল এখান হইতে অতি নিকট এক রম্য বন আছে সে খানে নানা প্রকার ফলফুল ও শীকার পাওয়াজায় আর জলবায়ু উত্তম, এবং আফরাছিয়াবের কন্যা মনিজা নাম্নী পরম সুন্দরী সেইবনের নিকস্থ উদ্যানে সর্ব্বদা আইসে, এবং সে দেশস্থ লোক ও কহিল মনিজা এখন সেই উদ্যানে আসিয়াছে আমরা জ্ঞাত হইয়াছি, ইহা শুনিয়া বেজন গোরগিনকে সঙ্গে লইয়া সেই বনে শীকার করিতে ও কৌতুক দেখিতে গেলে, পরে বেজন সেইস্থানে পৌঁছিয়া দূর হইতে দেখিল ঐ উদ্যানে কথক

শুদ্দিন স্ত্রিলোক ভ্রমণ করিতেছে, বেজন ক্রমে নিকটে গিয়া মনিজাকে দেখিয়া অধয্যহইয়া দাঁড়াইয়া রহিল এবং মনিজা বেজনকে দেখিয়া,কামাতুরা হইয়া আপন দাসীকে কহিল আফরাছিয়াবের ভয়ে পক্ষ এখানে আইসে না; এযুবক পুরুষ এখানে আসিয়াছে কিন্তু আমার বোধ হয় এ সামান্য লোক হইবেক না তুমি জা নিয়া আইস, দাসী বেজনের নিকটে আ-সিয়া জিজ্ঞাসা করিল তুমি কে কোথা হইতে এখানে কি নিমিত্তে আইলে এ আফরাছিয়াবের কন্যা মনিজার রম্যো উদ্যান তোমার কি প্রানের ভয় নাই ইহা শুনিয়া বেজন কহিল আমি ইরানের একজন প্রধান সেনাপতি আমার নাম বেজন; আফরাছিয়াব আমাকে বিশেষ রূপে জানে আমি তাহাকে ভয় করিনা, এই স্থানে শীকার করিতে আসিয়াছি লাম মনিজা এখানে আসিয়াছে শুনিয়া এক অঙ্গুরি তাহার নিকটে বিকৃয় করতে আনিয়াছি। দাসী গিয়া মনিজাকে এই সকল কথা কহিলে মনিজা কহিল তুমি তাহাকে আমার নিকটে আন, দাসী পুনরায় আসিয়া বেজনকে সঙ্গে করিয়া লইয়া গেল. গোরাগিন কহিল অধিক বিলম্ব করা উচিত নহে শীঘ্র আসিবা। বেজন মনিজার নিকটে পৌছিলে মনিজা তাহার হস্ত ধরিয়া আপন মন্দিরে লইয়া উভয়ে মদিরা পান করিয়া মত্ত হইয়া কাম যদ্ধে প্রবৃত্ত হইল; গোরাগিন বেজনের অনেক বিলম্ব দেখিয়া জানিল যে বেজন বদ্ধহইল, বেজনের অশ্ব লইয়া আপনার বাসস্থানে আইল। মনিজা বেজনের সঙ্গে তিন দিন রতি ক্রীড়া করিয়া চতুর্থ দিবসে বেজনকে অধিক মদিরা পান দ্বারায় অজ্ঞান করিয়া হস্তির উপার

উঠাইয়া আপন বাটিতে ;লইয়া গেল, যখন বেজনের মত্ততা ত্যাগ হইল তখন মনিজাকে কহিল আমাকে কোথায় আনিয়াছ? মনিজা কহিল আমার বাটীতে আনিয়াছি, এই স্থানে দুইজনে রঙ্গরসে থাকিব কোন চিন্তা নাই কিছুদিন দুইজনে শুখে কালযাপন করে;একদিন একজনরক্ষক জানিয়া প্রাণের ভয়ে বাদসাহের নিকটে গিয়া কহিল যদি আমাকে অভয়দান দেন তবে কিছু নিবেদন করি। বাদসাহ কহিলেন তুমি নির্ভয় হইয়া কহ; সে কহিল বেজন নামক ইরানের একজন সরদারকে আমারদিগের সাহজাদি মনিজা কিপ্রকারগোপন করিয়া আনিয়া তাহাকে বিবাহকরিয়া আপনারনিকটে রাখিয়াছেন আমরা পরম্পরা শুনিয়া সাক্ষাতে নিবেদন করিলাম যাহা কর্ত্তব্য হয় তাহা করুণ বাদসাহ এইকথা শুনিয়া রাগত ও সোকাকুল হইয়া কহিল ॥

পৃথিবি পতির যদি কন্যা ঘরে থাকে। দুঃভাগ্য পুরুষ বলে সবে তাকে তাকে ॥

বাদসাহ আত্মীয়অন্তরঙ্গসকলকে ডাকাইয়া পরামর্স জিজ্ঞাসা করিলেন? সকলেই এ দুইজনকে নষ্ট করিতে কহিল, তখন করছেওজকে কহিলেন তুমি গিয়া বেজনের মস্তক ছেদন করিয়া আন; সে গিয়া দেখিল যে দুইজনেমদিরা পান করিয়া হাস্য কৌতুকে মগ্ন আছে। করছেওজ এক সব্দ করিলে পর বেজন তাহাকে দেখিয়া এক তলওয়ার লইয়া তাহার সম্মুখে আসিয়া কহিল আমার নাম বেজন আমি গেওয়ের পুত্র রোস্তমের দৌহিত্র যদিআমার সহিত যুদ্ধ করণের ইচ্ছা থাকে তবে মাঠে তুরানের সকল সরদারকে মারিব আর যদি

আমাকে নষ্ট নাকর ধর্ম্মতঃ সত্য কর তবে আমি তোমার সঙ্গে বাদসাহের নিকটে যাই; করছেওজ মনোমধ্যে বিবেচনা করিল সহজে ইহাকে মারা ভার হইবেক প্রণয় করিয়া লইয়া জাই, তখন বেজন কে কহিল তোমার নিকটে ধর্ম্মতঃ সত্য করিতেছি বাদসাহকে কহিয়া তোমার অপরাধ ক্ষেমা কর- ইব এই সত্য করিলে বেজন তলওয়ার রাখিল, করছেওজ তাহার হস্ত বান্ধিয়া বাদসাহের সম্মুখে আনিল বাদসাহ কহি লেন তুই আমার অন্ত পুর মধ্যে কিপ্রকারে প্রবেশ করিলি ? বেজন কহিল আমি শীকার করিতে আসিয়া শ্রান্ত যুক্ত হইয়া বনমধ্যে শয়ন করিয়াছিলাম কোন দৈত্য সেই সময়ে আমা- কে উঠাইয়া এখানে আনিয়াছে। বাদসাহ কহিল তুই সেই বেজন তুই আমার অনেক সেনাকে নষ্ট করিয়াছিস এখন হস্ত বান্ধা দাঁড়াইয়া স্ত্রিলোকের ন্যায় স্বপ্ন ছলের কথা কহি- তেছিস; বেজন কহিল আমি কেবল করছেওজের সত্য ধর্ম্মে হস্ত বান্ধাইয়াছি নতুবা তুরানে এমত বলবান্ বেহু নাই যে আমার হস্ত বন্ধন করে, আমার হস্তের বন্ধন খুলিয়া তোমার বলবান্ দিগকে যুদ্ধ করিতে অনুমতিদেও আমি সকলেরসহিত যূদ্ধ করিয়া উহারদের নষ্টকরি, বাদসাহ রাগতহইয়া তাহাকে শূলে দিতে আজ্ঞা করিলেন। তখন বাদসাহের লোকে বেজন কে শূলে দিতে লইয়া চলিল। এই জনরব নগর মধ্যে হইলে পিরানওএছা শুনিয়া সেইস্থানে আসিয়া কহিল আমি যে পর্যন্ত বাদসাহার নিকট হইতে অন্য হুকুম নাপাঠাই সেপর্যন্ত বেজন কে নষ্ট করিবানা, পিরানওএছা তথা হইতে আফরা:

ছিয়াবের নিকটে গিয়া দাঁড়াইয়া রহিল তখন বাদসাহ পনঃ পুনঃ তাহাকে বসিতে কহিলেন তথাপি দাঁড়াইয়া রহিল, তখন বাদসাহ কহিলেন তোমার কি প্রর্থণা তাহা কহ ধন কি রাজ্য চাহ তোমাকে আমার অদেয় কিছুই নাই? পিরানও- এছা একপ অনগ্রহ বাক্য শুনিয়া কহিল হে বাদসাহ; বেজন কে নষ্ট করিবেন না, ক্রোধ পরিত্যাগ করিয়া আমার বাক্য বিবেচনা করিয়া দেখুন যে এক ছিয়াওসকে নষ্ট করিয়া দিবা রাত্র ইরানিদিগের সহিত সর্ব্বদা যুদ্ধ বিগ্রহ হইতেছে আর বার বেজনকে যদি নষ্ট করেণ তবে তুরানে কেহু ক্ষণকালের নিমিত্ত্য সুস্থির থাকিতে পারিবেন না ছিয়াওসকে মারিয়া এক বিশ বৃক্ষ রোপন করিয়াছেন আরবার বেজনকে যদি নষ্ট করেণ তবে সেই বৃক্ষের মুলে জল সিঞ্চন করিয়া সেই বিশ বৃক্ষকে ফলবাণ করিবেন এক খুন করিয়াছ তাহাতেই দেশস্থ সকলেই অস্থির দুই খুন হইলে ইরানিদিগের নিকটে জাইতে পারিব না। বাদসাহ কহিল বেজনকে ত্যাগ করিলে অপযশ হইবে; পিরান কহিল তাহাকে বন্ধ করিয়া রাখ; তাহার বাক্যে সম্মত হইয়া করুছেওজকে কহিলেন বেজনকে লৌহ সংযুক্ত করিয়া কারাগারে বদ্ধ কর, আর মনিজাকে ও তাহার নিকটে রাখ আর এমত ক্লেশে রাখিবা যাহাতে দুই জনে শীঘ্র জমালয় প্রস্থানকরে। করুছেওজ রাজাজ্ঞাপ্রমানে বেজনকে আনিয়া বদ্ধকরিল; মনিজাকে তাহার মাতা বদ্ধ করিতে দিলনা কিন্তু সেই বন্ধি সালার মধ্যেই রহিল, উভয়ে সর্ব্বদা রোদন করিত এইরূপে কিছুদিন গত্তোহইল। ওথানে গোরগিন বেজনের অশ্ব লইয়া কিয়ৎকাল সেই দেশে বাস

করিয়া পরে ইরানে গিয়া কয়খোছরোর সহিত সাক্ষ্যাত করিয়া বেজনের অশ্ব দিলে গোদরজ ও গেও কহিল বেজন কোথায় তাহার অশ্ব আনিয়াছ সে কোথায় রহিল তাহা বল গোরগিন কহিল বেজন এক গোরখরের পশ্চাৎ ধাবমান হইলে আমি তাহার পশ্চাৎগামি হইলাম অনেক দুর গিয়া অদরসণ হইল; আমি কথক দুর গিয়া বেজনের অশ্ব মাঠে দেখিয়া আনিয়াছি, ইহা শুনিয়া গেও গোরগিনকে কাটিতে উদ্যত হইল। গোদরজ নিসেধ করিয়া বাদসাহকে সমস্ত বিবরণ জ্ঞাত করিল; বাদসাহ শুনিয়া অনেক খেদ করিয়া পরে গণক ও পণ্ডিতদিগকে ডাকাইয়া গণনা করিতে কহিলেন; তাহারা গণনা করিয়া কহিল বেজন মরেনাই কিন্তু মৃত্তুল্য হইয়া তরানে বন্দ আছে পরে কয়খোছরো জাম জাহা নমায় নামক এক পেয়ালা তৈয়ার করিয়াছিলেন তাহাতে মদিরা কিম্বা শর্করোদক পরিপুর্ন্ন করিয়া যে মনন করিয়া দৃষ্ঠিপাত করিত তাহা প্রতক্ষ্য দেখিতে পাইত, সেই পাত্র আনাইয়া তাহাতে মদিরা পুর্ন্ন করিয়া আপনি দেখিয়া কহিলেন যে বেজন তরানে আফরাছিয়াবের বন্ধিশালায় হস্তপদে লৌহযুক্ত হইয়া অন্ধকুপের ন্যায় এক কুঠারে বন্ধ আছে; গোদরজ কহিল যদি আজ্ঞা হয় তবে আমি সৈন্যসঙ্গে লইয়া তাহাকে আনিতে যাত্রা করি; বাদসাহ কহিল তোমার কর্ম নহে রোস্তম গমন করিলে অনায়াসে আনিতে পারিবেক। পরে বাদসাহ রোস্তমকে আনিতে গেওকে পাঠাইলেন সে গিয়া রোস্তমকে সমুদয় বিবরণ জ্ঞাপন করিলে রোস্তম শুনিয়া কহিল আমি দুই তিন যুদ্ধ করিয়া অত্যন্ত শ্রান্ত যুক্ত হইয়া

আসিয়াছি মনে করিয়াছিলাম যে কিছুদিন গৃহে থাকিয়া সুস্থ হইব, কিন্তু বেজন আমার সন্তান তাহার ক্লেশ শুনিয়া এক তিল বিলম্ব করিতে পারিনা, ইহা কহিয়া কিয়দ্দিবসান্তে ইরানে আসিয়া উপস্থিত হইল; বাদসাহ শুনিয়া সরদারদিগকে পাঠাইয়া রোস্তমকে আনাইয়া আলিঙ্গন পূর্ব্বক সমাদর করিয়া আপন তক্তের নিকটে এক তক্তে বসাইয়া বেজনকে কারাগার হইতে মুক্ত করিতে কহিলেন। সমুদয় সেনা ও সরদারদিগকে লইয়া যাত্রা কর রোস্তম কহিল প্রকাশ্যরূপে গমন করিলে যদি বেজনকে নষ্ট করে, অতএব আমি গোপন রূপে সওদাগরের বেশ ধারণ করিয়া যাইব বাদসাহ তুষ্ট হইয়া বানির্য্য দ্রব্যপ্রস্তুত করাইয়া একশত বলবান্ ব্যক্তিকে উক্ত বেশে রোস্তমের সমভিব্যাহারে দিলেন; গোরগিনকে বাদসাহ তদবধি কয়েদ রাখিয়া ছিলেন রোস্তম বাদসাহকে অনেক বুঝাইয়া তাহার অপরাধ মার্জনা করাইয়া কারাগার হইতে মুক্ত করিল॥

---

## রোস্তম বেজনকে মুক্ত করিতে তুরানে যাত্রা

রোস্তম যখন তূরানে উপস্থিত হইল তখন সকলে জানিল যে একজন প্রধান সওদাগর অনেকানেক দ্রব্য লইয়া ইরান হইতে আসিয়াছে মনিজা ইহা শুনিয়া রোস্তমের নিকটে আসিয়া কহিল বেজনের এখানে কয়েদ হওনের সংবাদ ইরানের সরদার ও বাদসাহ শুনিয়াছেন কি না? রোস্তম ক্রোধ যুক্তহইয়া কহিল আমিবণিক্ বানিজ্যকারি সেসকল সংবাদে আমার প্রয়োজন কি? কয়খোছরো; রোস্তম, বেজন, এবং

আর ২ সরদার গণ কাহারও সহিত আমার আলাপ নাই, আমি সওদাগরি করিয়া কাল যাপন করিতেছি তুমি আমার নিকট হইতে প্রস্থান কর ইহা শুনিয়া মনিজা নিরাশা হইয়া বিস্তর রোদন করিল; তখন রোস্তম তাহাকে ডাকিয়া কহিল কয়খোছরো ইরানে থাকেন আমি সেখানে থাকিনা, তুমিকে আপন বৃত্তান্ত আমাকে বল? মনিজা এক দীর্ঘ নিশ্বাশ ত্যাগ করিয়া আরবার রোদন করিতে লাগিল, তদ্দৃষ্টে রোস্তম তাহাকে অনেক আশা ভরসা দিলে সেকহিল আমি আফরা ছিয়াব বাদসাহের কন্যা আমার নাম মনিজা ।

মনিজা আমার নাম রাজার দুহিতা। আমাকে
দেখিতে সূর্য্য ছিল হে বাঞ্ছিতা ॥

বেজন বন্দিখানায় কয়েদ আছে আমাকে বাদসাহ বাটি হইতে বাহির করিয়া দিয়াছেন, এইক্ষণে ভিক্ষা করিয়া বেজনকে খাওয়াই আপনিও খাই, রোস্তম কহিল আমি কিছু খাদ্য দ্রব্য দিই বেজনকে গিয়া দেও যদি সে জিজ্ঞাসা করে কোথায় পাইলে তুমি কহিও এক নূতন সওদাগর আসিয়াছে সেই অনুগ্রহ করিয়া দিয়াছে ইহা কহিয়া কিছু খাদ্য দ্রব্য আনাইয়া এক মুরগির কাবাবের মধ্যে আপন চিহ্ন যুক্ত অঙ্গুরি তাহার মধ্যে রাখিয়া মনিজাকে দিয়া বিদায় করিল, সে গিয়া বেজনকে দিলে সে ঐ সকল দ্রব্য ভক্ষণ করিতে ২ অঙ্গুরি পাইয়া নিরক্ষণ করত রোস্তমের চিহ্ন দেখিয়া হাস্য বদনে মনিজাকে কহিল এখাদ্য দ্রব্য কোথায় পাইয়াছ? সে কহিল অদ্য একজন নূতন সওদাগর আসিয়াছে সেই অনুগ্রহ করিয়া দিয়াছে, পরে তাহার আকর প্রকার জিজ্ঞাসা করিবাতে মনিজা যেমত ২ দেখিয়াছিল তাহা কহিল, বেজন শুনিয়া

অতি প্রফুল্ল চিত্ত হইয়া পুনর্ব্বায় হাস্য করিল। তখন মনিজা কহিল এই মৃত্যুবৎ ক্লেশের মধ্যে এত হাস্য করণের কারণ কি? বেজন কহিল তুমি যদি একথা প্রকাশ না কর তবে আমি কহি। মনিজা কহিল আমি তোমার নিমিত্তে ধন মান ও প্রাণের আসার ভরসা ত্যাগ করিয়াছি এখনো কি আমার প্রতি তোমার সন্দেহ দূর হয় নাই; তখন বেজনকহিল এ সওদাগর নহে রোস্তম আমাকে মুক্ত করিতে আসিয়াছে তুমি তাহার নিকটে গিয়া আমার ছেলাম জানও। সে তথা হইতে আসিয়া রোস্তমকে বেজনের ছেলামজানাইলে রোস্তম মনিজাকে আপন বাস স্থানে রাখিল অদ্ধরাত্র সময় বলবান্ দিগকে সঙ্গেলইয়া গিয়া দেখিল যে কারাগারের দ্বারে এক বৃহৎ প্রস্তর দ্বারা রুদ্ধ ছিল তাহাদূরেনিক্ষেপ করিয়া বেজন কে বাহির করত চম্বুন করিয়া কহিলতুমি অনেক ক্লেশ পাই য়াছ মনিজাকে লইয়া ইরানেগমনকর, আমি আফরাছিয়াব কে জানাইয়া জাইব সে এমত না ভাবে যে রোস্তম এখানে আসিয়া বেজনকে চুরি করিয়া লইয়া গিয়াছে। বেজন কহিল তোমাকে একা রাখিয়া আমি কদাচ জাইবনা পরে দুর্গমধ্যে সকলে প্রবেশ করিয়া রক্ষকগণকে বধ করিয়া আফরাছিয়া-বের অন্তঃপুরের দ্বারে গিয়া সব্দ করিয়া কহিল ওহে আফরা-ছিয়াব জামাতাকে এতো ক্লেশে রাখিয়া আপনি সুখে নিদ্রা যাইতেছ এখন নিদ্রা ত্যাগ করিয়া গাত্রোত্থান কর আমি রোস্তম বেজনকে কারাগার হইতে মুক্ত করিয়াছি এই কথা শুনিয়া ভীত হইয়া আফরাছিয়াব পলায়ন করিল। রোস্তম গদা দ্বারা দ্বার ভগ্ন করিয়া গৃহ মধ্যে প্রবেশ করিয়া তক্ত চূর্ণ

করিল ● সঙ্গিগণেরা এক এক যুবতীর হস্ত ধারণ করিয়া বাহিরে আইল। প্রাতে আফ্রাছিয়াব কথক গুলিন সৈন্য সংগ্রহ করিয়া রোস্তমের সহিত যুদ্ধকরিতে আইল তাহা দেখিয়া রোস্তম আপন সঙ্গিগণকে লইয়া দাঁড়াইলে ভয় প্রযুক্ত কেহ রোস্তমের সম্মুখে আইল না; তখন রোস্তম আফরাছিয়াবকে কহিল যে তুই এবং তোর সমস্ত সরদারেরা আমাকে বিশিষ্টরূপে জ্ঞাত আছিস তত্রাপী আমার সম্মুখে আসিয়াছিস্ তুরানে এমত কোন মনুস্য নাই যে আমার সহিত যুদ্ধ করে এইরূপ অনেককটুবাক্য কহিলে আফরাছিয়াব লজ্জিত হইয়া আপন সেনাদিগকে অনেক ভৎসনা করিয়া সমস্ত সেনা লইয়া একেবারে রোস্তমের প্রতি ধাবমানহইল তাহা দেখিয়া রোস্তম তলওয়ার ও গদা লইয়া আইল তদ্দৃষ্টে সকল সেনা ছাগলের ন্যায় পালাইয়া গেল ॥

---

যুদ্ধের দিবসে সেই মহাবির প্রসস্ত। তলওয়ার কাটার
গদা লয়্যা পাস অস্ত্র ॥ কাটিল চিরল আর ভাঙ্গিল
বিন্ধিল। যোদ্ধাগণের মাথা বুক হাটু আর হস্ত ॥

রোস্তম এত মনুস্যসংহার করিল যে রক্তের স্রোত চলিলতাহা দেখিয়া যে অবশিষ্ট সেনাছিল তাহা লইয়া আফরাছিয়াব পলায়ন করিল; রোস্তম কথক দুর তাহার দিগের পশ্চাৎ ২ গিয়া ফিরিয়া আসিয়া আফরাছিয়াবের ভাণ্ডার ভাঙ্গিয়া ধন সম্পত্তি ও কএক জন পরম সুন্দরী যুবতীকে লইয়া ইরানে গেল, কয়খোছরো তাহা শুনিয়া অগ্রসর আসিয়া রোস্তমকে আপন বাটিতে আনায়ন করিলেন ॥

রোস্তমের সহিত বরজুর যুদ্ধ ॥

বেজনের উপাখ্যান করিলে শ্রবণ। বরজুর যুদ্ধ
কিছু শুনহ এখন ॥

আফরাছিয়াব রোস্তমের নিকটে পরাস্তব হইয়া চিন দেশে গমন করিল কএকদিবস পরে একদিন একক্ষেত্রের প্রান্তভাগে এক যুবা পুরুষ অতি বৃহদা কার দেখিয়া তাহাকে নিকটে ডাকাইয়া কহিল তোমার নাম কি, কোথা নিবাস তোমার পিতা কে? সে কহিল আমার নাম বরজু কৃষি কর্ম্ম করি, পিতারনাম জ্ঞাতনহি, কিন্তুমাতাকে জিজ্ঞাসা করিয়া ছিলাম তিনি কহিয়াছেন একসময়ে একজন বলবান্ পুরুষ শীকার করিতে আসিয়া পিপাসাযুক্তহইয়া আমারনিকটে জল চাহিলে আমি তাহাকে জল দিলাম সে জলপানকরিয়া পরে আমাকে ধরিয়া বলেতে আলিঙ্গনকরিয়া প্রত্যাগমন কালীন আমাকে আপনার কিছু অলঙ্কার দিয়া গেল তাহাতেই আমি গর্ব্ভবতী হইলাম সেই গর্ব্ভে তোমার জন্ম হইয়াছে আমার মাতার নিকটে এই মাত্র শুনিয়াছি আর আমার মাতা বিবাহ করেন নাই, বাদসাহ কহিল তোমাকে বলবান্ দেখিতেছি আমার এক প্রবল শত্রু আছে তাহার ভয়ে পলাইয়া আসিয়াছি যদি সেনা থাকিত তবে ইরানের যোদ্ধাগণ আমার নিকটে তুচ্ছ তোমার যেপ্রকার শরীর দেখিতেছি অনুমান করি তুমি অক্লেশে তাহাকে মারিতে পারিবা তাহার নাম রোস্তম বরজু কহিল এক ব্যক্তিকে এতভয়, বাদসাহ কহিল সেই একজনকে এক সহস্র বলবানেও তাহার কিছু করিতে পারেনা, কোন

অস্ত্র ও তাহার সরিরে প্রবেশ হয় না। বরজু কহিল পর্ব্বত হইলে ও এক গদায় চুর্ণ্ণ করিতে পারি, বাদসাহ কহিল যদি তুমি তাহাকে বিনাশ করিতে পার তবে আমার এক কন্যা ও চিন দেশ তোমাকে দিব। বরজু কহিল তুমি এত সেনা লইয়া একজনকে দেখিয়া ভয়ে পালইতেছ তোমারা সকলিই কাপুরুষ তুমি বাদসাহর উপযুক্ত নহে এতদ্বাক্যে বাদসাহ সলজ্জিত হইয়া কহিল তুমি আমার সহায় হইয়া সেই সক্রু হইতে উদ্ধার কর, ইহা শুনিয়া বরজূ কহিল আমি রোস্তমকে মারিয়া ইরানের বাদসাহকে ধরিয়া তোমাকেদিব। আফরা-ছিয়াব তাহাকে পারিতোসিক স্বরূপ হিরকাদি যুক্ত ও স্বর্ণ্ণ রৌপ্যনির্ম্মিত তৈজসাদি, হয়, হস্তি তাহার প্রতি তুষ্ট হইয়া অলঙ্কার ও নানাবিধ বস্ত্র; ও নানা প্রকার অস্ত্র বরজুকে দি-লেন, সে আপন মাতার নিকটে লইয়া গেল তদ্দৃষ্টে তাহার মাতা কহিল এত বিশয় কোথায় পাইলে? বরজু তখন বিস্তা-রিত করিয়া কহিলে বরজুর মাতা শুনিয়া কহিল এসকল দ্রব্য গ্রহণ করিওনা বাদসাহকে ফিরিয়া দেও এসকল ধন নহে এ তোমার কপ্নন ( মেছুরা শবের উপর যে বস্ত্র আচ্ছাদিত করিয়া দিয়া গোরদেয় তাহাকে কফন কহে ) রোস্তম একাকি কত দৈত্যকে নষ্ট করিয়াছে আর অনেক বাদসাহ ও বলবান্ বীরগণকে নষ্টকরিয়াছে তুমিদৈত্যঅপিক্ষা বলবান্ নহ,বরজু কহিল মৃত্যু বিশয়ে যে রূপ ঈশ্বর নির্ব্বন্ধ করিয়াছেন তাহা কেহ খণ্ডন করিতে পারিবেকনা তাহা অবস্যই হইবেক? রোস্তমবৃদ্ধ আমিযুবক আমিতাহাকে ভয় করিনা আমিঅবস্য

যুদ্ধে যাইব, তাহার মাতা কহিল তুমি কখন যুদ্ধ দেখনাই সে রণ পণ্ডিত বরজু কোন প্রকারে প্রবোধ না মানিয়া বাদসাহুর নিকটে আসিয়া কহিল আমার মাতা কহেন রোস্তম রণ পণ্ডিত আমি কখন যুদ্ধ দেখি নাই, বাদসাহ শুনিয়া প্রধান ২ যোদ্ধা গণকে আজ্ঞা করিলেন তোমরা ইহাকে যুদ্ধের কৌশল সিক্ষা করাও দশজন প্রধান যোদ্ধা দিবারাত্র ছয়মাস পর্য্যন্ত যুদ্ধের কৌসল সকল তাহাকে শিক্ষা করাইল, তাহার পর বরজু বাদ সাহ সম্মুখে আসিয়া কহিল আমি যুদ্ধের কৌসল সকল জ্ঞাত হইয়াছি যদি আজ্ঞা করেণ তবে যে দসজন আমার শিক্ষা গুরু সেই দসজন কেই এক কালীন বন্ধনকরিয়া আপন কার সম্মুখে আনি ইহা শুনিয়া তাহারা কহিল বরজু সত্য কহিতেছে ইরানে ও তুরানে ইহার সম যোদ্ধা কেহু নাই ইহাকে মনুস্য জ্ঞান হয় না কোন দৈত্যের সন্তান হইবে, যুদ্ধে ইহার শ্রম বোধ নাই। বাদসাহ তুষ্ট হইয়া অনেক অলঙ্কার বস্ত্র হস্তি ঘোটক প্রসাদ করিয়া আপনার তক্তের নিকটে একতক্তে বরজূকে বসাইলেন. বরজুকহিল আরবিলম্ব করা কর্ত্তব্য নহে আমাকে শীঘ্র যুদ্ধে বিদায় কর। কয়েক দিবস পরে বার সহস্র সৈন্য ও হোমান এবং বার মান্ প্রধান দুই সেনাপতিকে সঙ্গে দিয়া বরজুকে যুদ্ধ করিতে ইরানে পাঠাইলেন, আর কহিলেন অতি ত্বরায় তোমার দিগের পশ্চাৎ আমি ও জাইতেছি। কয়খোছরো ইহা শুনিয়া কহিল আফরাছিয়াব সে দিবস রোস্তমের সহিত যুদ্ধে পরাজয় হয় আর ইরানের সরদার দিগকে দেখিলে পলায়ন করে তবে কি সাহসে ইরানে আসিতেছে; পরে তুছ ওফরেবোর্জ এইদুই

সরদারকে বার সহস্র সেনা সঙ্গে দিয়া পাঠাইল আর আপনি অনেক সেনা সঙ্গে করিয়া পশ্চাৎ চলিল ॥

---

## বরজু তুছ ও ফরেবোর্জকে ধরিয়া লইজায় ও রোস্তম তাহার দিগের আনিবার বিবরণ ॥

যখন দুইসৈন্য একত্র হইল বরজুর সঙ্গেতুছ এক দিবারাত্রি ক্রমাগত যুদ্ধ করিয়া বিমুখ হইলে বরজু আসিয়া তুছ ও ফরেবোর্জকে ক্রোড়ে করিয়া আপন সৈন্য মধ্যেলইয়া হোমানের নিকটে সমর্পণ করিল সে দুইজনকে কয়েদ করিয়া রণ জয়ী বাদ্য বাজাইল। সে আহ্লাদিত হইয়া আফরাছিয়াবকে পত্র লিখিল যে তুছ ও ফরেবোর্জ যুদ্ধেআসিয়াছিল তাহারদিগকে বরজু ধৃত করত বন্ধ করিয়াছে; কয়খোছরো চিন্তাযুক্ত হইয়া রোস্তমকে ডাকিয়া কহিলে রোস্তম তাহা শুনিয়া ঈশ্বরকে স্মরণ করিয়া বাদসাহের নিকটে বিদায় হইয়া তুছের ভ্রাতা কেস্তহমকে সঙ্গে লইয়া তছ ও ফরেবোজকে মুক্ত করিতে গমন করিল, রাত্র দুই প্রহরের সময়ে তুরানের সৈন্য মধ্যে প্রবেশ করিয়া দেখিল আফরাছিয়াব সভা করিয়া একতক্তে আর বরজু দক্ষিণদিগে ও পিরানওএছা বাম দিগে আর ফরেবোর্জ ও তুছের হস্ত বন্ধন করিয়া সম্মুখে দণ্ডায়মান করিয়া অহংকারে ও মদিরিকাপানে মত্তহইয়া কহিতেছে যেমন ছিয়াওসকে বধ করিয়াছি ইহারদিগের দুইজনকে কল্য সেইরূপ করিয়া বধ করিব। রোস্তম ঈশ্বরকে ধন্য বাদ করিয়া কেস্তহমকে কহিল এখন পর্য্যন্ত ইহারা জিবদ্দসায়আছে বুঝিঈশ্বর ইহাদিগকে রক্ষা করিলেন তুমি আমার পশ্চাতে আইস ইস্ক

কহিয়া নিকটে গিয়া দেখিল সকলে সুরপানে মত্ত হইয়াছে, রোস্তম রক্ষকদিগকে নষ্ট করিয়া আপনি একজনকে ও কেস্তুহম একজনকে পৃষ্ঠে করিয়া লইয়া বাহিরে আসিয়া তাহার দিগের বন্ধন মুক্তকরিয়া কয়খোছরোর নিকটে লইয়া আইল ক্ষণেক কাল পরে আফরাছিয়াবের চৈতন্য হইল সতাস্থ তাব তেই গোলমাল করিতেছে তাহা শুনিয়া কারণ জিজ্ঞাসা করি বায় তাহারা কহিল ইরানিরা আসিয়া রক্ষকগণকে নষ্টকরিয়া বন্দি দুইজনকে লইয়া গিয়াছে। পিরানওএছা ইহা শুনিয়া কহিল রোস্তম আসিয়াছিল, বাদসাহ তৎক্ষণাৎ বরজুকে যুদ্ধে পাঠাইল। কয়খোছরো তাহা শুনিয়া রোস্তমের সহিত বহু বিধ সেনা দিয়া যদ্ধে প্রেরণ করিল, রোস্তম বরজুর আকার দেখিয়া বিস্ময়াপন্নহইয়া কহিল ওরে বালক, তুই রোস্তমকে যুদ্ধে আহ্বান করিতেছিস আমি রোস্তমের পরীবক্তে আসীয়াছি এখনি তোমাকে রণ ভূমে শয়ন করাইব ইহা কহিয়া প্রমথতঃ দুইজনে তীরের যুদ্ধ আরম্ভ করিল এই যুদ্ধে কাহার কিছু হইলনা, পরে গদা যুদ্ধ করিতে২ গদা ধনুকের ন্যায় বক্র হইল, তৎপরে দুইজনে মল্ল যুদ্ধ আরম্ভ করিল কিয়ৎ কাল বাহু যুদ্ধ করিয়া সন্ধ্যার সময়ে বরজু এক গদা রোস্তমের মস্তকে প্রাহার করিলে রোস্তম ঢাল দ্বারা মস্তক রক্ষা করিল কিন্তু পঞ্জরে এমত আঘাত হইল যে রোস্তম হস্তাউত্তোলন করিতে পারিলনা; বরজু পাছে জানিতে পারে এই আশঙ্কায় ধৈর্য্য হইয়া থাকিল আর বরজুকে কহিল তুমি বালক বট কিন্তু বল আছে, বরজু কহিল আমি পর্ব্বতে গদা ঘাত করিলে চুর্ণ হয় তোমার কিছু হইলনা, রোস্তম কহিল

তুমি বালক তোমার প্রহারে আমার কি হইবে, ইহা শুনিয়া বরজু কিঞ্চিৎ ভীত হইল। পরে রোস্তম কহিল অদ্য বেলা অবসান হইয়াছে কল্য প্রাতে তোমার সঙ্গে যুদ্ধ করিব ইহা কহিয়া উভয়ে আপন ২ শিবিরে গমন করিল। বরজু আফ-রাছিয়াবকে কহিল অদ্য জাহারসঙ্গে যুদ্ধ করিলাম সে অতি চমৎকার যোদ্ধা তাহার সরির ও তাহার ঘোটকের সরির কি দিয়া ঈশ্বর নিম্মান করিয়াছেন তাহা বলিতে পারিনা, আমি গদা ঘাত করিলে পর্ব্বত চুর্ণ হইয়াযায় কিন্তু তাহার কিছুই হইলনা, আমার গদা বক্র হইয়া গেল কল্য যুদ্ধে কি দুর্ঘটনা ঘটে তাহা বলিতে পারিনা; ওখানে রোস্তম কয়খোছরোর নিকট পৌছিয়া হস্ত দেখাইলেন আর কহিলেন অদ্য সন্ধ্যা হইল এই ছল করিয়া আসিয়াছি কল্য বরজুরসঙ্গেযুদ্ধ করে এমত যোদ্ধা এখানে কেহ নাই যদি আমার পুত্র ফরামোরজ এখানে থাকিত তবে সে যুদ্ধ করিতে পারিত সে হিন্দুস্থানে আছে অতি ত্বরায় তাহাকে আনাইতেপার আর তাহার আগ মন পর্য্যন্ত যুদ্ধ কোনছলে স্থকিত রাখিতে পার তবে ভালহয় কয়খোছরো এইকথা শুনিয়া বিমর্স হইয়া রোস্তমকে শিবিরে পাঠাইলেন, রোস্তম আপন শিবিরে আসিয়া আপন ভ্রাতা জওয়ারেকে ডাকিয়া কহিলেন হস্তির সজ্জাকর আমিবাটীতে জাইয়া ছিমোরগকে ডাকিয়া ঔষধ করিয়া আরোগ্য হইয়া ত্বরায় আসিব; বেদনায় অস্থির হইয়া ঈশ্বরের নিকট সমস্ত রাত্রি রোদন করিতে লাগিল। অতিপ্রাতে জওয়ারা আসিয়া কহিল ফরামোরজ হিন্দুস্থান হইতে এইস্থানে আসিয়াছে রোস্তম শুনিনা তুষ্ট হইয়া ফ্রামোরজকে কহিল তুমিআমার

অশ্ব ও পরিচ্ছদাদি বস্ত্র ও সমস্ত অস্ত্র লইয়া বরজুর সহিত যুদ্ধ করিতে গমন কর এবং বরজুর সহিত পূর্ব্ব দিবস রোস্তমের যে ২ কথা হইয়াছিল তাহাও সমস্ত জ্ঞাত করিস ॥

---

ফরামোরজের সহিত বরজুর যুদ্ধ ॥

ফরামোরজ রোস্তমের পরিচ্ছদাদি ধারণ করিয়া অশ্বারোহণে রণস্থলে গমন করিলে বরজু ইহার পূর্ব্বে রণস্থলে আসিয়া লম্ফঝম্প চিৎকার করিতেছিল; এই সময় ফরামোরজ আসিয়া বরজুকে দেখিয়া কহিল এতলম্প ঝম্প চিৎকার কেন করিতেছে বুঝি তোমার মৃত্যু নিকট হইয়াছে। বরজু কহিল তুমি জাননা বীরগণের আমোদের স্থান রণস্থল। ফরামোরজের কথা শুনিয়া বরজু কহিল কল্য জাহার সঙ্গে যুদ্ধ করিয়াছি তুমি সে ব্যক্তি নহ তাহারি অশ্ব ও পরিচ্ছাদাদি লইয়া তুমি যুদ্ধে আসিয়াছ, আমি অনুমান করি সে মরিয়াছে অথবা আঘাতি হইয়াছে; ফরামোরজ কহিল তুমি বাতুলের ন্যায় বাক্য কহিতেছ।কল্য দিবা অবসান হইয়াছিল এজন্য তুমি প্রাণ লইয়া গিয়াছিলা অদ্যঈশ্বরের ইচ্ছা এখনিতোমার মস্তকছেদনকরিব। বরজু কহিল তোমার নাম কি? ফরামোরজ কহিল ছাম নরিমানের বংশোদ্ভব রোস্তমের নাম শুনিয়াছ সেই আমি। বরজু রোস্তমের নাম শুনিয়া ভীত হইল; পরে ফরামোরজ প্রথমতঃ গদা যুদ্ধ আরম্ভ করিলে তাহা বরজু সম্বরণ করিতে নাপারিয়া অশ্ব হইতে ভূমে পতিতহইল, ফরামোরজ অতিশীঘ্র কমন্দনিক্ষেপ করিয়া বরজুকে বান্ধিয়া আপন সৈন্য মধ্যে লইয়া গেল।

আফরাছিয়াব তাহা দেখিয়া সেনাগণকে সঙ্গে লইয়া বরজু কে মুক্ত করিতে আইল; কয়খোছরো আফরাছিয়াব আসিতেছে ইহা দেখিয়া আপন সৈন্য লইয়া ফরামোরজর নিকট আইলে উভয় সৈন্যে ঘোরতর যুদ্ধ হইতে লাগিল। রোস্তম তথায় গিয়া আর এক কমন্দ নিক্ষেপ করিয়া বরজুকে বান্ধিয়া আনিয়া কয়েদ করিল, আফরাছিয়াব কোনমতে তাহাকে মুক্তকরিতে নাপারিয়া পিরান ও এছাকে লইয়া পরামর্স করিল যে এস্থানে থাকা কর্তব্য নহে রাত্রিকালে যখন ইরানি সেনা গণেরা নিদ্রা গত হইলে তখন তুরানিরা স্বদেশে প্রস্থান করিল। প্রাতে ইরানিরা দেখিল যে আফরাছিয়ার পলায়ন করিয়াছে তখন রোস্তম বরজুকে সঙ্গে লইয়া কয়খোছরোর নিকটে উপস্থিত হইলে বাদসাহ তাহার প্রাণ দণ্ডে আজ্ঞা করিলেন, রোস্তম কহিল এবালক কেবল ধন লোভে আফরাছিয়াব ইহাকে আনিয়াছিল আমরা ধন দিলে আমারদিগের পক্ষ হইবেক, ইহা শুনিয়া কয়খোছরো বরজুকে রোস্তমের জিম্মা করিয়া দিলেন। পরে কয়খোছরো যুদ্ধে জয় প্রাপ্ত হইয়া, রণ জয় বাদ্য বাজাইয়া সেনাদিগকে লইয়া ইরানে শুভাগমন করিলেন। রোস্তম ফরামোরজ ও জওয়ারার সঙ্গে বরজুকে আপন বাটি ছয়স্তানে পাঠাইল আর কহিল ইহাকে সাবধান পূর্ব্বক কারাগারে বদ্ধ রাখিবা আমি বাদসাহর নিকট হইতে বিদায় হইয়া অতি সীঘ্র যাইতেছি ॥

---

বরজুর মাতার ছয়স্তানে গমন ॥

আফরাছিয়াব তুরানে পৌছিলে বরজুর মাতা সহজশুনিল

যে রোস্তম বরজুকে কয়েদ করিয়া লইয়া গিয়াছে, অনেক রোদন করিয়া কিছু ধন রত্নাদি লইয়া ইরানে যাত্রা করিল, তথায় আসিয়া জ্ঞাত হইল যে রোস্তম বরজুকে আপন বাটিতে কয়েদরাখিয়াছে ইহাশুনিয়া ছদ্মস্তানে গেল, তথায় পৌছিয়া রোস্তমের বাটির পরিচারিকা এক স্ত্রিলোকের বাটীতে বাসা করত ক্রমেতাহার সহিত প্রণয়করিয়া তাহাকে ভগ্নি কহিত, একদিন তাহাকে কহিল আমি তোমাকে কোন কথা কহিতে বাঞ্ছা করি যদি তুমি ধর্ম্মত সত্য কর যে প্রকাস করিবানা তবে কহি? সে সীকার করিয়া সত্য করিলে তখন সহরু কহিল কিঞ্চিৎ খাদ্যদ্রব্য আমি বরজুকে দিতে বাঞ্ছা করি যদি তুমি লইয়া তাহাকে দেও, সে সম্মত হইলে সহরু কিছ খাদ্য সামিগ্রি আয়োজন করিয়া, আপন চিহ্ন যুক্ত এক অঙ্গরী তাহার মধ্যে গোপন করিয়া ঐ স্ত্রিলোককে দিল; সে বন্দিসালায় গিয়া বরজুকে দিলে বরজু তাহা খুলিয়া আপন মাতারচিহ্ন যুক্ত অঙ্গুরী পাইয়া ঐস্ত্রীলোককে কহিল এ সকল দ্রব্য তোমাকে কে দিয়াছে কোথা হইতে আনিয়াছ? সে কহিল সম্প্রতি চিনদেশহইতে এক স্ত্রীলোক আসিয়া আমার বাটীতে বাশ করিয়াছে সেই দিয়াছে, তখন বরজু কহিল আমি তোমাকে যে কথা কহিব যদি তুমি প্রকাশ নাকর এমত ধর্ম্মত সত্য কর তবে বলি, সে কহিল চিনের সেই স্ত্রীলোক আমার স্থানে সত্য লইয়া এই দ্রব্য দিয়াছিল তোমার নিকটে ও সত্য করিতেছি আমার প্রাণান্ত হইলেও এ কথা প্রকাশ করিবনা; তোমার মনেরকথা আমার নিকটে প্রকাশ করিয়া কহ তখন বরজু কহিল সে স্ত্রীলোক আমার মাতা আমাকে

এই কারাগার হইতে মুক্ত করিতে আসিয়াছেন তুমি তাহাকে একখানা উত্তম উখা আমার নিকটে পাঠাইতে কহিবা তবে আমি এই কারাগার হইতে মুক্ত হইয়া তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিতে পারি। সে গিয়া সহরূকে সমস্ত বিবরণ বিস্তারিত করিয়া কহিল সহরূ ঐ স্ত্রীলোক দ্বারা একখান উখা পাঠাইল বরজু উখা পাইয়া তাহাকে কহিল অদ্য রাত্র যোগে এই বন্দি শালার নিকটে তিনটা অশ্বও অস্ত্র শস্ত্র লইয়া তোমরা দুইজনে আমার অপেক্ষা করিবা আমি বেড়ি কাটিয়া তোমারদিগের নিকটে জাইব, সে গিয়াসহরূকে এই সকল কথা কহিল সহরূ তাহা শুনিয়া ঐ স্ত্রীলোককে কিছু ধন দিয়া ঘোটক ও অস্ত্র সস্ত্র আনিতে কহিল সেই স্ত্রীলোক ঘোড়া ও অস্ত্রাদি আনিয়া রাত্রিকালে সহরূকে সঙ্গেলইয়া কারাগারের নিকটে লুকাইত হইয়ারহিল কথকরাত্রিথাকিতে বরজু বেড়ি কাটিয়া প্রাশাদ হইতে লম্পদিয়া নিচেআসিয়া আপন মাতার সহিত সাক্ষ্যাৎ করিয়া তিনজনে অশ্বারোহণে তুরানেযাত্রাকরিল; কিআশ্চর্য্য কপালের লিখন কেহু অন্যথা করিতে পারেনা। রোস্তম কয় খোছরোর নিকট হইতে বিদায় হইয়া বাটীতে আসিতেছিল বরজু দুর হইতে রোস্তমের নিসান দেখিয়া ভীত্ত হইয়া পথের নিকট কোন বনে লুক্কায়িত হইয়া রহিল; রোস্তম দুর হইতে দেখিল যে তিনজন অশ্বারোহি আসিতেছিল বনমধ্যে প্রবেস করিল, ইহাতে অনুভাব করিল যে তূরানের কোন লোক বরজুর অন্যাসন করিতে আসিয়াছে আমাকে দেখিয়া গোপন হইল, একজন বলবান্‌কে তাহার অনুসন্ধান জানিতে পাঠা

হলে সে বরজুর নিকটগিয়া কহিল তোমরা কে, কোথাহইতে আইলে; কোথায় জাইতেছ? বরজু কহিল আমার নাম বরজু রোস্তমের বাটীহইতে তুরান জাইতেছি, ইহা শুনিয়া সে অতি রাগত হইয়া ধরিতে গেল বরজু কমন্দ ফেলিয়া তাহাকে কয়েদ করিল তাহার অশ্ব পলায়ন করিল ॥

### রোস্তমের সহিত বরজুর যুদ্ধ ও বরজুকে বিশ দেওনের বিবরণ ॥

রোস্তম আপনার প্রেরিত বলবানের শূন্য অশ্ব দরশন করত সন্দিগ্ধ হইয়া সেই দিগে গমন করিয়া দেখিল যে বরজু ঐ ব্যক্তিকে বান্ধিয়া রাখিয়াছে; রোস্তম তাহার সঙ্গে অনেক ক্ষণ যুদ্ধ করিয়া দুইজনে শ্রান্ত হইয়া বিশ্রাম করিতে বসিয়া বরজুকে কহিল তুমি কি প্রকারে কারাগার হইতে মুক্ত হইলে বরজু কহিল ঈশ্বর আমাকে মুক্ত করিয়াছেন; পরে রোস্তম কহিল এ দুই স্ত্রীলোক কে? বরজু কহিল একজন আমার মাতা অন্যজন তোমার বাটীর পরিচারিকা পরে রোস্তম কহিল আমরা দুইজন শ্রান্ত ও খুদিত হইয়াছি আহর করিয়া পুনরায় যুদ্ধ করিব। বরজু কহিল আমার সঙ্গে খাদ্য দ্রব্য কিছু নাই, রোস্তম কহিল আমি পাঠাইব তদনন্তর রোস্তম আপনার শিবিরে আসিয়া আহারের দ্রব্য আনিতে কহিল এবং বরজুর নিমিত্ত্যে লইয়া যাইতে কহিল; রোস্তমেরসঙ্গের কোন ব্যক্তি কহিল বরজুকে জাহা পাঠাইব তাহাতে বিশ মিশ্রিত করিয়াপাঠাই? রোস্তমকহিল ইহাতেআমার অক্ষ্যাতি হইবে, তাহারা কহিল সত্রুকে নানা প্রকারছলে মারিয়াথাকে

ইহাতে দোস নাই; রোস্তম তাহার উত্তর না করিবায় তাহারা বিশ মিশৃত করিয়া খাদ্যদ্রব্য বরজুর নিকট পাঠাইল, বরজু দেখিয়া সন্তুষ্ট হইয়া ঐ সকল দ্রব্য ভক্ষণে উদ্যত হইলে বর-জুর মাতা কহিল বিনা পরিক্ষায় এ দ্রব্য তোমার ভক্ষণ করা মত নহে ইহা শুনিয়া রোস্তমের বাটীর স্ত্রীলোককে খাইতে কহিলে সে খাইল পরে কিয়ৎ কালের মধ্যে ঐ দাশী অবসন্ন হইয়া ভূমে পড়িয়া প্রাণ ত্যাগ করিল। ইহা দেখিয়া বরজু রাগত হইয়া রোস্তমের নিকটে আসিয়া কহিল ও হে; রোস্তম তুমি আমার সঙ্গে যুদ্ধে অক্ষম হইয়া ছল করিয়া খাদ্য দ্রব্য মধ্যে বিশ মিশৃত করিয়া পাঠাইয়াছ; এ তোমার উপযুক্ত কর্ম্ম নহে পরমেশ্বর আমাকে রক্ষা করিয়াছেন কিন্তু তোমার এ কলঙ্ক চিরকাল থাকিল, রোস্তম লজ্জিতহইয়া নিরবরহিল। বরজু কহিল যদি আমার সঙ্গে তোমার যুদ্ধ করিবার ক্ষমতা থাকেতবে যুদ্ধকর? ইহ শুনিয়া রোস্তম তৎক্ষণাতযুদ্ধ করিতে প্রবর্ত্ত হইলেন দুইজনে নানাঅস্ত্রে অনেকক্ষণ যুদ্ধ হইল কেহ পরাজয় হইলনা তখন দুইজনে মল্লযুদ্ধ করিতে আরম্ভকরিয়া উভয়ে উভয়ে কটী বন্দ ধরিয়া বল করিতে লগিল এই সময়ে রোস্তমের অশ্ব বরজুর অশ্বকে এমত দন্তাঘাত করিল যে সে অস্থির হইয়া পলাইয়া গেল। বরজু কটী দেশ রোস্তম ধরি য়াছিল এজন্য ঝুলিয়াপড়িল, রোস্তম তাহাকে পতনে পাইয়া অশ্ব হইতে নামিয়া বরজুকে ভূমে নিক্ষেপ করিয়া তাহার বক্ষোপরি বসিয়া কাটীতে উদ্যত হইয়া খঞ্জর বাহির করিল তাহা দেখিয়া বরজুরমাতা সহস্রউচ্চস্বরে রোস্তমকে ডাকিয়া

কহিল বরজ, তোমার পৌত্র ছোহরাবের পুত্র ইহাকে কদাচ নষ্ট করিও না পরে নিকটে আসিয়া কহিল ॥

কথন পৌত্রে কাট কভু কাট পুত্র।
ইরান তুরানে কর বিবাদের সূত্র॥
লজ্জা নাহি হয় তব পকে হৈল কেশ।

আপন সন্তানে বধঃ করিয়া পিশেশ॥

এইকথা শুনিয়া রোস্তম সহরুকে কহিল তুমিআপন পুত্রকে বাঁচাইবার নিমিত্ত্যে এই কথা মিথ্যা করিয়া কহিতেছ, সহরু কহিল আমর নিকটে ছোহরাবের চিহ্ন যুক্ত অঙ্গরী আছে আপনি দেখ ইহা কহিয়া সহরু অঙ্গুরী বাহির করিয়া রোস্তমের হস্তে দিল; রোস্তম যে অঙ্গরী ছোহরাবের মাতাকে পাঠাইয়াছিল সেই অঙ্গুরী দৃষ্টে আনন্দিত হইয়া সহরুকে কহিল এ অঙ্গরী আমার চিহ্নিত বটে ছোহরাবের মাতাকে পাঠাইয়াছিলাম, কিন্তু তোমার হস্ত গতো কি প্রকারে হইয়াছে তাহা বল সহরু কহিল যখন ছোহরাব ইরানেযুদ্ধ করিতে সেনা সঙ্গেলইয়া গমন করিল কয়েকদিন পরে আমারপিতার বাটীর সর্ম্মুখেপুষ্করনিরধারে শিবির করিল আমি সেইসময় ঐ পুষ্কর্ণিতে স্নান করিতে ওজল আনিতে গিয়া গাত্র মার্জন ও স্নান করিলাম এই সময় ছোহরাব আপন শিবির হইতে স্নানের সময় আমার সর্ব্বাঙ্গ নিরক্ষণ করিয়া কামাত্তর হইয়া আমাকে লইয়া যাইতে একভৃত্যকেপাঠাইল আমি স্নানকরিয়া জাই এমত সময়ে ঐদাস আসিয়া কহিল আমরদিগের সরদার তোমাকে ডাকিতেছেন, আমি ভয় প্রযুক্ত তাহার সঙ্গেছোহরাবের নিকটে উপস্থিতহইলাম, ছোহরাব আমাকে দেখিয়া

আপন শিবির মধ্যে লইয়া আমার সঙ্গে অঙ্গ সঙ্গ করিতে উদ্যত হইলে আমি অস্বিকার করিয়া কহিলাম যে আমি অবিবাহিতা তখন তলওয়ার লইয়া কহিল যদি আমাকে আলিঙ্গন না দেও তবে তোমার মাথা কাটীব, আমি প্রাণ ভয়ে নিরব রহিলাম ছোহরাব বলেতে আমাকে আলিঙ্গন করিল, তাহার পর আমি তাহার নাম ধাম জিজ্ঞাসা করিলাম তখন তিনি কহিলেন আমি রোস্তমের পুত্র জালের পৌত্র আমার নাম ছোহরাব ইহা কহিয়া আপন হস্ত হইতে এই অঙ্গুরী আমাকে দিয়া কহিল যদি এই অঙ্গ সঙ্গে তোমার গর্ব্ভ হইয়া সন্তানহয় তবে এইঅঙ্গুরী তাহাকে দিয়া পিতা পিতামহ আদির পরিচয়দিবা আমি ইরাণেযুদ্ধে জাইতেছি যদিবাঁচিয়া আসিপুনরায় সাক্ষ্যাতহইবে, পরে ইরানে যুদ্ধেগিয়া তোমার সঙ্গে যুদ্ধ করিয়া তোমার হস্তে প্রাণ ত্যাগ করে তাহার পর নিয়মিত সময়ে এই বরজুর ভূমিষ্ট হইল। একথা এপর্য্যন্ত প্রকাশ করিনাই অদ্য তোমাকে সকল বিববরণ কহিলাম; পরে আফরাছিয়াব বরজুকে মাঠেতে দেখিয়া অনেক ধন দিয়া ইরানে যুদ্ধেলইয়া গিয়াছিল তাহারপর আপনি সকলি জ্ঞাত আছ। রোস্তম ইহা শুনিয়া আহ্লাদিত হইয়া বরজুকে ভূমি হইতে তুলিয়া ক্রোড়ে লইয়া সির চুম্বন করিয়া অনেক প্রসংসা করিল, বরজু রোস্তমের পদধুলি লইয়া প্রণামকরিল রোস্তম বরজুকে ও সহরুকে সঙ্গে করিয়া বাটীতে লইয়া জালের সংগে সাক্ষ্যাত করাইল ও সকল বৃত্তান্ত বিস্তারিত জানাইয়া সকলে একত্রে আমোদ প্রমোদে থাকিল॥

## ছে ছন নাম্নী নর্ত্তকীর বিবরণ ॥

আফরাছিয়াব তূরানে গিয়া বরজুর নিমিত্তে বিস্তর ক্ষেদ করিল আর সর্ব্বদাই বরজুর প্রসঙ্গউর্থাপিত করিত, একদিন ছেছন নাম্নী একনিত্যকী বাদসাহকে ছেলাম করিয়া কহিল হে বাদসাহ আপনি রোস্তমের সংগে অনেকবারযুদ্ধ করিলেন কিন্তু এপর্য্যন্ত তাহারকিছুই করিতে পারেননাই যদি আমাকে আজ্ঞা করেন তবে আমি ইরানে গিয়া অনায়াসে তাহাকে মারিয়া আসিতে পারি, বাদসাহ ইহা শুনিয়া অগাহ্য করিয়া হাস্য করিলেন, ছেছন তন্ত্র মন্ত্র জাদু অনেক প্রকার জানিত তাহার ক্রম বাদসাহকে কিছু দেখাইল, বাদসাহ সন্তুষ্ট হইয়া কহিলেন বলবান্ ও সেনা যত তোমার প্রয়োজন হয় তাহা লইয়া জাও, ছেছন কহিল জনেক দুইজন বলবান্ আমার সহিত দেন আর অধিক সেনার আবিস্যক নাই কিন্তু একথা কোনমতে প্রকাশ নাহয় বাদসাহ পিলছোম নামক এক প্রধান মল্লকে তাহার সংগে দিলেন আর নানাবিধ ধন ওতৈজসাদি তাহাকে দিয়া বিদায় করিলেন। ছেছন জাবলস্থানে গিয়া পথ প্রান্তের নিকট প্রান্তরে শিবির করিয়ারহিল, আর এক শিবিরফেলিয়া অতিতী সালারমত করিয়া পথিক লোছা ফের, অতিত যাহারা ঐ পথে গমনাগমন করিত তাহারদিগকে ভোজনাদি করাইতেলাগিল; কিছুদিন পরে রোস্তমের বাটীতে ইরানের সকল সরদারেরা নিমন্ত্রেনে আসিয়াছিল; এক দিবস সরদারেরা সভায় বসিয়া মদিরা পানে মত্ত হইয়া আত্ম শ্লাঘ্য করিতেই, তুছের সঙ্গে গোদরজের বচসা হইবার

তুছ কহিল আমি ফরেদুঁ বাদসাহের সন্তান ওই একজন পৌছ্য কারের পুত্র তুই আমার সঙ্গে সমান উত্তর করিস? তাহা শুনিয়া গোদরজ কহিল আমার পিতা পিতামহ ফরেদুঁকে আনিয়া বাদসাহ করিয়াছিল পূর্ব্বে ফরেদুঁকে কে জানিত; ইহা শুনিয়া তুছ রাগত হইয়া খঞ্জর লইয়া উঠিল, রহাম নামক এক সরদার তুছের হস্ত হইতে খঞ্জর লইল, তুছ অসন্তুষ্ট হইয়া ইরানে গেল। রোস্তম তৎকালে সে সভায় ছিলনা পরে ইহা শুনিয়া সভাস্থ সকলকে বহুবিধ তিরস্কার করিয়া কহিল গোদরজ তোমারদিগের কুটুম্ব আর তুছ সাদসাহজাদা এবং নিমন্ত্রীত তাহার মর্য্যাদা করিতে হয়, গোদরজ কে কহিল তুমি সিষ্টাচারি করিয়া আন অন্যার কথায় সে আসিবেনা, গোদরজ তুছকে আনিতে গেল এবং গেও রোস্তমকে কহিল তুমি জ্ঞাত আছ তুছ নির্ব্বোধ আর আমার পিতা গোদরজ অতিসয় ক্রোধি পাছে দুইজনে পথিমধ্যে পুনরায় বিবাদ উপস্থিত করে; অতএব আমি জাই ইহা কহিয়া গেও গেল। পরে জাল এই সকল কথা শুনিয়া কহিল তুছ বাদসাহজাদা মান্যব্যক্তি আমি গিয়া তাহাকে আনিব কহিয়া জালোও গেল, ওখানে তুছ ছৌছনের শিবির নিকট পৌঁছিয়া জিজ্ঞাসা করিল এখানে কে শিবির ফেলিয়াছে? তাহারা কহিল একজন সওদাগরের স্ত্রী এই স্থানে আছেন এবং অতিতী শালা করিয়াছেন, তুছ খুদিত ছিল এই কথা শুনিয়া অশ্ব রাখিয়া শিবির মধ্যে গিয়া দেখিল চন্দ্র তুল্যা এক যুবতী বসিয়াছে ॥

মৃগের সমান চক্ষু সে চন্দ্র বদনী।
নবিন যুবতী ধনী বিদ্যুত বরনী ॥
বসিয়া রয়েছে এক সর্য্যের উপরে।
হেনকালে তুছ তথা গেল ধীরে ধীরে ॥

তুছ কহিল তুমি কে কোথাহ ইতে এখানে কি নিমিত্ত্যে আইলে ছৌছন কহিল আমি এক নৃত্যকী ছিলাম একজন ধনি সওদাগর আমার উপর আসক্ত হইয়া বিবাহ করিয়া আমাকে সঙ্গেলইয়া বানিজ্য করিতে তুরানে গিয়াছিল কিয়ৎকাল পরে সেইস্থানে তাহার মৃত্যু হইল। আফরাছিয়াব আমার রূপ যৌবনের প্রসংসা শুনিয়া আমাকে লইয়া জাইতে লোক পাঠাইল সে বডজালাম ( অর্থাৎদুরাত্মা ) ইহাশুনিয়া তাহার দেশ হইতে পালাইয়া ইরানে আসিয়াছি। কয়খোছরোর দাশি হইয়া থাকা আফরাছিয়াবের বেগম হইতে আমার স্লাঘ্য তুছ মনেভাবিল। ইহাকে কয়খোছরোর নিকটে লইয়া জাইব ॥

---

## ছৌছনের নিকট তুছ প্রভৃতি সেনাপতিদিগর কয়েদের বিবরণ ॥

ছৌছন তুছকে আপননিকটে বসাইয়া মদিরা পান করাইয়া খাদ্য দ্রব্য আনিতে কহিল; তুছ মদিরা পান করিতে লাগিল যুবতী ক্রমে তুছকে মদিরাপানে অজ্ঞান করিয়া পিলছোম কে ডাকিল সে আসিয়া তুছকে বাঁন্ধিয়া স্থানন্তরে লইয়া রাখিল, ক্ষণেক কাল পরে গোদরোজ ঐ স্থানে আইল তাহাকেও ঐ রূপ তুছের নিকটে লইয়া, রাখিল এই রূপে

অনেকানেক সরদারকে কয়েদ করিল, পরে জাল সেইস্থানে আইলে তাহাকে আহার করাইতে অনেক যত্ন করিল সে না শুনিয়া অনেক ঘোটকের পদ চিহ্ন দেখিয়া সন্দিগ্ধ হইয়া তত্ প্রভৃতির সংবাদ কোন লোককে জিজ্ঞাসা করাতে সে কহিল চারি পাঁচজন অশ্বারোহি ক্রমে ক্রমে এখানে আসিয়াছিল তাহারা এই বাটীর মধ্যে আছে, জাল ইহা শুনিয়া অধিক সন্দিগ্ধ হইয়া রোস্তমকে আনিতে লোক পাঠাইয়া আপনি শিবির মধ্যে প্রবেশ করিয়া ছৌছন নৃত্যকীকে ধরিতে গেল সে ভীত হইয়া তথা হইতে অন্য গৃহে প্রবেশ করিয়া দ্বার বন্দ করিল, জাল দ্বার ভাঙ্গিতে উদ্যত হইলে পিলছোম সম্মুখে আসিয়া জালের সঙ্গে যুদ্ধ আরম্ভ করিল; দুইজনে অনেক যুদ্ধ করিয়া শ্রান্ত হইয়া পিলছোম এই সংবাদ আফরাছিয়াবকে অতি শীঘ্র সসৈন্য আসিতে, লিখিল এথানে রোস্তম বরজুকে সঙ্গে লইয়া সেইস্থানে পৌছিয়া জালের নিকটে সমস্ত জ্ঞাত হইয়া পিলছোমের সহিত যুদ্ধ আরম্ভ করিল ॥

---

আফরাছিয়াববের সহিত রোস্তমের যুদ্ধ বিবরণ

আফরাছিয়াব কথক গুলিন সেনা সঙ্গে করিয়া ঐ সময় আসিয়া পৌছিল তাহা দেখিয়া রোস্তম বরজুকে কহিল তুমি আফরাছিয়াবের সহিত যুদ্ধ করিতে গমন কর; আমি ইহার সঙ্গে যুদ্ধ করি, পিলছোমের সহিত কিয়ংকাল যুদ্ধ করিয়া অবশেষে গদা প্রহারে তাহাকে নিপাতকরিয়া আফরাছিয়াবের সঙ্গে যুদ্ধে চলিল। ছৌছন নৃত্যকী ইত্যবকাশে ওখানে

হইতে পলাইয়া আফ্রাছিয়াবের সৈন্য মধ্যে প্রবেশ করিল তখন জাল ও রোস্তম ও বরজু একত্র হইয়া আফরাছিয়াবের সৈন্য মধ্যে পড়িয়া অনেক সেনা নষ্ট করিল তখন তুরানি সেনা সমূহ একত্রিত হইয়া ইহারদিগকে বেষ্টন করিলে এই সময়ে কয়খোছরো তুছ প্রভৃতি কয়েদ ও রোস্তমের যুদ্ধের সংবাদ পাইয়া আপনি কথক গুলিন সৈন্য লইয়া সেইস্থানে আসিয়া রোস্তমের নিকটে গিয়া তরানিদিগের সঙ্গে যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হইল; তাহা দেখিয়া পিরানওএছা আফরাছিয়াবকে কহিল একজন স্ত্রীলোক বিশেষতঃ বেশ্যার কথায় আপন সৈন্য ক্ষয়করা উচিত নহে; একা রোস্তমের যুদ্ধেই আমরা অসক্ত তাহাতে জাল ও বরজু এই তিনজনে আমার দিগের সেনাগণকে সংহার করিতেছে, অতএব আপনকার এস্থানে থাকা মত নহে প্রস্থান করা শ্রেয়, বাদসাহ কহিলযদি চিরকাল পালাইয়া বেড়াইবে তবে আমারদিগের বাদসাহি করা কিপ্রকারে হয়? কয়খোছরো আসিয়াছে তাহারসঙ্গে আমি যুদ্ধ করি ইহাবলিয়া রণস্থলে আসিয়া কয়খোছরোকে কহিল আইস তোমায় আমায় যুদ্ধ করি সেনা নষ্ট করিবার আবিশ্যক কি? জাহাকে ঈশ্বর অনুকুল হইবেন সেই জয় যুক্ত হইয়া বাদসাহ হইবেক। কয়খোছরো ইহা শুনিয়া যুদ্ধ করিতে প্রস্তুত হইলেন তদ্দৃষ্টে সেনাপতিগণেরা নিষেধ করিল তাহা গ্রাহ্য নাকরাতে তাহরা রোস্তমকে জানাইল সে আসিয়া কহিল আফরাছিয়াব যুদ্ধ বিসয়ে অতি নিপুন এবং নানাবিধ কৌশলাদি ওজানে আমি অনেকবার তাহারসহিত যুদ্ধ করিয়াছি নানামত ও কৌসল করিয়া তাড়িত করিয়াছি

কিন্তু কখন ধৃত করিতে পারিনাই; আমি ও ফরামোরজ ও বরজু বর্ত্তমান থাকিতে আপনকার জাওয়া উচিত নহে; কয়খোছরো রাগত হইয়া কহিলেন যে আমাকে তুমি কাপুরুষ জ্ঞানকরিয়াছ ইহাকহিয়া যুদ্ধেচলিলেন, তখন রোস্তম অশ্বের রজ্জু ধারণ করিয়া সঙ্গেচলিল এই সময়ে বরজু আসিয়া কয়খোছরোর রেকাবে চুম্বন করিয়া খঞ্জর হস্তে লইয়া কহিল রোস্তম প্রভৃতি সকল সরদারেরা আপনার নিকট অনেক কষ্ম করিয়াছে আমি নূতন আসিয়াছি আমার কর্ম্মের পরিচয় আপনকার নিকটে কিছু দিতে পারিনাই কিন্তু আপনার অন্নে প্রতিপালিত হইতেছি আমাকে এইবার যুদ্ধেপাঠাইয়া নম কের পরিচয় লইতে হইবেক এইরূপ অনেক প্রকার মিনতি করায় বাদসাহ তুষ্টহইয়া রোস্তমকেকহিলেন আমি বুঝিলাম বরজু তোমার সন্তান বটে, ইহা কহিয়া বরজূকে যুদ্ধে যাইতে আজ্ঞা করিলেন, তখন বরজু কয়খোছরোকে ছেলামকরিয়া অশ্বারূঢ় হইয়া আফরাছিয়াবের নিকট যুদ্ধ করিতে গেল; বরজুকে দেখিয়া সে রাগত হইয়া কহিল, ওরে দুরাত্মা আমি কি তোকে আমারসঙ্গেযুদ্ধকরিতে প্রতিপালন করিয়াছিলাম তুই কৃসক ছিল তোর পিতার নাম জানিন্ না আমি আনিয়া প্রতিপালন করিয়া যুদ্ধ সিখাইয়া প্রধান করিলাম এখন আমার সর্ম্মুখে যুদ্ধ করিতে আসিতছ তোর লজ্জা হইলনা বরজু কহিল আমাকে আ।নয়া তুমি যুদ্ধসিখাইয়াছ তাহাসত্য বটে কিন্তু আমি যেপ-হি লোক যখন জাহার নিকটে থাকি তখন তহার প্র মহঃ য়া ।তাহার শত্রুর সঙ্গেতাহার আজ্ঞায় সেই শত্রু যদি তাহার পিতা কিম্বা সহোদর ভ্রাতা হয়; কিম্বা

আমার পিতা ও ভ্রাতা সত্রুরের সেনা থাকে তাহাকেও নষ্ট করিতে হয় সেপাহির এইধর্ম্ম, আমি এখন কয়খোছরোর অধিন তুমি তাহার সত্রু বিশেষতঃ তুমি অতি দুরাত্মা আপন সহোদর আগরিরছ ও ছিয়াওস তোমার জামাতা এইদুই জনকে তুমি বিনা অপরাধে বধ করিয়াছো; কয়খোছরোর পিতা ছিয়াওস সেই কয়খোছরোর আজ্ঞায় তাহার পিতৃসত্রু তুমি তোমার মাথা কাটিতে আসিয়াছি। এই সকল দর্ব্বাক্য শ্রবণে আফরাছিয়াব রাগম্বিতহইয়া বরজুকে একতির মারিল সে তীর বরজুর সরিরে প্রবেশ করিল বরজু তীরখাইয়া গদা লইয়া আফরাছিয়াবকে মারিতে চলিল তাহা দেখিয়া আফ-রাছিয়াব এক স্থানে নাথাকিয়া চারিদিগে ভ্রমণ করিয়া তির মারিতে লাগিল, তখন বরজু ও তির নিক্ষেপ করিতে আরম্ভ করিল আফরাছিয়াবের তির শেষ হইল তখন গদা লইয়া ধাবমানহইল তাহা দেখিয়া হোমান কহিল হে বাদসাহ তুমি গদা যুদ্ধে বরজুকে পারিবেনা ? বরজু অতি বলবান্ অনা আসে তোমাকে নষ্ট করিবে; আর বরজু তোমার সম যোগ্য নহে ইহার সঙ্গে তোমার যুদ্ধ করা যুক্তি বিরুদ্ধ; যে হেতু তুমি ইহাকে মারিলে একজন নিস্কামি সামণ্য সেপাহিকে মারিবা মাত্র। ঈশ্বর এমন নাকরুণ যদি বরজু তোমাকে মারে তবে তুরানের দেশ ও বাদসাহি সমভুম হইবেক। কয়খোছরো তোমার সমযোগ্য তাহার সহিত যুদ্ধ হইলে আমি বারণ করিতাম না, আফরাছিয়াব কহিল এ কথা যথার্থ কিন্তু বরজু এখন কয়খোছরো অপিক্ষা আমার প্রবল সত্রু হইয়াছে কারণ ইহাকে আমি বন হইতে আনিয়া প্রতিপালন করিয়া একজন

প্রধান করিলাম এখন আমার সঙ্গেযুদ্ধ করিতে আসিয়াছে এ কোন মতে সহ্য হয়না। হোমান অনেক বুঝাইয়া বাদসা হকে বরজুর সহিত যুদ্ধে ক্ষেন্ত করিয়া আপনি সকল সেনা সঙ্গেলইয়া বরজূকে এককালীন চতুর্দ্দিগে বেষ্টন করিল্ল তাহা দেখিয়া রোস্তম ফরামোরজকে লইয়া বরজুর সাহায্যার্থে অগ্রসর হইল, এবং কয়খোছরো আপন সৈন্য লইয়া সেই স্থানে আইলেন ইহা দেখিয়া আফরাছিয়াব ভয়ে পলায়ন করিল, তখন কয়খোছরো জয়ি হইয়া ইরানেযাত্রা করিলেন রোস্তম কয়খোছরোকে অনেক মিনতিকরিয়া কহিল আমার আস্রয় অতি নিকট একবার অনুগ্রহ করিয়া পদার্পণ করিতে হইবেক, কয়খোছরো সর্ম্মত হইয়া রোস্তমের বাটিতে আইলেন; পরে জাল ও রোস্তম বাদসাহকে অনেক উপঢৌকন প্রদানানন্তর আহারাদি করাইয়া পরে রোস্তম কহিল আমি বৃদ্ধ হইয়াছি আমার পুত্র ফরামোরজ ও পৌত্র বরজু ইহারা দুইজন সর্ব্বদা নিকটে উপস্থিত থাকিবেক আপনি যখন যে আজ্ঞা করিবেন তাহা করিবেক, আমি বৃদ্ধ বার্দ্ধক্য করি ঘরে বসিয়া আসির্ব্বাদে নিযুক্ত থাকি কিন্তু যখন আমাকে সরণ করিবেন শ্রুত মাত্র নিকট পৌছিয়া যথা সক্তি কর্ম্ম করিব, কয়খোছরো এতদ্বাক্যে তুষ্টহইয়া গজব ও হরি এবংনিমরোজ এইতিন দেশ রোস্তমকে, ফরামোরজ, বরজুকেদিলেন কিয়ৎ দিবস রোস্তমের আলয়ে থাকিয়া জাল ও রোস্তমকে অনেক সমাদর করিয়া তাহারদিগের সমীপে বিদায় হইয়া আপন রাজধানি ইরানে আসিয়া পরমসুখে রাজ্যকরিতে লাগিলেন

## পুন যুদ্ধে পিরানওএছা ও হোমানের ॥

আফরাছিয়াব তুরানে আসিয়া তাণ্ডার হইতে সেনাগণকে অনেক ধন দিল আর অনেক নূতন সেনা চাকর রাখিল; কয় খোছরো এই সংবাদ শুনিয়া গোদরজকে কহিলেন এইবার যুদ্ধে তোমার দিগের পরিশ্রম করিতেহইবে কারণ রোস্তমকে এবার ক্লেস দেয়া হইবেকনা, তখন গোদরোজ তুছ ও গেও ও বেজনকে লইয়া তাবত সেনা ও সেনাপতিদিগকে সঙ্গে লইয়া তুরানে যাত্রা করিল, এবং ফরামোরজকে কহিলেন তুমি হিন্দুস্থানের অধিন দেশ সকল সাসিত করিয়া চিন ও খোতন এই দুই দেশ অধিকার করিয়া তুরানে আসিয়া গোদরজের সহিত মিলিত হইয়া আফরাছিয়াবকে আবদ্ধ করিবা ইহা কহিয়া ফরামোরজকে হিন্দুস্থানে পাঠাইলেন আফরাছিয়াব শুনিল যে গোদরজ অনেক সেনা সঙ্গে করিয়া যুদ্ধ করিতে তুরানে আসিতেছে; এই প্রযুক্ত হোমানকে অনেক সৈন্য সমভিব্যাহারে যুদ্ধে পাঠাইল। আর পিরানওএছাকে হোমানের সাহায্যার্থে অনেক সেনা সঙ্গে দিয়া তাহার পশ্চাৎ পাঠাইল, যখন উভয় পক্ষের সেনায় সাক্ষাত হইল হোমান রণস্থলে উপস্থিত হইয়া যোদ্ধাগণকে যুদ্ধে আহ্বান করিল গোদরজ বেজনকে যুদ্ধ করিতে পাঠাইলেন, তখন দুইজনে তির; তলওয়ার, গদা লইয়া কিয়ৎকাল যুদ্ধকরিয়া পরিশেষে বেজন হোমানকে শূলে বৃদ্ধ করত ভূমেফেলিয়া মস্তক ছেদন করিল তদ্দৃষ্টে হোমানের সেনাগণ ভঙ্গ দিয়া পিরানওএছার নিকটে গেল; পিরানওএছা পুত্রশোকে কাতর হইয়া অনেক

রোদন করিল? কিঞ্চিৎ কাল পরে সকল সেনা একত্র করিয়া গোদরজের সহিত যুদ্ধ করিতে আইল, গোদরজ আপন সৈন্য গণকে লইয়া পিরানওএছার সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলে বহুদিবস পর্যন্ত উভয় পক্ষীয় সেনায় যুদ্ধ হইতে লাগিল। গোদরোজ কয়খোছরোকে একপত্র লিখিলযে হোমান মারা পড়িয়াছে এখন পিরানওএছা অনেক সেনা সহযোগে আমার সহিত যুদ্ধ করিতেছে অতএব আপনি রোস্তমকে সেনা সম-ভিব্যাহারে আমার সহাযার্থে পাঠাইবেন; কয়খোছরো গোদরজের এই পত্র পাইয়া অনেক সেনা গোদরজের নিকট পাঠাইলেন আর রোস্তমকে লিখিলেন যে তুমি গোদরজ সাহায্যর্থে তুরানে জাইবা ক্রামগত দুইবৎসর পর্যন্ত গোদ-রজের সহিত পিরানওএছার ক্রমাগত যুদ্ধ হওয়াতে উভয় পক্ষীয় সেনা বিনষ্ট হইতে লাগিল, আর ইরান ও তুরান দুই বাদসাহ সর্ব্বদাই সৈন্য পাঠাইতে লাগিল। রোস্তম তুরানে আগতহইবার পূর্ব্বে গোদরজ পিরামওএছাকে সংহারকরিলে তাহার সেনাগণেরা ভয়পাইয়া সকলে পলায়নকরিল। আফ-রাছিয়াব. পিরানওএছার সহায় জন্য আসিতেছিল পথি মধ্যে ঐ সকল পলায়িত সেনা সঙ্গে সাক্ষ্যাত হইলে তাহারা কহিল যে গোদরজের সহিত পিরানওএছা যুদ্ধ করিয়া মারা গিয়াছে। আফরাছিয়াব পিরানওএছার মৃত্যু সংবাদ শুনিয়া মৃতুবৎহইয়া ভূমেপড়িল, কিঞ্চিৎকাল বিলম্বে চৈতন্য পাইয়া অনেক রোদন করিয়া কহিল আমার বাদসাহি আর থাকিবেনা পিরানওএছা ও তাহার পুত্র হোমান এই দুইজনে রোস্তমের সহিত সর্ব্বদা যুদ্ধ করিয়া এতদ্রাজ্য রক্ষা করিয়া

ছিল আর তুরানে এমত বলবান্ কেহনাই যে রোস্তমকে যুদ্ধে পরাজয় করে, আফরাছিয়াব এইরূপ অনেক বিলাপ করিয়া সৈন্যমধ্যে এমত দৃঢ়তর প্রতিজ্ঞা করিল যে আমি যে পর্য্যান্ত পিরানওএছার হন্তাকে নামারিব সেপর্য্যান্ত আমার আহার নিদ্রা বিশ তুল্য হইল ॥

কয়খোছরোর নিকটে সয়দার গমন ॥

আফরাছিয়াব পিরানওএছার ও হোমানের ও আপনার সমিভ্যারি এইতিন সৈন্য একত্রিত করিয়া আপন পুত্র সয়দাকে সেনাপতি করিয়া যুদ্ধ করিতে আইল, এখানে কয়খোছরো পিরানওএছার মৃত্যু সংবাদ পাইয়া আপনি অনেক সেনা সঙ্গেলইয়া জয়হুন নদীপার হইয়া তুরানের অন্তপাতি দেশ ছমরকন্দ ও বোখারা ও অন্য অন্য অনেক নগর অধিকার করিয়া আপন পক্ষীয় লোক রাখিয়া আপনি রণস্থলে আইলেন। আফরাছিয়াব তাহা শুনিয়া সয়দাকে অনেক সেনা সঙ্গেদিয়া যুদ্ধে পাঠাইল, কয়খোছরো এইকথা শুনিয়া কয়কাউছের জামাতা লহরাস্প তাহাকে কয়খোছরো পুত্র তুল্য স্নেহকরিত অশীতি সহস্র সেনা সঙ্গেদিয়া সয়দারসহিত যুদ্ধে পাঠাইল, এমত সময়ে রোস্তম আসিয়া কয়খোছরোর নিকট পৌছিল কয়খোছরো রোস্তমকে কহিলেন যে লহরাস্প বালক তুমি ইহার পৃষ্টপূরক থাক, রোস্তম স্বীকার করিল; আফরাছিয়াব রোস্তমের আগমন সংবাদ শুনিয়া আর এক লক্ষ্য সেনা আনাইয়া আপনিও সয়দার সঙ্গেআসিয়া মিলিত হইল, পরে সয়দাকে দূতস্বরূপ কয়খোছরোর নিকটে কহিয়া

পাঠাইল আমি তোমার মাতামহ তুমিআমার দৌহিত্র তোমার
আমার যে সর্ম্মন্ধ ইহাতে এরূপ সত্রুতাকরা অনোচিত অত
এবতুমি যে রূপ স্নেহ পাত্র তদনুরূপ থাক তোমার যতধন ও
রাজ্য লইতে বাঞ্ছা থাকে তাহা আমি দিতেপ্রস্তুত আছি এবং
আমার এক পুত্রকে তোমার নিকটে রাখিব কিন্তু তুমি কখন
মনেএরূপ জ্ঞান করিবানা যেআমি যুর্দ্ধে ভিত হইয়া এরূপ কহি
লাম কেবল তুমি আমার সন্তান বলিয়া স্নেহপ্রযুক্ত কহিতেছি
নতুবা আমার এত সৈন্য আছে যে চিরকাল তোমার সঙ্গে
যুর্দ্ধকরিতে পারি; আর যদি সন্ধিকরা মতনাহয় তবে আমার
পুত্রে সয়দার সঙ্গে তুমি যুর্দ্ধ করিবা, সৈন্যদিগের অনর্থক নষ্ট
করিবার আবিশ্যক নাই, যদি তুমি সয়দাকে মারিতে পার
তবে তুরানের বাদসাহি তোমার হইবে আমি রাজ্য অভিলাস
ত্যাগ করিয়া কোনস্থানে বসিয়া ঈশ্বরের ভজনা করিব। তদ
নন্তর সয়দাকে গোপনে কহিল যদি কয়খোছরোর সঙ্গে
কথপ কথন করিবার সময় যদি কয়খোছরোকে নষ্ট করিতে
পার তবে আর কোন উৎপাত থাকেনা, এই রূপ কহিয়া
সয়দাকে কয়খোছরোর নিকট পাঠাইল। পরে সয়দা কয়-
খোছরোর সমীপে আইলে কয়খোছরো জথেষ্ট সমাদর
পূর্ব্বক আসিবার কারণ জিজ্ঞাসা করিল? সয়দা উপরোক্ত
সকল বিবরণ বিস্তারিত করিয়া কহিবায় কয়খোছরো কহিল
আপনি অদ্যবাসায় গিয়া বিশ্রামকর আমি বিবেচনা করিয়া
ইহার উত্তর পাঠাইব। সয়দা এই কথা শুনিয়া আপন বাসায়
গমন করিল। কয়খোছরো সভাস্ত সকল লোককে কহিলেন

যে আমি সয়দাকে শীঘ্র বিদায় করিলাম তাহার কারণ এই তাহার মুখ চক্ষু দেখিয়া আমার বোধ হইল যে এখনি আমাকে নষ্ট করিবেক, আমাকে আফ্রাছিয়াব কহিয়া পাঠাইয়াছে যদি সন্ধি করি তবে অনেক ধন ও রাজ্য দিবেক আর যদি তাহা না করি তবে সয়দার সঙ্গে যুদ্ধ করিতে কহিয়াছে; অতএব আমার যুদ্ধের সজ্জা ও অস্ত্র সকল আনীত কর এখনি আমি সয়দার সহিত যুদ্ধ করিতে যাইব; রোস্তম প্রভৃতি সরদারেরা কহিল এ অনোচিত কর্ম্ম কারণ আফ্রাছিয়াব আপন পুত্রকে এই ছল করিয়া পাঠাইয়াছে যদি সয়দা তোমাকে মারে তবে ইরান তাহার হস্তগত হইবে আর তুমি সয়দাকে মারিলে সে কখন রাজ্যত্যাগ করিবেনা বরঞ্চ রাগত হইয়া যুদ্ধ করিবে কেবল তোমাকে ছলে কৌসলে মারিতে সয়দাকে পাঠাইয়াছে, আফ্রাছিয়াব আপন পুত্রের নিমিত্ত কখন ভাবনা করেনা পরদিন কয়খোছরো সয়দাকে অনেক সমাদর করিয়া কহিলেন তোমার পিতা যেই কথা কহিয়া পাঠাইয়াছেন তাহার উত্তর আমি পশ্চাত পাঠাইব আপনি এইক্ষণে বিদায় হও, সয়দা কহিল আমি তোমার সঙ্গে যুদ্ধ করিতে আসিয়াছিলাম; কয়খোছরো কহিলেন অদ্য থাক কল্য তোমার সহিত যুদ্ধ করিব। পরে এই বিবরণে পত্র লিখিলেন যে তুমি আমাকে অনেক ধন ও দেশ দিব বলে লোভ দেখাইয়াছ তাহাতে আমার প্রয়োজন নাই আমি কেবল আমার পিতৃ সত্রুকে মারিব আপনি জানিবেন; এবং তোমার পুত্র সয়দা আমার সঙ্গে যুদ্ধ করিতে প্রার্থনা করিয়াছে কল্য তাহার সঙ্গে যুদ্ধ করিব তাহাতে যাহার কপালে যাহা ঘটে তাহাই

হইবে এই পত্র কারনের হস্তে দিয়া কহিলেন তুমি সয়দাকে জানাইয়া তাহার লোক লইয়া আফরাছিয়াবের নিকটে যাত্রাকর; কারণ ঐ পত্র লইয়া সয়দার নিকট পুন উপস্থিত হইলে সে কহিল কল্য আমার সঙ্গে কয়খোছবোর যুদ্ধ হইবে তুমি অদ্য থাক যুদ্ধ সেস হইলে তথায় পাঠাইব ॥

কয় খোছরোর সহিত সয়দার যুদ্ধ ॥

কারণ আসিয়া কয়খোছরোকে এই কথা জানাইল পরদিবস প্রাতে সয়দা যুদ্ধ সজ্জা করিয়া রণস্থলে উপস্থিত হইল এখানে কয়খোছরো যুদ্ধসজ্জা করিয়া উক্তস্থানে আইলে সয়দা কহিল তোমায় আমায় মল্লযুদ্ধ করি অস্ত্র যুদ্ধেরআবিস্যক নাই, ইহা কহিয়া তখন উভয়ে কিঞ্চিৎকাল মল্লযুদ্ধ করিলেন কিন্তু সয়দা কোন প্রকারেই কয়খোছরোকে ভূমে ফেলিতে পারিল না, কয়খোছরো সয়দাকে ভূমে নিক্ষেপ করিয়া খঞ্জর দ্বারা তাহার বক্ষস্থল বিদীর্ণ করিয়া আজ্ঞা করিলেন যে সয়দার দেহ বাদসাহি রিতীমত কফন বাক্সতে রাখিয়া আফরাছিয়াবের নিকটে পাঠাইয়া দেও পরদিবস কারণ পত্র লইয়া আফরাছিয়াবের নিকট উপস্থিত হইয়া কয়খোছরোর পত্র দিল সেই সময়ে সয়দার সমভিব্যাহারি লোকেরা আসিয়া সয়দার মৃত্যুসংবাদ শুনাইল; আফরাছিয়ার অনেক বিলাপ ও রোদন করিলেন পরে তাবত সৈন্য সঙ্গে করিয়া কয়খোছরোর সহিত যুদ্ধ করিতে যাত্রা করিল কারনের সঙ্গে আলাপ করিলনা; আফরাছিয়ার আসিয়া কয়খোছরোর সেনাগনের সহিত অতি ঘোরতর যুদ্ধ করিল

তাহাতে রক্তের স্রোত চলিল উভয়েরঅনেক সেনা নষ্ট হইল পরিশেষে কয় খোছরোর যুদ্ধে জয় হইবায় তুরানের সরদারেরা আফরাছিয়াবকে ধৃত করিয়া লইয়া পলায়ন করিল ।।

---

## আফরাছিয়াবের মৃত্যু।

পরদিবস কয়খোছরো যুদ্ধে জয়যুক্ত স'বাদ কয় কায়ুছকে লিখিলেন আপনি সসৈন্য হইয়া আফরাছিয়াবকে ধরিবার নিমিত্ত্য তাহার পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া যখন চিন দেশে পৌছিলেন তখন চিনের বাদসাহ অনেক সৈন্য দেখিয়া ভীত হইয়া উপঢৌকন স্বরূপ নানারত্ন পাঠাইল, কয়খোছরো তাহার দূতকে কহিলেন তোমার বাদসাহ আফরাছিয়াবকে যদি এখানে আশ্রয় দেয় তবে আমি তাহার বাদসাহি সহিত তাহাকে নষ্ট করিব, চিনের বাদসাহ এইকথা শুনিয়া আপন দেশে ঘোসনা করিল যে কেহ আফরাছিয়াবকে স্থানানা দেয়, আর যদি কোনস্থানে লুকাইয়া থাকে সন্ধান করিয়া তাহাকে ধৃতকরে। আফরাছিয়ায় এই ঘোসনা শুনিয়া অতিভিতুহইয়া বনমধ্যে পলায়ন করিল কয়খোছরো ইহা শুনিয়া ঐ বনে প্রবেশ করিল। আফরাছিয়াবের সঙ্গে যে২ লোকছিল তাহারাও ক্রমে আফরাছিয়াবকে পরিত্যাগ করিয়া পালাইতে লাগিল, আফরাছিয়াব নানাস্থানে ভ্রমণ করিতে লাগিল কয়খোছরোও তাহার পশ্চাৎ২ ধাব মান হইল ক্রমে আফরাছিয়াব একাকি হইয়া এক পর্ব্বতের গুহার মধ্যে লুক্কায়িত হইয়া রহিল। সেই পর্ব্বতের কিছু দুরে হোম নামক ফরেদুঁ রসন্তান একজন; আফরাছিয়াব তাহার যে যৎ

কিঞ্চিৎ রাজ্য ও ধনাদিছিল তাহালইয়া তাহাকে দেশ হইতে দূর করিয়া ছিল, সেইব্যক্তি আফরাছিয়াবের ভয়েএক গুহায় থাকিয়া ঈশ্বরের ভজনাকরিত এবং আফরাছিয়াবের অমঙ্গল প্রার্থনা সর্ব্বদা করিত, রাত্রিকালে হোম ক্রন্দন ধ্বনি শুনিয়া মনোমধ্যে বিবেচনা করিল যে এখানে কেক্রন্দনকরে তাহার অনুসন্ধান করিতে চলিল, সেই সন্ধানুসারে তাহার নিকটে গিয়া শুনিল রোদন বদনে কহিতেছে এখন আমার তুরানের বাদসাহি কে লইল আর সেনাপতি সকল কোথায় গেল, আমি একাকি এই পর্ব্বতের গুহার মধ্যে রোদন করিতেছি। এই কথা শুনিয়া হোম জানিল যে আফরাছিয়াব ব্যতিক্ত অন্যের একথা নহে, ক্রমে সেই গুহার দ্বারে গিয়া স্পষ্ট সব্দ শুনিয়া নিশ্চয় জানিল যে আফরাছিয়াব বটে, তখন কিছু নাকহিয়া আপন গুহাতে আসিয়া নিদ্রা গেল। প্রাতে সূর্য্যাদয়ের পূর্ব্বে সেই গুহার দ্বারে আসিয়া কহিল হে পৃথিবীর বাদসাহ ? গর্ত্ত হইতে বাহিরে আইস আমাকে তোমার সহায় নিমিত্তে ঈশ্বর পাঠাইলেন, এই কথা শুনিয়া আফরাছিয়াব আনন্দিত হইয়া মনোমধ্যে চিন্তা করিল বুঝি ঈশ্বর আমার প্রতি অনুকূলহইয়া কোনমহাত্মাকে আমার সাহয্যার্থে পাঠাইয়াছেন; হৃষ্টচিত্তে গুহা হইতে বাহিরেআইল হোম তাহাকে দেখিয়া তৎক্ষণাৎ তাহার মস্তকে এক মুষ্টিকাঘাত করিল, তখন আফরাছিয়াব বিস্মিত হইয়াকহিল যে ঈশ্বর তোমাকে আমার সাহায্যার্থে পাঠাইয়াছেন কহিলে তবে আমাকে অকারণ কেন মুষ্টিকাঘাত করিলে তুমি কে এবং কোথা হইতে এই বন মধ্যে আইলে ? হোম কহিল তুমি আমাকে

এখন চিনিতে পার না; আমি ফরেদুর সন্তান আমার নাম হোম তুমি আমার রাজ্য লইয়া আমাকে দেশ হইতে দূর করিয়া দিয়াছিলা তদবধি আমি এই পর্ব্বতে থাকিয়া সর্ব্বদা ঈশ্বরের নিকট অহরহ প্রার্থনা করিতেছি সীঘ্র তোমার সর্ব্ব নাস হউক; ঈশ্বর অনুগ্রহ করিয়া এতদিনে অদ্য আমার মানস পুর্ণ করিলেন ইহা কহিয়া পুনরায় প্রহার করিতে আরম্ভ করিলে উভয়ে অনেকক্ষণ মল্লযর্দ্ধ করিল, কিন্তু আফরাছিয়াব বৃর্দ্ধ তাহাতে অনাহারি পথ শ্রমে; ভাবনায়; ভয়ে; দূর্ব্বল হইয়াছিল। হোম যুবক তাহাকে ভূমে ফেলিয়া তাহার দুই হস্ত বন্ধন করিয়া কহিল তুই কাহার সহিত যুর্দ্ধে হারিয়া এখানে আসিয়াছিস তাহা বল; আফরাছিয়াব আপনার সম্দয় বৃতান্ত হোমকেকহিল হোমতাহাশুনিয়া আফরাছিয়াবকে টানিয়া কয়খোছরোর সমীপে লইয়াযায় তখন আফরাছিয়াব কহিতে লাগিল যে আমাকে কয়খোছরোর নিকট না লইয়া তুমি এইখানে নষ্ট কর হোম তাহা নাশুনিয়া আফরাছিয়াবকে কয়খোছরোর নিকট লইয়া চলিল, পথমধ্যে হোমকে অনেক মিনতি করিতে লাগিল তাহাতে হোম আফরাছিয়াবের বন্ধন সৈথিল্য করিয়া দিল যখন এক নদীর তীরে উপস্থিতহইল তখন আফরাছিয়াব হোমের হাত হইতে পলাইয়া ঐ নদীমধ্যে পতিত হইয়া জলস্তম্ভন বিদ্যা দ্বারা জলমধ্যে লুকাইয়া রহিল। হোম ঐ নদীর ধারে ধারে জল মধ্যে তত্ত্ব করিতে লাগিল; এই সময় গোদরজ ও গেও সেই স্থান দিয়া জাইতেছিল তাহারা হোমকে তপস্বির ন্যায় জল মধ্যে কিছু অন্বেসন করিতেছে দেখিয়া কহিল ওহে তপস্বি তুমি জল

মধ্যে কি অন্যাসক্ত করিতেছ, সেকাহল আমর নাম হোম কর বংশোদ্ভব আমার যথা সর্ব্বস্য আফরাছিয়াব, লইয়া দেশ হইতে দূর করিয়া দিয়াছিল এ নিমিত্ত আমি অমুক পর্ব্বতের এক গুহার মধ্যে ঈশ্বরের আরাধনা করিতাম আর আফরা-ছিয়াবের সর্ব্বনাস প্রার্থনা করিতাম, ঈশ্বর আমাকে অনুকুল হইয়া আফরাছিয়াবকে আমার নিকটে পাঠাইয়াছেন গতো রাত্রে আমি যে স্থানে থাকিতাম সেইখানে আফরাছিয়াব উপস্থিত হইয়া এক গুহায় বসিয়া রোদন করিতেছিল, আমি তাহা শুনিয়া সেইখানে গিয়া তাহাকে চিনিয়া তাহার হস্ত বন্ধন করিয়া কয়খোছরোর নিকট লইয়া জাইতে ছিলাম এইখানে আসিয়া আমার হস্ত হইতে পালাইয়া এই নদীর জল মধ্যে লুকাইয়াছে তাহাকেই তত্ত্ব করিতেছি, গোদরজ ও গেও এই কথা শুনিয়া সীঘ্র জাইয়া কয়খোছরোকে কহিল কয়খোছরো ইহা শুনিয়া সেইস্থানে আসিয়া সমস্ত কথা হোমের নিকটে জ্ঞাত হইয়া করছেওজকে আনাইয়া তাডনা ও দূর্ব্বাক্য কহিতে লাগিল তখন চিৎকার করিয়া রোদন করিতে লাগিল তাহা শুনিয়া আফরাছিয়াব জল হইতে ভাসিয়া অনেক খেদ ও রোদন করিতে আরম্ভ করিল এইসময়ে হোম কমন্দ ফেলিয়া আফরাছিয়াবকে জল হইতে তটে আনিয়া কয়খোছরোর নিকটে সমর্পণ করিলে কয়খোছরো তৎক্ষণাৎ তাহার মস্তক ছেদন করিলেন পরে করছেওজকে দুইখণ্ড করিয়া ছেদন করিলেন তৎপরে সেখান হইতে তুরানে গিয়া তথায় নিয়ম নির্দ্ধারিত করিয়া রোস্তমকে অনেক ধন রত্ন বস্ত্র হয় হস্তি দিয়া সমাদর পূর্ব্বক জাবলস্তানে পাঠাইয়া

আপনি ইরানে আইল, কয়কাউছ ইহা শুনিয়া অগ্রসর আসিয়া কয়খোছরোকে ক্রোড়ে লইয়া আলিঙ্গন করিয়া ঈশ্বরকে ধন্য বাদ দিয়া কহিল যে অদ্য আমার ছিয়াওসের সোক নিবারণ হইল, এখন আমাকে ঈশ্বর অনুগ্রহ করিয়া অনিত্য সংসার হইতে নিত্যস্থানে লউন, কিছুদিন কয়কাউছ ভজনাদি করিয়া স্বর্গে যাত্রা করিলেন, কয়কাউছ একসত পঞ্চাস বৎসর বাদসাহি করিয়া স্বর্গে জান; তদনন্তর কয়খোছরো নিষ্কণ্টকে ইরানের তক্তে বসিয়া প্রজাদিগের প্রতিপালন ও ইরানের ওতুরানের ব্যক্তিদিগকে দানে মানে সন্তোষ করিয়া পরম সুখে বাদসাহি করিতে লাগিলেন ॥

---

লহরাস্পর বাদসাহি কয়খোছরোর অদর্শন ॥

কয়খোছরো ষষ্টিবর্ষ বাদসাহি করিয়া সমস্ত কর্ম্মের ভার মন্ত্রিগণকে অর্পণ করিয়া আপনি দিবারাত্র একান্তচিত্রে ঈশ্বরের ভজন সাধনে মন নিবেশ করিলেন। প্রধান প্রধান ব্যক্তি সকল ও মন্ত্রি বর্গ একত্র হইয়া বাদসাহকে কহিল আপনি এক প্রহর কাল রাজকর্ম্ম করুণ অবশিষ্টকাল ভজনা করুণ তাহাতে তিনি কহিলেন এক মন হইতে দুই কর্ম্ম হইতে কিরূপে পারে আর পৃথিবীর সুখ দুঃখ সকল ভোগ করিয়া এইক্ষণে বিরক্ত হইয়া ঈশ্বরারাধনায় মন সংযোগ করিয়াছি এখন তিনি অনুকূল করুণ এই বাঞ্ছা এই যে অনিত্য সংসার ত্যাগ করিয়া নিত্যধামে গিয়া পরম সুখে বাস করি এইকথা শুনিয়া সকলে বিমর্ষ হইয়া জাল ও রোস্তমকে সমস্ত বিবরণ বিস্তারিত করিয়া লিখিল যে বাদসাহ সকল কর্ম্ম

ত্যাগ করিয়া নিজ্জন স্থানে একা দিবা রাত্র বসিয়া থাকেন আমরা কিছু বুঝিতে পারিনা অনুভব হয় ইরানের দুর্ভাগ্য অতি ত্বরায় ঘটীবেক, আপনারা দুইজনে পত্র পাঠ এইস্থানে আসিয়া বিবচনা করিয়া জাল ও রোস্তম এই পত্র পাইবা মাত্র তৎক্ষনাৎ যাত্রা করিয়া ইরানে আসিয়া কয়খোছরোর সহিত সাক্ষ্যাৎ করিবার নিমিত্ত্যে সংবাদ পাঠাইল কয়খো-ছরো ইহা শুনিয়া ঐ দুইজনকে সেই নিৰ্জ্জন স্থানে ডাকাইয়া আসিবার কারণ জিজ্ঞাসা করিলেন, তাহারা কহিল ইরানের বাদসাহির কোন ভয়ানক সমাচার লোকমুখে শুনিয়া আপনকার নিকট জানিতে আসিয়াছি। কয়খোছরো কহিলেন এই অনিত্য সংসারে আমার বিরক্তী জর্ম্মিয়াছে পরকালের কর্ম্ম কিছু করিব; জাল কহিল পরকালের কর্ম্ম পৃথিবীতে দান দ্বারা যেমত হয় এমত জপ, তপ; ভজন সাধনে হয় না, কয় খোছরো কহিল সে কথা সত্যবটে কিন্তু আমি আর মনুস্যকে দেখিতে ইচ্ছা করিনা পরম পরাৎপর পরমেশ্বরের প্রেম আমর মনে এমত্ত উদয় হইয়াছে যেঅন্য কোনকর্ম্মে আরমনঃ সংযোগ হয়না; এবং গত্তো রাত্রে আমার কর্ন্নে একদৈববাণি প্রবিষ্ট হইয়াছে যে সীঘ্র আমাকে নিত্যধামে জাইতে হইবে ইহা শুনিয়া রোস্তম নিরব রহিল জাল কহিল যদি আজ্ঞাহয় তবে আমিও আপনকার মতালম্বি হইয়া ঈশ্বরারাধনা করি আপনার সংসর্গে থাকিলে আমারোও পরকালে ভাল হইতে পারেবাদসাহ কহিল আমি এখানে আর থাকিব না কোন নির্জন স্থানে গিয়া যে পরমেশ্বর আমাকে প্রাণদান করিয়া

ছেন তাঁহাকে প্রাণ অর্পণ করিব। জাল ও রোস্তম এই কথা শুনিয়া রোদন করিয়া বাহিরে আইলেন, তাহারদিগের প্রমুখাত ইহা জ্ঞাত হইয়া সকলে বিস্তর রোদন করিতে লাগিল পর দিবস প্রাতে কয়খোছরো নিজালয় হইতে বাহিরে আসিয়া অপারণ সাধরণ ব্যক্তিকে ডাকাইয়া সকলের সম্মান করিয়া কহিলেন আমার কপালে পৃথিবীর সুখ দুঃখের ভোগ জাহা ছিল তাহা হইল এইক্ষণে তোমারা সকলে ধৈর্য্য হও আমি যেমত ২ কহি তাহার অন্যথা কেহ করিবানা; আর যে যেমত কর্ম্ম করিয়াছ তাহার পুরস্কার করি তোমারা সকলে গৃহণ কর ইহা কহিয়া বাটি হইতে বাহির হইয়া নগর প্রান্তে শিবির স্থাপন করিয়া ধন রত্ন বস্ত্রাদি আনাইয়া যথার্থযোগ্য ব্যক্তিদিগকে সপ্তাহ পর্য্যন্ত দানদ্বারা তুষ্ট করিলেন, এতদ্রূপ দান করিলেন যে ইরান রাজ্য ভিক্ষুক রহিলনা, পরন্তু পিতৃহিন বালক ওঅনাথা দিগেরপ্রতি এমত নিয়ম নির্দ্ধারিত করিলেন যে কোনমতে তাহারদিগের ক্লেশ নাহয়। তাহার পর কয়কাউছের জামাতা লহরাস্পকে ইরানের তক্তে বসাইয়া আবিসেক করিয়া সকল সরদারকে কহিলেন তোমরা যে রূপ আমার অজ্ঞাবহ থাকিতে সেইরূপ লহরাস্পের নিকটে সর্ব্বদা উপস্থিত থাকিয়া কর্ম্ম সম্পান্ন করিবা; অপরন্ত জাল ও রোস্তমকে জাবল, ও কাবল, নিমরোজ, এই তিন রাজ্য পূর্ব্বে জীবনোপায়ের নিমিত্তে দিয়াছিলেন সেই সকল দেশ তাহারদিগের একেবারেই দানকরিলেন, আর গেওকে প্রধান সেনাপতি করিলেন, তুছকে খোরছনিরাজ্যদিলেন, কাউছের পুত্র ফ্রুরামোরজ সর্ব্বোপরি শ্রেষ্ট মন্ত্রিত্বপদে অভিষিক্ত করিয়া

কহিলেন তুমিসর্ব্বদা লহরাস্পার সমীপে থাকিয়া সতপরামর্স প্রদান করিবা যাহাতে শিষ্টের পালন ও দুষ্টের দমন হয় তাহা করিবা, লহরাস্পকে আমি আপন পুত্র তুল্য জানি ইরানের বাদসাহের উপযুক্ত পাত্র; ইহা শুনিয়া সরদারেরা পরস্পর কহিলেন কয়কাউছের পুত্র ফরেমোরজ থাকিতে জামাতাকে বাদসাহ করা অনোচিত কর্ম্ম, জাল কহিল তোমরা কেন গোল মাল করিতেছ বাদসাহ বিবেচনা করিয়া জাহাকে উপ যুক্ত জ্ঞান করিয়াছেন তাহাকেই উত্তরাধিকারি করিয়াছেন তাহাতে তোমার দিগের কোনকথা কহিবার আবিস্যক নাই কয়খোছরো একথা শুনিয়া সমস্ত সরদারকে আপন নিকটে ডাকিয়া কহিলেন ফরেবোর্জ হইতে বাদসাহি কর্ম্ম সম্পন্ন হই বেনা আমি তাহা বিবেচনা করিয়া উত্তরাধিকারি করিয়াছি, লহরাস্প কুলে সিলে দানে মানে বুদ্ধে যুদ্ধে সর্ব্বাংসে উত্তম তাহা আমি বিধিমতে বিবচনা করিয়া বাদসাহিতে অভিষিক্ত করিয়াছি, সকলে এইকথা কয়খোছরোর মুখে শুনিয়া সুস্থির হইলেন। তাহার পর সরদারদিগকে কহিলেন গতো রাত্রে আমাকে ঈশ্বরের আদেশ হইয়াছে যে এই নগর প্রান্তে যে পর্ব্বত তাহার উপর এক সরোবর আছে সেই সরোবরে স্নান করিয়া প্রাণ ত্যাগ করিতে, অতএব তোমার দিগের নিকটে আমি বিদায় হইলাম তোমরা সকলে আপন২ আলয়ে গমন কর; ইহা শুনিয়া কতক গুলীন মনুস্য স্বস্থানে প্রস্থান করিল তখন বাদসাহ পদব্রজে ঐ পর্ব্বতোদ্দেশে গমন করিলেন এক দিনের পথ অবধি সরদারেরা ও আর২ অনেক লোক সঙ্গে গেল, পর দিবস কথক দূর গিয়া জাল ও রোস্তমকে বাটি

জাইতে আজ্ঞাকরিলেন তাহারা রিদায় হইয়া স্বদেশে প্রস্থান করিল; পণ্ডিত ও বিজ্ঞসকলে কহিতেলাগিল ঈশ্বরের উদ্দেষে প্রাণার্পণে পদব্রজে জাইতে এপয্যান্ত দেখা দুরে থাকুক কর্ণ্ণে কেহু কখন শুনে নাই, তদনন্তর ফরেবোর্জ গেও; তুছ, কেস্তু- হমকে বিদায় করিলেন তাহারা না শুনিয়া বাদসাহের সঙ্গে চলিল, যখন পর্ব্বতোপরি সরোবরের কুলে গেল বাদসাহ সেই সরোবরে স্নান করিয়া সঙ্গিগণকে কহিলেন বিচ্ছেদের সময় অ ত নিকট হইল আপনারা সীঘ্র প্রস্থান কর তাহারা এই বাক্য নাশুনিয়া দণ্ডয়মান রহিল পুনরায় বাদসাহ কহি- লেন আপনারা সীঘ্র এখান হইতে গমন কর নত্তবা অবিলম্বে ঝড বৃষ্টী বরফে সকলে প্রাণ হারাইবে, এই কথা কহিয়া পুন রায় বাদসাহ সরোবরের নিকট গিয়া অদর্শন হইলেন কেহু বাদসাহকে দেখিতে নাপাইয়া অনেক রোদন করিল কথক লোক তথা হইতে বাটীতে গমন করিল, ফরাবোর্জ কহিল কিঞ্চিৎ আহার করিয়া সকলে বাটী জাই ইহা কহিয়া জাহা সঙ্গেছিল সকলে আহার করিতে বসিলেন এই সময়ে ঘোর অন্ধকার হইয়া ঝড বৃষ্টি ও বরফ অতিসয় পডিতে লাগিল তাহাতে ফরেবোর্জ; তুছ, গেও, ও বেজন এই চারিজন সর- দার ও আর ২ অনেক লোক সেই বরফের দ্বারা তাহারদিগের প্রাণ বিয়োগ হইল অত্যল্প ব্যক্তি জাহারা কিছু দুরে ছিল তাহারা পালাইয়া আইল, গোদরজ কিঞ্চিৎ পূর্ব্বে আসিয়া পথিমধ্যে সকলের অপিক্ষা করিয়াছিলেন তাহারদিগের অনেক বিলম্ব দেখিয়া লোক পাঠাইল সে কথক দুর গিয়া যে দুই চারিজন আসিতেছিল তাহার নিকটে বরফের কথা

শুনিয়া সকলে আসিয়া গোদরজকে সমস্ত ঝড বৃষ্টি ও বরফে চাপা পডিয়া মরা গিয়াছে কহিল গোদরজ রোদন করিয়া তথা হইতে ইরানে আপন বাটিতে আইলেন ॥

আফরাছিয়াব বাদসাহের জলমধ্যে মগ্ন হইয়া থাকা ও কয়খোছরো তাহার ভ্রাতাকে দণ্ড করিলে ও দুর্বাক্য কহিলে আফরাছিয়াব জল হইতে উঠিলে তাহাকে নষ্ট করেণ তৎপরে কয়খোছরো কিঞ্চিৎকাল বাদসাহি করিয়া প্রকাশ করিলেন যে পরমেশ্বর আমাকে শাষ্টি করিয়াছেন তাঁহার নিকটে গমন করিব বলিয়া অহিক সুখ ত্যাগ করিয়া একপর্ব্বতোপরি গমন করিয়া অদরসণ হইলেন, তাঁহার সঙ্গে অনেক প্রধানেরা গমন করিয়াছিলেন, কিন্তু সকলে কথকদূর থাকিতে ফিরিয়া আইলেন; ঐ সকল প্রধানদিগের মধ্যে কেবল ফরেবোরজ, তুছ; গেও, ও বেজন এই চারি ব্যক্তি মাত্র সঙ্গে ঐ পর্ব্বত পর্য্যান্ত জাইয়া তাহারা ও হিম মধ্যে মগ্ন হইয়া প্রাণ ত্যাগ করেণ ইহাতে পষ্ট বোধ হইতেছে যে হিন্দুদিগের মহাভারথ গ্রন্থ ও মোছলমান দিগের সাহানামা পুস্তক এক গ্রন্থ উভয়ে আপনং ভাসায় রচনা করিয়া ব্যক্তিদিগের ভিন্যং নাম দিয়া বর্ণ্ণনা করিয়াছেন; দুর্যোধন জলে মগ্ন ছিল তাহাকে দুর্ব্বাক্য দ্বারা জল হইতে উত্তোলন করিয়া পাণ্ডবেরা নষ্ট করিলেন; আফরাছিয়াব জলেমগ্ন ছিল তাহাকে ও দুর্বাক্য দ্বারা তুলিয়া কয়খোছরো নষ্ট করিলেন, পরে পাণ্ডবেরা কিছু কালরাজ্য

ভোগ করিয়া স সরিরে সর্গারোহণ করিয়া কেবল মহারাজা যুধিষ্ঠির স সরিরে স্বর্গে গমন করেণ, ভিম; অর্জ্জুন; নকুল সহদেব, হিম মধ্যে মগ্নহইয়া প্রাণ ত্যাগ করেণ; সাহনামাতে ও সেই রূপ কেবল কয়খোছরো পর্ব্বতোপরি গমন করিয়া অদরশণ হণ; আর ফরেবোরজ; তুছ, গেও, বেজন এই চারি ব্যক্তি পূর্ব্বোক্ত মত হিম মধ্যে মগ্ন হইয়া প্রাণ ত্যাগ করেণ কিন্তু এই দুই গ্রন্থ এক কালিন কি এক গ্রন্থ প্রস্তুত হইসে তাহা দৃষ্টে আর এক গ্রন্থ কয় ইহা এইক্ষণে বিবচনা করিয়া প্রকাশ করা অতি শুরুঠীণ বিজ্ঞ পাঠক বর্গেরা জাহারা দিগের দুই সাস্ত্র অর্থাৎ হিন্দ দিগের বাঙ্গালা সাস্ত্র ও মোছলমান দিগের পারস্য সাস্ত্র দৃষ্টি আছে তাহারা দুই গ্রন্থের প্রকৃত মর্ম্ম অর্থাৎ যদ্ধ পাণ্ডব হিন্দ সাস্ত্রের ও আফয়াছিয়াব, কয়খোছরো পারস্য সাস্ত্রের অক্য করিলে একগ্রন্থ নিসন্দেহ বোধ হইবে তবে নাম ও প্রকরণ সকল ভিন্ন২ নাকরিলে হটাৎ দৃষ্টেএক গ্রন্থ বোধ হইবে এনিমিত্ত্যে আপন সাস্ত্রেরমত উভয়েইবর্ণ্ণা করিয়াছেন; কি অধিকং ॥

## লহরাস্প বাদ্সাহের বিবরণ ॥

লহরাস্প তক্তে [illegible] দানদ্বারা বন্ধুবান্ধবকে ও গুনী গণকে সন্তোষ করা ও সদ্‌বিচার দ্বারা প্রজাপালন করাতে সকলেই তাহার বসিভুত হইল; লহরাস্পর চারি পুত্র তাহার মধ্যে কাউছের কন্যা হইতে দুই পুত্র তাহারদের নাম আরদসির ও সবাহআস্প; অন্য স্ত্রী হইতে দুইপুত্র তাহাদের নাম গোস্তাস্প ও জজির; গোস্তাস্পঅত্যন্ত বলবান; বুদ্ধিমান; সিষ্ঠ বিদ্যান, আর রাজ চিহ্ন তাহার সরিরে পুকাশ ছিল কিন্তু লহরাস্প কাউছ পক্ষিয় সন্তানদিগের অধিক স্নেহ করিত এনিমিত্ত্য গোস্তাস্প কিছু দুঃখিত থাকিত এক রাত্রে লহরাস্প গোস্তাস্পকে কিছু কটুকাটব্য কহিল এজন্য আর দুঃখিত হইয়া আপন বন্ধুবর্গ কথক গুনীন সঙ্গে লইয়া হিন্দুস্থান দেশে যাত্রা করিল। লহরাস্প পরদিন শুনিয়া জজিরকে এক সহস্র অশ্বারোহি সৈন্যসঙ্গেদিয়া পাঠাইলেন; জজির গোস্তাস্পর নিকটে পৌছিয়া অনেক বিনয়বাক্যে বাটিতে আসিতে কহিল গোস্তাস্প কহিল পিতা আমারদিগের দুই ভ্রাতকে দেখিতে পারেননা কাউছ পক্ষিয় সন্তানে অধিকস্নেহ সেখানে আমারদিগের থাকায় অপমান; জজিরকহিল পিতার নিকটে মান অপমান তুল্য আপনি এবার বাটিতে চল গোস্তাস্প কহিল তোমার অনুরোধে এবার যাইব, যদি আমাকে পিতা উত্তরাধিকারি করেণ তবে থাকিব নতুবা স্থানন্তরে জাইব জজির ইহা স্বীকারকরিয়া গোস্তাস্পকে বাটীতেআনিল কিছু দিন পরে লহরাস্প কাউছ পক্ষিয় সন্তানকে উত্তরাধিকারি করিবার মানস করিল ॥ ॥ ৩০ ॥

## গোস্তাম্প ইরাণ হইতে রোমদেশে গমন বিবরণ ॥

গোস্তাম্প তাহা জ্ঞাত হইয়া অতি দুঃখিত হইয়া একাকী রাত্রিযোগে পালাইয়া রোমদেশে গমন করিলপ্‌, নরায় জব্জিরকে অন্বেষণ করিতে পাঠাইল জব্জির কিয়ৎ কাল নানাদেশ ভ্রমণ করিয়া গোস্তাম্পর অনুসন্ধান নাপাইয়া আসিয়া বাদসাহকে কহিল। গোস্তাম্প কয়েক দিবস পরে রোমদেশে পৌঁছিয়া কোনস্থানে থাকিয়া কালযাপন করিলেন, সঙ্গে যে ধনছিল তাহা ব্যায় হইলে আহারের কষ্ট হইলে তখন কয়ছর রোমের বাদসাহর দেওয়ান দপ্তরেগিয়া কোন কর্ম্মের প্রার্থনা করিলে তাহারা কহিল আমারদিগের অনেক লেখক আছে কিছুদিন অপিক্ষা কর উপস্থিত মতে বিবেচনা করিব গোস্তাম্পর অদ্য তক্ক অসংস্থান অপিক্ষা করিতে নাপারিয়া এক জন লৌহকারের দোকানে উপস্থিতহইয়া কহিল তোমার মজুর রাখিবার প্রয়োজন থাকে তবে আমি থাকিতে প্রস্তুত আছি; লৌহকার তাহাকে বলবান্ দেখিয়া কর্ম্মে নিযুক্ত করিল যখন তাহার হস্তে হাতুড়িদিল গোস্তাম্প এমত জোরে নেহাইর উপর হাতুড়ি মারিল যে নেহাই ও হাতুড়ি উভয় চুর্ণ হইয়া গেল; কর্ম্মকার তাহা দেখিয়া ভীত হইয়া কহিল ওহে যুবক; তোমার বলদ্বারা নেহাই ও হাতুড়ি রহিলনা চুর্ণ হইল তবে তোমাকে রাখিলে আমারকর্ম্ম কিপ্রাকার হইবেক তুমি অন্যত্রে কর্ম্মের সন্ধান কর; গোস্তাম্প সেস্থানহইতে দুঃখিত অন্তঃকরণে কথক দুর গিয়া দেখিল যে এক্কজন কৃষি ক্ষেত্রে

দাঁড়াইয়া রহিয়াছে তাহার নিকটে গিয়া বসিল; সেই কৃষক তাহাকে চিন্তাযুক্ত দেখিয়া জিজ্ঞাসা করিলে গোস্তাস্প লোহ কারের দোকানের বিবরণ কহিল; সে শুনিয়া আপন বাটিতে লইয়া আহারাদি করাইয়া জিজ্ঞাসা করিল তোমার নিবাস কোথায় এবং কাহার পুত্র কোন বংশিয় কি নাম বিশেষ করিয়া কহ? গোস্তাস্প কহিল আমি ফরেদুর সন্তান কয় বংশীয় লহরাস্পের পুত্র ইরানে নিবাস গোস্তাস্প নাম, কৃষি কহিল আমিও ফরেদু কুলসন্তান, হে সজ্জন বংশ তবে তোমায় আমায় এক বংসোদ্ভব হইলাম তুমি আমার বাটীতে থাক ক্রমে গোস্তাস্পর সহিত তাহার প্রণয় বর্দ্ধিত হইতে লাগিল; কিছু দিন তাহার বাটীতে থাকেন পরে ঈশ্বর গোস্তাস্পর প্রতি অনুকূল হইলেন তাহার বিবরণ এই ॥

---

## রোমদেশে গোস্তাস্পের বিবাহ॥

কয়ছর রোমের বাদসাহের এই নিয়ম ছিল যখন তাহার কন্যা বিবাহ যোগ্যা হইত তখন সে দেশে যেই বাদসাহ জাদা ও প্রধান লোকের সন্তান থাকিত সকলকে নিমন্ত্রণ করিয়া আপন বাটীতে সভা করিয়া সেই কন্যাকে ঐ সভার আনয়ন করিয়া তাহাকে কহিত এই সকল যুবক বাদসাহজাদা ও প্রধান লোকের সন্তান সভাস্থ হইয়াছেন ইহার মধ্যে তোমার যাহাকে বিবাহ করিতে ইচ্ছা তা তাহার হস্তে ফুল দেও এই সময়ে কয়ছর রোমের এক কন্যা কতাউন নাম্নি বিবাহ যোগ্যা হইয়াছিল এনিমিত্ত পূর্ব্বোক্ত মত সভা করিয়া কতাউনকে আনিয়া পাত্র দেখিয়া ফুল দিতে অনুমতি করিলেক

কিন্তু কতাউন পূর্ব্বরাত্রে সপ্ন দেখিয়াছিল যে তোমার পিতার রাজ্য মধ্যে এই চিহ্ন যুক্ত এক যুবক পুরুষ আসিয়াছে ইরানের বাদসাহ হইবে সেই তোমার স্বামী। কতাউন সভায় আসিয়া সপ্ন চিহ্ন কোন পুরুষের অঙ্গে না দেখিয়া কাহার হস্তে ফুল নাদিয়া খুন্নমনা হওত অন্তঃপুরে প্রবেশ করিল কয়ছর রোম রাগাসক্ত হইয়া কহিলেন সকল বাদসাহ জাদা ও প্রধানদিগের সন্তান যাহারা আমার জানিত ছিল তাহারদিগকে আনিলাম তন্মধ্যে কোন পুরুষকে কতাউন বিবাহ করিল না, অতএব নগর মধ্যে ঘোষনা কর যে বাদসাহর কন্যার সয়ম্বরা নিমিত্তে পুনরায় সভা কল্য হইবেক, যদি এতদ্রাজ্যে কোন বাদসাহ জাদা এদেশস্থ কিম্বা অন্য দেশীয় প্রকাস্য রূপে অথবা প্রচ্ছন্নভাবে থাক তবে কথিত সভায় আসিয়া উপস্থিতহইবা। পরদিবস যখন নগর মধ্যে ঘোষনা দিতেছিল দৈবায়ত্ত সেই সময়ে গোস্তাস্প কৃষকের সঙ্গে নগর দেখিতে আসিয়া ঐ ঘোসনা শ্রবণ করত কৃষকারককে কহিল অধুনা আমারা দুইজনে সভা সন্দর্শনে জাই, কৃষক কহিল আমিপষ্টজানিতেছি বাদসাহরকন্যা তোমাকে বিবাহ করিবেক; ইহা কহিয়া হাস্য বদনে দুইজনে রাজবাটিস্থ স্বয়ম্বরীয় সভায় চলিলেন। বাদসাহর কন্যা আপন দাসীকে কহিল যেসকল ব্যক্তি সভায়আগমন করিবেন তাহারদিগ্যে অনেক কাল দ্বারের নিকট ছল ক্রমে রাখিবা আমি প্রাশাদ হইতে দেখিব, দাসী দ্বারে গিয়া কোন ছল দ্বারা সকলকে এক একবার দ্বার প্রান্তে দণ্ডয়মান রাখিয়া কিঞ্চিৎ পরে ছাড়িতে লাগিল; যখন গোস্তাস্প কৃষিরসমভিব্যাহারে রাজ

দ্বারে উপস্থিত হইল দাসী তাহারদিগ্যে ও ঐরূপ রাখিল; বাদসাহজাদী অট্টালিকা হইতে গোস্তাস্পর সরীর মধ্যে সপ্ত চিহ্ন দেখিয়া আনন্দিতা হইয়া সভামধ্যে উপস্থিত হইয়া গোস্তাস্পর হস্তে ফুলঅর্পণ করিল; কয়ছররোম গোস্তাস্পাকে অতি বে পরিচ্ছেদ ও দুখির ন্যায় দেখিয়া রাগতহইয়া আপন কন্যাকে বধ করিতে উদ্যোত্তো হইলে সভাস্ত সকলে কহিল ধৈর্য্য হও তোমার কুল নিয়ম কন্যা স্বয়ম্বরা হইবেক তাহাই হইয়াছে, তোমার কুলধর্ম্মরক্ষা হইল ইহাতে ঈশ্বর মঙ্গল করিবেন। কয়ছর সাম্য হইয়া কহিল ইহার পরিচয় জানিয়া আইস। একজন গোস্তাস্পর নিকটে গিয়া পরিচয় জিজ্ঞাসা করিবায় সে আপনার সমুদয় বিবরণ কহিল, কয়ছররোম তাহার বাক্যে বিশ্বাষ নাকরিয়া মিথ্যাজ্ঞান করিলেন, কিন্তু আর ২ সকলে তাহার কথা বার্ত্তা শুনিয়া ও আকার পুকার দেখিয়া সত্যজ্ঞানকরিল কয়ছররোম কহিল অদ্যাবধি আমি এ নিয়মে আর কন্যার বিবাহ দিবনা আমি বিবচনা করিব পরে। কয়ছররোম আপন আলয়ের কিঞ্চিৎদূরে একবাটিতে জামাতা ও কন্যাকে রাখিলেন, সেই স্থানে এক ক্ষুদ্র নদীর পারে একবন ছিলসর্ব্বদা ঐ নদী পারহইয়া বনেগিয়া স্বীকার করিয়া আনিত; তাহাহইতে যৎকিঞ্চিৎ নাবিককে দিত ইহাতে নাবিকের সহিত অত্যন্ত প্রণয় হইল। কিছুদিন পরে মরবিন নামক একজন কয়ছর রোমের আত্মিয়, কয়ছরকে কহিয়া পাঠাইল যেআপনার দ্বিতিয়কন্যা বিবাহেরযোগ্য হইয়াছে আমার সহিত বিবাহ দেও; কয়ছর রোম জ্যেষ্ঠা কন্যার বিবাহ পুর্ব্বেরনিয়ম মতদিয়া দুখিতহইয়া সেনিয়ম উল্লঙ্ঘন

করিয়া মানস করিয়াছেন যে কেহ কোন উৎকট কর্ম্ম করিবে তাহাকে কন্যা সম্প্রদান করিব, মরবিনের দূতকে কয়ছর কহিল অমুক বনে এক অতি বৃহদ্ব্যাঘ্র আছে আমার অনেক প্রাণ নষ্ট করিয়াছে সেইব্যাঘ্রকে যদি মরবিন মারিতে পারে তবে তাহাকে কন্যাদানকরিব। কয়ছর রোমের সে ব্যাঘ্রকে মারা অতি দুষ্কর বোধছিল মরবিন একথাশুনিয়া নিরাসা হই য়া কহিল কয়ছর রোম আমাকে কন্যাদিবেক না এই ছল করিয়াছে কয়েক দিন পরে খেয়াঘাটার নাবিক তাহার নাম হসোয় মরবিনকে কহিল যে সম্প্রতি যে যুবক কয়ছর রোমের কন্যাকে বিবাহ করিয়াছে সেঅতি বলবান্ এই নদি পার বন মধ্যে গিয়াসর্ব্বদা গোর খর ধরিয়া আনে যদি তুমি তাহাকে আপন মানস জ্ঞাত কর তবে সে অনায়াসে ব্যাঘ্র মারিতে পারিবেক, মরবিন এই কথা শুনিয়া হসোয়ের সঙ্গে রাত্রিকালে গোস্তাম্পের বাটিতে গিয়া আপন বিসয় জ্ঞাত করিল গোস্তাম্প কহিল আমার প্রাণ দিলে যদি তোমার উপকার হয় তাহাও আমি করিতে স্বীকৃত আছি; পর দিন তিন জনে উক্তস্থানে গিয়া মরবিন ও হোসয় বনের নিকটে রহিল গোস্তাম্পএকা বন মধ্যে ব্যাঘ্রের সম্মুখে গিয়া দেখিল হস্তি তুল্য এক ব্যাঘ্র সয়ন করিয়া রহিয়াছে; গোস্তাম্প তাহাকে দেখিয়া অতি সীঘ্র দুইতির তাহার মস্তকেমারিবায় সেই ব্যাঘ্র কাতর হইয়াও বেগেআসিয়া গোস্তাম্পকে চপেটাঘাত করিল তাহাতে গোস্তাম্পের কিছু হইলনা, সেইসময় গোস্তাম্প এমত তলওয়ার মারিল যে ব্যাঘ্র দুইখণ্ড হইয়া পড়িল, তখন গোস্তাম্প আসিয়া ঐ দুইজনকে কহিলে তাহারা গিয়া ব্যাঘ্র

দেখিয়া আশ্চর্য্য জ্ঞান করত গোস্তাম্পকে অনেক প্রশংসা করিয়া কহিল এবং বৃহৎ ব্যাঘ্রকে একা কি প্রকারে মারিলে কিন্তু আপনি একথা এইক্ষণে প্রকাশ করিলে আমার বিবাহ হইবেক না। গোস্তাম্প কহিল এ অতি সামন্য কর্ম্ম ইহা কি প্রকাশ করিবার যোগ্য যে প্রকাশ করিব। পরে মরবিন কয়ছর রোমের সন্নিধানে আসিয়া কহিল আপনি যে ব্যাঘ্রকে মারিতে কহিয়াছিলেন আমি তাহাকে মারিয়াছি এখন আপনার কন্যার সহিত আমার বিবাহ দেও, কয়ছর রোম পর দিবস কতিপয় সেনা সঙ্গে লইয়া ঐ বনে গিয়া দেখিল যে সেই ব্যাঘ্র কাটা পড়িয়া রহিয়াছে তাহা দেখিয়া কহিল এ কর্ম্ম তোমা হইতে হইয়াছে এ কোন মতে আমার বিশ্বাস হয় না যাহউক তুমি মারিয়াছ কহিলে আমি ও কহিয়াছিলাম এই ব্যাঘ্রকে যে মারিবে তাহার সঙ্গে আমার কন্যার বিবাহ দিব পরে মরবিনের সঙ্গে দ্বিতিয় কন্যার বিবাহ দিল; তাহার কিছু দিন পরে কয়ছর রোমের আর এক কন্যা বিবাহ যোগ্যা হইলে আহরণ নামক একজন প্রধান লোক বিবাহ করিতে চাহিল কয়ছর তাহার দূতকে কহিলেন অমুক পর্ব্বোতের নিকটস্থ বনে এক বৃহৎ অজাগর সর্প আসিয়া সেখানকার অনেক মনস্যকে নষ্ট করিতেছে আহরণ যদি সেই অজাগর সর্পকে মারিতে পারে তবে তাহার সহিত কন্যার বিবাহ দিব আহরণ ইহা শুনিয়া অতি চিন্তাযুক্ত হইয়া মরবিন যে প্রকারে ব্যাঘ্র মারিয়াছিল তাহার অনুসন্ধান পাইয়া হসোয়কে কহিয়া তাহাকে সঙ্গে লইয়া গোস্তাম্পের সম্মুখে গিয়া অনেক প্রসংসা করিয়া আত্ম বিষয় জ্ঞাপন করিলে গোস্তাম্প তৎ শ্রবণে

অঙ্গিকার করিয়া কহিল যে একখান দীর্ঘ তলওয়ার তাহার দুই দিগে ক্ষুদ্র ২ ফলা বসান থাকিবেক এমত এক তলওয়ার নির্ম্মাণ করাইয়া আন; সে সেইরূপ এক তলওয়ার লইয়া গোস্তাম্পকে দিলে গোস্তাম্প ঐ তলওয়ার ও তির ধনুক ও আর আর অস্ত্র লইয়া আহরণকে সঙ্গে করিয়া সেই পর্ব্বতোপরি উপস্থিত হইলে আহরণ কিঞ্চিৎদুরেথাকিয়া দেখাইয়া দিল; গোস্তাম্প নিকটস্থ হইয়া দেখে যে অতিবৃহদ এক অজাগর পড়িয়াআছে অজাগর গোস্তাম্পকে দেখিয়া গর্জ্জন করত মুখব্যাদান করিল তখন ঐ সর্পের মুখহইতে অগ্নিকণা নির্গত হইতে লাগিল, এবং গোস্তাম্পকে গ্রাস করিবার মানসে চলিল তখন গোস্তাম্প তিরমারিতে আরম্ভকরিয়া ক্রমেপিছে হটিতে লাগিল, ক্রমেচল্লিষতির অজাগরকে মারিলতাহাতে সর্প কিছু দুর্ব্বলহইবায় গোস্তাম্পসেই দীর্ঘ দ্বীধারা তলওয়ার এক দীর্ঘ কাষ্টেতে বান্ধিয়া সর্পের নিকট আইলে সর্প মুখ বিস্তার করিয়া গোস্তাম্পকে গিলিতে আইল সেই সময়ে ঐ তলয়ার তাহার মুখ মধ্যে প্রবেশ করাইল, সর্প ঐ তলওয়ার ক্রোধভরে পূনঃ ২ চর্ব্বণ করিতে লাগিল তাহাতে সর্পের মুখ ক্ষেত বিক্ষাত্ত হইয়া অবসন্ন হইলে তখন গোস্তাম্পঅন্য তলওয়ার দ্বারা অজাগরকে দুই খণ্ড করিয়া কাটিল। ঐ সর্পের সুকরের ন্যায় দুইপার্শ্বে দুইবৃহৎ দণ্ডছিল তাহা ছেদন করিয়া লইয়া পর্ব্বত হইতে আসিয়া আহরণকে দিলেন, আহরণ গোস্তাম্পকে বিস্তর প্রশংসা করিয়া দুইজনে বাটিতে আইলেন। পর দিবস আহরণ সেই দুই খণ্ড দণ্ড লইয়া কয়ছর রোমের নিকটে গিয়া কহিল আপনি যে অজাগরকে মারিতে

কহিয়াছিলেন তাহাকে আমি মারিয়া তাহারদুইটা দন্ত আপ
নাকে দেখাইবার নিমিত্তে আনিয়াছি, কয়ছর তাহা দেখিয়া
অতি বিস্ময়াপন্ন হইয়া তৎখনাত্ত সেই পর্ব্বতে গিয়া দেখিল
যে সেই বৃহদ অজাগর দুইখণ্ড হইয়া পড়িয়া রহিয়াছে, আহ-
রণকে কহিল এই অজাগরকে তুমি কাটিয়াছ? সে কহিল
আমি কাটিয়াছি, কয়ছরকহিল দোহাই ঈশ্বরের আমি কহি-
তেছি এ কর্ম্ম তোমাহইতে কখনই হয়নাই এ কোন দৈত্যের
কর্ম্ম অথবা কয় বংসিয় কোন ব্যক্তি মারিয়াছে জাহইউক
কে মারিয়াছে তাহা প্রকাশ হয় নাই, তুমিকহিতেছ; আমার
আজ্ঞামত তুমি মারিয়াছ, অতএব তোমার সঙ্গে কন্যার
বিবাহ দিব। পর দিবস কয়ছররোম আহরণের সঙ্গে কন্যার
বিবাহ দিলেন গোস্তাস্পের সহিত মরবিনও আহরণের অতি
সয় প্রণয়হইল একদিবস গোস্তাস্পরস্ত্রিরনিকট তিনচারিজন
প্রতিবাসিনী আসিয়া ব্যাঘ্র ও অজাগর মারিবার পসঙ্গ উপ
স্থিত করিয়া কহিল মরবিন ও আহরণ মারিয়াছে কহে; বাদ
সাহ একথায় বিশ্বাষ করেণ নাই; এবং এদেশস্ত লোকেও
গ্রাহ্য করেনা; তবে যে তাহারদিগের সঙ্গেদুই কন্যার বিবাহ
দিয়াছেন তাহার কারন বাদসাহ তাহার দিগের ব্যাঘ্রও সর্প
মারিতে কহিয়াছিলেন তাহারা গিয়া বাদসাহকে জানাইল
যে আমরা মারিয়াছি কিন্তু কে মারিয়াছে তাহা এপর্য্যান্ত
প্রকাশ করে নাই। গোস্তাস্পের স্ত্রি কহিল ব্যাঘ্রও অজাগর
কে গোস্তাস্প মারিয়াছে; পরে তাহারা একদিন কয়ছররো-
মের স্ত্রির নিকট গিয়া কথায় কথায় কহিল যে ব্যাঘ্রও অজা

গর তোমার জ্যেষ্ঠ জামাতা গোস্তাম্প মারিয়াছে, কয়ছরের বেগম কহিল এমত কর্ম্ম করিয়া সে অপ্রকাশ কেন রাখিস তাহারা কহিল সে একথা প্রকাশ করিলে তাহারদিগের বিবাহ তোমার কন্যার দিগের সহিত হয়না এতন্নিমিত্ত্যে প্রকাশ করেনাই, আমরা তোমারকন্যা কতাউনের প্রমখাৎ শুনিয়াছি! পরে বেগম এইকথা কয়ছররোমকে জ্ঞাতকরিলে কয়ছর তাহা শুনিয়া কহিল আমি তখনি বুঝিয়াছি এ কর্ম্ম কয় বৎসিয় বেতিরেক অন্য হইতে হয় নাই, পরে গোস্তাম্পকে আপন বাটিতে আনাইয়া অনেক সমাদর করিলেন আর গোস্তাম্পকে প্রধান সেনাপতিত্বপদে অভিষিক্ত করিলেন।।

আলিয়াছ বাদসাহর সহিত কয়ছররোমের যুর্দ্ধ

কয়ছর রোম গোস্তাম্পকে সেনাপতি করিয়া মনোমধ্যে বিবেচনা করিল যে আলিয়াছ বাদসাহ আমার অনেক দেশ বলদ্বারা অধিকার করিয়া লইয়াছে তাহা লইতে হইবেক; এই বিবেচনা করিয়া তাহাকে এক পত্র লিখিলেন যে তুমি আমার যে সকল দেশ বলেতে হরণ করিয়াছ তাহা পত্রপাট ছাড়িয়া দিবা নতুবা যুর্দ্ধের আয়োজন করিবা। আলিয়াছ বাদসাহ এই পত্র পাইয়া রাগতহইয়া আপন সেনা লইয়া কয়ছররোমের সহিত যুর্দ্ধে যাত্রা করিল। কয়ছররোম এইসংবাদ পাইয়া সসৈন্য গোস্তাম্পকে যুর্দ্ধে পাঠাইল; আর আপনি কিছু সেনা লইয়া পশ্চাৎগামি হইল, যখন গোস্তাম্পের সহিত আলিয়াছ বাদসহার সাক্ষাত হইল গোস্তাম্প রণস্থলেআসিয়া আলিয়াছবাদসাহকে যুর্দ্ধেআহ্বান করিল আলিয়াছ বাদসাহ রাগান্বিতহইয়া গোস্তাম্পেরসর্ম্মুখেআইলে গোস্তাম্প তৎক্ষনাৎ

তাহাকে গুলাঘাত করিয়া অশ্ব হইতে ভূমে ফেলিয়া তাহার হস্ত ধারণ করিয়া কয়ছরের নিকট আনিল, আলিয়াছ বাদ সাহের সেনা গোস্তাম্পর চতুরতা ও পুরুষত্ব দেখিয়া ভিত হইয়া পলায়ন করিল তদ্দৃষ্টে গোস্তাম্প তাহার দিগের পশ্চাৎ ২ ধাবমান হইয়া খররজদেশে আলিয়াছ বাদসাহের রাজধানি ছিল সেইদেশ অধিকার করিয়া তাহার ভাণ্ডারে যে ধন ও রত্ন ছিল তাহা লইয়া পরে প্রজাগণকে স্নেহদ্বারা বসিভূত করিয়া রোমদেশে আইলে কয়ছর রোম অগ্রসর হইয়া গোস্তাম্পকে ক্রোড়ে লইয়া সমাদর করিয়া আপন বাটীতে আনিল।

## ইরানের বাদসাহ স্থানে লিপি প্রেরণ।

কিয়ৎ দিবস গতে গোস্তাম্প প্রধান সেনাপতি দিগে কহিল তোমরা সকলে যুদ্ধের আয়োজন করিয়া প্রস্তুত হও ইরানের বাদসাহর প্রতি আক্রমণ করিব ইহা শুনিয়া তাহারা কহিল লহরাম্প একজন প্রধান বাদসাহ আর সেখানেরোস্তম প্রভৃতি অনেক বলবান যোদ্ধা আছে তাহার সহিত শত্রুতা করা অনোচিত গোস্তাম্প তাহার দিগকে অনেক ভৎসনা করিয়া কহিল সেখানে যে সকল বলবান আছে তদ্দিগকে আমি উত্তমরূপে জানি তাহারা আমার সমযোদ্ধা নহে; পরে গোস্তাম্প কয়ছরকে কহিল তোমার সেনাগণেরা লহরাম্পর সহিত যুদ্ধ করিতে ভীত হয় এজন্য আমি কতিপয় সেনা লইয়া ইরানে গমন করি এতৎ শ্রবণে কয়ছর হৃষ্টহইয়া গোস্তাম্পকে আলিঙ্গন করিয়া আপন তক্তে বসাইয়া কহিল

হটাত তথায় যাওয়া যুক্তি যুক্ত নহে বরং তাহাকে এইপত্র লিখি যে ইরানের অর্দ্ধেক রাজ্য যদি আমাকে দেও তবে তোমার সহিত প্রণয় করিব নত্তবা যুদ্ধকরিব, তুমি যুদ্ধের আয়োজন কর এইরূপ লিখিয়া কাবুছ নামে একজন সভাসত কে দুত স্বরূপ পাঠাইল; লহরাস্প এইপত্র পাইয়া হাস্য করিয়া কহিল হাঃ কি আশ্চর্য্য কয়ছর আলিয়াছকে মারিয়া এত অহঙ্কৃত হইয়াছে যেইরান লইতেআসিবেক, পরে কাবুছকে কহিল কয়ছর আলিয়াছকে কাহার সহায় তাতে ও কি প্রকার মারিল; কাবুছ কহিল কয়ছরের এক জামাতা অতি বলবান প্রথমত সে এক বৃহৎ ব্যাঘ্র মারে তাহারপর এক অজাগরমারে তৎপরে আলিয়াছের সহিত যুদ্ধকরিয়া তাহার রাজ্য অধিকার করিয়াছে লহুরাস্প কহিল তাহার নাম কি কাবুছ কহিল তাহার নাম গোস্তাস্প, লহরাস্প তাহাকে কহিলেন আমার সভায় সেই অবয়বের কোন লোক আছে; কাবুছ সভাস্ত সকলকে নিরক্ষণ করিয়া গোস্তাস্পের কনিষ্ঠ সহোদর জজিরকে দেখিয়া কহিল প্রায় এইব্যক্তির ন্যায় তাহার অবয়ব; তখন লহরাস্প জানিল যে তাহার পুত্র এই কাণ্ড উপস্থিত করিয়াছে। ক্ষণেককাল নিরব থাকিয়া কয়ছরের পত্রের এই উত্তর লিখিল যে আমাকে আলিয়াছ জ্ঞান করিও না; আর যেমত একজন বলবান পাইয়া তুমি অহঙ্কার করিতেছ তদপেক্ষা অনেক বলবান যোদ্ধা আমার নিকটে আছে অতএব পূর্ব্বাপর যেরূপ কর দিতেছ সেইরূপ পাঠাইবা নত্ত্বা অতিশীঘ্র তোমার দেশ উচ্ছিন্ন করিব। এইপত্র কাবুছকে দিয়া বিদায় করিল। পরে জজিরকেকহিল তুমি দুত হইয়া

কয়ছরের নিকটযাও জজির তৎক্ষণাৎ রোমে যাত্রা করিল কি-
য়দ্দিবসান্তে তথায় পৌছিয়া কয়ছরের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া
কহিল তুমি যে রূপ কর দিয়া থাক তাহা দেও নতুবা বাদসাহ
অতি সীঘ্র আসিয়া তোমাকে রাজ্যসহিত নষ্ট করিবেন। ইরা
নের বাদসাহর সহিত তোমার সত্রুতা করা অনোচিত বরং
কিছু পূর্ব্বাপিক্ষা অল্প দিতে চাহ তাহা আমি বাদসাহকে
কহিয়া সম্মত করিব, কয়ছর কহিল ইরানের অর্দ্ধেক আমাকে
নাদিলে আমি সম্মত হইবনা; জজির উঠিয়া আপন শিবিরে
গেল; পরে রাত্রিযোগে গোস্তাস্পার বাটীতে গিয়া তাহার
সহিত সাক্ষ্যাত করিলে গোস্তাস্প দেখিয়া জজিরকে আলি
ঙ্গন করিয়া অনেক সমাদর পূর্ব্বক মাতা পিতার কুসলাদি
জিজ্ঞাসা করিলে জজির সকল বৃত্তান্ত বিস্তারিত রূপে কহিয়া
পরে কহিল পিতা বৃদ্ধ হইয়াছেন তোমাকে বাদসাহিতে অভি
যেক করিয়া আপনি ঈশ্বরের ভজনা করিবেন কহিয়াছেন;
গোস্তাস্প শুনিয়া তুষ্ট হইল আর মাতাপিতাকে সরণ করিয়া
অনেক রোদন করিলতদন্তর দুইটা উত্তম অশ্ব আনাইয়া কতা
উনকে সঙ্গে লইয়া জজিরের সহিত ইরানে যাত্রা করিল যখন
ইরানের নিকট পৌছিল, লহরাস্প শুনিয়া সরদার সকলকে
অগ্রসার পাঠাইল; গোস্তাস্প আসিয়া লহরাস্পার পদধূলি লই-
য়া ছেলামকরিল লহরাস্প গাত্রোত্থান করিয়া আলিঙ্গন করত
অনেক রোদন করিয়া আপন তক্তের পার্শে এক সর্ণময় তক্ত
আনাইয়া গোস্তাস্পকে বসাইয়া সভাস্ত সকলকে আজ্ঞা করি
লেন যে গোস্তাস্পকে অদ্য বাদসাহ করিলাম তোমরা সকলে
রিতীমত যৌতুক প্রদান কর, গোস্তাস্পকে বাদসাহ করিয়া

আপনি ফকিরী বেশ ধারণ করিয়া বলখ নগরে যাত্রা করিলেন, তৎকালে বলখ নগরে ঈশ্বর আরাধনার প্রধান স্থান নিরূপিত ছিল সর্ব্বত্রহইতে সেইস্থান দর্শন ও পর্যণ ও তথায় বাস করিয়া ভজনা করিতে সকল লোক যাইত যেমত ইদানীন্তন মক্কা ও কাবায় মহম্মদের আমলে জায় এই রূপ প্রসিদ্ধ ছিল; লহরাস্প একসত বিংসাত বৎসর বাদসাহি করিয়া আপন পুত্র গোস্তাস্প কে বাদসাহিদিয়া বলখে গিয়া ঈশ্বরের ভজনায় মন নিবেশ করিল ॥

গোস্তাস্প বাদসাহর বিবরণ

গোস্তাস্প তক্তে উপবেসন করিয়া নিতী মত পৈতৃক প্রজা পালন দুষ্টের দমন ও দান বিতরণ করিতে আরম্ভ করিল; গোস্তাস্পরদুইপুত্রহইল জেষ্ঠরনাম এছফন্দিয়ার,কনিষ্ঠরনাম সসেতেন রাখিলেন, অনেক বাদসাহ গোস্তাস্পকে কর প্রদান করিত কিন্তু আরচাস্প নাম চিনের বাদসাহ তাহার অনেক দৈত্যর সহিতপ্রনয় এবংদৈত্য সেনাছিল এনিমিত্ত্য গোস্তাস্প তাহাকে ভয় করিয়া মৈত্রতা করিয়াছিলেন এবং প্রতি বৎসর উপঢৌকন স্বরূপ কিছু২ তাহাকে পাঠাইত। একদিন জরদহস্ত নামক একজন কেবর ( কেবর মোছলমানের ধর্ম্মের দেষ্টা তাহাকে ইহুদি কোন মতে বলে ) পণ্ডিত ও ইন্দ্রজাল ও বৈদ্যক প্রভৃতি অনেক সাস্ত্র জ্ঞাত ছিল, গোস্তাস্পর নিকট আসিয়াসাক্ষ্যাৎ করিয়া নানাপ্রকার কথপকথনে বাদসাহকে তুষ্ট করিল ক্রমেঅতিসয় প্রতিপর্ন হইল, কিছুদিন পরে জরদহস্ত ইন্দ্রজাল কিম্বা লেলকী বিদ্যার দ্বারায় বাদসাহর পুরি

সামন্তু অর্ব্বানে এ অপূর্ব্ব বৃক্ষ প্রস্তুত করিয়া কহিল এই বৃক্ষের পত্র ভক্ষণ করিলে মনের মালিন্য থাকেনা আর ফল খাইলে গ্লানি হয় এবং দীর্ঘ আয়ু হয়। এই সময়ে বলখ হইতে সমাচার আইল যে বৃদ্ধ বাদসাহ লহরাস্প পিড়িত হইয়া মৃত্যু বৎ হইয়াছেন, গোস্তাস্প জরদহস্তকে তথায় পাঠাইলেন সে বলখে গিয়া লহরাস্পকে অতি সীঘ্র আরগ্য করিয়া আইল এ নিমিত্ত্যে তাহার প্রতি অধিক শ্রদ্ধা হইল; জরদহস্ত কহিত আমি ঈশ্বরেরদূত আমার যে সকল ক্ষমতা তাহা ক্রমে দেখাইব। বৈকুণ্ঠ ও নরক আমি দেখিয়াছি আমি আসির্ব্বাদ করিয়া বৈকুণ্ঠে পাঠাইতেপারি এবং অভিসপ্ত করিয়া নরকে পাঠাইতে পারি, স্বর্গে ও পৃথিবিতে যখন যাহা হইবে তাহা আমি পূর্ব্বাস্তু জানিতেপারি জোন্দ পাজন্দ নামে এক পবিত্র ধর্ম্মপস্তক ঈশ্বর আমাকে অনুগ্রহ করিয়া প্রদান করিয়াছেন যে ব্যক্তি সেই গ্রন্থ পাঠকরে ঈশ্বর তাহাকে কৃপা করেন; গোস্তাস্প তাহার কথায় ভুলিয়া পিতৃপিতামহাদির ধর্ম্ম পথ ত্যাগ করিয়া তম্মতাবলম্বি হইল। এক দিবস জরদহস্ত কহিল তুমি চিনের বাদসাহ আরচাস্পকে কেন কর দেও ঈশ্বরের অনুগ্রহ তোমাকেহইয়াছে এখনতুমি মনেকরিলেতাহাররাজ্য লইতে পার; গোস্তাস্প তাহার এইবাক্য শুনিয়া আরচাস্পকে এই পত্র লিখিল যে চিনদেশ আমাকে ছাড়িয়া দেও অথবা কর দেও নতুবা তোমাকে মারিয়া চিনদেশ গ্রহণ করিব; আর চাস্প এইপত্রপাইয়া ক্রোধ যুক্ত হইয়া দূতকে কহিল বুঝিসেই জরদহস্ত পাপিষ্টেরকথায় ভুলিয়া পৈতৃক ধর্ম্মত্যাগ করিয়াছে তাহাকে কহিব। সে পাপিষ্টের কথা শুনিলে রাজ্যচ্যুত হইবে

পরে পত্রের উত্তর লিখিল যে তুমি জরদহস্তের বাক্য শুনিয়া নিজ ধর্ম্ম ত্যাগ করিয়া সেই পাপিষ্টের কথায় কুপথ গামী হইয়াছ আমি তাহাকে বিশিষ্ট রূপে জ্ঞাত আছি, আমি তোমার বন্ধু এবং হিতাকাঙ্খি এতন্নিমিত্তে তোমার হিতার্থে লিখিতেছি তাহাকে পত্রপাঠ আপন দেশ হইতে দুর করিয়া পৈত্রিক ধর্ম্ম আশ্রয় করিবা তাহাতে তোমার ঐহিক ও পার ত্রিকের মঙ্গল হইবেক। আমার কথা অন্যথা করিলে অতি ত্বরায় দুইমাসপরে আমাকে সেইখানে স্বসৈন্য দেখিতে পাই বা এইপত্রদিয়া জাদুওন্দ নামক একজন দৈত্যকে পত্রবাহক করিয়া পাঠাইল। গোস্তাস্প এইপত্র পাইয়া ভীত হইয়া আপ ন উজির জামাস্পকে কহিলেন যে এইপত্রের বিবেচনা করিয়া উত্তরলিখহ জরদহস্তকহিল ইহার বিবচনা কি তাহার সঙ্গে যুর্দ্ধ করিতেহইবে। গোস্তাস্পের জ্যেষ্ঠপুত্র এহফন্দিয়ার কহিল আমি যুর্দ্ধ করিতে প্রস্তুত আছি, গোস্তাস্পের ভ্রাতা জজির কহিল তুমি বালক আমি যুদ্ধে যাইব। গোস্তাস্প শুনি য়া রুষ্ট হইয়া পত্রের উত্তর লিখিল যে তুমি লিখিয়াছ দুই মাস পরে এখানে আসিবা, অতএব তোমাকে এখানে আসি তে হইবেনা আমি তোমার মস্তক ছেদন করিতেযাইতেছি। আরচাস্প এই পত্র পাইয়া রাগত হইয়া যুর্দ্ধের আয়োজন পূর্ব্বেই করিয়াছিল তৎক্ষণাতসৈন্য সঙ্গেকরিয়া যুর্দ্ধার্থে ইরা- নে যাত্রা করিল॥

---

চিনের বাদসাহর সহিত গোস্তাস্পর যুর্দ্ধ॥

আরচাস্প ইরানের নিকটস্থ হইলে গোস্তাস্প আপন সৈন্য

সুসজ্জিভূত হইতে আজ্ঞা করিলে জরদহস্ত কহিল তোমার উজির জৌতিষ বেত্তা উত্তমপণ্ডিত আমি বিশেষ রূপে জ্ঞাত আছি তাহাকে জিজ্ঞাসা কর কোনপক্ষের জয়হইবে, জামাস্প উজির অনেক গণনা করিয়া বাদসাহকে বিরলে লইয়া কহিল যে তোমার ভাই; বন্ধু, আত্ম, অন্তরঙ্গঃ অনেক মারা যাইবে কিন্তু তোমার জয় হইবে, ইহা শুনিয়া কিছুভাবিত হইয়া পরে তিনলক্ষ সেনা সঙ্গে করিয়া রণস্থলে উপস্থিত হইলে উভয় সেনায় ঘোরতরযুদ্ধহইল, পরে গোস্তাস্পের বৈমাত্রভ্রাতাআর দসের রণস্থলে গিয়া চিনেরঅনেক সৈন্য নষ্ট করিয়া আপনি মারাপড়িল, তদনন্তর তাহার সহোদর সবহাস্প আসিয়া অনে কক্ষণ যুর্দ্ধ করিয়া প্রাণ ত্যাগ করিল। তাহার পর জামাস্প উজিরের পুত্র আসিয়া চিনের অনেক সেনা কাটিয়া আপনি মরিল, তদনন্তর জজিরের পুত্র নস্ত রণস্থলে আসিয়া চিনের অনেক সেনা মারিয়া আপনি মরিল, তাহা দেখিয়া জজির আ- সিয়া চিনের বহুবিধ সেনা ও দৈত্যকে সংহার করিয়া চিনের বাদসাহ আরচাস্পকে ধরিতে গেল আরচাস্প ভিত্ত হইয়া আ- পন সরদার দিগকে কহিল জে ইহাকে নষ্ট করিবে তাহাকে অনেক ধন ও রাজ্য দিব ? ইহা শুনিয়া বেদরফস নামক এক দৈত্য আসিয়া জজিরের সঙ্গে যুর্দ্ধ করিয়া জজিরকে যমা লয়ে পাঠাইল; এই কথা গোস্তাস্প শুনিয়া অনেক রোদন করিয়া জজিরেরকন্তাকে শীঘ্রনষ্টকর এছফন্দিয়ারগোস্তাস্পের নিকট কহিল আমি এখনি বেদরফসর ও আরচাস্প চিনের বাদসাহের মাথা কাটাব; গোস্তাস্প কহিল যদি তুমি বেদরফস

কে মারিতে পার আরচাম্পকে পরাভব করিতে পার তবে ইরা মেম্ব বা দসাহি ও তাজ তক্ত তোমাকে দিব ইহা কহিয়া গোস্তাম্প আপনার অশ্ব ও অস্ত্রাদি দিলেন, এছফন্দিয়ার সেই অশ্বে আরোহণকরিয়া যুদ্ধস্থলে উপস্থিত হইল বেদরফ্ সর্ব্বত্তি সীঘ্র ইরানের অনেক সেনা কাটিল তাহাতে সকল সেনাভিত্ত হইয়া পালাইতে উদ্যত হইল সেই সময়ে এছফন্দিয়ার আসিয়া কঠোর সব্দ করিয়া কহিল ওরে পাপিষ্ট; দৈত্য তুই আমার এত সেনানষ্ট করিলি এই তোর যমস্বরূপ আমি আই লাম, ইহা শুনিয়া বেদরফ্স সীঘ্র আসিয়া এছফন্দিয়ারকে এক তলওয়ার মারিল, এছফন্দিয়ার বাম হস্তে তাহার তলওয়ার ধরিয়া দক্ষিণ হস্তে বরছি লইয়া দৈত্যের বুকে বিন্ধিয়া অশ্ব হইতে ভূমে ফেলিয়া মস্তক কাটিয়া জজিরের পুত্রকে অর্পণ করিল সে সেই মস্তক গোস্তাম্পকে দেখাইয়া পুনর্ব্বার এছফন্দিয়ারের নিকটে আসিয়া কহিল তোমার পশ্চাৎ রক্ষা আমি করিব এবং ফরসেদ নামক একজনমল্ল এছফন্দিয়ারের সমীপে আইল তখন এছফন্দিয়ার ইহার দিগে লইয়া চিনীয় সৈন্য মধ্যে প্রবেশ করিয়া কাটিতে২ আরচাম্পর সম্মুখে চলিল গোস্তাম্প দেখিল যে ইহারা তিনজন চিনীয় সেনার মধ্যে প্রবেশকরিল তখন আপনার নিকটস্থসেনাদিগকে এছফন্দিয়ারের সাহার্য্যর্থেপাঠাইল, যখন এছফন্দিয়ার আরচাম্পর নিকট পৌছিল আর সে দেখিল ইহার পশ্চাৎ অনেক সেনা আসিতেছে তখন ভিত্ত হইয়া পলায়ন করিল তাহার সেনার মধ্যেঅনেক মারা পড়িল কথক পলাইল কথক এছফন্দিয়ারের সরনাগত হইল, তখন গোস্তাম্প আসিয়া তাহার

ভ্রাতা ও ভ্রাতসপুত্রাদির মৃতদেহ সকল বাক্‌সতে রীতীমত রাখিয়া ইরানে লইয়া চলিলেন আর জামাস্প উজিরকে কহিলেন কোন্ পক্ষের কত সেনা মারা গিয়াছে তাহার সমাচার আন, জামাস্প লোক পাঠাইয়া জ্ঞাত হইল যে ইরানের ত্রিশ সহস্র লোক তাহার মধ্যে প্রধান ও মল্ল আটসত লোক, আর চিনের একলক্ষ তাহার মধ্যে এক সহস্র একসত তেসট্টিজন প্রধান ও মল্ল মারা গিয়াছে। পরে গোস্তাস্প জরদহস্তের অতিশয় মর্য্যাদা বৃদ্ধি করত তাহাকে অগ্রে করিয়া রণজয় বাদ্য দম করিতে২ ইরানে আসিয়া এছফন্দিয়ারকে বাদসাহিতক্তে বসাইয়া রাজকর্ম্মের ভারার্পণ করিয়া উত্তরাধিকারি করিলেন আর কহিলেন এইক্ষণে তোমার বসিয়া থাকিবার বয়েস নহে সমস্ত দেশে শাসন করিয়া সকল লোককে জরদহস্তের মতাবলম্বি কর এছফন্দিয়ার সীকৃত হইয়া প্রথমত রোমে আগত হইয়া আপন মাতমহ কয়ছর রোমকে ঐ জরদ হস্তর মতাবলম্বি করিতে কহিয়া পাঠাইল, তাহাতে সে অসম্মত হইল পরে এছফন্দিয়ার কহিয়া পাঠাইল যদি এমতাবলম্ব নাহও তবে আমার সঙ্গে যুদ্ধকর, সে উক্ত মতাবলম্ব নাহইয়া যুদ্ধে পরাভব হইয়া কথিত ধর্ম্ম গ্রহণকরিল, তৎপরে এছফন্দিয়ার তথা হইতে হিন্দুস্থানে আসিয়া তথাকার সকল লোককে ঐ মতাবলম্বি করিয়া তথা হইতে এমন দেশে উপস্থিত হইয়া ঐ মত প্রচার করিল, আর অনেক অনেক স্থানে পত্র পাঠাইয়া ঐ মত প্রচলিত করিল। এছফন্দিয়ার গোস্তাস্পকে লিখিল যে আপনকার আজ্ঞা প্রমাণ জরদহস্তর মত সকল দেশে চালাইয়াছি গোস্তাস্পপত্র পাইয়া সন্তুষ্ট হইয়া সভাস্থ সকল

কহিলেন এছফন্দিয়ার সকল দেশে জল্লদহতের মত চালাই-য়াছে এখন কি কর্ত্তব্য ॥

কোরজমের কুৎত্রনাম এছফন্দিয়ারকে
কয়েদের বিবরণ ॥

সকলে বিস্তর প্রসংশা করিয়া কহিল এখন বাদসাহের ভার যাহা দিয়াছেন সেইকর্ম্ম করা উচিত, কিন্তু কোরজম নামক একজন প্রধান গোস্তাম্প তাহাকে অতিস্নেহ করিত এছফন্দিয়ারের সহিত তাহার আন্তরিকত্ব প্রণয় ছিল কিন্তু প্রকাশে প্রণয় জানাইত, বাদসাহকে বিরলে লইয়া কহিল যে আমি কোন মন্দ কথা শুনিয়াছি বিনা আজ্ঞায় কহিতে পারিনা। বাদসাহ কহিল যাহা শুনিয়াছ তাহা কহ কোরজম কহিল এছফন্দিয়ার সমস্ত দেশজয় করিয়াছে তাহার অনেক সেনা হইয়াছে এবং তাবৎ বাদসাহ তাহারসঙ্গে যুদ্ধে অসক্ত হইয়া সকলে তাহার আজ্ঞাবহ হইয়াছে, আমি শুনিয়াছি এখানে আসিয়া আপনাকে কারাগারে রুদ্ধ করিয়া বাদসাহ হইবে ইহার যে কর্ত্তব্য ও সত পরামর্শ হয় তাহা বিবচনা করিয়া করিবেন। গোস্তাম্প শুনিয়া অতিম্লান হইয়া সভা ভাঙ্গিয়া তিন দিবস পর্য্যন্ত নানা প্রকার চিন্তা করিয়া চতুর্থ দিবসে জামাস্প উজিরকে একপত্র দিয়া কহিল তুমি তথায় যাইয়া এছফন্দিয়ারকে আমার নিকট আনয়নকর জামাস্প পত্র লইয়া এছফন্দিয়ারকে পত্রদিয়া কহিল বাদসাহ আপনাকে স্মরণ করিয়াছেন শীঘ্র যাইতে হইবেক এছফন্দিয়ার কহিল আমি গতোরাত্রে দুস্বপ্ন দেখিয়াছি বাদসাহ আমার প্রতি রাগত হইয়াছেন জামাস্প কহিল তোমার স্বপ্ন সত্য

বটে কিন্তু ইহার কোন বিশেষ কারণ আমি জ্ঞাত নহী, এছ ফন্দিয়ার কহিল আমি তাহার আজ্ঞা শিরোধার্য্য করিয়া প্রাণের আসা ত্যাগকরিয়া পৃথিবীর সকল বাদসাহের সহিত বিবাদ ও যুদ্ধ করিয়া তাঁহার নাম এবং জরদহস্তর মত সর্ব্বত্রে প্রচার করিলাম আমা হইতে তাহার আজ্ঞার বহির্ভুত কোন কর্ম্ম হয় নাই তবে আমার প্রতি কি নিমিত্ত রাগত হইয়াছেন পরে জামাস্পকে কহিল তুমি আমার শিক্ষাগুরু এবং বন্ধু, তোমার মত কি এখন বাদসাহের নিকট যাওয়া কর্ত্তব্য কিনা জামাস্প কহিল পিতৃ আজ্ঞা হেলন করা অকর্ত্তব্য অপর লোকের স্নেহ ও আদর হইতে পিতা যদি ঘৃনা ও অবিজ্ঞা করেন সেও ভাল; এছফন্দিয়ার কহিল আমি গেলে ক্লেশ দিবেন তবে কি প্রকারে যাই ? জামাস্প কহিল পিতা পুত্রের মুখাবলোকন করিলেই স্নেহ হয় আপনার যাওয়াই কর্ত্তব্য কর্ম্ম, এছফন্দিয়ার সম্মত হইয়া আপনার চারিপুত্র জ্যেষ্ঠ বহমন দ্বিতিয় মেহরনোস তৃতীয় আজব চতুর্থ নৌসাদর এই চারিজনকে ডাকাইয়া রহমনকেআপনসৈন্যেরঅধ্যক্ষ ওসকল কর্ম্মের ভার অর্পণ করিয়া আর তিন পুত্রকে সঙ্গে লইয়া গোস্তাস্পর নিকট উজিরের সমভিব্যাহারে যাত্রা করিল । গোস্তাস্প সভাসত্‌দিগে কহিল এছফন্দিয়ারএখানে আইলে আমি তোমারদিগকে জিজ্ঞাসা করিব যে পিতা বর্ত্তমানে যে পুত্র পিতা অপিক্ষা আপন নাম ও সম্ভ্রম বৃদ্ধিকরে তাহার কি করা কর্ত্তব্য; তোমরা সকলে কহিবা কারাগারে বদ্ধ করা কর্ত্তব্য এই স্থিরকরিয়ারাখিল, যখন এছফন্দিয়ার আসিয়া বাদসাহকে ছেলাম করিয়া সম্মুখে দণ্ডয়মান হইল তখন বাদ

সাহ কহিল তুমি অতি বলবান্ ও বড়বাদসাহ হইয়াছ অনেক বাদসাহের সহিত যুর্দ্ধ করিয়া সকলকে পরাস্তব করিয়া আমা অপেক্ষা বড় বাদসাহ হইয়াছ; এছফন্দিয়ার কহিল আমি যদি সমস্ত পৃথিবীর বাদসাহ হই তত্রাপি তোমার পুত্র তোমা রিপদ ধুলির বলেই হইয়াছি, পরে বাদসাহ সভাসতদিগের কহিলেন যে পুত্র পিতা বর্ত্তমানে আপন নাম সম্ভ্রম বৃদ্ধির চেষ্টা করে তাহার কি দণ্ডকরা কর্ত্তব্য ? তাহারা পূর্ব্ব আজ্ঞা মত সকলে কহিল কারাবর্দ্ধ করাই কর্ত্তব্য নতুবা বাদসাহির হানি হয়, এছফন্দিয়ারকহিল আপনিঅনগ্রহকরিয়া আমাকে তাজ তক্ত দিয়া অভিষেক করিয়াছেন যদি আজ্ঞা করেণ তবে এখনি তাজ তক্ত ত্যাগ করিয়া নিকটে উপস্থিত থাকি; বাদ সাহ কহিল তুমি এই অধুনা ত্যাগ করিতে পারিবানা পরন্ত আজ্ঞা করিলেন এছফন্দিয়ারের হস্ত পদ লৌহ শ্রেঙ্কল দ্বারা বর্দ্ধ করিয়া গোম্বজান পর্ব্বতের দুর্গ মধ্যে বর্দ্ধ রাখ অনুচরেরা তৎক্ষণাত সেইমত করিল, কিছুদিনপরে গোস্তাস্পশাকারের উপলক্ষ করিয়া জাবলস্তানে রোস্তমের বাটিতে গিয়া তাহার দিগকে জরদহস্তর ধর্ম্মাবলাম্বী করিয়া দুইবৎসর সেইস্থানে বাস করিল। এখানে এছফন্দিয়ারের পুত্র বহমন পিতার কয়েদ হইবার সমাচার পাইয়া তাবত সৈন্যকে ত্যাগ করিয়া এছফন্দিয়ারের নিকটে আইল॥

---

চিনের বাদসাহের হস্তে লহরাস্পের বিনাশ॥

চিনের বাদসাহ আরচাস্প এছফন্দিয়ারের কয়েদহওয়া ও গোস্তাস্প জাবলস্তানে অবস্থানের সংবাদ পাইয়া আপন

পুত্র কেহরমকে অনেক সৈন্য দিয়া ইরাণ অধিকার করিতে পাঠাইল, কহরম বলখ নগরে পৌছিয়া বলখ অধিকার করিতে উদ্ধত হইলে তথাকার সকলে লহরাস্পকে কহিল গোস্তাম্প বাদসাহ ইরানেনাই এবং এছফন্দিয়ার কারাগারেবর্দ্ধ আছে আপনি চিনের বাদসাহরসহিত যুদ্ধ করিয়া আমারদিগে রক্ষা কর; লহরাস্প কহিল আমিঈশ্বরের ভজনায় মনঃসংযোগ করিয়া অবধি বাদসাহির সকলকর্ম্ম ত্যাগকরিয়াছি। তাহারা তদ্বাক্য না শুনিয়া লহরাস্পকে যৎকিঞ্চিত সেনা দিয়া যুদ্ধ করিতে লইয়া গেল, লহরাস্প ঈশ্বরকে স্মরণকরিয়া একসহস্র সেনা সহিতে রণস্থলে আসিয়া কহরমের সঙ্গে ঘোর তর যুদ্ধ করিয়া চিনের দিগের অনেক সেনা নষ্টকরিল। কহরম তাহা দেখিয়া আপন সৈন্যগণকে বহুবিধ ভ্রস্কার করিয়া কহিল ইরানি একসহস্র অশ্বারুঢ় সেনার সহিত তোমরা এক লোক্যে ও কিছু করিতে পারিসনা তোমারদিগে, ধিক, তখন তাহারা রাগত হইয়া সকলে একত্রে লহরাস্পর সেনার উপর পড়িয়া তদ্দিগকে সংহারকরিতে আরম্ভ করিল। লহরাস্পসেই সেনার গোলযোগে ঘোটক হইতে ভূমে পড়িয়া প্রাণ ত্যাগ করিল কহরম তথাকার অনেক লোককে নষ্ট করিল আর জরদহস্তর ভজনার যেং স্থানছিল তাহা ও তহারদিগের জোন্দপাজন্দ নামে ধর্ম্ম পুস্তক ও ঐ সাস্ত্রের পণ্ডিত যতছিল সকল একত্র করিয়া দগ্ধ করিয়া লহরাস্পর বাটিতে প্রবেশ করিয়া ধনরত্ন আদি লইল এবং যত স্ত্রিলোকছিল তাহাদিগকে ও চিনদেশে পাঠাইল, লহরাস্পর একস্ত্রি কোন প্রকারেপলাইয়া অশ্বারুঢ় হইয়া দিবা রাত্র আহার নিদ্রা ত্যাগ করিয়া জাবলস্তানে

গোস্তাম্পর নিকট পৌঁছিয়া কহিল আরচাম্পর চিনের বাদসাহর পুত্র কহরম সেনা লইয়া যুদ্ধ করিতে আসিয়া তোমার পিতাকে নষ্ট করণানন্তর পুরি মধ্যে প্রবেশ করিয়া তাবৎ ধনাদি ও তোমার ভগি এবং কন্যা প্রভৃতি যেং স্ত্রিলোক সে স্থানে ছিল সকলকে ধৃত করিয়া চিনদেশে পাঠাইয়াছে কেবল আমি একা পলাইয়া আসিয়াছি, বাদসাহ এইকথা শুনিয়া অনেকরোদনকরিয়া তৎক্ষণাত সসৈন্যে ইরানেযাত্রা করিলেন, আর রোস্তমকে সঙ্গে আসিতে কহিলেন রোস্তম কহিল আপনি অগ্রসার হও আমি পশ্চাৎ জাইতেছি ইহা শুনিয়া দুঃখিত হইয়া আপনি যুদ্ধে গমন করিলেন। তৎপরে রোস্তম এক পত্র লিখিয়া পাঠাইল যে আমি সারিরিক পীড়া জন্য এইক্ষণেজাইতে পারিবনা; গোস্তাম্পাবলখে না পৌঁছতে কহরম পথ মধ্যে আসিয়া যুদ্ধ আরম্ভ করিল এবং চিনের বাদসাহ অনেক সেনা সঙ্গে করিয়া তাহার নিকট পৌঁছিল, ইরানের সৈন্য গণেরা চিনের অনেক সেনা এবং দৈত্যাদিগে দেখিয়া ভিত্ত হইল কিন্তু অনুপায় সুতরাং যুদ্ধ করিয়া অনেক সেনা মারা পড়িল, তাহা দেখিয়া গোস্তাম্প পালাইয়া পর্ব্বতোপরি অতি বৃহদ দৃড়তর এক দুর্গ ছিল তাহারমধ্যে প্রবেশ করিয়া দ্বার রুদ্ধ করিল; জামাস্প উজিরকে কহিল এ যুদ্ধে আমার জয় কি পরাজয় হইবে তাহা গণনা করিয়া কহ ? সে অনেক গণনা করিয়া কহিল এছফন্দিয়ার এ যুদ্ধে গমনকরিলে তোমার জয় হইবেক আরচাম্প পরাভব হইয়া পালাইবে গোস্তাম্প তৎক্ষণাত এছফন্দিয়ারকে এইপত্র লিখিল যে আমি কোন সত্রুরের কথায় তোমাকে অনেক ক্লেস দিয়াছি

সে সকল মনে না করিয়া আমার মর্য্যাদা রাখিয়া পত্রপাঠ এখানে আসিবা বাদসাহি তোমাকে দিব ॥

এছফন্দিয়ারকে কয়েদ হইতে মুক্ত করিবার বিবরণ

এইপত্র উজিরের দ্বারা পাঠাইয়া কহিলেন তুমি তাহাকে সীঘ্র এখানে আনিব উজিরতথান যাত্রা করিয়া গোম্বজানের দুর্গে গিয়া এছফন্দিয়ারকে পত্র দিয়া কহিল সীঘ্র জাইতে হইবে এছফন্দিয়ার কহিলআমি জাইবনা কোরজমর কথায় আমাকে কয়েদ করিয়াছেন কোরজমকে যুদ্ধ করিতে পাঠাইতে কহ সেহ তাঁহার পুত্র যদি আমাকে কয়েদ নাকরিতেন তবে আরচাস্প কদাচ আসিতে পারিতনা; জামস্প উজির কহিল তোমার পিতামহ এবং বন্ধুবান্ধব প্রভৃতি অনেককে বধ করিয়াছে আর তোমার ভগ্নি প্রভৃতি বাটির অনেক স্ত্রী লোককে ধৃত করিয়া চিনদেশে পাঠাইয়াছে এবং তোমার পিতা তাহার সঙ্গে যুদ্ধে অসক্ত হইয়া পলাইয়া পর্ব্বতীয় দুর্গে লুক্কায়িত হইয়া রহিয়াছেন যদি সীঘ্র গমন নাকর তবে তাঁহাকেও নষ্ট করিবে অতএব বিলম্ব করা উচিত নহে সীঘ্র গিয়া সকলকে রক্ষা কর । এই প্রকার অনেক বুঝাইয়া এছফন্দিয়ারকে সম্মত করিয়া তখন লৌহশৃঙ্খল ছেদন করিয়া গোস্তাস্পের নিকটআনিলে গোস্তাস্প আলিঙ্গনকরিয়া আপন পার্শ্বে বসাইয়া কহিলেন শত্রুকেমারিয়া ইরানের সকলকে রক্ষাকর এবং বাদসাহি কর পরে কোরজমকে আনাইয়া এছফন্দিয়া-

রের সর্ম্মুখে তাহার মস্তক ছেদন করিয়া অনেক সেনা সঙ্গে দিয়া এছফান্দিয়ারকে যুদ্ধে পাঠাইলেন। আরচাস্প এছফন্দিয়ারের আগমনের সংবাদ পাইয়া চিন্তাযক্ত হইয়া কহরমকে অনেক সৈন্য দিয়া যুর্দ্ধে পাঠাইল; করগছার নামকএক দৈত্যর প্রধান সেনাপতি আরচাস্পকে কহিল যদি অনুমতি করেন তবে আমি ও এছফন্দিয়ারের যুর্দ্ধে গমন করি বাদসাহ তাহাকেও পাঠাইলেন সে আসিয়া অতি সীঘ একতির এছফন্দিয়ারের প্রতি নিক্ষেপ করে সেই তীর এছফন্দিয়ারের সাঁজওয়া ভেদ করিল কিন্তু সরিরে প্রবেশহইলনা, এছফন্দিয়ার রাগম্বিতহইয়া পাসাস্ত্র নিক্ষেপ করিয়া তাহাকে বন্ধন করত আপন সৈন্য মধ্যে আনিয়া পুনর্ব্বার সত্রুরসৈন্য মধ্যে গিয়া অনেক সেনা বিনাশ করিল আর একসত সাইটজন সৈন্যাধ্যক্ষকেও বিনাশ করিলে কহরম তাহা দেখিয়া ভয়ে আরচাস্পর নিকট পলাইয়া গেল। এছফন্দিয়ার তদ্দৃষ্টে আরচাস্পর সৈন্য মধ্যে প্রবেশ করিয়া সৈন্য সামন্তকে বধ করিতে লাগিল, তদ্দৃষ্টে আরচাস্পআপন সরদার দিগকে ভৎসনা করিয়া কহিল তোমরা একলক্ষঅশ্বারোহি এক এছফন্দিয়ারের সহিত যুর্দ্ধ করিতে পারিলে না একি আশ্চার্য্য এত সৈন্যকে একজনে মারিলেক, তাহারা কহিল এছফন্দিয়ারের সরির ধাতুর ন্যায় কঠিন আমারদিগের অস্ত্র তাহার সরিরে প্রবেশ হয় না সে অস্ত্র মারিলে আমারাদগের সেনা নষ্ট হয় ইহাতে আমরা তাহার সঙ্গে কিপ্রকারে যুর্দ্ধ করিব; এই সময় এছফন্দিয়ারের সেনারাও আসিয়াপৌছিল, আরচাস্পতাহা দেখিয়া পলায়ন করিল। এছফন্দিয়ার তাহার পশ্চাৎ ধাব

মান হইয়া সৈন্য সংহার করিতে২ চলিল আর সেনাদিগে আজ্ঞা করিল যে চিনদেশীয় সেনা প্রাপ্ত মাত্রেই বিনাশ করিবা যেন ইহারা কেহ প্রাণলইয়া দেশে জাইতে নাপারে চিনের অনেক সেনা মারা পড়িল আর জাহারা পলাইতে নাপারিল তাহারা এছফন্দিয়ারের সরনাগত হইল এছফন্দিয়ার তাহারদিগে। ক্ষমা করিল, রণজয়ি হইয়া পিতার নিকট আইল গোস্তাস্প এছফন্দিয়ারকে আলিঙ্গন করিয়া সিরচুম্বন পূর্ব্বক অনেক প্রসংসা করিলেন, তিন দিবস নৃত্যগীতাদি দ্বারা সন্তোষ করিয়া পরে এছথন্দিয়ারকে কহিলেন আর-চাস্প তোমার ভগ্নি গণকে ধৃতকরিয়া লইয়া গিয়াছে যদি তাহারদিগকে সেস্থান হইতে মুক্ত করিয়া আনিতে পার তবে তোমার পুরুষত্ত প্রকাশ হয়; এছফন্দিয়ার কহিল অবস্য তাহার দিগকে মুক্ত করিয়া আনিব। পরে গোস্তাস্প কহিল তাজতক্ত লইয়া ইরানে বাদসাহি কর আমি ঈশ্বরের ভজনা করি এছফন্দিয়ার কহিল আমি তাজ তক্তের আকিঙ্খা করিনা এখন। চিন দেশে জাইয়া আমার ভগ্নি গণকে কারাগার হইতে মুক্ত করিয়া আনি; এখন ঈশ্বর আমার মনো বাঞ্ছা পূর্ণ করুণ। বাদসাহ কহিল ঈশ্বর তোমার মানস সিদ্ধ সীঘ্র করিবেন, পরন্তু এছফন্দিয়ার আর কহিল যে কন্নগছার দৈত্যও বর্দ্ধআছে সেমুক্তহইবার নিমিত্ত আমাকে সর্ব্বদা জানায় আর কহে বাদসাহকে জানাইয়া আমাকে বন্দিসালা হইতে মুক্ত কর আমি ভৃত্যের ন্যায় হাজির থাকিয়া সেবা করিব অতএব তাহাকে মুক্তকরিয়া সঙ্গে লইলে অনেক উপকার যে চিনদেশের তাবৎ সন্ধান পাওয়া জাই ব

বাদসাহ শুনিয়া ঝটিতে করগছারকে কারাকুটীর হইতে আনাইয়া এছফন্দিয়ারকে কহিলেন আমি করগছারকে তোমাকে দিলাম করগছার অনেক বিনয় পূর্ব্বক কহিল আমি তোমারদিগের সাক্ষাতে ধর্ম্মত সত্য করিতেছি কখন তোমার দিগের নিকট মিথ্যা কহিবনা; ও মন্দ চেষ্টা করিবনা বাদ সাহ কহিলেন আমি তোমার অপরাধ এছফন্দিয়ারের অনুরোধে মার্জ্জনা করিলাম ইহা কহিয়া তাহার শৃঙ্খল ছেদন করাইয়া কিঞ্চিৎ রাজপ্রসাদ করিলেন, পরে এছফন্দিয়ার বাদসাহের সন্নিধানে বিদায়হইয়া করগছারকে লইয়া আপন গৃহে গমন করিলেন ॥

---

## এছফন্দিয়ার ভগ্নি গণের উদ্ধারার্থে চিন দেশে গমন ॥

এছফন্দিয়ার গৃহে আসিয়া করগছারকে কহিলেন আমি যদি চিনের বাদসাহ আরচাস্পকে বিনাশকরিয়া আপনভগ্নি দিগকে মুক্ত করিয়া দেশে আনিতে পারি পরন্তু চিনের পথ ঘাটের সন্ধান যাহা তোমাকে জিজ্ঞাসা করিব তাহা সত্য ও যথার্থ কহ তবে তুমি ইরান তুরানের মধ্যে যে দেশ চাহিবা তাহা দিব, কিন্তু কোন কথা মিথ্যা প্রকাশ হইলে মস্তক ছেদন করিব; করগছার কহিল তোমার দিগের নিকটে ধর্ম্মত সত্য করিয়াছি যে তোমার দিগের সাক্ষাতে মিথ্যা কহিবনা এবং মন্দ চেষ্টা করিবনা বিশেষত তোমার অনুগ্রহে আমার প্রাণরক্ষা হইয়াছে, তখন এছফন্দিয়ার কহিলেন চিনের রোইন কেল্লায় অর্থাৎ অষ্টধাতুতে নির্ম্মিত দুর্গে কোনপথে

কি প্রকারে যাই তাহার অনুসন্ধান জাহা জান তাহাবল, আর এস্থান হইতে কত দূর চিন দেশ? করগছার কহিল তিন পথ আছে তাহার এক পথে দুইমাসে জাওয়া জায় তাহাতে অনেক বিশ্রামস্থান ও বসতি পুস্করণি ও নদী ও খাদ্য দ্রব্য যথেষ্ট পাওয়া জায়; আর এক পথে একমাসে জাওয়া যায় কিন্তু সেপথে বসতি ও বিশ্রাম স্থল অল্প এবং খাদ্য দ্রব্য সর্ব্বত্রে উত্তম নাই, আর এক পথে সপ্তাহে জাওয়া জায় কিন্তু সে অতি দুগম ও ভয়ঙ্কর পথ সাত দিনের পথে সাত প্রকার ভয়ানক বিপদ আছে শুনিয়াছি পরন্তু এ পর্য্যন্ত সে পথে কেহ গমনাগমন করিয়াছে এমত কর্ণগোচর কাহার হয় নাই

সপ্ত দিবসের পথে ওহে নরপতি।
অদ্যাবধি কেহ তাহে নাহি করে গতি ॥
কর্ণে মাত্র শুনিয়াছি সাত দিনের পথ।
জিবের অগম্য মহারাজ সেই পথ ॥
প্রথম দিবসে আছে ব্যাঘ্র ভয়ঙ্কর।
সেই পথে মনুস্যার গমন দুষ্কর ॥
দ্বিতিয় দিনের পথে সিংহের নিবাস।
সে পথে করিলে গতি হয় সর্ব্বনাস ॥
ত্রিতিয় দিনের পথে আছে অজাগর।
সে পথের নৈস্বে নাম গাত্রে হয় জ্বর ।
চতুর্থ দিবসে আছে দৈত্যের বসতি।
সে পথে গমন করে কাহার সকতি ॥
পঞ্চম দিবসে আছে ছিমোরগের বাসা।
মহারাজ ত্যাগ কর সে পথের আসা ॥

বরফ কেবল আছে ছ দিনের পথে।
বরফেতে কার সাধ্য পারিবে চলিতে।।
তপ্ত বালুকায় পুর্ণ তার পরে স্থান।
সে স্থানে কাহার সাধ্য করিবে পয়ান।।

এছফন্দিয়ার এই সকল কথা শুনিয়া বিবচনা করিয়া কহিল ইহাতে কোন ভয় ও সন্দেহ নাকরিয়া ঈশ্বরের নাম স্বরণ করিয়া এই সপ্ত দিবসের পথে জাইব, মৃত্যুর নিয়ম যেস্থানে যেরূপে ঈশ্বর নির্ব্বন্ধ করিয়াছেন তাহার অন্যথা কোনরূপে হইবেনা ঈশ্বর আমাদের রক্ষক তিনি রক্ষা করিবেন, অতএব সপ্তাহের পথে জাওয়া স্থির করিলাম। করগছার কহিল এপথ অতিশুকঠিন এছফন্দিয়ার কহিল ঈশ্বরের কৃপায়অতি শুগম হইবেক পরে করগছারকে কহিলেন তুমি আমারসঙ্গে জাইবে কি না? সে কহিল দুইমাসের পথে চল আমি তৎ পথের জ্ঞাত আছি বিস্তারিত করিয়া কহিব; অথবা একমা-সের পথের ও জ্ঞাত আছি কহিতে পারিব, সপ্তাহের পথের কিছুই জ্ঞাত নহি কর্ণে মাত্র শুনিয়াছি আর এ পথে অনেক বিপদ আছে এপথে জাওয়া উচিত নহে। এছফন্দিয়ার এই বাক্য শুনিয়া তাহার প্রতি সন্দিগ্ধ হইয়া তাহাকে বান্ধিতে আজ্ঞা করিলেন; পরদিবস প্রাতে বাদসাহের নিকট গিয়া প্রণাম করিয়া বার সহস্র সেনা লইয়া আপন কনিষ্ট ভ্রাতা বসোতনকে সেনাপতি করিয়া পিতার স্থানে বিদায় হইলেন তখন করগছার বাদসাহের সন্নিধানে অনেক রোদন করিয়া কহিল আমি কল্য আপনার দিগের নিকট ধর্ম্মত সত্য করি-য়াছি আমি তোমার দিগের স্থানে মিথ্যা কহিব না, এখন মন্দ

চেষ্টাও পাইবনা তবে পুনরায় আমাকে কি নিমিত্ত্য বন্ধন করিলেন? এছফন্দিয়ার কহিল আমি হস্ত খানের পথে জাইব পাছে তুমি ভয় পাইয়া পালাও এপ্রযুক্ত বন্ধন করিয়া সঙ্গে লইয়া জাইব ইহা কহিয়া পিতার নিকট হইতে যাত্রা করিয়া বাহিরে আইলেন; করগছার কহিল আমি পদব্রজে জাইতে পারিবনা তখন তাহাকে অশ্বারোহনে লইয়া সকল সেনা সহিতে গমন করিলেন ॥

হস্তখানের পথের প্রথম দিবসের বিবরণ ॥

ক্রমে২ গমন করিয়া আপন দেশেরসীমা পরিত্যাগ করিয়া বনমধ্যে প্রবেশ করত করগছারকে কহিলেন অদ্যকার পথে কি বিপদ আছে তাহা কহ? সে কহিল হস্তির তুল্য দুইটা ব্যাঘ্র আছে; এছফন্দিয়ার আপন সরদার ও সেনাদিগকে আজ্ঞা করিলেন যে তোমরা ব্যাঘ্রকে দেখিবা মাত্র সকলে অনবরত তির নিক্ষেপ করিয়া সমস্ত দিবস বনমধ্যে গমন করিয়া দিবাবসানে এক পর্ব্বতের ঝরনার তীরে পৌছিলেন, সেই স্থানে গিয়া দেখিলেন যে অতি বৃহদ দুইব্যাঘ্র রহিয়াছে তাহা দেখিয়া এছফন্দিয়ার সেনাদিগকে তির মারিতে কহিলেন তাহারা অনেকতির মারিল তথাপি ঐদুই ব্যাঘ্র আসিয়া অনেক মনিস্যকে আঘাতি করিল তখন এছফন্দিয়ার তলওয়ার লইয়া একটা ব্যাঘ্রকে নষ্ট করিলেন আর বসোতন এক টাকে কাটিল পরে করগাছরকে কহিলেন অদ্যকার আপদ ঈশ্বরের কৃপায় নষ্ট করিলাম, সে কহিল আমরা দৈত্য এই ব্যাঘ্রের নিকট কখন জাইতে পারিনাই তুমি মনুস্যহইয়া কি প্রকারে মারিলে তোমার বল ওসাহস দেখিয়া আমি বিস্ময়া

পগ্ন হইয়াছি; পরে সকলে আহারাদি করিয়া সেই স্থানে যামিনী যাপন করিলেন ॥

দ্বিতিয় দিবসের পথের বিবরণ ॥

পর দিবস প্রাতে তথা হইতে কথক দুর গিয়া করগছারকে কহিলেন অদ্যকার পথে কি বিপদ? সে কহিল দুইসিংহ আছে। দিবাবসানে সেইস্থানে উপস্থিত হইয়া দুর হইতে দুইটা সিংহ দেখিতে পাইয়া বসোতন কহিল আমি একটাকে মারি আপনি একটাকে মারুণ এছফন্দিয়ার কহিল এ দুই সিংহ অতি বলবান্ ও ক্রোধ যুক্ত দেখিতেছি তুমি বালক যদি মারিতে নাপার তবে তোমাকে আঘাত কিম্বা নষ্ট করিবে অতএব আমি দুইসিংহকে একা বধ করিব ইহা কহিয়া তলওয়ার লইয়া সিংহের নিকটেগিয়া অতি সীঘ্র একটাকে এক তলওয়ার মারিল তাহাতে সেই সিংহ দুইখণ্ড হইয়া পডিল তাহা দেখিয়া আর একটা সিংহ এছফন্দিয়ারের প্রতি ধাবমান হইয়া আঘাত করিল তাহাতে এছফন্দিয়ারের সরিরে কিছু অঘাতি হইলনা; এছফন্দিয়ার ঝটীতি তাহার মস্তকে এক তলওয়ার মারিয়া দুইখণ্ড করিয়া আপন শিবিরে আসিয়া হস্ত পদধৌতকরিয়া করগছারকে ডাকিয়া কহিলেন ঈশ্বরেরকৃপায় অদ্যকার আপদ নষ্ট করিয়া আইলাম। করগছার কহিল হে বাদসাহ তোমার বল দেখিয়া আমি জ্ঞান শূন্য হইয়াছি কিন্তু কল্যকার পথে বৃহদ এক অজাগর আছেতাহার সরির পর্ব্বতের তুল্য তাহার হাস্তর ন্যায় চারিটা পদ ও পক্ষিরমধ্যায় ডানা আছেসেইসর্প পদবুজে অতবেগে এবংউড্ডিয়মানহইয়া মনস্য ও জন্ত দেখিলে ধরিয়া আহার করে; এবং তাহার মুখ

হইতে অগ্নি নির্গত হয় সে অতিভয়ানক সর্প। এছফন্দিয়ার ইহা শ্রবণ করত চিন্তাযুক্ত হইয়া বসোতনকে কহিলেন এক খান বৃহৎ শকট আনায়নকর তদুপরি এক কুটীর সেই কুটির মধ্য হইতে অশ্বচালনা করাযায় এমতরূপ শকট প্রস্তুত করাও বসোতন কারিকরেরদের ডাকাইয়া সেই রাত্রি মধ্যে উক্তমত রথ প্রস্তুত করাইলেন, দ্বিতিয় দিবসের পথের বিবরণ সমাপ্ত হইল ॥

তৃতীয় দিবসের পথের বিবরণ ॥

তৃতীয় দিবস প্রাতে এছফন্দিয়ার ঐ রথস্থ গৃহের প্রসাদে ও চতুর্দিগে তলওয়ারের ফলা ও বরছি কয়েকটা সংযুক্ত করিয়া তাহাতে অশ্ব সংযোগ করিয়া ঘরের মধ্যে আপনি বসিয়া একবার চালনা করিতে আজ্ঞা করিলেন তাহারা সেই মত চালাইল, পরে আপনি ঐ রথ মধ্য হইতে কথক দূর চালাইয়া রথ হইতে ভূমে নামিয়া কহিলেন এইরথ সাবধান পূর্ব্বক লইয়া চল, তিন প্রহরের সময়ে করগছার কহিল অজাগরের বাসস্থানের নিকটে আসিয়াছি তাহার দুর্গন্ধপাই তেছি, তাহা শুনিয়া এছফন্দিয়ার অশ্ব হইতে নামিয়া সেই রথে আরোহণ করিয়া চালনা করিতে কহিলেন; বসোতন প্রভৃতি সরদারেরা কহিল এদারুণ অজাগরের সমীপেজাওয়া মত নহে, এছফন্দিয়ার কহিল ঈশ্বর রক্ষা কর্ত্তা তিনি রক্ষা করিবেন তোমরা কোন চিন্তা করিবানা, ঈশ্বরের অনুগ্রহে অতি সীঘ্র এ আপদকে আমি নষ্টকরিব ইহা কহিয়া রথ চালা ইয়া অজাগরের নিকট চলিল, যখন সেই অজাগর দৃষ্টি

গোচর হইলতখন যাহারা রথ চালাইতেছিল ও জাহারা সঙ্গে ছিল তাহারা ভয় প্রযুক্ত যাইতে নাপারিয়া এছফন্দিয়ারকে কহিল; এছফন্দিয়ার তাহারদিগকে সেইস্থানে রাখিয়া আপনি কুটীর হইতে অশ্ব চালনা করিয়া অজাগরের নিকট গেলে অজাগর সম্মুখে ঘোটক দেখিয়া মুখ ব্যাদন করত সর্ব্বসহিত গ্রাস করিল; রথের চতুষ্পার্শ্বে তীক্ষ্ণাস্ত্র সংযোজিত ছিল তদ্দারা অজাগরের তালুকায় বৃদ্ধ হইলে সে কোনমতে গিলিতে পারিলনা কিন্তু সর্পের মুখ কাটিয়া খণ্ড২ হইল তখন অতিসয় কাতর হইয়া অনেক যত্নে মুখ হইতে রথাদি বাহির করিয়া অবসন্ন হইয়া পড়িল তখন এছফন্দিয়ার রথ হইতে বাহির হইয়া অজাগরের মস্তক ছেদন করিলেন, কিঞ্চিদ্বিলম্বে এছফন্দিয়ার ঐ অজাগরের বিশের তেজে অজ্ঞ্যান হইয়া ভূমে পড়িলেন। বসোতন তাহা দূর হইতে দেখিয়া রোদন করিতে২ সেইস্থানে আসিয়া দেখিলেন যে সর্পকে নষ্ট করিয়া তাহার বিশের তেজে অজ্ঞ্যান হইয়াছেন সেখান হইতে আনিয়া গোলাব দ্বারা স্নান করাইয়া নোস দ্দারু খাওয়াইলে অনেকক্ষণ পরে তাহার জ্ঞ্যান হইল, তখন উঠিয়া ঈশ্বরকে ধন্যবাদ করিয়া প্রণামকরিলেন। এছফন্দিয়ারের চৈতন্য প্রাপ্তে করগছার অতি দুখিত হইল, কারণ ইহার সঙ্গে নানা আপদ গ্রস্থ হইতে হইবেক আর যদি সকল আপদ হইতে মুক্ত হইয়া জায় তবে আপনবাদসাহর রাজ্যের সকল সন্ধান কহিতে হইবেক এই ভাবিতেছে এমত সময় এছফন্দিয়ার তাহাকে কহিলেন অদ্যকার বিপদ হইতে ঈশ্বর আমাকে রক্ষা করিলেন এবং তাঁহার অনুগ্রহতে আমি সে

আপদকে নষ্ট করিয়াছি কল্য কি আপদ ঘটীবে তাহা বল করগছার কহিল কল্য এক দৈত্য ও তাহার স্ত্রি তাহারা নানা প্রকার জাদুজানে তাহাতে বন কে নদী নদী কে পর্ব্বত করিতে পারে তাহার দিগের সঙ্গেসাক্ষাত হইবেক, এছফন্দিয়ার কহিল দৈত্যকে অতি সহজে নষ্টকরিব তুমিকিছু ভাবনা করিবানা রাত্রে সকলে সেই খানে বাস করিলেন তৃতীয় দিবসের পথের বিবরণ সমাপ্ত হইল ॥

চতুর্থ দিবসের পথের বিবরণ ॥

চতুর্থে দিবসে অতি প্রত্যুষে গাত্রউর্থান করত সেখান হইতে গমন করিয়া সায়ঙ্কু কালে এক রম্যবনের সন্নিহিত উপস্থিত হইয়া শিবির স্থাপিত করিয়া রহিলেন কিঞ্চিৎকাল পরে দৈত্যরস্ত্রি পরম সুন্দরির বেশ ধারনকরিয়া এছফন্দিয়ারের সম্মুখে আসিয়া কহিল আমি অমুক বাদসাহের কন্যা এক দৈত্য আমাকে ধরিয়া আনিয়া এই বন মধ্যে রাখিয়াছে আমি বোধ করি তুমি কোন বাদসাহ হইবে আমাকে ইহার হস্ত হইতে মুক্ত করিয়া সঙ্গেলইয়া চল; এছফন্দিয়ার কহিল সে দৈত্য কোথায় ? সে কহিল সীকার করিতে গিয়াছে এখনি আসিবে, বাদসাহ কহিল তুমি এইস্থানে অবস্থানকর ঐ স্ত্রী অবস্থিতি করিল তদনন্তর তাহার রিত চরিত্রের দ্বারা এছফন্দিয়ারের বোধহইল যে এইদৈত্যরস্ত্রি জাহা করগছার কহিয়াছে, এছফন্দিয়ার কমন্দ বাহিরকরিয়া তাহাকেবান্ধিলেন,সে প্রথমে অনেক কাকুতি বিনতি করিল তাহা এছফন্দিয়ার শুনিলেন না তখন নানা প্রকার ভয়ঙ্কর রূপ ধারণ করিতে আরম্ভ করিল তাহা দেখিয়া এছফন্দিয়ার তলওয়ার

বাহির করিয়া তাহার মস্তক ছেদন করিল, তাহার পর দৈত্য অতি কৃষ্ণ বর্ণ বৃহদাকার ভয়ঙ্কর রূপ ধারণ করিয়া মুখ হইতে অগ্নি নির্গত করিয়া এছফন্দিয়ারের সৈন্যর উপর ফেলিতে আরম্ভ করিল তাহা শুনিয়া এছফন্দিয়ার তলওয়ার লইয়া তাহার নিকটে গিয়া তাহাকে এক তলওয়ার মারিয়া কাটিয়া ফেলিলেন; পরে আপন শিবিরে আসিয়া করগছারকে ডাকিয়া কহিলেন, আমি দৈত্যর স্ত্রি ও দৈত্য দুইজনকে বধ করিয়াছি সে কহিল তুমি সিংহ ও অজাগর মারিয়াছ দৈত্যকে মারিবা কোন আশ্চার্য্য কিন্তু কল্য অতি সঙ্কট তাহা হইতে রক্ষা পাওয়া ভার। পর্ব্বতোপরি ছিমোরগের বাসা তাহারা দুইটা সাবকলইয়া সেইস্থানে থাকে হস্তিকে পায়ের নখে বিন্ধিয়া বাসায় আনিত করে। এছফান্দিয়ার কহিল ঈশ্বর সকল আপদ হইতে উর্দ্ধার করিতেছেন তাহা হইতেও তিনি রক্ষা করিবেন ইহা কহিয়া সে রাত্রি সেই স্থানে বাস করিলেন ।। চতুর্থ দিবসের পথের বিবরণ সমাপ্ত ।।

## পঞ্চম দিবসের পথের বিবরণ ।।

পঞ্চম দিবস প্রাতে উঠিয়া অনেক বন নদ নদী পর্ব্বতাদি উল্লঙ্ঘন করিয়া ছিমোরগ যে পর্ব্বতে থাকে সেই পর্ব্বতের নিকট পৌছিলেন তখন এছফন্দিয়ার পূর্ব্বোক্ত রথ আনাইয়া তদুপরি নানা বিধ শাণিতাস্ত্র সংলগ্নকরিয়া অশ্ব সংযোজিত করিয়া আপনি তাহার মধ্যে বসিয়া রথ চালনা করত ছিমোরগের বাসার নিকটে চলিল তখন পক্ষরাজ পর্ব্বত হইতে দেখিয়া তথা হইতে উঠিয়া ঐ রথের উপর পড়িয়া পঞ্জা দ্বারা রথ ধারণ করিল তাহাতে রথোপরি যে সকল

অস্ত্র ছিল তাহাতে পক্ষের দুই পঞ্জা খণ্ড২ হইয়া গেল, তখন উভয় চঞ্চু বিস্তার করিয়া রথ মুখ মধ্যে ধরিল ঐ সকল অস্ত্র তাহার জুহ্বাতে ও তালু দেশে বিদ্ধ হইয়া রক্তাক্ত কলেবর হওত অবসন্ন হইয়া মুখহইতে রথ ফেলিয়া ভূমেপড়িল তখন এছফন্দিয়ার রথ হইথে বাহির হইয়া তলওয়ার হস্তে লইয়া ছিমোরগের মাথা খণ্ড২ করিয়া ফেলিল; তাহার জোড়া ও সাবক পর্ব্বতের উপর হইতে দৃষ্টি করত উড়িয়া পলাইল; বসোতন প্রভৃতি সকলে সেই বৃহদ পর্ব্বতাকার পক্ষ দেখিয়া বিস্ময়াপন্ন হইয়া সকলে এছফন্দিয়ারকে অনেক প্রসংসা করিল। করগছার দেখিয়া হত বুদ্ধি হইয়া থাকিল, এছফন্দিয়ার তাহাকে কহিলেন কল্য কি উৎপাত আছে তাহা বস? সে কহিল কল্য অত্যৎকট বিপদ এ ব্যাঘ্র সিংহ সর্প পক্ষ দৈত্য নহে যে বল দ্বারা নষ্ট করিবা এস্থলে আকাশ হইতে বরফ পতিতহয় সেখানে বলও বুদ্ধির কর্ম্মনহে, এবং সপ্তমদিবসের পথ তাহা হইতে ও কঠিন। হে মাহারাজ, এই স্থান হইতে ফিরিয়া চলুন সৈন্যরা ইহা শুনিয়া ভীত হইয়া এছফন্দিয়া-রের নিকটে আসিয়াকহিল করগছার যে দিবস জাহা ঘটিবে কহিয়াছিল তাহাই সত্য হইয়াছে ইহাতে বোধ হয় করগছা-রের কথা সকলি সত্য তবে এখান হইতে ফিরিয়া জাওয়াই কর্ত্তব্য কেননা যেরূপ কয়খোছরের সঙ্গে অনেকে গিয়াছিল তাহার দিগের সেইবাদসাহ ফিরিয়া জাইতে কহিলে তাহারা না শুনিয়া সকলে বরফে চাপা পড়িয়া মরিয়াছিল আমরাও সেইমত বরফে মারা পড়িব। এছফন্দিয়ার কহিল আমি পাঁচ দিবসের নানা উৎপাত হইতে ঈশ্বরের কৃপায় মুক্তহইয়া

আসিয়াছি আর দুইদিনের পথ গেলে চিন দেশে পৌছিব তাহাতে যদি কোন বিপদ থাকে তাহাতেও ঈশ্বর রক্ষা করিবেন। ইহা শুনিয়া সেনারা কহিল আমারা চক্ষে দেখিয়া কি প্রকারে মৃত্যুর মুখে জাইব? এছফন্দিয়ার কহিল তোমরা সকলে প্রাণ লইয়া আপনং বাটিতে ফিরিয়া জাও আমি একাকি চিন দেশে জাইব ইহাতে তোমার দিগের কাহার সহায়তার আকিঙ্খা আমি রাখিনা আমার সহায় কেবল এক মাত্র ঈস্বর, ইহা শুনিয়া সকলে কহিল তোমাকে একাকি রাখিয়া আমরা কি প্রকারে জাইব আমারদিগের অপরাধ হইয়াছে ক্ষেমা কর, বাদসাহ তাহরদিগকে প্রবোধ করিয়া কহিলেন যদি ঈশ্বরের অনুগ্রহতে চিন হইতে জয়ী হইয়া আসিতে পারি তবে তোমার দিগের মানস পূর্ণ্ণ করিব সে রাত্রি সেই স্থানে থাকিলেন পঞ্চম দিবসের পথের বিবরণ সমাপ্ত হইল ॥

সষ্ট দিবসের পথের বিবরণ ॥

এছফন্দিয়ার সষ্ট দিবস প্রাতে সেনাগণকে সঙ্গে লইয়া সমস্ত দিবস চলিয়া বেলা অবসানে এক পর্ব্বতের নিকটে অতি রম্য স্থান ও ঝরনা দেখিয়া শিবির স্থাপন করিয়া রহিলেন কিঞ্চিৎ কাল পরে ঝড় আরম্ভ হইল তাহা দেখিয়া বাদসাহ পর্ব্বতের বৃহৎ২ গুহার মধ্যে সেনাগণকে ও ঘোটকাদি রাখাইলেন কিঞ্চিৎ রাত্রি গত হইলে বরফ পড়িতে আরম্ভ হইল তদ্দৃষ্টে এছফন্দিয়ার আপন ভ্রাতা ও পুত্র ও সরদারদিগকে সঙ্গে লইয়া ঈশ্বর উদ্দেশে রোদন বদনে প্রার্থনা করিলেন যে হে ঈশ্বরময় তব ইচ্ছায় শৃষ্টি স্থিতি প্রলয় হয় এ আপদ

হইতে আমাদিগেরকে উর্দ্ধারকর এইরূপে সেনারাও প্রাথনা করিতে লাগিল, কিয়ৎকালপরে ঝড ওবরফ অল্পতা হইতে আরম্ভ হইয়া প্রাত কালে নির্ম্মল হইল সকলে তুষ্ট হইয়া ঈশ্বরকে ধন্যবাদ ও প্রণাম করিয়া তথা হইতে যাত্রা করিলেন ষষ্ট দিনের পথের বিবরণ সমাপ্ত হইল ॥

সপ্তম দিবসেরপথে করগছারের মস্তকছেদনেরবিবরণ

সপ্তম দিবস প্রাতে উঠিয়া সরদার দিগকে লইয়া ঈশ্বরকে সরণ করিয়া কথক দুর গিয়া বালুকা ময় ভূমি দেখিয়া অগ্রসার হইলেন, করগছারকে ডাকিয়া কহিলেন তুই তপ্ত বালুকাময় ভূমি কহিয়াছিলি এ অতি সুশীতল ভূমি দেখিতেছি; সে কহিল গতো রাত্রে বিস্তর বরফ পডিয়াছিল এ প্রযুক্ত শিতল হইয়াছে ইহাও ঈশ্বরের এক প্রকার অনগ্রহ আপনার প্রতি হইয়াছে, এছফন্দিয়ার হাস্য করিয়া কহিলেন তুই আমাকে ভয় প্রদরশণ করাইয়া আমাকে ফিরাইয়া দেশে লইয়া জাইবি কিন্তু আমি কোনমতে ফিরিবোনা ইহা কহিয়া তাবৎ সেনাকে কহিলেন তোমরা সকলে শীঘ্র গমণ কর অধিক বেলা হইলে বালুকায় চলিতে ক্লেশ হইবে এবং এই বালুকাময় ভূমি কোনস্থানে বৃক্ষাদি নাই যে তাহার ছায়াতে বিশ্রাম করিবা এবং নদ নদী নাই যে কেহু জলপান করিবা তখন সকলে দ্রুত গমনে কথক দুর গমন করিলে সৈন্যাগ্রে যে ব্যক্তি নিসান লইয়া জাইতেছিল সেই এক নদী দেখিয়া এছফন্দিয়ারকেকহিল সর্ম্মুখে বৃহৎএকনদী তাহাতে নৌকা নাই কি প্রকারে পার হইব ? এছফান্দয়ার এইকথা শুনিয়া করগছারকে ডাকিয়া বিস্তর গর্জ্জন করিয়া কহিলেন

তুই পূর্ব্বেও পথিমধ্যে কহিয়াছিলি চত্বারিংশৎ ক্রোস বালুকা ময় ভূমি ইহার মধ্যে কোনস্থানে তৃণ বৃক্ষাদি কিছু নাই, আর এই চল্লিস ক্রোসের মধ্যে নদ নদি আদি কিছু নাই; আমার লোক নদি দেখিয়া জানাইতে আসিয়াছে তুই সকল মনুস্য কে মিথ্যা কহিয়া ভয় দেখাইয়াছিলি, তখন সে কহিল আমি তোমার ও তোমার পিতার নিকট শপথ ও সত্য করিয়াছি মিথ্যা কহিবনা তত্রাপি আমাকে বাঁন্ধিয়া লইয়াছ সত্য কহিয়া ও শপথ করিয়াও আমার বন্ধন মোচন হইলনা তবে আর সত্য কহিবার আবিশ্যক কি, তখন এছফন্দিয়ার তাহাকে বন্ধন হইতে মুক্ত করিয়া পারিতোষিক প্রদান করিয়া কহিলেন তোকে পুনর্ব্বার কহিতেছি যখন যে কথা জিজ্ঞাসা করিবো তাহা সত্য কহিন তবে আরচাস্পাকে মারিলে এ রাজ্যের বাদ সাহি তোকে দিব; আর যদি কোন প্রকারে মিথ্যা প্রকাশ হয় তৎখনাত মাথা কাটীব। করগছার ছেলাম করিয়া কহিল আমি সর্ব্বদা সত্য বাক্য কহিয়াছি কেবল অদ্য এক কথা মিথ্যা কহিয়াছিলাম তাহার কারণ পূর্ব্বে নিবেদন করি য়াছি আমার সে অপরাধ ক্ষেমা কর। পরে তাহাকে কহি লেন জাহাতে সকল সেনা অক্লেশে পারেযাইতে পারে তাহা কর, তখন করগছার নদির তীরে আসিয়া যে স্থানে কিঞ্চিৎ জল ছিল সেই স্থান দিয়া তাবৎ লোককে নদপার করিয়া দুর্গের পাচ ক্রোস অন্তরেরহিল। এছফন্দিয়ার করগছারকে কহিল কিপ্রকারে এইচিনের রোয়িন দুর্গ অধিকারহয় তাহার উপায় বল? সে কহিল আমার বুদ্ধিতে কোন উপায় আইসে না কারণ অষ্টধাত্তর দুর্গ ইহার উত্তরে অগম্য পর্ব্বত; দক্ষিণে

সমুদ্র পশ্চিমে অষ্টধাতুর প্রাচির তাহাতে এক দ্বার মাত্র তাহাতে অনেক রক্ষকঅছেে বাদসাহরআজ্ঞা ব্যতিরেকেকেহু তাহার মধ্যে প্রবেশ করিতে পারেনা; এই দুর্গের মধ্যে বাদ সাহর বাটী ও নগরও তাবত্ত প্রজার বসতি এবং উদ্যানক্ষেত্র ইহার অন্য কোন দিগে গমনা গমনের পথনাই যদি সহস্র বৎসর দুর্গ বেষ্টন করিয়া থাক তত্রাপি কিছু করিতে পারিবা না; এছফন্দিয়ার কহিল আমি আরচাম্প বাদসাহকে নষ্ট করিয়া তাহার পরিবার গণকে ধৃত করিয়া লইয়া জাইব। ইহা শুনিয়া করগছার রাগত হইয়া কহিল আমি তোমার অতি দুভাগ্য দেখিতেছি; চিনের বাদসাহ তোমার মস্তক ছেদন করিয়া তোমার রক্তে পৃথিবিকে কদ্দম করিবে আর তোমার সরির শ্রগাল কুক্কুরদিয়া খাওয়াইবে এইরূপ অনেকদুঃবাক্য কহিল তাহাতে এছফন্দিয়ার রাগত হইয়া তাহার মস্তক ছে- দন করিলেন ॥

## এছফন্দিয়ার গোপনে দুর্গ দেখিবার ও প্রবেশ করিবার বিবরণ ॥

রাত্রি যোগে গোপনেকএক জন লোক সঙ্গে লইয়া দুর্গ দেখিতে গেলেন নিকট গিয়া দেখিলেন যে পশ্চিমদিগে অষ্ট ধাতুর নির্ম্মিত প্রাচির তাহার ভিত চল্লিষ গজ উর্দ্ধে দৃষ্টী হয় না এই রূপ তিন ক্রোষ দেখিয়া ফিরিয়া আপন শিবিরে আ- সিয়া ভ্রাতা ও সরদার দিগকে ডাকিয়া কহিলেন, যদি ঈশ্বর অনুগ্রহ করেণ তবে এই দুর্গ অধিকার হইবে নত্তবা এদুর্গ মধ্যে প্রবেশকরণে সাধ্যনাই; একসতবৎসর বেষ্টনকরিয়া

থাকিলেও কেহ কিছুই করিতে পারেনা। করগছার জাহা কহিয়াছিল সে কথাসত্য আমি চিনের দুর্গ দেখিয়া লজ্জিত হইয়াছি কারণ সমুদয় বাদসাহর দেশে গিয়া সকল বাদসা-হর দুর্গ দেখিয়াছি কিন্তু এমন অষ্ট ধাতুর গড কোন দেশে দেখি নাই; এদুর্গ কিপ্রকারে অধিকার করি তাহার পরামর্স কর। সরদারেরা কহিল যদি এমত দুর্গম দুর্গ হয় তবে ফি-রিয়া জাওয়ায় সতপরামর্স, এছফন্দিয়ার কহিল সে কথা সত্য বটে কিন্তু ফিরিয়া যাইতে আমার মম হয় না যে হেতু আমার মনে সর্ব্বদা উদয় হইতেছে যে ঈশ্বর অতি দয়াল যে তাঁহাকে আশ্রয়করে তিনিতাহাকে অবিশ্যআশ্রয় দেন, আমি তাঁহাকে আশ্রয়করিয়া এই হপ্তখানের দুর্গম পথ দিয়া সকল আপদ হইতে তাঁহার কৃপায় মুক্ত হইয়া এপর্য্যন্ত আসিয়াছি তাঁহাকে আশ্রয় করিয়া কেহ্নিরাসা হয় নাই আমি তাঁহাকে আশ্রয় করিয়াছি তিনি কৃপা করিয়া আমারমানসপূর্ণ অবস্য করিবেন ইহা কহিয়া কিঞ্চিৎকাল মনোমধ্যে বিবেচনা করি য়া সকলকে কহিল যে আমার মনে পরমেশ্বর কৃপা করিয়া এক উপায় উদয় করিলেন তাহা শুন; আমি তোমার দিগের এইস্থানে সেনা সহিত্ত রাখিয়া বণিক বেশে দুর্গ মধ্যে প্রবেশ করিয়া কিছুদিন সেইস্থানে থাকিয়া সন্ধান করিয়া যদি মারিতে পারি তাহার চেষ্টা করিব তদব্যতিরেকে যুর্দ্ধ করিয়া এ দুর্গমারা অতি শুকঠিন প্রাণের আসা ত্যাগ না করিলে কোন কঠিন কর্ম সির্দ্ধ হইতে পারে না অত এব আমি প্রাণেরআসা ত্যাগকরিয়া সওদাগরের বেশে দুর্গ মধ্যে অবশ্য জাইব ইহাতে কোন সন্দেহ নাই ঈশ্বর

অবস্য আমাকে দয়া করিবেন ইহা কহিয়া তৎপরে একসত উষ্ট আনাইয়া দস উষ্ট্রে নানা প্রকার উত্তম জরির ও রেস মের বস্ত্র পাঁচ উষ্ট্রে হিরক মুক্তাদি নানা রত্ন ও পাচ উষ্ট্রে বাদসাহী পরিচ্ছদ এবং উপবেশনীয় আসন এই কুড়ি উষ্ট্রে বোঝাই করিয়া বাকি আসি উষ্ট্রে আসি জোড়া সিন্ধুক তাহার মধ্যে একসত সাইটজন বলবান মল্ল আর একসত বল বান্ যোদ্ধা তাহারা উষ্ট্রে রক্ষক এইপ্রকার আয়োজন প্রস্তুত করিয়া আপন ভ্রাতা বসোতনকে কহিলেন তুমি সৈন্য লইয়া সাবধান পূর্ব্বক এইস্থানে থাকিবা যে দিবস এই দুর্গের উপর অতি প্রচণ্ড প্রজলিত অগ্নি তোমারদিগের দৃষ্টী গোচর হইবে তৎখনাত এস্থান হইতে যাত্রা করিয়া সসৈন্য দুর্গ মধ্যে কেল্লায়প্রবেশ করিয়াতাহারদিগে সংহার করিতেআরম্ভ করিবা।

### এছফান্দয়ার বণিক বেশে দুর্গ প্রবেশ করিবার বিবরণ

আপনি ও সঙ্গিগণ সকলে সওদাগরের ন্যায় পোসাকপরিধানকরিয়া উষ্ট্র সকল লইয়া যাত্রা করিয়াকয়েক দিন মাঠেং বেড়াইয়া দুর্গের বাহিরে এক সরাইতে আগত হইয়া প্রচার করিলেন যে আমি সওদাগরি করিবার নিমিত্ত্য ইরান হইতে চিন দেশে আসিয়াছি, ইহাশুনিয়া রক্ষকেরা বাদসাহরনিকট জ্ঞাপন করিল যে একজন প্রধান সওদাগর একসত উষ্ট্রেতে নানা প্রকার দিব্য লইয়া পশ্চিম ইরান হইতে চিন দেশে সওদাগরি করিতে আসিয়া দুর্গ প্রান্তে সে এক সরাইতে আছে যেমত অনুমতি হয়? বাদসাহ শুনিয়া দুর্গ মধ্যে আনিতে

আজ্ঞা করিলেন, তখনরক্ষকেরা গিয়া এছন্দিয়ারেরকে দুর্গ মধ্যে আনিল এছফন্দিয়ার নগর মধ্যে এক স্থানে বাসা করিয়া রক্ষক গণকে কহিলেন আমার বাসনা এই যে বাদসাহের সহিত সাক্ষ্যাত করিয়া কিছু উপঢৌকন প্রদান করি তোমরা বাদসাহকে জানাইয়া অনুমতি লইয়া আমাকে লইয়া চল তাহারা পুনরায় বাদসাহের নিকট গিয়া এই কথা জানাইলে এছফন্দিয়ারকে আনিতে আজ্ঞা দিলেন; এছফন্দিয়ার অনেক উত্তম রত্ন ও অন্য বহু মূল্য দ্রব্য লইয়া বাদসাহের সহিত সাক্ষ্যাত করিলে আরচাস্প বাদসাহ তুষ্ট হইয়া অনেক সমাদর করিয়া আপন নিকটে এক চৌকিতে বসাইয়া নাম ও ধাম জিজ্ঞাসা করিলেন? এছফন্দিয়ার কহিল আমার নাম খররাদ ইরান দেশে বসতি। পরে বাদসাহ কহিলেন ওহে খররাদ, ইরানের সকল সংবাদ জ্ঞাত আছ; কুরগছারকে এছফন্দিয়ার ধরিয়া কয়েদ রাখিয়াছিল সে আছে কি নাই আর গোস্তাস্প ও এছফন্দিয়ার কি মন্ত্রনা করিতেছে? খররাদ শওদাগর কহিল আমি ইরান হইতে পাঁচমাস বাহির হইয়াছি তখন কোন কথা শুনিনাই পথে আসিয়া যখন চিন দেশের নিকটে অইলাম তখনপথিক লোকেরমুখে শুনিয়াছি এছফন্দিয়ার অনেক সেনা লইয়া হপ্তখানের পথ দিয়া এখানে আসিতেছে, আরচাস্প ইহা শুনিয়া হাস্য করিয়া কহিল হপ্তখানের পথে পক্ষ জাইতে পারেনা এছফন্দিয়ার কি প্রকারে আসিবে, খররাদকেকহিলেন তুমি এখন বাসায় বিদায় হও যখনতুমি আমারসহিত সাক্ষ্যাত করিতে বাঞ্ছাকরিবে তখনি আসিবা অনুমত করিলাম এবংরক্ষকদিগকে ও আজ্ঞা

করিলেন যখনখররাদ সওদাগর আমারনিকট আসিতে ইচ্ছা
করিবে তখনি আনিবা আরআমার অনুমতির আবিস্যকনাই
তৎপরে খররাদ বিদায় হইয়া আপন বাসায়আইল এবংসেই
স্থানে ক্রয় বিক্রয় আরম্ভ করিল। এছফন্দিয়ারের দূইভগ্নি
আরচাম্প বাদসাহের বাবরচি খানা অর্থাৎপাকশালা পরি
স্কার করিবার কর্ম্মে নিযুক্তা ছিলা, ইরান হইতে সওদাগর
আসিয়াছে সুনিয়া তাহার নিকট আইলে এছফন্দিয়ার তা-
হার দিগেকে দূর হইতে দেখিয়া চিনিতে পারিয়া আপনমুখ
বস্ত্রদ্বারা আচ্ছাদন করিল; তাহারা আসিয়া জিজ্ঞাসা করিল
গোস্তাম্প আর এছফন্দিয়ার কেমনআছে? এছফন্দিয়ার
কহিল আমি সওদাগর বাদসাহের বাটীর সংবাদ জ্ঞাতনাহ
পুনরায় তাহারা কহিল যখন আপান ইরানজাইবা গোস্তম্প
ও এছফন্দিয়ারকে এই কথা কহিবে আমরা তাহারদিগের
কন্যা ও ভগি্ন হইয়া আরচাম্প বাদসাহের রন্ধনশালা পরি
স্কার করিয়া কাল যাপন করিয়া থাকিতাহারা ইহা সুনিয়া
ও সুখে আহার নিদ্রা করিতেছেন, এছফন্দিয়ার গর্জ্জন
করিয়া কহিল গোস্তাম্প ও এছফন্দিয়ারেরনাম পৃথিবীহইতে
লোপ হউক তাহারা সীঘ্র মরুক তাহার দিগের নিকট আমার
কোন আবিস্যক নাই, এছফন্দিয়ারের জ্যেষ্টা ভগ্নি তাহার
স্বরের দ্বারা বোধ করিল যেএই এছফন্দিয়ার কিন্তু কনিষ্ঠা
বুঝিতে পারিলনা, উভয়ে তৎক্ষণাত বিদায় হইয়া পুনর্ব্বার
রাত্রিযোগে দুইজনে আসিয়া কহিল তোমাকে কোন গোপ
নীয় কথা কহিব, এছফন্দিয়ার তাহারদিগের দুইজনকে
লইয়া কহিল তোমারদিগকে মুক্ত করিতে আসিয়াছি নতুবা

এই হস্তখানের দুর্গম পথে কে আইসে তোমরা আর কিছুদিন ধৈর্য্যাবলম্বন করিয়া থাক কোন মতে আমার নাম ও এখানে আসিয়াছি একথা প্রকাশ করিওনা আমি সময় বুঝিয়া তো- মাদের ডাকিয়া লইব, তাহারা ইহা শুনিয়া হৃষ্টচিত্ত হইয়া আপনার দিগের বাসস্থানে গেল। এছফন্দিয়ার প্রত্যহ নগর দর্শন ছলে নানা স্থানে ভ্রমণ করিয়া পথ ঘাটের অনু সন্ধান করেণ; কিয়ৎ দিবসপরে একদিন আরচাস্পবাদসাহর সমীপে গিয়া অনেক কথপকথনের পর এছফন্দিয়ার কহিল যখন আমি এতদ্দেশে আসি এক দিবস পথিমধ্যে ঝড় বৃষ্টি হইয়া সকলে মারা পড়িবার উপক্রম হইয়া সকলে ঈশ্বরের উদ্দেশে বিস্তর রোদন করিলাম আর ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করিলাম যে আমারদিগের সকলকে এদায়হইতে মুক্ত করিয়া রক্ষা কর আর ঈশ্বরের স্থানে মানা করিয়াছিলাম যদি এ আপদ হইতে রক্ষা পাইয়া কোন নগরে উপস্থিত হই তবে আপারণ সাধরণ সকল মনুষ্যকে ঈশ্বরের প্রিতার্থে ভোজন করাইয়া এবং তাবত নগরে ময় আলোক করিব, এখন ঈশ্বর রক্ষা করিয়া আপনকার দেশে আনিয়াছেন আমার মানস আপনকার দরবারের সকল আমির ওমরা ও সরদার ও প্রধান লোককে একদিন নিমন্ত্রন করিয়া ভোজনকরাই এবং তাবত নগর আলোক ময় করি, বাদসাহ কহিল ভাল তুমি আয়ো- জন কর কল্য সমস্ত লোককে তোমার বাটীতে আমি পাঠা- ইব। এছফান্দয়ার কহিল আমি যে বাটিতে আছি সে অতি সঙ্কির্ণ স্থান তাহাতে এ কর্ম্ম সমর্থ হইতে পারিবেক না যদি অনুগ্রহ করিয়া অনুমতি করেণ তবে দুর্গের উপর শিবির

স্থাপিতকরিয়া একর্ম্মকরি; আরসেই দুর্গের উপর আলোকময় করিলেনগর ময় আলো হইবেক। আরচাম্প শুনিয়া দুর্গের রক্ষককে আজ্ঞা করিলেন এছফন্দিয়ার বিদায় হইয়া বাসায় আসিয়া আপন সঙ্গিগণকে ভোজনের আয়োজন করিতে আজ্ঞা করিলেন আর কাষ্ঠ আনিতে লোক পাঠাইলেন ॥

---

## দুর্গোপরি ভোজন উপলক্ষ্য আলো করা এবং বসোতনের যুদ্ধ ॥

পর দিবস প্রাতে এছফন্দিয়ার দুর্গোপরি শিবির মধ্যে সভা করিয়া আহারের দ্রব্য আনায়ন করিল এবং কাষ্ট আনা আনাইয়া অগ্নি প্রজ্বলিত করিলে আরচাম্প বাদসাহ আপন দরবারের ও নগরের সকল প্রধান প্রধান ব্যক্তিকে খররাদ সওদাগরের নিমন্ত্রনে ভোজন করিতে পাঠাইলেন, খররাদ সকল লোককে সিষ্টচারি পূর্ব্বক নানা প্রকার খাদ্য দ্রব্য আনাইয়া ভোজন করাইতে বসাইয়া মদিরা আনাইলেন সকলে আহারান্তে মদরিকা পান করিয়া উন্মত্ত হইল; এখানে কাষ্টেতে অগ্নি প্রজলিত হইয়া ধুমআকাশে উঠিলে বসোতন তাহা দেখিয়া বোধকরিল যে এছফন্দিয়ার এ অগ্নি প্রজ্বলিত করিয়াছে আপনার সকল সেনাকে শুসজ্জিভূত করিয়া গমন করিল সন্ধ্যার সময়ে দুর্গদ্বারে উপস্থিত হইয়া রক্ষকাদি যে ২ ব্যক্তিছিল তাহার দিগেকে সংহার করিতে আরম্ভ করিল, আর এমত প্রকাশকরিল যে এছফন্দিয়ার আসিয়াছে। সকলেই জানিল দূর্গ মধ্যে এছফন্দিয়ারের সভায় যে সকল সরদারেরা মদিরা পানে মত্ত হইয়াছিল তাহার অনেক কে এছ-

ফন্দিয়ার নষ্ট করিল যে অল্প লোক ছিল তন্মধ্যে কেহ ২ লুক্কাইত হইয়া রহিল কেহবা পলাইল, আরচাস্প বাদসাহ সুনিল যে এছফন্দিয়ার অনেক সেনা সহিতে আসিয়া দুর্গ মধ্যে প্রবেশ করিয়া অনেক মনুস্যকে নষ্ট করিয়াছে, তখন আপন পুত্র কহরমকে কহিল তুমি পঞ্চাস সহস্র সেনা লইয়া এছফন্দিয়ারের সহিত যুদ্ধ কর আর চল্লিযসহস্র সেনা দুর্গে ও নগর রক্ষার্থে স্থানে ২ স্থাপিত কর আর দশ সহস্র সেনা আমার পুররক্ষার্থে রাখ; কহরমকাথতাজ্ঞামত সৈন্যনিয়োগ করিয়া পঞ্চাস সহস্র সেনা লইয়া দুর্গ দ্বার উপনিত হইয়া বসোতনের সহিত যুদ্ধ আরম্ভ করিল। দুর্গ মধ্যে এছফন্দিয়ার আপনার সমভিব্যাহারি বলবান দিগকে লইয়া অনেক মনুস্যকে বধ করিয়া আরচাস্পর আলয়ে প্রবেশ করিয়া যে সকল সৈন্য সেখানে ছিল তাহারদিগ্যে বিনাশ করিতে লাগিল, এই সময়ে এছফান্দয়ারের দুই ভগ্নি আসিয়া আর চাস্প যে মহলে থাকে এছন্দিয়ারকে সেইস্থানে লইয়া গেল তাহা দেখিয়া আরচাস্প রণ সজ্জা করিয়া এছফন্দিয়ারের সঙ্গে যুদ্ধে প্রবত্ত হইল; অনেকক্ষণ পরে এছয়ন্দিয়ার আর চাস্পকে ভূমে নিক্ষেপ করিয়া মস্তক ছেদন করিল তদন্তর আরচাস্পর দুই স্ত্রি ও এক ভগ্নি ও দুইকন্যা তদ্দিগকে ধৃত করিয়া আপন বাসায় পাঠাইল আর আপনি দুর্গ দ্বারে গিয়া যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্তহইল। দুর্গস্থ লোকেরা বাদসাহর মৃত্যু শুনিয়া রোদন করিতে লাগিল কহরম ইহাশ্রবণে দুর্গ মধ্যে আসিয়া শুনিল যে খররাদসওদাগর বাদসাহকে মারি য়াছে এই কথা শুনিয়া কহরম এছয়ন্দিয়ারের সহিত যুদ্ধ

করিতে প্রবৃত্ত হইল তখন বসোতন আপন সেন লইয়া গড়ের মধ্যস্থিত লোক কাটিতে লাগিল। এছফন্দিয়ার অনেকক্ষণ যুদ্ধ করিয়া কহরমকে বিনাশ করিয়া ঘোসনা করিলেন যে কেহ আমার সরণাগত হইবে তাহাকে রক্ষ করিব। এইকথা শুনিয়া সকলে আসিয়া সরণাগত হইল এছফন্দিয়ার আর চাম্পার তক্তে উপবেশন করিয়া কিয়ৎকাল সেই স্থানে বাস করিয়া উক্তরাজ্যে নিয়ম নির্দ্ধারিতকরিয়া গোস্তাম্পাকে সকল সমাচার লিখিয়া পাঠাইল আর ঐ পত্রের প্রত্যুত্তর অপেক্ষায় ঐই থানে থাকিয়া সমস্ত লোককে বসিভুত করিল যাহারা বাধ্য হইলনা তাহারদিগের প্রাণদণ্ড করিল পরে চিনের বাদসাহ আরচাম্পর ধনাগার হইতে বহুবিধ ধন আপনার সৈন্য গণকে দিলেন। গোস্তাম্প এছফন্দিয়ারের পত্রপাইয়া অত্যন্ত হৃষ্ট হইয়া উত্তরে লিখিল যে তুমি সেই স্থানে থাকিয়া চিনের অন্তঃপাতি ও অধিন মহাচিন প্রভৃতি সকল দেশ শুশাসিত ও নিয়ম নিধার্য্যকর এছফন্দিয়ার এইপত্র পাইয়া উত্তরলিখিল এদেশের তাবত নগর শাশিত ও বাধিত এবং সকল প্রজা পুতি কর নির্দ্ধারিত করিয়াছি আর কোন সন্দেহ নাই, গোস্তাম্প এইপত্রপাইয়া এছফন্দিয়ারকে চিন দেশহইতে ইরানে আসিতে লিখিল। এছফন্দিয়ার পিতার পত্র পাইয়া স্থির হইয়া অনেক ধনএবং রত্ন ও উত্তমবস্ত্রাদি ও নানা প্রকার দ্রব্য আর আপন ভগ্নি প্রভৃতি যাহারদের চিনের বাদসাহ বলখ নগরহইতে লইয়া গিয়াছিল তাহারদের ও চিনেরবাদসাহর স্ত্রি ও কন্যাদিগকে সঙ্গে লইয়া ইরানে যাত্রা করিলেন। হপ্ত

খানের রাস্তায় আসিয়া যখন বরফের মঞ্জিলে পৌছিলেন যে সসল দ্রব্য যাওন কালিন বরফের নিচেচাপা পড়ায় ত্যাগ করিয়া গিয়াছিলেন তাহাও পাইলেন, যখন ইরানের নিকট পৌছিলেন গোস্তাস্প ইহা শুনিয়া সমস্ত সরদারকে অগ্রসর পাঠাইলেন। যখন বাটির নিকট হইল তখন গোস্তাস্পদ্বার পর্য্যান্ত গিয়া এছফন্দিয়ারকে কোলে লইয়া সিরচুম্বন করিলেন এছফন্দিয়ার পদধূলি লইয়া পণাম করিল; পরে গৃহ মধ্যে আনিয়া আপন তক্তে একত্র বসিয়া অনেক প্রসংসা করিয়া আপন হস্তে পেয়ালায় সরাব পরিপূর্ণ করিয়া উভয়ে পান করিলেন, সেই সময়ে গোস্তাস্পকহিল হপ্তখানের পথের ও চিনের যুর্দ্ধের বিবরণ যদ্যাপি পরক্ষ্যে সকলা শুনিয়াছি তত্রাপ তোমার মুখে সবিশেষ শুনিতে বাঞ্ছা করি, এছ এছফন্দিয়ার কহিল এখন উভয়ে মদিরা পানে মত্ত হইয়াছি এসময়ে কোনকথা বলা উচিতনহে কল্যবিস্তারিতরূপেকহিব.

## হপ্তখানের বৃত্তের ও চিনের যুর্দ্ধ বিবরণ

পর দিবস প্রাতে গোস্তাস্প তক্তে বসিয়া এক সোনার চৌকীতে এছফন্দিয়ারকে বসাইয়া জিজ্ঞাসা করিলে এছফন্দিয়ার সমুদয় বিবরণ বিস্তারিত করিয়া উচ্চস্বরে কহিলে বাদসাহ শুনিয়া প্রকাশ্যেতে হৃষ্ট চিত্ত হইলেন কিন্তু অন্তরে অসন্তুষ্ট হইয়া তাজ ও তক্ত দিবার কথা পূর্ব্বে যাহা কহিয়াছিলেন তাহার কিছু মনেযোগ করিলেন না এছফন্দিয়ার মনে বুঝিল এখনপর্য্যান্ত আমারপ্রতি সন্দেহআছে, কিছুনা কহিয়া সভা হইতে উঠিয়া স্বয় মন্দিরেজাইয়া আপন মাতা কতাউন

কে কহিল পিতা আমাকে কহিয়াছিলেন তুমি যদি আরচা-
স্পকে মারিয়া আপন ভগ্নি দ্বয়কে আনিতে পার তবে তোমা
কে বাদসাহি দিব, আমি আরচাস্পকে মারিয়া ভগ্নি দ্বয়কে
আনিয়াছি কিন্তু আমাকে বাদসাহি দিলেননা আপনি তাঁহা
কে বল প্রতিজ্ঞা ভঙ্গকরা উচিত নহে বিশেষ বাদসাহের পক্ষে
অতি নিন্দনীয় কতাউন কহিল তাবৎ সৈন্য ও প্রজা তোমার
বাধ্য বাদসাহ কেবল তাজ তক্ত লইয়া গৃহে বসিয়া আছেন
আর তিনি বৃদ্ধ হইয়াছেন কিছুদিনতুমি ধর্য্যাবলম্বন করপরে
সকলি তোমার এখন কোন কথা কহিলে যদি রাগত হইয়া
পুনরায় তোমাকে কয়েদ করে, এছফন্দিয়ার শুনিয়া বুঝিল
কতাউন বাদসাহকে বলিবেন না, পরেএকদিন এছফন্দিয়ার
আপনি গোস্তাস্পকে কহিল যে আপনকার আজ্ঞা মত প্রাণ
সংকল্প করিয়া হপ্তখানের পথ দিয়া গমনকরিয়া চিনের বাদ
সাহকে মারিয়াছি তোমার যেসকল পরিবারকে লইয়াগিয়া
ছিল তাহাদিগে আনিয়াছি হপ্তখানের বত্মে যেহ কর্ম্ম করি
য়াছি অদ্যাবধি এমন কর্ম্ম কেহ করে নাই জত কাল পৃথিবী
থাকিবে ততকাল এ কৃত্তি থাকিবে এখন তোমার উচিত আ-
পন প্রতিজ্ঞা পূর্ণ কর। বাদসাহ কহিল ব্যাস্ত কিজন্য হই
তেছ এ বাদসাহি তোমার, কিন্তু এছফন্দিয়ারের এই কথা
শুনিয়া মনখুন্ন হইয়া জামাস্প উজিরকে কহিল এছফন্দিয়া-
রের ভাগ্য কেমন গননা করিয়া বল ? সে কহিল ইহার
অতিশুপ্রসন্ন কপাল ইহার সঙ্গে কাহার যুদ্ধ করিবার ক্ষেম-
তা নাই আপনার বাহু বলে পৃথিবী শাসিত করিয়াছে। বাদ
সাহ ইহা শুনিয়া নিরব হইয়া রহিল, আর মনে করিল যদি

এছফান্দিয়ারের চিনেরযর্দ্ধে মৃত্যু হইলেই উত্তমহইত, জামাস্প কে কহিল ইহার কিপ্রকারে মৃত্যু হইবেক তাহা গননা করিয়া বল ? সে গননা করিয়া কহিল রোস্তমের হস্তে ইহার মৃত্যু হইবে কোন বিশেষ তাঁহার দ্বারা. ইহা শুনিয়া তুষ্ট হইয়া পর দিবস প্রাতে সভা করিয়া সমস্ত সরদার ও পুত্র পৌত্রে দিগকে ডাকাইয়া এছফন্দিয়ারের অনেক প্রসংসা করিয়া কহিল আমি তাজ তক্ত দেওনের যেপন করিয়াছি তাহা তুমি লও কিন্তু যখন আমি ছয়স্থানে রোস্তমের বাটি হইতে আর চাস্পর সঙ্গে যর্দ্ধ করিতে আইলাম তখন রোস্তমকে কহিয়া ছিলাম অরচাস্প আমার পিতাকে নষ্ট করিয়াছে এবং আমার বাটিস্থ স্ত্রি লোক দিগকে ধৃত করিয়া লইয়া জাইতেছে তুমি আমার সহায়হইয়া যর্দ্ধকরিতে চল; নানাপ্রকার ছল করিয়া আইল না এবং তাহার পর আরচাস্প ও তাহার পত্র কহরম দুইজন আসিয়া আমার অনেক সেনা বধ করে আমি তাহার দিগের যদ্ধে অক্ষম হইয়া এক পর্ব্বতীয় দুর্গে লুক্কাইত হইয়া রহিলাম কিন্তু এই সকল বিপদ সময়ে একবার জিজ্ঞাসাও করিল না; আর অহঙ্কার করে কয়খোছরোর প্রসাদেতে গোস্তাস্প যেমন বাদসাহ ইরানের হইয়াছে আমিও কাবেল প্রভৃতি দেশের বাদসাহ হইয়াছি আমি গোস্তাস্পর আজ্ঞাবর্ত্তি কেন হইব, অতএব তুমি জাবলস্থানে গিয়া রোস্তমের মস্তক ছেদন কিম্বা বন্ধন করিয়া আমার নিকট আনায়ন কর তবে আমার অন্তঃকরণ হইতে এ দর্খ দূর হয়, ইহা করিলে তোমাকে বাদসাহি অর্পণকরিয়া আমিঈশ্বরের ভজনা করি। সভাস্ত সকলে কহিল এ উচিত কর্ম্ম বটে, তখন গোস্তাস্প এছফন্দি-

য়ারের প্রতি চাহিয়া কহিলেন; জোন্দ পাজোন্দ ধর্ম্ম পুস্তকের দোহাই তুমি রোস্তমকে মারিয়া কিম্বা বান্ধিয়া আনিবা মাত্রেই তোমাকে বাদসাহি দিয়া আমি ভজনায় মগ্ন হইব, যত সেনা ও ধন প্রয়োজন হয় তাহা লইয়া জাও। এস্ফন্দিয়ার কহিল প্রথম বার যখন আরচাস্প আসিয়াছিল আমি তাহার সহিত যুদ্ধ করিয়া দুর করিয়াছিলাম তখন তাজ তক্ত দিব কহিয়াছিলেন কিন্তু কোরজমর কুমন্ত্রণায় তাজ তক্তের পরিবর্ত্তে আমাকে কারাগারে বদ্ধ করিলেন; এবার তাহার রাজ্যে গিয়া আরচাস্পকে ও তাহার পুত্রকে মারিয়া তোমার যে সকল পরিবারকে ধৃত করিয়া লইয়া গিয়াছিল তাহারদিগকে মুক্ত করিয়া আনিলাম তথাপি আপন প্রতিজ্ঞা পূর্ণ করিলা না। হপ্তখানের পথ মনে হইলে আমার সরিরের রক্ত এখন পর্য্যান্ত সুষ্ক হয়; হপ্তখানের পথের ব্যাঘ্র, সিংহ; অজাগর; দৈত্য, হিমরোগ; বরফ; এবং তপ্ত বালুকা ময় ভূমি এই সকল বিপদে তাজ তক্তের লোভ দেখাইয়া আমাকে পাঠাইলে; কিন্তু এখন সে সকল বিস্মৃতি হইলে। আপনি রোমদেশে এক সামান্য ব্যাঘ্র ও সর্প মারিয়া তোমার পিতার নিকট হইতে তাজ তক্ত লইয়াছিলা আমি হপ্তখানের পথের সমুদয় আপদ নষ্ট করিয়া তোমার সত্র চিনের বাদসাহকে মারিয়া তোমার পরিবার দিগ্যে উর্দ্ধার করিয়া আনিলাম; আর জোন্দপাজোন্দর মত তোমার আজ্ঞায় সকল দেশে প্রচলিত করিলাম এখন তাজ তক্ত না দিয়া রোস্তমের সহিত যুর্দ্ধ করিতে কহিতেছে; গোস্তাস্প কহিল তুমি যে কথা কহিতেছ সে সকল সত্য এবং মনুস্যর অসাধ্য কর্ম্ম বটে কিন্তু দেখ কয়খোছরোর

নিকট সর্ব্বদা কোমরবান্ধিয়া উপস্থিত থাকিয়া যখন যে কর্ম্ম করিতে হইত তাহা করিয়াছে; তোমা হেন বির পুত্র আমার থাকিতে সে আমায় অবিজ্ঞা করে এবং আপন রাজ্যের অহ ঙ্কার আমার নিকটে সর্ব্বদা প্রকাশ করে। এছফন্দিয়ার কহিল তুমি আমাকে তাজ তক্ত দেও আমি রোস্তমের সহিত যুদ্ধে যাত্রা করি, বাদসাহ কহিল তোমাকে যখন উত্তরাধি কারি করিয়াছি তখন তাজ তক্ত দিবার আর কি অপিক্ষা আছে, এখন তুমি ছয়স্তানে গিয়া রোস্তমকে বান্ধিয়া আমার নিকট আনিয়া তাজ তক্ত লইয়া বাদসাহি কর। এছফন্দি য়ার কহিল আমি রোস্তমকে ভয় করি না, সে বৃদ্ধ আমি যুবক সে আমার সহিত যুদ্ধ করতে কখন পারিবেনা কিন্তু তাহার সঙ্গে যুদ্ধ করিতে আমার মন হয় না এবং উচিত নহে কারণ রোস্তম আমায় পূর্ব্ব পুরুষের প্রতি পালিত তাহার দিগের ও দেশের রক্ষক সেই যদি রোস্তম কয় গোষ্টীর সহায় নাহইত তবে তুমি এ তাজ তক্ত ও বাদসাহি সপ্নে ও দেখিতে পাইতে না; আর যদি সে তোমার সত্রু তবে তাহার বাটীতে দুইবৎ সর কি নিমিত্ত বাস করিয়া ছিলা, আমাকে তাজতক্ত দিবানা এই মানসে নানাছলে আমাকে নষ্ট করিবার চেষ্টা পাইতেছ গোস্তাস্পকহিল সেবড অহঙ্কারি কয়গোষ্টির কর্ম্ম করিয়াছে তাহাতে আমার কোন লভ্য নাই সে যাহা হউক তুমি ছয় স্তানে গিয়া রোস্তমকে বান্ধিয়া আনায়ন কর এছফন্দিয়ার কহিল তাজ তক্ত দিতে তোমার মায়া হইতেছে কোনমতে আমাকে এ স্থানহইতে দুর করিবা এই মানস, অতএব আপ নি বাদসাহি কর আমি তাহার প্রয়াস ত্যাগ করিলাম।

গোস্তাস্প কহিল আমি তোমাকেউত্তরাধিকারি করিয়া তাজ তক্ত দিয়াছি আমার কথায় এই কর্ম্ম করিয়া বাদসাহি কর, এছফন্দিয়ার কোন উত্তর না করিয়া চিন্তযুক্ত হইয়া বিনা অনমতিতে আপন গৃহে গেল, গোস্তাস্প বুঝিল যে এছফন্দিয়ার অসন্তুষ্ট হইয়া গেল। তখন আপনউজির জামাস্পকে কহিল তুমি গিয়া এছফন্দিয়ারকে জিজ্ঞাসা কর সে রোস্তমের সহিত যুদ্ধ করিতে জাইবে কি না জামাস্প গিয়া এমত জিজ্ঞাসা করিলে এছফন্দিয়ার কহিল তোমার কি মত? সে কহিল পিতৃ আজ্ঞা হেলন করা উচিত নহে বরং প্রাণজায় সেও কর্ত্তব্য; এছফন্দিয়ার কহিল তুমি আমার সিক্ষা গুরু এবং বন্ধু তোমার মত যদি রোস্তমের সহিতে যুর্দ্ধ করা কর্ত্তব্য হইল তবে পিতৃআজ্ঞা হেলন করিব না; জামাস্প এই কথা শুনিয়া তথা হইতে আসিয়া গোস্তাস্পকে কহিল এছফন্দিয়ার সম্মত হইয়াছে তুমি ও তাহাকে ডাকিয়া সন্তোষ কর এছফন্দিয়ারের মাতা কতাউন এইকথা শুনিয়া এছফন্দিয়ারের নিকটে আসিয়া কহিল আমি তোমার মাতা আমি যে হিতোউপদেশ কহি তাহাতে মনোযোগ কর; গোস্তাস্পের কথায় রোস্তমের সঙ্গে যুদ্ধে জাইওনা ॥

জননির বাক্য বাছা করারে শ্রবণ।
তব পিতৃ চাতুরিতে নাহি দিয় মন ॥
সামান্য না জেনো তুমি ছামের সন্তানে।
হাঁকিতে মস্তক কভু নাদিবে বন্ধনে ॥
হামাওয়ারানের বাদসাহকে মেরেছে।
তাহাকে দুর্বাক্য কহে হেন কেবা আছে ॥

আফরাছিয়াব ছিয়াওসে নষ্ট করিয়াছিল।
সেই ক্রোধে রক্তেতে তুরান ভাষাইল॥
ধিক থাক এ দেশের তাজ তক্তে পরে।
এ দেশ আসিয়া যেন সত্রু নষ্ট করে॥
ছয়স্তান ভিন্য বাছা অন্য অন্য দেশে।
পুর্ব্বসন্ত কর গিয়া তুমি অনায়াসে॥
ত্রিজগতে আমাকে না করিয় অনাথা।
হিতাসি জননী বাক্য রাখিয় সর্ব্বথা॥

রোস্তমের সহিত যুর্দ্ধ করিতে জাইবা এই কথা শ্রবণাবধি আমার প্রাণকান্দিতেছে আর আমারমতনহে; এছফন্দিয়ার কহিল রোস্তমকে মারিতে কিম্বা বান্ধিতে আমার মনোনিত নহে এবং অনোচিতকর্ম্ম কিন্তু জামাস্প উজিরেরদ্বারা কহিয়া পাঠাইয়াছি বাদসাহের আজ্ঞা হেলন করিব না এখন কি প্রকারে অন্নথা করিব॥

---

## এছফন্দিয়ার জাবলস্তানে যুর্দ্ধে গমন॥

পর দিবস এছফন্দিয়ার গোস্তাস্পর নিকটে আসিয়া বিদায় হইয়া অনেক সেনা সঙ্গে লইয়া ছয়স্তানে যাত্রা করিল; যখন এছফন্দিয়ার বাটি হইতে বাহির হইলেন তখন কাবিয়ানি জয়যুক্ত নিসান সর্ব্বাগ্রে যেউষ্টের উপরছিল সে উষ্ট্র বসিয়া পড়িল তাহাকে উঠাইবার নিমিন্ত্য অনেক প্রহারাদি ও চেষ্টা করিল কোন মতে উঠিলনা এছফন্দিয়ার সেইস্থানে পৌঁছি সেই উষ্ট্রের মস্তক কাটিতে আজ্ঞা করিলেন আর মনোমধ্যে জানিল যে কুযাত্রাহইল সরদারেরা কহিল অদ্যাত্তি অমঙ্গল

দেখিতেছি অদ্য গমন নাকরিয়া দুই চারি দিবস পরে যাত্রা করাই মত; একফন্দিয়ার কহিল পিতা কহিবেন যাজাইবার নিমিত্ত্য ছল করিয়া আসিয়াছে ইহা কহিয়া সে স্থান হইতে গমন করিয়া কয়েক দিবস পরে ছয়স্তানের নিকটে হিরমন্দ নদির তিরে পৌছিয়া আপন জেষ্ঠ পুত্র বহমনকে রোস্তমকে আনিতে পাঠাইল বহমন রোস্তমের বাটিতে রোস্তমেরসহিত সাক্ষ্যাত করিয়া কহিল আমার পিতা এহুফন্দিয়ার তোমাকে সরণ করিয়াছেন, রোস্তম কহিল বিবচনা করিয়া জাইব রোস্তমের পিতা জাল তাহা শুনিয়া কহিল ইহার কি বিবেচনা করিবা? চিরকাল পুরুষানক্রমে কয় গোষ্টির প্রতিপাসিত ওআজ্ঞাকারি তমি এখনি গিয়া এহুফন্দিয়ারকে বাটিতে আন তাহার যথাসম্মান পূর্ব্বক সেবা। যেরূপ তাঁহা করিয়ার পিতা গোস্তাস্পরসেবা দুইবৎসর করিয়াছি; রোস্তমতখন বহমনের সঙ্গে চলিল, যখন হিরমন্দ নদির নিকট আসিয়া পৌছিল বহমন অগ্রে পিতারসমীপে গিয়া রোস্তমের অনেক প্রসংসা করিল; তখন এহুফন্দিয়ার ঐ নদীপারহইয়া আইলেন রোস্তম এহুফন্দিয়ারের পদদ্বয়ে চুম্বন করিয়া ছেলাম করিল এহুফন্দিয়ার অশ্ব হইতে নামিয়া রোস্তমকে কোল দিয়া কুসল বার্ত্তা জিজ্ঞাসা করিলেন, পরে উভয়ে অশ্বআরোহণ করিলে রোস্তম কহিল অদ্য অনুগ্রহ করিয়া আমার আলয় পবিত্র করিতে হইবেক। এহুফন্দিয়ার কহিল পিতৃআজ্ঞা দৃশ্য মাত্র তোমাকে বান্ধিয়া তাঁহার নিকটে লইয়া জাইতে তবে কি প্রকারে তোমার বাটিতে জাইব। রোস্তম পুনঃপুন

লইয়া জাইবার জন্য চেষ্টা করিল কিন্তু এছফন্দিয়ার কোন মতে যাইতে স্বিকার করিলনা, পরে রোস্তমকে আপন শিবিরে আনিয়া কহিল যদি তুমি বন্ধন স্বিকার আমার সঙ্গে বাদসাকার নিকটে জাও তবে বাদসাহর সহিত সাক্ষ্যাত করাইয়া তৎখনাত তোমাকে বন্ধন হইতে মুক্ত করিয়া দিব বাদসাহ এক রঃ হস্ত তোমাকে কুশদিতে পারিবেন না। রোস্তম ইহা শুনিয়া নিরব হইয়া থাকিলে এছফন্দিয়ার কহিল যদিবন্ধন স্বীকার নাকর তবে আপন বাটিতে গমন কর রোস্তম কহিল আপনি অনগ্রহ করিয়া আমার বাটিতে একবার পদার্পণ করুণ যেমন তোমার পিতা অনগ্রহ করিয়া আমার মর্য্যদা বৃদ্ধি করিয়াছেন পরে আপনি যেমত আজ্ঞা করিবেন তাহা করিব, এছফন্দিয়ার কহিল আমার পিতা এক ভাবে আসিয়াছিলেন আমি অন্য ভাবে আসিয়াছি যদিতোমার বাটিতে গিয়া আহারাদি করি আর শেষে তুমি বন্ধন স্বিকার নাকর আমাকে তখন যুদ্ধ করিতে হইবে তোমার অতিথি গ্রহণ করিয়া তোমারসঙ্গে যুদ্ধ করা ধর্ম্ম বিরুদ্ধ কর্ম্ম হয় তাহা কি প্রকারে পারিব। রোস্তম কহিল তবে আমি তোমার অন্ন কি প্রকারে গ্রহণ করিব বাদসাহ কহিল অন্ন গ্রহণ করিবার প্রয়োজন নাই দুইজনে বসিয়া মদ্যপান করি বরঞ্চ তুমি মদিরা আনায়ন কর আমি পান করিব তখন দুইজনে একত্র বসিয়া মদ্য পান করিতে লাগিলেন; তৎপরে রোস্তম কহিল আপনি যেমত২ আজ্ঞা করিলেন তাহা আমি বাটিতে গিয়া আমার পিতা জালের সঙ্গেপরামর্শ করি? এছফন্দিয়ার কহিল পরামর্শকরিয়া সীঘ্র তাহারস বাদ পাঠাইবা রোস্তমবিদায় হইয়া বাটীতেআসিয়া

জালের নিকট এছফন্দিয়ারের অনেক প্রসংশা করিল॥

আমি বুঝি ফরেদুন পুন জন্মিয়াছে।
এই মরিরেতে বুঝি সেই আসিয়াছে॥

রোস্তমের গমনান্তরে বসোতন কহিল রোস্তম তোমার নিকটে আসিয়াছিল ছাড়িয়া দেওয়া সত্ত পরামর্শ হয় নাই এছফন্দিয়ার কহিল যদি আর না আইসে তবে আমি তাহার বাটিতে গিয়া বান্ধিয়া আনিব, বসোতন কহিল রোস্তমকে বন্ধন করা সহজ কর্ম্ম নহে যদি ছলকরিয়া লইয়া জাইতে পার তবেই উত্তম

পৃথিবীতে ঐ মাত্র পুরুষ জানিবা।
সহজেতে কি প্রকারে উহারে বান্ধিবা॥
আমি বুঝি এই যুদ্ধে ঘটিবে বিশম।
দুই মহাবির যুদ্ধে কেহু নহে কম॥

জাল রোস্তমের মুখে এছফন্দিয়ারের প্রসংসা শুনিয়া কহিল তুমি কল্য প্রাতে তাহার নিকট অবশ্য যাইবা আমারদিগের বাদসাহজাদা এবং আশ্রয়॥

রোস্তম এছফন্দিয়ারের নিকট পুনরাগমন॥

পরদিবস প্রাতে রোস্তম এছফন্দিয়ারের নিকটে আইলে এছফন্দিয়ার বহুবিধ সমাদরকরিয়া আপনার নিকটে বসাইলেন রোস্তম কহিল একবার আমার বাটিতে অনুগ্রহ করিয়া যাইতে হইবে; এছফন্দিয়ার কহিল এস্থান হইতে আর এক পদ তুমি জাইবনা, তুমি এইস্থানে হইতে আমার সঙ্গে ইরানে চল: পুনরায় রোস্তম কহিল তুমি একবার অনুগ্রহ করিয়া আমার বাটিতে গেলে আমার মর্য্যাদা বৃদ্ধি হয় এবং তোমার অনেক কর্ম্ম আমা হইতে হইবেক। এছফন্দিয়ার তাহা গ্রার্য্য না

করাতে রোস্তম আত্ম শ্লাঘ্য করিতে আরম্ভ করিল মাজান্দ্রা-
নের হস্তখানের পথে আমি একাকি গিয়াছিলাম হামওয়া-
নের বাদসাহকে একাকি মারিয়াছি, চিনের বাদসাহকে একা
মারিয়াছি ॥

ইরাম রাজ্যের আমি ছিলাম রক্ষক।
সিংহ ব্যাঘ্র দৈত্যাদি আমি হে নাষক॥
পৃথিবীর সর্ব্ব নাষ আমি করিয়াছি।
এ নিমিত্ত্য বহুশ্রম আমি করিয়াছি॥

আর কহিল কয়গোষ্ঠীর অন্ন আমি অনেক খাইয়াছি এনি
মিত্ত্যে তোমার নিকটে নিনতা স্বীকার করিতেছি ও বাটিতে
লইয়া জাইতে চাহিতেছি তুমিএমত বোধ করিওনা যে আমি
ভিত্ত হইয়াছি। এছফন্দয়ার রোস্তমের এইসকল অহঙ্কারের
বাক্য শুনিয়া রাগত হইয়া একবার মনে করিল যে এইক্ষ-
ণেই ইহার মস্তক ছেদন করি পরে সাম্য হইয়া হাস্য করিয়া
কহিল হে রোস্তম; আমি শুনিয়াছি জাল দৈত্যরঔরস জাত
এ নিমিত্ত্য তাহার পিতা ছাম জালকে মাঠে নিক্ষেপ করিয়া
ছিল যে হেতু কোন পশু পক্ষ ইহাকে খাইলে দুঃনাম থাকি
বেনা, ছিমরোগ জালকে তুলিয়া আপন সাবকদিগ্যে খাই
তে দিয়াছিল তাহারা অতি কদাকার দেখিয়া ঘৃণা করিয়া
খাইল না জাল সেইস্থানে পক্ষদিগের সহিত মনুষ্য ও নানা
জন্তুর মাংস খাইয়া বাঁচিয়াছিল; কিছুদিন পরে ছাম সংবাদ
পাইয়া অপুত্রক প্রযুক্ত জালকে আনিয়া প্রতিপালন করিল
রোস্তম এই কথা শুনিয়া কহিল ভূমিবালক তোমার পূর্ব পুরু-
ষেরা জ্ঞাতছিল যে জাল ছামের পুত্র, ছাম নরিমানের পুত্র

নরিমান ছৌসঙ্গের সন্তান, তোমার আমার এক গোষ্ঠী এবং বংশীয় ইরানের বাদসাহি আমারদিগের দিতে সকলের সম্মতি ছিল পরন্তু আমরা তাহা স্বীকার করি নাইনা এনিমিত্ত্য তোমারা বাদসাহি পাইয়াছ. কয় গোষ্টির অনেক অন্ন খাই য়াছি এ নিমিত্ত্য তোমার মান রক্ষা করিলাম, আর কহিল তুমি এক আরচাম্পকে মারিয়াছ এই অহঙ্কার। আমি এমত অনেক বাদসাহকে মারিয়াছি একজন আফরাছিয়াব তাহার তুল্য বাদসাহ তুরানে জন্মে নাই, একজন হামওয়ানের বাদ সাহ; একজন খাকানচিন; তোমার ভগ্নিদিগে আরচাম্প কয়েদ করিয়াছিল তুমি তাহাদিগেকে মুক্তকরিয়া আনিয়াছ তোমার এই এক অহঙ্কার তোমার পূর্ব্ব পুরুষ কয় কাউছ বাদ সাহ মাজন্দরানের দৈত্য দিগের হস্তে ধৃত হইয়াছিল আমি এস্থান হইতে একা গমনকরিয়া দেও সফেদ প্রভৃতি বারসহস্র দৈত্যকে মারিয়া কয়কাউছ বাদসাহকে কারগার হইতে মুক্ত করিয়া আনিয়াছিলাম ॥

পৃথিবীকে নিষ্কণ্টক আমি করিয়াছি ।
বহু রাজা বহু দৈত্য আমি মারিয়াছি ॥
তুমি পৃথিবির মধ্যে কাল আসিয়াছ ।
যদ্যপি প্রতাপান্বিত কিছু হইয়াছ ॥
আপনাকে বলবান জ্ঞান করিয়াছ ।
বির গনের যুদ্ধ তুমি কোথা দেখিয়াছ ॥

এছফন্দিয়ার শুনিয়া কহিল আমি তোমাকে যথার্থ কহিয়াছি তুমি আত্ম শ্লাঘা করিতেছে তুমি যদি পৃথিবির পতি হও তথাপি আমারদিগের ভৃত্য আর মাজন্দরানের হস্তখান ও

দুর্গ চিক্কের হপ্তখান ও দুর্গ তুল্য নহে এবং তুমি চিরকাল সেপাহি গরি কর্ম্ম করিয়াছ, আমি বাদসাহি ও পেগম্বরি (অর্থাত জরদ হস্তর মত চালাইয়াছি) রোস্তম কহিল তুমি হপ্তখানের পথে বারসহস্র সেনা সঙ্গেলইয়া গিয়াছিলে একা জাইতে পারনাই আর আরচাম্প বাদসাহ মনুস্য তাহাকে মারিয়া আপনভগিনিদিগ্যে মুক্তকরিয়া আনিয়াছ; আমি হপ্ত খানের পথে একা গিয়া তোমার পূর্ব্ব পুরুষ কয় কাউছ বাদ সাহকে সসৈন্যে মাজন্দরানে কয়েদ করিয়া রাখিয়াছিল। দেও সফেদ প্রভৃতি বারসহস্র দৈত্য তাহার রক্ষক ছিল আমি একা ঐ দৈত্য সফেদকে সসৈন্য মারিয়া কয়কাউছকে সৈন্য সহিত মুক্তকরিয়াছি আরযখন কয়খোছরো তোমার পিতা মহ লহরাম্পকে তাজ তক্ত দিয়া ইরানের বাদসাহিতে অভি ষেক করিলেন তখন তাবত সরদারেরা অসম্মত হইয়া কহিল কয় কাউছের পুত্র ফরেবোর্জ থাকিতে অন্য কাহাকেও বাদ সাহি অর্সে না। আমরা লহরাম্পকে কোনমতে তক্তে বসিতে দিবনা তখন আমার পিতা ও আমি সকলকে নানামত কহিয়া সম্মতকরিয়া লহরাম্পকে বাদসাহ করিলাম, যদি আমরা অস ম্মত হইতাম তবে তোমার পিতামহ বাদসাহ হইতনা, কেবল আমারদিগের অনুগ্রহকে তোমরা বাদসাহ হইয়াছ এখন তা- হারি প্রতিফল আমাকে বান্ধিতে চাহিতেছ। পৃথিবিতে এমন যোদ্ধা ও বলবান কে যে আমার হস্তবন্ধন করে এপর্য্যন্ত আমাকে কেহু দুর্ব্বাক্য কহিতে পারে নাই কাউছ বাদসাহর সভামধ্যে সত সত বল বিশিষ্ট বীর ছিল সেই সভায় আমি নানাপ্রকার কটুকাটব্য কহিয়া বাহিরে আইলাম কাহারও

সাধ্য হইলনা আমাকে মন্দ কথা কহিতে কিম্বা ধরিতে এছফন্দিয়ার কহিল এত ক্রোধে অহঙ্কারে ভালনহে সাম্য হও কয় কাউছ বাদসাহ দুর্ব্বল ছিল তোমাকে ভয় করিত আমি তোমাকে বন্ধন করিতে আসিয়াছি ইহাকহিয়া হাস্য করিতে করিতে রোস্তমের হস্ত ধরিয়া আকর্ষণ করিতে রোস্তম এছ ফন্দিয়ারের বল বুঝিয়া বিস্ময়াপন্নহইয়া কাষ্ঠ হাসি হাসিয়া কহিল তোমার সঙ্গে পঞ্জাকসা আমার উচিত নহে, পরে এছ ফন্দিয়ার তাহার হস্ত ত্যাগ করিয়া কহিল অদ্য তুমি আমার নিকটে অতিথের স্বরূপ আসিয়াছে অদ্য তোমার সহিত যুদ্ধ করিবনা কল্য প্রাতে তোমায় আমায় এইস্থানে নানাবিধ অস্ত্র লইয়া যুদ্ধ করিব তোমার বল বিক্রম আমি পরিক্ষা করি য়াছি তুমি কল্য আসিবা মাত্র তোমার হস্ত বন্ধন করিয়া লইয়া জাইব রোস্তম কহিল ॥

এছফন্দিয়ারের প্রতি কহিল রোস্তম ।
এই যুদ্ধ তোমার জানিহ জমসম ॥
বিরগণের যুদ্ধ তুমি কোথা দেখিয়াছ ।
গুরজার প্রহার তুমি কোথা পাইয়াছ ॥
কল্য তোমায় দেখাইব ওহে যুবরাজ ।
যেপ্রকারে যুদ্ধ হয় বিরের সমাজ ॥
কল্য আসিব যখন এই রণ স্থলে ।
পুরুষের পুরুসত্ত দেখাইব ছলে ॥
অশ্বহৈতে কোলে করে লইয়া তোমারে ।
জালের নিকটে লইয়া জাব নিজ ঘরে ॥
রাজ সিংহাসনের উপরেতে তোমারে ।

বসাইয়া রাজ ছত্র ধরিব হে শিরে ॥
নিজ ভাণ্ডারের ধন করিব জৌতুক ।
নানা রত্ন দিয়া আমি দেখিব কৌতুক ॥
তোমার সৈন্যকে আমি অদৈন্য করিব ।
স্বর্গের সমান তব মান বাড়াইব ॥
কয় দিগের সেবা আমি করেছি যেমন ।
তোমার সেবায় মন দিব হে তেমন ॥
আমি সেনা পতি আর তুমি রাজা হবে ।
কার সাধ্য তবে আর রাজ কর লবে ॥

এছফন্দিয়ার কহিল কেন মিথ্যা বাক্য ব্যায় করিতেছ দিবা দুই প্রহর গতো হইল উভয়ে ক্ষুদিত হইয়াছি চলো দুইজনে কিঞ্চিৎ আহার করি এছফন্দিয়ার আহারের দৃব্য আনাই লেন রোস্তম তাহা আহার করিয়া কহিল কিছু অধিক দৃব্য আনাও তখন পুনরায় একমোনের এক খাঞ্জা ও একটা গোর খর কাবাব করা আনিয়া দিলে রোস্তম সমুদয় আহার করিয়া রোস্তম বিদায় হইবার সময়ে এছফন্দিয়ার কহিলেন তোমার পিতার সহিত পরামৃস করিয়া যদি বন্ধন লইতে মত হয় তবে উভয়েরি মঙ্গল নতুবা যুদ্ধ সজ্জা করিয়া আসিবা । রোস্তম কহিল আপনি আপন ভ্রাতা ও পুত্রের সহিত পরামৃস করিয়া যদি অনুগ্রহ পূর্ব্বক আমারবাটিতে পদার্পণকরেণ তবে আমি বিনা বন্ধনে আপনার ঘোটকের রজ্জু ধরিয়া পদব্রজে আপ নকার সঙ্গে ইরানে জাইব নতুবা কস্য যুদ্ধ করিব । এছফন্দি য়ার কহিল তোমাকে বন্ধনকরা আমার অতি সহজ কর্ম্ম বিনা বন্ধনে তোমাকে লইয়া জাইতাম কিন্তু পিতা কহিবেন তোমা

মদ করিয়া আনিয়াছে। রোস্তম কহিল আমি যে সকল বির ও দৈত্যকে মারিয়াছি তাহার সাক্ষ্যাতে তোমাকে অতি সামান্য জ্ঞ্যান হইতেছে কেবল দুর্নামের ভয় করিতেছি॥

তোমাকে মারিলে মম দুর্নাম হইবে।
পৃথিবিতে আমার এই অক্ষ্যাত রহিবে॥
কয়ের পালিত হয়ে বধিব কয়েরে।
কটু কথা কয়েছিল না সহিল তারে॥

আর আপনি মনে বিবেচনা কর তোমার পিতা বৃর্দ্ধ হইয়াছেন তাহার অবর্ত্তমানে ইরানের বাদসাহ তুমি হইবে তোমার পিতা কোন প্রকারে স্থির জানিয়াছেন যে তুমি আমার হস্তে মরিবা এ নিমির্ত্তে ছল করিয়া আমার সহিত যুর্দ্ধ করিতে পাঠাইয়াছেন; তুমি মরিলে যতদিন তিনি বর্ত্তমান থাকিবেন তদদিন তিনি বাদসাহি করিবেন। এছফন্দিয়ার কহিল আমি তোমার এ কথায় ভুলিবনা; রোস্তম কহিল তোমার মৃত্যু নিকট আমি তোমার দিগের পূর্ব্বষানু ক্রমের প্রতিপালিত ও শুভানুধ্যাই এসময়ে আমার বাক্য গ্রাহ্য হইবেনা। এছফন্দিয়ার কহিল অধিক কথার আবিশ্যক নাই কল্য প্রাতে আত্ম বর্গ সকলকে সঙ্গে লইয়া আসিবা, রোস্তম কহিল ঈশ্বর ইচ্ছা জাহা তাহা কল্য হইবে ইহা কহিয়া বাটীতে গিয়া জালের নিকট যুর্দ্ধের অনুমতি চাহিলে জাল কহিল কয়গোষ্ঠার সহিত যুর্দ্ধ করা মত নহে সন্ধি কর। রোস্তম কহিল বিধিমতে সান্ধর চেষ্টা করিলাম তাহা কোনমতে গ্রাহ্য করিলনা, আর তোমাকে

দৈত্যের সন্তান ও অনেক কটু কহিয়াছে, তখন জাল কহিল উপস্থিত মতে জাহা বিহিত হয় তাহা কর ॥

---

এছফন্দিয়ারের সহিত রোস্তমের প্রথম যুদ্ধ ।

পর দিবস রোস্তম যুদ্ধ সজ্জা করিয়া জালের নিকটে বিদায় হইতে গেলে জাল যুদ্ধের অনুমতি করিয়া কহিল যদি তুমি এছফন্দিয়ারকে প্রাণে মার তবে যতকাল পৃথিবী থাকিবে ততকাল তোমার কলঙ্ক থাকিবে, যে রোস্তম কয়গোষ্ঠির পালিত হইয়া কয়ের সন্তান এছফন্দিয়ার বাদসাহকে বধ করিল, আর যদি সে তোমাকে মারে তবে জাবলস্থানে ও ছয়স্তান সমভূম হইবে আমার পক্ষে দুই বিষমহইল ইহার কোন উপাই নাই ঈশ্বরের মনে জাহা আছে তাহাই হইবেক। ইহা কহিয়া রোস্তমকে বিদায় করিলে রোস্তমপ্রণাম করিয়াকহিল আপনি ঈশ্বরকে চিন্তা কর আমার এমত বাঞ্ছা আছে যে এছফন্দিয়ারকে ধৃত করিয়া গৃহে আনিয়া যথোপযুক্ত সেবা করিব ॥

তাহার নিকটে আমি ভৃত্য তুল্য হয়ে।
সর্ব্বদা থাকিব তার আজ্ঞা বহ হয়ে ॥
হাসিয়া কহিল জাল এ কথা শুনিয়া।
এরূপ কহিলে তুমি বল কি বুঝিয়া।
ছিমোরগে মারিয়াছে নিজ বাহু বলে ॥
তুমি আনিবারে চাহ ধরে তারে কোলে ॥
হেন বাক্য নাহি কহে যার বুদ্ধি আছে।
পুনর্ব্বার এ কথা না কবে মম কাছে ॥

রোস্তম অশ্বারোহি হইয়া যুদ্ধে যাত্রা করিল জাল জওয়ারে কে সেনাপতি করিয়া সেনা সঙ্গেদিয়া কহিল তুমিসর্ব্বদা সাবধান থাকিবা তাহারদিগকে বিদায় করিয়া ভীতহইয়া আপনি ভজনাগারে প্রবেশকরিয়া ঈশ্বরউদ্দেশে রোদন বদনে ভজন করিতে বসিল। এখানেরোস্তম রণস্থলে উপস্থিত হইয়া জওয়ারেকে কহিল তুমি সৈন্য লইয়া দূরে থাক আমি এছফন্দিয়ারের নিকটে একাকিজাই বসোতন রোস্তমকে একা দেখিয়া অনুভাব করিল যে রোস্তম সন্ধি করিতে আসিতেছে এছফন্দিয়ারকে কহিল রোস্তম একা আসিতেছে তাহার সহিত প্রীতি করিয়া লইয়া চল, এছফন্দিয়ার কহিল সে রণসজ্জা করিয়া আসিতেছে এইক্ষণে আমার রণসজ্জা শীঘ্র আন; বসোতন রাগত হইয়া কহিল ॥

জয়যাত্রায় আসিয়াছ ওহে নরপতি ।
এ যুদ্ধেতে শ্রয় নাই শুনহ ভারতি ॥
প্রণয় করিয়া সঙ্গে লইয়া চল তুমি ।
মম বুদ্ধি মত নিবেদন কৈনু আমি ॥

এই সময়ে রোস্তমের দূত আসিয়া কহিস রোস্তম যুদ্ধ হেতু প্রস্তুত হইয়া আসিয়াছে আপনি আসিয়া যুদ্ধ কর? এছফন্দিয়ার বসোতনকে কহিলেন তুমি সৈন্য সঙ্গে লইয়া সেনাপতি হইয়া আমার সশ্চাৎ থাক ইহা কহিয়া অশ্বারূঢ হইয়া রোস্তমের নিকটেগেলে তখন রোস্তমকহিল তোমার অনেক সেনা আমারঅত্যল্প প্রথমতউভয় সেনায় যুদ্ধ করুকআমারা এইস্থানে অবস্থান করিয়া যুদ্ধ সন্দর্শন করি ॥

এছফন্দিয়ার বলে শুনরে রোস্তম।
হেন বাক্য কি বুঝিয়া কৈলি নরাধম॥
আমার সঙ্গে তোর যুর্দ্ধ হইয়াছিল পন।
সেনা গণে কাটইব কিসের কারণ॥
আমার নিয়ম তুই শুন দুষ্টমতি।
সেনাগনে যুর্দ্ধে আমি না দিই আরতি॥
সিংহ ব্যাঘ্রাদি করি যেবা রণে আইসে।
আমি তার সঙ্গে যুর্দ্ধ করি অনায়াসে॥
তুমি লও সহায় যদ্যপি ভয় হয়।
আমার ঈশ্বর মাত্র আছেন সহায়॥

রোস্তম কহিল আমি কথন যুর্দ্ধে সহায় লইনাই এবং লইবনা পরে উভয়ে ধর্ম্মত সত্য করিলেন যে কেহু অন্যায় যুর্দ্ধ করিব না এবং সহায় লইবনা, পরে দুইজনে প্রথমে শুল লইয়া যুর্দ্ধ করিলেন তাহা ভগ্ন হইলে পরে তলওয়ারের যুর্দ্ধ হইল তাহা ও ভগ্ন হইল তদনন্তর গদা যুর্দ্ধ করিলেন তাহাও বক্র হইলে তখন অশ্বোপরি উপবিষ্ট থাকিয়া বাহু যুর্দ্ধ আরম্ভ করিলেন উভয়ে অনেক বল ও চেষ্টা করিলেন কিন্তু কেহু কাহাকে অশ্ব হইতে উত্তোলন কিম্বা ভূমে নিক্ষেপ করিতেপারিলেন না, দুইজনে শ্রান্ত হইয়া শ্রম দূর করিবার নিমিত্ত্য কিছু দূরে দাঁড়াইলেন। যখন রোস্তমও এছফন্দিয়ার যুর্দ্ধ করিতেছিলেন সেই সময়ে রোস্তমের ভ্রাতা জওয়ারা আপন সৈন্য লইয়া এছফন্দিয়ারের ভ্রাতা বসোতনের সৈন্য মধ্যে আসিয়া দুর্ব্বাক্য কহিতে লাগিল; এছফন্দিয়ারের পুত্র নৈসাদর তাহা সহ্য করিতে না পারিয়া তাহার নিকটে আইল আকওয়ায়

নামক রোস্তমের শিস্য তাহার সঙ্গে আসিয়া যুর্দ্ধ করিয়া মারা পড়িল পরে জওয়ারা আসিয়া নৌসাদরের সঙ্গে অনেকক্ষণ যুদ্ধ করিয়া তাহাকে নষ্ট করিল; এবং এছফন্দিয়ারের মেহর নোষ নামক এক ভ্রাতাকে রোস্তমের পূত্র ফরামরজ আসিয়া বিনাস করিল তাহা দেখিয়া এছফন্দিয়ারের পুত্র বহমন এহফন্দিয়ারের নিকটেগিয়া কহিল তোমার এক ভ্রাতা ও এক পুত্র ও অনেক সেনাকে রোস্তমের ভ্রাতা ও পুত্র আসিয়া কাটিয়াছে এই কথা শুনিয়া এছফন্দিয়ার রাগত হইয়া রোস্তমকে ডাকিয়া কহিল অরে দুরাত্মা; তুই আমার নিকটে ধর্ম্মত সত্য করিয়াছিলি কেহু অন্যায় যুদ্ধ করিবনা তবে তোর পুত্র ও ভ্রাতা আসিয়া আমার ভ্রাতা ও পুত্র ও সেনা দিগকে কেন নষ্ট করিল এ তোর কোন ধর্ম্ম? রোস্তম কহিল দোহাই ধর্ম্মের ও তোমার দোহহৈ ও তলওয়ারের দোহাই আমি তাহার দিগকে যুর্দ্ধ করিতে কহিনাই তাহারা আমার অজ্ঞ্যাতে যুর্দ্ধ করিয়াছে, অতএব তাহারদিগের দুই জনাকে বন্ধনকরিয়া আনি আপনি তাহারদের মস্তক ছেদন কর। এছফন্দিয়ার কহিল তাহারদিগকে নষ্ট করিলে আমার বন্ধুবান্ধবযাহারা মরিয়াছে তাহারা বাঁচিবেনা তাহাতে কি প্রয়যোন তুই আয় তোর মাথা কাটি ইহাকহিয়া দুইজনে তিরের যুর্দ্ধ আরম্ভ করিলেন। রোস্তমের তির এছফন্দিয়ারের সরিরে প্রবেশ হয়না এহফন্দিয়ার যে তির মারে তাহা রোস্তমের ও তাহার ঘোটকের সরিরে বির্দ্ধ হইতে লাগিল তাহাতে অস্ব অসামর্থ হইল দেখিয়া রোস্তম অশ্ব ত্যাগ করিয়া ভূমে দাঁড়াইয়া যুর্দ্ধ করিতে লাগিল; ঘোড়া পলাইল

রোস্তমের ভাই ও পুত্র খালিঘোড়া যাইতেছে দেখিয়া সকল অন্ধকার দেখিল পরে রণস্থলে আসিয়া দেখিল রোস্তমের সর্ব্বাঙ্গ হইতে রক্ত ধারা বহিতেছে তাহাতে অবসন্ন হইয়া কিছুদূরে গিয়া এক উর্চ স্থানে গিয়া বিশ্রাম করিল তাহা দেখিয়া এছফন্দিয়ার কহিল ॥

রণস্থল ছাড়ি কেন তুমি পলাইলে ।
সিংহনাদ শুনে বুঝি বধির হইলে ॥
সিংহ দৈত্য আদি বহু মারীয়াছ বলে ।
এখন ছাড়িয়া যুদ্ধ কোথা যাও চলে ॥
এখন সে পরাক্রম কোথায় তোমার ।
হেতা আসে যুদ্ধ কর সহিত আমার ॥
সিংহ তুল্য ছিলে কেন সৃগাল হইলে ।
বির দেখি ভয়ে বুঝি ভঙ্গ দিয়া গেলে ॥

সেই সময় রোস্তমের ভ্রাতা ও পুত্র রোস্তমের শুন্য অশ্ব যাই তেছে দেখিয়া পৃথিবী অন্ধকার দেখিল রোস্তমের নিকট আসিয়া আপন অশ্বে রোস্তমকে আরোহণ করাইয়া কহিল আমি এছফন্দিয়ারের সঙ্গে যুদ্ধ করিতে যাই রোস্তম বারণ করিল, এছফন্দিয়ার কহিল ওহে রোস্তম তোমার বল বীর্য্য সকল বুঝিলাম সে যাহা হউক এখনো বন্ধন স্বিকার কর নতুবা প্রাণ হারাইবা, রোস্তম কহিল আমি যদি তোমার যুদ্ধে অশক্ত হইতাম তবে বন্ধন স্বিকার করিতাম অদ্য-বেলা অবসান হইল কল্য প্রাতে আসিয়া তোমার সঙ্গে যুর্দ্ধ করিব এছফন্দিয়ার কহিল আমি বুঝিয়াছি তুমি আর যুর্দ্ধ করিতে পারিবানা কিন্তু আমি অধর্ম্মত করিয়া এখন তোমাকে বান্ধি

বনা তুমি যেমন অন্যায় করিয়া আমার ভ্রাতা ও পুত্রকে মারিলে তাহার সোধ এখনি লইতে পারি অদ্য জাও কল্য প্রাতে আসিয়া বন্ধন স্বিকার করিয়া আমার সঙ্গে চল ? রোস্তম কহিল কল্য আসিয়া যুর্দ্ধ করিব কহিয়া বিদায় হইয়া আপন বাটিতে গেল। এছফন্দিয়ার যেখানে আপন ভ্রাতা ও পুত্র রণস্থলে সয়ন করিয়াছে সেইখানে আসিয়া সেই সব কে কোলে লইয়া অনেক রোদণ করিয়া সেই দুই সব দুই সিন্দুকে ভরিয়া পিতার নিকট পাঠাইল আর পত্র লিখিল তোমার আজ্ঞায় রোস্তমের সঙ্গে যুদ্ধে আসিয়া আমার ভ্রাতা ও পুত্রের যে দশা হইয়াছে তাহা দেখিবা; আর আগত আমার যে দশা হয় তাহাও শুনিবা,পরে সিবিরে আসিয়া বসোতনকে কহিল রোস্তম মনুষ্য নহে আমি তলওয়ারে গদায় ও বাহু যুর্দ্ধে তাহাকে পরাভব করিতে পারিনাই কিন্তু তিরেতে এরূপ আঘাতি হইয়াছে আমার বোধ হয় রাত্রমধ্যে মরিবেক আর যদি সে না মারিয়া পুনরায় কল্য যুর্দ্ধে আইসে তবে আমার কি হইবে তাহা ঈশ্বর কহিতে পারেন। রোস্তম গৃহে আইলে জাল দেখিলেক রোস্তমের সর্ব্বাঙ্গ ক্ষত বিক্ষত হইয়া রক্ত ধারা পতিতো হইতেছে জালরোদণ করিয়া কহিল হে ঈশ্বর; তুমি এদায়হইতে আমাকে রক্ষাকর জাল রক্তমুঞ্জন করিয়া ঔষাদি সর্ব্বাঙ্গে লেপন করাইতে লাগিল ও রোদণ করিয়া কহিল আমি অনেক বলবান ও দৈত্যের সঙ্গে যুর্দ্ধ করিয়াছি এমত বলবান কখনদেখিনাই আমি তির মারিলে লোহা ও প্রস্তর ছেদ হইয়াছে কিন্তু এছফন্দিয়ারের সরীরে প্রবেস হইল না ইহার সরীর অষ্ট ধাতুর ন্যায় কঠিন আমি

বল করিয়া পর্ব্বতের শৃঙ্গ ভাঙ্গিয়াছি এছফন্দিয়ারকে লা
ডিতে পারিনা। ঈশ্বরের ধন্যবাদ করিলাম যে সীঘ্রাত্র উপ
স্থিত হইল এ নিমিত্ত অদ্য প্রাণ লইয়া আইলাম কল্য
তাহার সঙ্গে যুদ্ধকরা আমার সাধ্যনহে যদি রাত্রিমধ্যে না
মরিয়া বাচিয়া থাকি তবে প্রাতকালে এখান হইতে প্রস্থান
করিয়া কোন বন মধ্যে প্রবেশ করিব আমি তাহার নিকট
যাইতে পারিবনা, জাল কহিল যদি তুমি পালাও তবে এছফ
ন্দিয়ার আসিয়া আমার স গোষ্টকে বন্ধন করিয়া লইয়া
যাইবে কেবল তোমার ভয়ে এখন পয্যান্ত আইসে নাই জাল
আর কহিল যে ছিমোরগ তাহার পালক দিয়া কহিয়াছিল
বিপদ কালে এই পালককে দগ্ধ করিলে আসিয়া বিপদ হইতে
রক্ষা করিবেক ইহাহইতে আরকি বিপদ সেইপালক পোড়াই
বলিয়া অগ্নি আনাইয়া অট্টালিকার উপরি ভাগে অগ্নি প্রজ্ব
লিত করিয়া ছিমোরগের একটি পাখা ঐ অগ্নিতে নিক্ষেপ
করিলে কিঞ্চিৎকাল পরে ঐ পক্ষ রাজ আসিয়া কহিল তুমি
এমত কি বিপদ গ্রস্তহইয়াছ যে আমাকে তন্নিমিত্তেসরণ করি
য়াছ ? জাল কহিল এছফন্দিয়ার রোস্তমের হস্ত বন্ধন করি
তে আসিয়াছিল তাহা সন্মত না হওয়াতে অবশেষযুদ্ধ করিয়া
রোস্তমকে ও তাহার ঘোটককে অতি অসামর্থ করিয়াছে, ইহা
কহিয়া রোস্তমকে ও তাহার ঘোঠককে দেখাইল পক্ষরাজ
কহিল চিন্তা নাই আমি ঔষধি দিতেছি পক্ষচঞ্চু দ্বারা রোস্ত
মের ও অশ্বের সরির হইতে তিরের ফলা বাহির করিয়া আপ
ন পাখা উভয়ের অঙ্গে বুলাইল তৎখনাৎ আরগ্য হইল
পরে রোস্তম পক্ষরাজকে কহিল এছফন্দিয়ার মহাবীর পরা

ক্রান্ত তাহার সহিত যুর্দ্ধে আমি অক্ষেম হইয়াছি আপনিউপায় বলুন পক্ষ কহিল তুমি যুর্দ্ধে তাহাকে পারিবানা আমাহইতে ও তাহার কিছু হইবেক না; ইপ্তখানের বত্মে আমার ঘোড়া ছিল এই এছফন্দিয়ার একাকি তাহাকে মারিয়াছে, পৃথিবিতে ইহার তুল্য বলবান জন্মে নাই এবং জন্মিবেনা ঈশ্বরের অনুগৃহিত লোক ইহার সহিত বিবাদ করা অকর্ত্তব্য কল্ক জাল কহিল যদি রোস্তম পলায়ন করে অথবা লুকাইয়া থাকে তবে এছফন্দিয়ার আমার সকল পরিবারকে বান্ধিয়া লইয়া যাইবেক, পক্ষ অনেকক্ষণ ভাবিয়া কহিল এছফন্দিয়ারের মৃত্যুর উপায় আমি জানি কিন্তু এছফন্দিয়ারকে যে ব্যক্তিনষ্ট করিবে সে অতি সীঘ্র মরিবে। রোস্তম কহিল সে কি? উপায় পক্ষ কহিল অমুক নদীরপাত্তে গজনামে এক প্রকার বৃক্ষআছে তাহারি যেশাখার অগ্রভাগে ক্ষুদ্র দুইশাখা সেই ডাল লইয়া তাহাতে তির প্রস্তুত করিয়া এছফন্দিয়ারের চক্ষে লক্ষ করিয়া নিক্ষেপ করিলে মরিবে। রোস্তম কহিল কল্য প্রাতে তাহার নিকট যুর্দ্ধ করিতে যাইতেহইবেক অথবা এস্থান হইতে প্রস্থান করিতে হইবেক এই রাত্রি মধ্যে সেইবন হইতে গজ আনিয়া তির প্রস্তুতকরা মনুস্যের অসাধ্য? পক্ষকহিল তুমি আমার পৃষ্টে আরোহণ কর আমি তোমাকে সেইখানে এখনি লইয়া সেই বৃক্ষ দেখাইয়া দিব। পরে রোস্তম পক্ষ পৃষ্টে উপবিষ্ট হইলে পক্ষ তৎক্ষণাত উড্ডীয়মান হইয়া ঐ বনে লইয়া রোস্তমকে সেই গজের বৃক্ষে ও সেই অগ্রশাখা দেখাইলে রোস্তম তাহা লইয়া পুনরায়পক্ষের পৃষ্টে আরহোণ করিয়া তৎক্ষণাৎ

রোস্তমকে বাটিতে রাখিয়া আপনি আপন স্থানে প্রস্থান করিল। রোস্তম তৎখণাত সেই তাসে দুইফলা সংযোজিত করিয়া তর প্রস্তুত করিয়া রাখিল ॥

দ্বিয়িয় বার রোস্তমের সঙ্গে এছফন্দিয়ারের যুদ্ধ ও মৃত্যু ॥

পর দিবস প্রাতে, রোস্তম রণসজ্জা করিয়া অশ্বারোহি হইয়া এছফন্দিয়ারের শিবিরে নিকট আসিয়া সিংহনাদ করিয়া কহিল ॥

উঠ উঠ বির বর এখন নিদ্রায়।
যুদ্ধের কারণে আমি আসেছি হেতায় ॥
একথা শুনিয়া বির তখনি উঠিল।
শুখের স নিদ্র তার বিশ তুল্য হৈল ॥

এছফান্দয়ার গাত্রাউর্থানন্তর রণসজ্জা করিয়া বসোতনকে কহিল আমার বোধ হইয়াছিল অনেক তির আঘাত করিয়াছি রোস্তম অদ্য রাত্রে অবশ্য মরিবে কিন্তু তাহার সব্দের দ্বারা পুর্ব্বাপিক্ষা সবল বোধ হইতেছে, তুমি যাইয়া নিরক্ষণ কর তাহার সরিরে তিরেরআঘাত সেইরূপআছে কি বিশেষ হইয়াছে। বসোতন রোস্তমের নিকটে আসিবামাত্র সে বুঝিল যে আমাকে দেখিতে আসিয়াছে, রোস্তম কহিল আমার কোনস্থানে তিরের আঘাতের চিহ্ন ও নাই আমি এমন ঔষধ জানিএকবার লেপন করিলেই তৎখনাৎ আরগ্য হয়, আর আমাকে আঘাত হয় নাই শুচিকার ন্যায় বিদ্ধিয়া ছিল। বসোতন আসিয়া কহিল কল্য অপিক্ষা অদ্য রোস্তমকে

শুস্ত দেখিলাম আমি তাহার প্রফুল্লতা দেখিয়া ভিত হইয়াছি অতএব তাহার সহিত সন্ধিকরা ভাল; এছফন্দিয়ার রাগ ভরে অশ্বারোহি হইয়া রোস্তমের নিকটে আসিয়া কহিল কল্য আমার তিরে অতি কাতর হইয়াছিলা অদ্য তাহার কোন চিহ্ন দেখিনা তোমার পিতা জাল জাদুকর জাদুতে তোমাকে আরোগ্য করিয়াছে কিন্তু অদ্য তোমাকে এমত তির মারিব যে জাল জাদূতে কিছু করিতে পারিবেন না। রোস্তম কহিল তুমি সহস্র তির মারিলেও আমার কিছু হইতে পারিবে না কিন্তু আমি একতিরে তোমাকে জমালয় পাঠাইব তাহার কোন সন্দেহ নাই; যদি তুমি আপন মঙ্গল বাঞ্ছাকর তবে আমার অপরাধ ক্ষেমা করিয়া আমার বাটিতে চল। দোহাই ঈশ্বরের আর জোন্দ পাজোন্দ ধর্ম্ম পুস্তকের দোহাই এবং চন্দ্র সূর্য্যের দোহাই তুমি একবার আমার বাটিতে আগমন করিলে তোমার সঙ্গে বিনা বন্ধনে গোস্তাম্পের নিকট যাইব তাহাতে তিনি বিবচনা করিয়া যাহা উচিত হয় তাহাই করিবেন। এছফন্দিয়ার কহিল আমি বিনা বন্ধনে তোমাকে লইয়া জাইব না, রোস্তম কহিল তুমি আমার বাটিতে চল তোমাকে অনেক দ্রব্যাদি উপঢৌকন দিয়া সন্তোষ করিব। এছফন্দিয়ার কহিল তোর এমত কিদ্রব্য আছে যে আমাকে দিবি। রোস্তম কহিল।

অমূল্য সহস্র মুক্তা দিবহে তোমায়।
সহস্র কুটরি রাজ যোগ্য মণিময়॥
সহস্র যুবতি দিব শুন্দরী সকল।
মৃগের সমান চক্ষু শরীর কোমল॥

ছাম নরিমানের আছে যতেক ভাণ্ডার।
খুলে দিব ইচ্ছামত লইবা তোমার ॥
তারপর ভৃত্য তুল্য সদা অকপটে।
থাকিব যাইব সঙ্গে রাজার নিকটে ॥
বন্ধন বেতিত ভব যেবা মনে লয়।
অনুগ্রহ করে কৃপাকর ধর্ম্মময় ॥

এছফন্দিয়ার কহিল মিথ্যা অন্যায় কেন কহিতেছ আমি ধর্ম্ম বিরুদ্ধ কর্ম্ম করিতে পারি কিন্তু। পতৃ আজ্ঞা লংঘন করিতে পারিব না এধনে আমার কি প্রয়োজন পিতৃ আজ্ঞা আমাকে প্রতিপালন করিতে হইবে, তোমাকে বন্ধন করিয়া লইয়া যাইতে আজ্ঞা করিয়াছেন। রোস্তম কহিল তাজতক্ত ও বাদসাহির প্রত্যাশায় প্রাণের আসা ত্যাগ করিবে? এছফন্দিয়ার কহিল বন্ধন স্বিকার কর অথবা যুর্দ্ধকর অন্য কথার আবিশ্যক নাই ইহা। কহিয়া দুইজনে তির ধনুকহস্তে লইলেন। রোস্তম সেইগজ বৃক্ষের দুইফলার তিরহস্তে লইয়া ঈশ্বরকে মনে ২ কহিতে লাগিলেন হে ঈশ্বর হে ধর্ম্ম; তোমরা সাক্ষিহও আমি সন্ধি করণার্থে প্রার্থনা করিতেছি এবং ধন রত্ন দিতে চাহিতেছি ও নানা প্রকার দন্যতা করিতেছি এবং সঙ্গে যাইতে স্বিকৃত আছি কিছুতেই সম্মত হয়না কেবল আমাকে বন্ধন করিতে চাহে। হে ঈশ্বর আমি এখন নিরূপায় হইয়া এইদুই ফলার তিরউহাকে মারিতে লইয়াছি কিন্তু তুমি আমার এ অপবাদ ক্ষেমা করিবা। রোস্তম ঈশ্বরের নিকট এই প্রার্থনা করিতেছিল এই সময়ে এছফন্দিয়ার রোস্তমকে এক তির মারিল তাহা দেখিয়া রোস্তম মস্তক নতকরিল তির মস্ত

কে না লাগিয়া টুপিতে বিন্ধিল তখন রোস্তম সেইতির লক্ষ করিয়া এছফন্দিয়ারের চক্ষে মারিল।

পক্ষরাজ আজ্ঞামত মারিল সে তির।
ফুটিল চক্ষেতে তির পড়িল রুধির॥
একতিরে অন্ধ হইল রাজার নন্দন।
দেখিয়া সকল লোক করয়ে রোদণ।
হেটমুণ্ড হয়ে পড়ে ঘোড়ার পৃষ্ঠেতে।
ধনূক খসিয়া তার পড়ে হাতে হতে॥

এছফন্দিয়ার তিরের আঘাতে কাতর হইয়া ঘোটকের পৃষ্ঠে পড়িয়া অজ্ঞ্যান হইল আর দুই চক্ষু হইতে রক্ত ধারা পতিত হইতে লাগিল তখন রোস্তম এছফন্দিয়ারকে কহিল॥

দুইসত সাইট তির আমি সহিয়াছি।
লজ্জার কারণে নাহি রোদন করেছি॥
এক তির আমার না পারিলে সহিতে।
সয়ন করিলে তুমি ঘোড়ার পৃষ্ঠেতে॥

এছফন্দিয়ারের পুত্র বহমন দুর হইতে দেখিল যে এছফন্দিয়ার অশ্ব পৃষ্টে মস্তক রাখিয়া অনেকক্ষণ রহিয়াছে অতি শীঘ্র নিকটে আসিয়া তদ্দর্শনে চিৎকার সব্দ করিয়া উঠিল তাহা শুনিয়া বসোতন প্রভৃতি সকলে আসিয়া চক্ষেতির বিদ্ধ দেখিয়া রোদন করিতে লাগিল, পরে চক্ষু হইতে তির বাহির করিয়া ঔষধ প্রদান করিতেছে এমত সময়ে রোস্তম ও জাল আসিয়া অনেক রোদন করিলে এছফন্দিয়ার কহিল আমার ললাটে ঈশ্বর যেমত লিখিয়াছিলেন তাহাই হইল ইহাতে রোস্তমের কোন অপরাধ নাই এখন আমার পুত্র বহমনকে

তোমার হস্তে সমর্পণ করিতেছি ইহাকে রাজনিত এবং ধর্ম্ম শাস্ত্র ও যুদ্ধআদি সিক্ষ্যকরাইয়া ইরানেরবাদসাহ করিবা রোস্তম কহিল তোমার আজ্ঞা মতঅবশ্য করিব। গোস্তাস্পর মৃত্যু হইলে আমি বহমনকে ইরানের বাদসাহ করিব, পরে বসোতনকে কহিল আমি চক্ষের বেদনায় অত্যন্ত কাতর হইয়াছি এ বেদনা গোরে সয়ন নাকরিলে বিশেষ হইবেক না, তুমি ইরানে জাইয়া পিতাকে কহিবা তাহার মনবাঞ্ছা পূর্ণ হইয়াছে

মন বাঞ্ছা পূর্ণ তব হইল এখন।
এখন রাজ্যত কর তুষ্ট হয়ে মন॥
অমর হইয়া রাজ্য শুখে কর তুমি।
আমার কারণ সোক নাকরিও তুমি॥

আর বাসাতনকে কহিল তুমি আমার মাতাকে ও স্ত্রীকে ও ভগ্নিদিগকে বুঝাইবে ও রোদন করিতে বারণ করিবা কপালের লিপি কেহু খণ্ডন করিতে পারে না॥

এই কথা বলে এক নিশ্বাস ছাড়িল।
আমার উপরে পিতা অন্যায় করিল॥
তখন পবিত্র প্রাণ স্বর্গে চলে গেল।
পঞ্চ ভৌতিক দেহ পঞ্চত্ত্ব পাইল॥

পরে বসোতন বহমন জাল ও রোস্তম ও উভয় পক্ষীয় সেনা সকলে অনেক রোদন করিয়া এছফন্দিয়ারের মৃত্যু দেহ এক সিন্ধুকে রাখিয়া বাদসাহি রিতমত মৃগনাভি কর্পুর আদিতে আচ্ছাদিত করিয়া বসোতন বহমনকে জাল ও রোস্তমের নিকট এছফন্দিয়ারের আজ্ঞামত রাখিয়া ইরানেযাত্রা করিল রোস্তম বহমনকে সঙ্গেলইয়া আপন বাটিতে উপস্থিত হইলে

জওয়ারা কহিল বহমনকে তুমি কি নিমিত্তে আনিলা ইহার পিতাকে তুমি নষ্ট করিয়াছ; সেই ক্রোধে বহমন তোমার পরিবার সকলকেনষ্ট করিবে, জাল ও রোস্তমকহিল আমরা তাহা জ্ঞাত আছি কিন্তু এছফন্দিয়ার কয় বাদসাহের সন্তান আমরা পুরষানুক্রমে কয়গোষ্ঠীর প্রতি পালিত ভৃত্য তিনি মৃত্যুকালে আপন পুত্র বহমনকে আমারদিগের হস্তে সমর্পণ করিলেন তাহা আমরা কি প্রকার অগ্রাহ্য করিব ইহাতে পরমেশ্বর শেষ যেমত করেণ তাহাই হইবে বর্ত্তমানে ভাবি শুচনার আবিশ্যকনাই, আর বহমনকে আমরা না আনিলে আমারদিগের ক্ষমা করিবে এমত নহে যখন বহমন সক্ষম হইবে তখনি পিতৃ সত্রুকে মারিবে ইহা সকলে করিয়া থাকে ও জানে অতএব ইহার আন্দোলন করিবার আবিশ্যকনাই যখনএছফন্দিয়ারের মৃত্যুদেহলইয়া বসোতনইরানেপৌছিল গোস্তাস্প সিন্ধুক দেখিয়া অনেক রোদন করিল আর কহিল জাল ও রোস্তম ছিমোরগকে আনিয়া জাদুকরিয়া এছফন্দিয়ারকেমারিয়াছে আমি ইহার প্রতিফলদিব এছফন্দিয়ারের মাতা ও ভগ্নি প্রভৃতি পরিবারসকলে রোদনকরিতেং আসিয়া গোস্তাস্পকে কহিল ॥

নামারিল পক্ষরাজ জাল নাহি মারে।
রোস্তম নামারিয়াছে জানহ অন্তরে॥
তুমি মারিয়াছ তারে করিয়া যতন
এখন কপট করে করিছ রোদন॥
লজ্জা না হৈল তব এ বৃদ্ধ বয়েসে।
হেন পুত্রে কাট তুমি রাজ্যের প্রত্যাশে॥

গোস্তাম্প লজ্জায় হেট মুণ্ড করিয়া থাকিল পরে বসোতন এছফন্দিয়ারের দেহকে গোর দিল, রোস্তম বহমন কেনানা বিদ্যায় শুসিক্ষিত করিয়া কিছুদিন পরে গোস্তাম্পকে পত্র লিখিল যে এছফন্দিয়ারের বিশয়ে আমিনিরাপরাধি আছি তাহাকে নানা প্রকার বুঝাইয়া তাহার সঙ্গে আপনার নিকট জাইতে স্বিকৃত ছিলাম তাহা কোন মতে নাশুনিয়া; যুর্দ্ধ করিলেন; আমি বহমনকে এখানে রাখিয়া নানা বিদ্যা অভ্যাষ করাইতেছি আপনকার যেমত মনোনিত হয় তাহা লিখিবেন। গোস্তাম্প রোস্তমের পত্রপাইয়া বসোতনে সকল কথা জিজ্ঞাসা করিল সে কহিল রোস্তম সকল কথা সত্য লিখিয়াছে আমি কহিয়াছিলাম রোস্তম তোমার অশ্বের রজ্জু ধরিয়া জাইতে স্বিকার আছি তবে যুর্দ্ধের আবিশ্যক কি, তাহাতে আমার প্রতি ক্রোধ করিয়াছিলেন, পরে রোস্তমকে লিখিলেন তোমার কোন অপরাধ নাই তাহা আমি বসোতনের প্রমুখত জ্ঞাত হইয়াছি তুমি বহমনকে আমার নিকট পাঠাইবা আর তোমাকে জখন আসিতে লিখিব তখন আসিবা। রোস্তম এই পত্র পাইয়া বহমনকে ইরানে পাঠাইল বহমন ইরানে আসিয়া বাদসাহর সহিত সাক্ষ্যাত করিয়া প্রণাম করিল বাদসাহ বহমনকে ক্রোড়ে লইয়া সিরচুম্বন করিয়া তৎখণাত উত্তরাধিকারি করিয়া তক্তে বসাইলেন ॥

এছফন্দিয়ার তুস্য তুমিরে আমার।
তোমাবিনে এ তক্তের যোগ্য কেবা আর ॥
চিরজিবি হয়ে তুমি থাকরে বহমন।
সে যদি আমার এখন হলো অদরসন ॥

## জালের পুত্র সোগাদের জর্ম্ম ও রোস্তমের মৃত্যু ॥

গ্রন্থকর্ত্তা লিখিয়াছে আজাদ নামে একবর্দ্ধ ছাম নরিমানের গোষ্টির অনেক সমাচার জ্ঞাতছিল সেই আমাকে কহিল তাহার বাক্য প্রমাণ সোগাদের জর্ম্ম ও রোস্তমের মৃত্যুর বিবরণ আমি বিস্তারিত রূপে কহিতেছি ॥

বৃর্দ্ধকালে জালের উপস্থিত হইতে একপুত্র জন্মিল তাহারনাম সোগাদ রাখিল জোতিষ ও গণকদিগকে আনাইয়া ঐ সন্তান কোন লগ্নে জর্ম্মিয়াছে এবং ইহার ভাগ্য কিরূপ জিজ্ঞাসা করিল? তাহার গণনা দ্বারা বিচার করিয়া কহিল ছাম নরিমানের বংস লোপ তোমার এই পুত্র হইতে হইবে, আরস্বর্গ তুল্য জাবলস্তান মধ্যে তোমার ছয়স্তান দেশ এই পুত্র সম ভূম ও উচ্ছিন্ন করিবে। জাল এইকথাশুনিয়া অত্যন্ত ভাবিত হইয়া ঈশ্বরের নিকটে মঙ্গল জনক প্রার্থনা করিল; যখন সোগাদ বয়প্রাপ্ত হইল তাহাকে কাবলের বাদসাহর সমীপে পাঠাইল সে আপন কন্যার সহিত সোগাদের বিবাহ দিল; রোস্তম কাবলের বাদসাহর স্থানে প্রতি বৎসর কর লইত এবৎসর আপনি আসিয়া পূর্ব্বাপিক্ষা কিছু অধিক কর লইল, আর তথায় দৈরাত্য করিল সোগাদ কহিল আমার ভ্রাতা আমার অনুরোধ করিলনা আমাকে হেও জ্ঞ্যান করিয়াছে আমি উহাকে প্রাণে নষ্ট করিব। বাদসাহ কহিল তুমি কি পকারে রোস্তমকে মারিবা? সোগাদ কহিল আমি এক মন্ত্রনা করিয়াছি তাহা মনোযোগকর; তুমি এক সভা করিয়া সেই সভায়

আমাকে দুর্ব্বাক্য ও কটুকাটব্যকহিবা আমি তাহাতে দুখিত হইয়া বাটিতে জাইয়া রোস্তমকে কহিব তাহা শুনিয়া রোস্তম রাগত হইয়া তোমাকে মারিতে আসিবেক তখন তুমি তাহার পদানত হইয়া বিনয় করিয়া আপন বাটিতে আনিবা; আমি এখান হইতে গমন করিলে তুমি তোমার স্বিকারের বনমধ্যে কয়েকটা বৃহৎ কুপ খননকরাইয়া তন্মধ্যেনানাপ্রকার শানি তাস্ত্র পঁতিয়া কূপের মুখে কমল কাষ্ট আচ্ছাদন করিয়া তাহারউপর অল্পমৃত্তিকা প্রলেপ করিয়া তৃণ রোপণ দ্বারাএমত করিবা যে কোনমতে কূপবোধ নাহয়; রোস্তম সর্ব্বদা শীকার করিতে গিয়া থাকে তোমাকে স্বীকারের কথা কহিলে ঐবনে লইয়া জাইবা সিকার করিতেগেলে উক্তকুপে পড়িয়া মরিবে কাবলের বাদসাহ সোগাদের এই মন্ত্রনা শুনিয়া তুষ্ট হইল পরে একদিন নগরস্থ সমস্ত প্রধানং ব্যক্তিকে নিমন্ত্রন করিয়া আপন সভায়বসাইয়ানৃত্যগিত বাদ্যদ্বারা সন্তোষিত করিতে ছেন এমতসময়ে সোগাদ কোনস্থানে ছিল এইসময়েসোগাদ সভারমধ্যেআইলেবাদসাহ তাহাকেসমাদরকরিলনা তাহাতে সোগাদ ক্রোধ যুক্ত হইয়া কহিল হে বাদসাহ তুমি এই সভা মধ্যে আমার অপমান কি নিমিত্ত্যে করিলে আমি তোমা হইতে ধনে মানে জাতিতেশ্রেষ্ট, বাদসাহ কহিল ওই জালের পুত্র নহে আর ছাম নরিমানের বংসো নহে; জাল বৃদ্ধকালে এক বেশ্যাকে রাখিয়াছিল তাহার গর্ভে তোর জর্ম্ম তোর পিতা কে তাহা কেহ জানেনা জাল কখন পুত্র বলিয়া সম্বোধন করেননা এবং রোস্তম ও তোকে ভ্রাতা বলেনা, আর জা-

লের পরিবার সকলে তোকে দাশী পুত্র কহিয়া ভৃত্য তুল্য জ্ঞান করে; সোগাদ সভামধ্যে এই সকল কথাশুনিয়া রাগত হইয়া আপন বাটিতে গিয়া জাল ও রোস্তমকে এই সকল বিবরণ কহিল, রোস্তম শুনিয়া সোগাদকে সান্ত করিয়া কহিল আমি তাহাকে ধৃত করত কারাগারে বর্দ্ধ করিয়া তোমাকে কাবলের বাদসাহ করিব, কয়েক দিবস পরে আপন সেনা ও সোগাকে সঙ্গে লইয়া কাবলে যাত্রা করিলে কাবলের বাদসাহ রোস্তমের আগমনের সংবাদ পাইয়া একদিবসের পথ অগ্রসর হইয়া রোস্তমের পায়ে ধরিয়া অনেক রোদন ও বিনতি করিয়া কহিল আমি মদিরা পানে মত্ত হইয়া সোগাদকে দুর্ব্বাক্য কহিয়াছি আপনি অনুগ্রহকরিয়া আমার এ অপরাধ মার্জনা করুণ; রোস্তম তাহার অনেক বিনয় বাক্যে তাহাকে ক্ষমা করিল; পরে কাবলের বাদসাহ রোস্তমকে আপন এক বাটিতে রাখিয়া নানামত সেবাদ্বারায় সন্তুষ্ট করিল। সোগাদ বাদসাহকে বিরলে জিজ্ঞাসা করিল কুপ খনন হইয়াছে কি না? সে কহিল তোমার উপদেস মত হইয়াছে। সোগাদ কহিল স্বিকারের উপলক্ষ্যরোস্তমকে সেইস্থানে লইয়া জাও পরে কাবলের বাদসাহ রোস্তমের নিকটে আসিয়া জানাইল যে অমুক স্থানে এক সুরম্য বন আছে তাহার মধ্যে অনেক মৃগাদি সিকারের যোগ্য পশু থাকে রোস্তম তুষ্ঠ হইয়া অশ্বারোহি হইয়া সেইদিগে গমন কালিন দক্ষিণে সোগাদ বামে কাবলের বাদসাহ পথ প্রদর্শকরূপে চলিল। যখন সেই কুপের নিকটে পোছিল রোস্তমের অশ্ব নুত্তন মৃত্তিকার গর্দ্ধ পাইয়া দাড়াইলে রোস্তম পদ দ্বারা তাডনা করিতে লাগিল

তত্রাপি ঘোটক চলিলনা, তখন রোস্তম রাগত হইয়া এক কোড়া মারিল ঘোটক প্রহারিত হইয়া লম্ফদিয়া অতিবেগে কুপে পড়িত হইল তাহার মধ্যে অস্ত্র সকল স্থাপিত ছিল তদ্দারা ঘোটক ও রোস্তমের সর্ব্বাঙ্গ ক্ষত বিক্ষ্যাত হইল এবং অশ্ব সেই কুপহইতে লম্ফদিয়া দ্বিতিয় কুপে পড়িল এইরূপে ক্রমে২ সাত কূপে পড়িয়া ও উঠিয়া অবশেষে মাঠে আসিয়া অত্যন্ত অসামার্থ্য হইয়া অশ্ব ও রোস্তম অবসন্ন হইল, রোস্তম জানিল যে সোগাদ কাবলের বাদসাহর সহিত মন্ত্রনা করিয়া আমাকে নষ্ট করিল। তখন সোগাদকে ডাকিয়া কহিল আমি তোমার ভ্রাতা এরূপ চাত্তরিদ্বারা আমাকে কেন নষ্ট করিলা, আমি তোমার ভাল করিতে আসিছিলাম। সোগাদ কহিল তুমি অনেককে নষ্ট করিয়াছ তাহারি প্রতিফল ঈশ্বর তোমকে দিলেন। কাবলের বাদসাহ কহিল এ অতি খেদেরবিশয় যেরোস্তম আমারএখানে আসিয়া মারা পড়িল আর কোন মনস্যকে কহিল নোস দারু আন রোস্তম কহিল নোস দারু তুমি আপন মস্তকে দেও আমার আসন্ন কাল উপস্থিত হইয়াছে আমার পুত্র ফরেমোরজ আসিয়া ইহার প্রতিফল তোমাকে দিবেক। পরে সোগাদকে ডাকিয়া প্রবোধ করিয়া কহিল আমার ভাগ্যে যাহা ছিল তাহা হইল এইক্ষণে আমার দাড়াইবার বসিবার সক্তিনাই; অতএব যতক্ষণ জীবদ্দশায় থাকি হিংশ্রক যন্তুতে আমাকে না খায় এপ্রযুক্ত আমার তির ধনুক পৃষ্ঠদেশ হইতে আমারহস্তে দেও আমি লইতে পারিলামনা, সোগাদ তির ধণক পৃষ্ঠদেশ হইতে বাহির করিয়া রোস্তমের হস্তেদিল রোস্তম ধণক লইয়া তির জোয়ূনা

করিল তাহা দেখিয়া সোগাদ ভিত্ত হইয়া এক বৃক্ষর আড়ে লুকায়িত হইলে রোস্তম ঈশ্বরকে সরণ করিয়া তির ত্যাগ করিলে সেই তির গাছ বিদ্দিয়া সোগাদের বক্ষ ভেদ করিয়া পৃষ্ঠদেশ দিয়া নির্গত হইল; সোগাদ উচ্চস্বরে আহঃ সব্দ করিয়া প্রাণ ত্যাগ করিল। রোস্তম ঈশ্বরকে প্রণাম পূরঃসর ধন্যবাদ করিয়া কহিল তোমার কৃপায় আপন সত্রুকে আপনি মারিলাম ইহাকহিয়া রোস্তম তৎখণাত প্রাণ ত্যাগ করিল আর এক কূপে রোস্তমের ভ্রাতা জওয়ারা পড়িয়া প্রাণ ত্যাগ করিল আর রোস্তমের সঙ্গে যে সকল মনুস্য সেস্থানে গিয়াছিল প্রায় সকলেই কূপ মধ্যে পতিত হইয়া প্রাণত্যাগ করিল একজনকিঞ্চিৎদূরে ছিলসেএইপ্রকার সকলের দূরাবস্থা দেখিয়া পলায়ন করিয়া জাবলস্থানে গিয়া জাল ও ফরামোরজকে সকল বৃতান্ত কহিল, রোস্তমের মৃত্যু সংবাদ শুনিয়া জাবলস্থ সমস্ত ব্যক্তি সোকাকুল হইয়া রোদন করিল তদনন্তর জাল অনেক সেনা সঙ্গে দিয়া ফরামোরজকে রোস্তম ও জওয়ারা প্রভৃতির মৃত্যু দেহ আনিতে কবেলে পাঠাইল ফরামোরজ কহিল কাবলের বাদসাহের মস্তক সঙ্গে আনিব কাবলের বাদসাহ ফরামোরজের আগমনের সংবাদ পাইয়া পর্ব্বতের উপরিভাগে এক দূর্গছিল তন্মধ্যে প্রবেশ করিয়া দ্বাররুদ্ধ করিয়া রহিল। ফরামোরজ কাবলে আসিয়া সমস্ত নগরস্থ লোককে বিনাশ করিয়া তাবভের বাটি ও ঘর সমস্ত ভাঙ্গিয়া ও দাহ করিয়া নগর উচ্ছিন্ন করিল। তৎপরে রোস্তম ও জওয়ারার মৃতুদেহ তাহার কথক পশুতে খাইয়াছিল তাহা দুই সিন্দুকে রাখিয়া জাবলস্থানে আসিয়া গোরদিল

কিয়ৎ দিবস পরে ফরামোরজ পূনর্ব্বার কাবলে উপস্থিত হইয়া তথাকার বাদসাহকে ধৃত করিয়া সেই কূপে উর্দ্ধপদ অধোমুখ করিয়া অস্ত্রাঘাতে মারিল আর তাহার সমস্ত পরিবারকে বন্ধন করিয়া জাবলে পাঠাইয়া আপনার কোন ব্যক্তিকে কাবলের বাদসাহি দিয়া আপনি জাবলে আইল ॥

## গোস্তাস্পর স্বর্গারোহণ।

গোস্তাস্প বাদসাহ একসত বিস বৎসর বাদসাহি করিয়া আর এছফন্দিয়ারকে চাতুর্য্য দ্বারা বধ করিয়া অত্যন্ত লর্জ্জিত হইয়াছিল এ নিমিত্ত্য এছফন্দিয়ারের পুত্র বহমনকে ইরানের তক্তে অভিসেক করিয়া আপন পুত্র বসোতনকে প্রধান সেনাপতি ও মন্ত্রীত্ব পদে নিযুক্ত করিয়া কহিলেন তোমরা দুইজনে ঐক্য হইয়া সকল কর্ম্ম সম্পাদন করিবা কিছুদিন পরে পীড়িত হইয়া পরলোক গত হইলেন।

## বহমন রোস্তমের পুত্রের সহিত যুর্দ্ধ।

বহমন বাদসাহ হইয়া অনেক দান ও সদ্বিচার দ্বারা সিষ্টের পাল দুষ্টের দমন করিয়া অতিসুচারু রূপে কিছুদিন বাদসাহি করিলেন। একদিন সভায় বসিয়া সকল সরদার দিগকে সম্বোধন পুর্ব্বক কহিলেন তোমরা সকলে বিবেচনা কর কয়খোছরোর পিতা ছিয়াওসকে আফরাছিয়াব বধ করিয়াছিল এনিমিত্ত্য কয়খোছরো আপন পিতৃশত্রু আফরাছিয়াবকে যুর্দ্ধ করিয়া মারিল, আর রোস্তমকে কাবলের বাদসাহ মারিয়াছিল এ প্রযুক্ত, তাহার পুত্র ফরামোজ কাবলের বাদসাহকে নষ্টকরিল, এইমত পুর্ব্বাপর সকলেই পিতৃসত্রুকে মারিয়াছে ও মারিতেছে। আমার উচিত যে রোস্তম ও তাহার

ভ্রাতা আমার পিতা ও ভ্রাতা প্রভৃতিকে মারিয়াছে তাহার দিগের বধের পরিবর্তে রোস্তমের পিতা ও পুত্রকে মারিব সকলে কহিল আমরা আপনকার আজ্ঞাকারি যেমত আজ্ঞা করিবেন তাহাই করিব, তখন বহমন একলক্ষ সেনাসঙ্গে লইয়া জাবলস্তানে যাত্রা করিয়া হিরমন্দ নদীর তীরে উপস্থিত হইয়া জালকে কহিয়া পাঠাইল যে অবধি তোমরা আমার পিতা ও ভ্রাতাকে বধ করিয়াছ সেই অবধি আমি অসুখি আছি; তাহার দিগের পরিবর্তে তোমাকে ও ফরামোরজকে আমি নষ্ট করিব। জাল শুনিয়া কহিয়া পাঠাইল রোস্তম নিরাপরাধি ছিল তোমার পিতার নিকটে অনেক বিনতী করিয়া সঙ্গে যাইতে স্বিকার করিয়াছিল তাহা আপনি জানেন তৎকালে তাহার সঙ্গেছিলেন সকলজ্ঞাত আছেন আমরা তোমার দিগের চিরকালের শুভানুধ্যায়ি এবং প্রতিপালিত ও আশ্রিত অতএব আমাকে অনুগ্রহ কর। জালের এইরূপ দন্যতা বাক্য শুনিয়া বহমনেরমনে দয়ার উদয়হইল জাল বহুবিধ উপঢৌকনীয়দ্রব্য সঙ্গে লইয়া বহমনের নিকট আসিয়াছেলাম করিয়া পদদ্বয়ে চুম্বন করিয়া বহমনের ঘোটকের ডোর ধরিয়া পদব্রজেসঙ্গে২ গমন করিলে বহমন জালকে অশ্বারোহি হইয়া আসিতে কহিলেন তাহা না করিয়া রজ্জু ধরিয়া আপন বাটিতে বহমনকে আনয়ন করিলে বহমন জালের বাটিতে আসিয়া তাহার ভাণ্ডার ভাঙ্গিয়া সমস্ত ধন লুঠ করিয়া কহিলেন ফরামোরজ কোথা? জাল কহিল সে স্বিকার করিতে গিয়াছে তোমার আগমনের সম্বাদ পায় নাই। বহমন কহিল আমার আগমনের সমাচার দেশ দেশা

ন্তর ব্যাপ্ত হইয়াছে এখন পর্য্যন্ত ফরামোরজ শুনে নাই, ইহা কহিয়া বহমন রাগত হইয়া জালকে বর্দ্ধকরিল। ফরামোরজ আপন সৈন্য সহিত কোনস্থানে গোপন হইয়াছিল, জাল কয়েদ হইয়াছে শুনিয়া বহমনের সঙ্গে যুদ্ধ করিতে আইল। তিন দিবস একাদিক্রমে যুর্দ্ধ করিয়া চতুর্থদিবসে ফরামোরজ সৈন্যের প্রতিকুলে ঝড হইয়া কিছু না দেখিতে পাইয়া সমস্ত সেনা পলাইল। ফরামোরজ কথক গুলীন সেনা লইয়া রণ স্থলে থাকিয়া বহমনের অনেক সেনা বিনাশ করিল; পরে বহমন সেনা সকলকে তির বর্ষণ করিতে আজ্ঞা করিলেন। ফরামোরজ অনেক যুর্দ্ধ করিয়া অজ্ঞান হইয়া ভুমিতে পতিত হইলে তৎক্ষণাৎ বহমনের সেনারা তাহাকে ধরিয়া বহমনের নিকটে আনিত হইলে বহমন তদ্দণ্ডেই তাহাকে শুলেদিলেন তৎপরে জাবলস্তানের সমস্তলোককে ছেদনকরিলেন। বসোতন কহিল এই সকল ঈশ্বরের জীবকে নির অপরাধে কেন নষ্ট আপন, আপন পিতৃবধের পরিবর্ত্তে ফরামোরজকে মারিলেন। আর সকলকে বিনা অপরাধে নষ্ট করিলে ঈশ্বরের নিকটে অপরাধি হইবা এ প্রযুক্ত আমার মত এই এখন বাটিতে গমনকর বহমন বসোতনেরবাক্য শুনিয়া লুঠ ও বধ করিতে বারণ করিলেন। তদনন্তর জালকে কারাগার হইতে মুক্ত করিয়া জাবলস্তান জালকে অর্পণ করিয়া আপনি ইরানে আসিয়া বাদসাহি করিতে লাগিলেন ষষ্টি বৎসর নিস্কণ্টকে বাদসাহি করিয়া একদিন রাত্রে সভাহইতে গাত্রোত্থান করিয়া অন্তঃপুরে জাইতে ছিল পথি মধ্যে একসর্প দংশন করে তৎ প্রতিকারার্থে অনেক তন্ত্র মন্ত্র

ঔষধাদি করিল কোন মতে বিশেষ কিছুই হইলনা সেই সর্পাঘাতে বহমনের প্রাণ ত্যাগ হয়,মৃত্যুর পূর্ব্বে তাহার এককন্যা হোমানাম্নি ওছাছান নামক এক পুত্রছিল তাহাকে বাদসাহি না দিয়া আপন কন্যা হোমাকে বাদসাহি দিয়া কহিল হোমা গর্ভবতি আছে যদি পুত্রহয় তবে সেই বাদসাহ হইবে আর যদি কন্যা হয় তবে হোমা বাদসাহ থাকিবেক। হোমা বহমনের কন্যা বহমন তাহাকে আপন ভোগ্যা করিয়াছিল এবং বহমনহইতে হোমা গর্ভধারণ করে এই নিমিত্ত্যে হোমাকে বাদসাহি দিলেন ॥

## হোমার বাদসাহর বিবরণ ॥

হোমা বাদসাহি তক্তে বসিয়া অনেক দান ও প্রজাদিগের প্রতি দয়া এবং সুবিচার সর্ব্বদা করিত তৎপ্রযুক্ত সকল লোক ক্রমে তাহার বাধ্য হইল; কিছুদিন পরে হোমা একপুত্র প্রসব হইল তাহা প্রকাশ না করিয়া গোপনে এক দাশীকে প্রতিপালন করিতে কহিল। বাহিরে প্রচার করিল একপুত্র হইয়াছিল জাত মাত্রেই মরিয়াছে; তাবত লোক বসিভূতছিল এজন্য কেহু কোন কথা কহিলনা; সেই বালক যখন সাত মাসের হইল তখন এক সিন্ধুক আনাইয়া তাহার মধ্যে অতি সুন্দর কোমল শয্যা করিয়া তাহার নিম্নে কিঞ্চিৎ বহু মুল্য রত্নাদি এবং ও সস্তু মুদ্রা রাখিয়া ঐ শয্যায় বালককে শয়ন করাইয়া সিন্ধুক বর্দ্ধকরিয়া যামিনী যোগে আপনার বিস্বাসি দাসীকে কহিল এই সিন্দুক বাদসাহি বাটি ও দুর্গের নিম্নে

ফেরাতে নামেরে নদী আছে সেই নদীতে ভাষাইয়া আইস। সে মনো মধ্যে চিন্তা করিল যে এ বালক এ স্থানে থাকিলে আমির উজির প্রভৃতি সকলে ক্রমে জানিতে পারিলে ইহাকে বাদসাহ করিবে এ প্রযুক্ত এ বালক এখানে থাকায় আমার বাদসাহির হানি হইবেক, জলে ভাষাইয়াদিলে যদি আয়ু থাকে তবে ঈশ্বর অবশ্য বাঁচাইয়া রাখিবেন। আঃ কি আক্ষেপ সামান্য ধন ও ঐসর্য্যের লোভে লোভাবিষ্ঠ হইয়া আপন পুত্রকে জলে ভাষাইয়াদিলেক ঈশ্বরইচ্ছায় ঐ সিন্ধুক ভাষিয়া দুর্গের পার্শে একজন রজক বস্ত্র ধৌত করিত প্রাত কালে ভাষিতে ২ ঐ সিন্ধুক উক্তস্থানে আইল ধোপা বস্ত্র ধৌত করিতে ঐ সময় আসিয়া দেখিল একটা সিন্ধুক নিকট দিয়া ভাষিয়া যাইতেছে রজক ঐ সিন্ধুক ধরিয়া তটে আনিয় খুলিয়া দেখিল যে পুর্ণচন্দ্রেরন্যায় পরম সুন্দর একটি বালক তাহার মধ্যে জিবদ্দশায় আছে তখনি ঐ সিন্ধুক সহিত বালককে আপন স্ত্রির নিকট লইয়া গিয়া কহিল কল্য তো- মার একটি বালক মরিয়াছে; অদ্য ঈশ্বর অনুগ্রহ করিয়া তাহার পরিবর্ত্তে একটি পরম শুন্দর বালক দিয়াছেন। তা হার স্ত্রি ঐ বালককে দেখিয়া ক্রোড়েলইয়া স্তনপান করাইল পরে রজক সিন্ধুকের মধ্যেস্থ শয্যা তুলিলে তাহার নিচে অনেক সস্তু মুদ্রা ও বহু মূল্য রত্নাদি দেখিয়াআহ্লাদিতহইয়া ঈশ্বরকে ধন্য বাদকরিয়াকহিলঈশ্বর আমাকে অনগ্রহ করিয়া ধন ও পুত্র দিলেন, ঐ বালকের নাম দরাব রাখিল। তৎ পরে আপন স্ত্রির সহিত পরামুর্স করিল এখানে থাকিলে ঐ বালকের ও ধনের কথা প্রকাশ হইলে বিপদ ঘটিবে অত

এব এস্থান হইতে স্থানন্তরে বাস করাই শ্রেয়। ইহা কহিয়া সেস্থান ত্যাগ করিয়া কিঞ্চিৎ দুরে কোন গ্রামে জাইয়া বাস করিল। ঐ বালক বর্দ্ধিত হইলে রজক উহাকে বস্ত্র ধৌত করিতে কহিত সে পালাইয়া আর২ প্রতিবাসি বালক দিগের সহিত ক্রিডা করিত রজক সর্ব্বদা কহিত আমার পুত্র মুর্খ হইল আপন জাতিয় বিদ্যা সিখিল না, পরে ধোপা ঐ বালককে এক পাঠশালায় নিযুক্ত করিলে জোন্দ পাজোন্দ ধর্ম্ম পুস্তক এবং আর২ অনেক পুস্তক অতি সিঘ্র অভ্যাষ করিবায় পণ্ডিত তাহার বুদ্ধের প্রাখর্য্যতা দেখিয়াআশ্চার্য্য জ্ঞান করিয়া সর্ব্বদা ধোপাকে কহিত তোমার পুত্রের বুদ্ধি ও শুলক্ষণ দেখিয়া আমার বোধ হইতেছে এবালক বাদসাহ কিম্বা উজির হইবে। একদিন দারাব আপন পিতাকে কহিল আমার গুরু জাহা জানিতেন তাহা সমস্ত আমি অভ্যাষ করিয়াছি; অন্য কোন গুরুর নিকট আমাকে পাঠ করিতে দেও আর তির, ধনুক; অশ্ব; তলওয়ার আমাকে আনিয়াদেওআমি অস্ত্র যুদ্ধ ও মল্ল বিদ্যা সিক্ষ্য করিব, সে কহিল আমি দরিদ্র ধোপা ঘোটক কোথা হইতে আনিব দারাব ঘোটক ও অস্ত্র নাপাইয়া দুইদিন আহার না করিবায় তাহার মাতা ( অর্থাৎ ধোপার স্ত্রি ) তখন ঐ রত্ন একখানি ধোপাকে দিয়া কহিল এই রত্ন বিক্রয় করিয়া জাহাপাও তাহাতে ঘোটক ও অস্ত্র আনিয়া দেও, ধোপা সেইমত করিল দারাব ঘোড়া ও অস্ত্র পাইয়া তুষ্ট হইয়া যুদ্ধের নানা প্রকার কৌসল শিক্ষা করিতে লাগিল। যুদ্ধ বিদ্যার পারদর্শি হইলে একদিন ধোপার স্ত্রিকে অনেক যত্ন পূর্ব্বক আপন জর্ম্ম বিবরণ জিজ্ঞাসা করিল

অনেক আকিঞ্চন এবং কোট করিতেং সেস যে প্রকারে পাই য়াছিল তাহা সমুদয় বিস্তারিত করিয়া কহিল ? দারাব শুনি য়া বুঝিল যে আমি ইহার দিগের ঔরস পুত্র নহি পালিত পুত্র;কোনপ্রধান লোকের সন্তান অবশ্য হইব কোনবিশেষ কারণে আমাকে ভাষাইয়া দিয়াছিল ইহারা পাইয়া পুতি পালন করিয়াছে। তখন ধোপার স্ত্রীকে কহিল সিন্দুকের মধ্যে যে সকল রত্ন ছিল তাহার কিছু আছে ? সে কহিল দুইখানি রতন আছে, দারাব কহিল সেই দুইখানি রত্নআন আমি দেখিব। রজকি দুইখণ্ড রতন আনিল দারাব তাহার একখানি আপনহস্তে বান্ধিয়া রাখিল আর একখানি বিক্রয় করিয়া আপনার উত্তমোত্তম পরিধেয় বস্ত্রাদি করিল আর কিছু টাকা আপনার নিকট রাখিয়া বাকি তাহার ঐ মাতা কে দিল। ঐ সময়ে রোমের বাদসাহ ইরানে যুদ্ধ করিতে আসিবে এই সংবাদ হোমা শুনিয়া আপন উজির ও সেনা পতি রসনওয়াদকে আজ্ঞা করিল আমার যে সৈন্য আছে তদ্ভিন্ন ও নূতন কথক গুলিন পাদাতিক সেপাহি বলবান দেখিয়া চাকর রাখিয়া রোমের বদসাহের সহিত যুদ্ধ করিতে জাও রসনওয়াদ হোমার আজ্ঞা মত ইরানে ও তাহার নিক টস্থ দেশ সকলে যোসনা করিল যে আমার অনেক সেপাহি প্রয়োজন আছে জাহারা সেপাহি গরি কর্ম্ম করিতে বাঞ্ছা থাকে আমার নিকট আসিবা দারাব এই যোষনা শুনিয়া রসনওয়াদের নিকটে আইল যে সকল সেপাহি চাকরহইতে আসিত রসনওয়াদ তাহার দিগে কে হোমার সহিত সাক্ষ্যাত করাইয়া কর্ম্মে নিযুক্ত করিত দারাধকে ও হোমার সমীপে

লইয়া গেলে হোমা দারাবের আকার প্রকার ও রিত চরিত্র ও লক্ষণাদি দর্শন করিয়া মনো মধ্যে বিবেচনা করিল যে এ ব্যাক্তি সামান্য মনুস্য নহে বোধ হয় কয় বংশীয় অথবা কোন বাদসাহর সন্তান হইবেক তাহার প্রতি হোমার কিছু স্নেহ জম্মিল, রসনওয়াদকে কহিলেন ইহার বেতন অন্য অপেক্ষা অধিকদিবা পরে রসনওয়াদ সেনা লইয়া যাত্রা করিল কয়েক দিন পরে এক দিবস একমাঠে অতিসয় ঝড বৃষ্টি আরম্ভ হইলে প্রধানেরা শিবির মধ্যে রহিলেন আর২ সেনা স্থানে২ রহিল। দারাব সেই মাটে এক পূরাতন অতি জির্স্ন গৃহছিল সেই গৃহ মধ্যে প্রবেশ করিয়া সয়ন করিয়া নিদ্রা গত হইলে শুন্য হইতে এই সব্দ হইল হে জির্স্ন গৃহং তুমি এখন পতন হও না ইরানের ভাবি বাদসাহ তোমার মধ্যে নিদ্রিত আছে তুমি সাবধান থাকিবা। এই সব্দ সমস্ত সৈন্য শুনিল রসনওয়াদ কোন ব্যক্তিকে কহিল এসব্দ কে করিল তাহার তথ্য জানিয়া আইস? অনেকে সন্ধান করিতে গেল পুনরায় ঐই সব্দ হইলে বহমনের পুত্র তোমার মধ্যে নিদ্রিতআছে এখন পতিত হইবানা সাবধান থাকিবা; ইহা শুনিয়া রসনওয়াদ সন্ধান করিতে পুনর্ব্বার লোক পাঠাইল. প্রথমে যাহারা সন্ধানার্থে গিয়াছিল তাহারা আসিয়া কহিল আমরা অনেক অনুসন্ধান করিলাম কোনস্থানে মনুয্য দেখিতে পাইলাম না; আর পৃথিবী হইতে এশব্দ হয় নাই আকাশ হইতে এশব্দ হইতেছে আমার দিগের বোধ হইল। তৎক্ষণাৎ পূনর্ব্বার পুর্ব্বমত শব্দ হইলে রসনওয়াদ বিস্ময়াপন্ন হইয়া চারিদিক নিরক্ষণ করিতে২ অতিদুরে মাঠেরমধ্যে

এক পুরাতন গৃহের ন্যায় দৃশ্য হইলে কোন লোককে কহিল ঐ গৃহে কেহ আছে কিনা দেখিয়া আইস । সে তৎক্ষণাত্ দেখিয়া আসিয়া কহিল একজন যুবক সেপাহি ঘরের মধ্যে নিদ্রিত আছে, কিন্তু সেইগৃহ খণ্ড ২ হইয়া রহিয়াছে বোধ হয় এইক্ষণেই পতিত হইবে। রসনওয়াদ কহিল তাহাকে শীঘ্র আমার নিকট আন সে গিয়া দারাবকে জাগ্রত করিয়া গৃহ হইতে বাহির হইবা মাত্রেই সেইগৃহ ভাঙ্গিয়া পড়িল। সেব্যক্তি আসিয়া সমুদয় বৃত্তান্ত কহিল, রসনওয়াদ দারাবের প্রতি অতিশয় তুষ্টহইয়া তাহার জন্ম বিবরণ জিজ্ঞাসা করিল দারাব রজকের নিকট যেমত ২ শুনিয়াছিল তাহা অবিকল কহিল। রসনওয়াদ শুনিয়া দারাবকে অশ্বাদি নানাবিধ দ্রব্য পারিতোষিক দিয়া ঐ ধোপা ও ধোপানিকে আনিতে লোক পাঠাইল। তাহারা আইলে দারাবের জন্ম বিবরণ জিজ্ঞাসা করিলে তাহারা কহিল আমরা পুর্ব্বে ইরানে বসতি করিতাম কেল্লার পার্শ্বে ফোরাত নদিতে বস্ত্রধৌত করিয়া কাল যাপন করিতাম, এক দিবস অতিপ্রত্যুসে বস্ত্রধৌত করিতে গিয়া দেখিলাম যে ঐ নদির ধার দিয়া এক সিন্দুক ভাসিয়া যাইতেছে আমি ঐ সিন্দুক ধরিয়া তটে আনিয়া চাবি ভাঙ্গিয়া দেখিলাম একটি সাত আট মাসের বালক এক উত্তম শয্যার উপর জিবদ্দশায় আছে আমি সিন্দুক সহিত লইয়া আমার স্ত্রীকে দেখাইলাম সে বালককে লইয়া স্তনপান করাইল, পরে সিন্দুকের মধ্য হইতে সেই শয্যা ও বস্ত্রাদি তুলিলাম তাহার নিচে কথক গুলীন মোহর ও বহুমূল্য রত্নছিল তাহা লইয়া আমরা পরামর্শ করিলাম যে এখানে থাকিলে একথা

প্রচার হইলে বিপদ হইবে এইযুক্তি স্থির করিয়া সেখান হইতে অন্যস্থানে গিয়া বাস করিয়াছিলাম, আর সেইখানে রত্নাদি দ্বারা ইহাকে নানাবিদ্যা অভ্যাস করাইয়াছি। রসনওয়াদ শুনিয়া কহিল সেই সকল রত্নের কিছু আছে ধোপার স্ত্রীকহিল দুইখানি অবশিষ্ট ছিল তাহার একখানি বিক্রয় করিয়া দারার আপন বস্ত্রাদি ও পার্থয়োপযুক্ত লইয়া আর কিঞ্চিৎ আমার দিগের দিয়া আসিয়া ছিল আর একখানি রত্ন দারাব আপনি রাখিয়াছে। তাহা শুনিয়া রসনওয়াদ দারাবকে সেইরত্ন বাহির করিতে কহিলেন দারাব সেইরত্ন খানি আপন হস্ত হইতে খুলিয় রসনওয়াদকে দেখাইল, রসনওয়াদ সেইরত্ন দেখিয়া জানিল যে এব্যক্তি বহমনের পুত্র বটে? হোমা রাজ্যলোভে ইহাকে জলে ভাসাইয়া দিয়াছিল তখন দারাবের মর্য্যাদা বৃদ্ধি করিয়া দারাবকে প্রধান সেনা পতিত্ব পদে নিযুক্ত করিল যখন রোমের সেনার সঙ্গে একত্রি হইল তখন দারাব অত্যঅল্প সেনা সঙ্গে লইয়া রোমের সেনার সহিত এমত ঘোরতর যুদ্ধ করিল যে তাহারা ক্রমে পরাঙমুখ হইলেন, দারাব ব্যাঘ্রেরন্যায় তাহারদিগের পশ্চাত ২ ধাবমান হইয়া অনেক সেনাকে নষ্টকরিল, সন্ধের সময় উভয় সেনা আপন ২ শিবিরে গেল। রসনওয়াদ দারাবের যুদ্ধ কৌসল দেখিয়া অনেক প্রশংসা করিল; পরদিবস প্রাতে পুনরায় যুদ্ধ আরম্ভহইলে দারাব রসনওয়াদকে কহিল আপনি শিবির মধ্যে থাকুন আমি অল্পসেনা লইয়া রোমি দিগেরপরাভব করিব। রসনওয়াদকহিল তুমি রোমি দিগকে পরাভব করিতে পারিলে হোমাকে কহিয়া তোমাকেগ্রাম ও

অনেকধন দেওয়াইব দারাববিদায় হইয়া রোমিদিগের সৈন্য মধ্যে গিয়া অনেক সেনা সংহারকরিল, কেহদারাবেরনিকটে আসিতে পারিল না, ক্রমে কয়ছর রোম ফয়লকুছকে ধরিতে ধরিতে ধাবমান হইল তাহা দেখিয়া ফয়লকুছ দুরে গেল এবং দিবা অবসান দেখিয়া সে দিবস যুর্দ্ধ রহিত থাকিল; রস নওয়াদ দারাবকে আপন নিকটে আনিয়া অনেক প্রশংসা করিয়া নানাবিধ রত্ন; বস্ত্র, ও অস্ত্র পুরুষ্কার স্বরূপ প্রদান করিলেন দারাব তাহার কিছু গ্রহণ না করিয়া একটি বরছি মাত্র লইয়া কহিল অন্য দ্রব্যতে আমার প্রয়োজন নাই, রোমি সরদারেরা পরস্পার কহিল যে কয়ছর কহিয়াছিল ইরানে এক স্ত্রিলোকে বাদসাহি করে আমরা গিয়া সহজে তদ্রাজ্য অধিকার করিব কিন্তু যে সরদার যুর্দ্ধ করিতে আসিয়াছে এখন পর্য্যন্ত সে যুর্দ্ধ করে নাই এক বালক অল্প সেনা সঙ্গে লইয়া আমারদিগের অনেক সেনা মারিল যে দিগে আসিয়া পড়ে সেই দিগ শুন্যকরে অতএব কয়ছরকেবলিয়া আমরা আপন দেশে জাই; এই মন্ত্রনাধার্য্য করিয়া কয়ছরেরনিকটে জ্ঞাপন করিল কয়ছর কহিল কল্য আর একবার যুর্দ্ধ করিব তাহাতে ঈশ্বর যেমন করেণ দেখিয়া বিবচনা করিব। পর দিবসপ্রাতে যখন উভয় সেনা একত্র হইল দারাব রোমের সেনার মধ্যে প্রবেশ করিয়া অনেক রোমের সেনাবিনাশ করিল ॥

দারাব সৈন্যর মধ্যে প্রবেশ করিল।
দেখিয়া রোমের সেনা সভয় হইল ॥
রোদন করিয়া সেনা ছাড়ে রণ ভূম।
বুঝি আর ফিরে নাজাইতে হবে রোম ॥

কয়ছর রোম তাহা দেখিয়া রসনওয়াদের নিকট দুত দ্বারায় কহিয়া পাঠাইল আমি অপরাধ করিয়াছি ক্ষেমাকর পূর্ব্বাপর যেমত করদিয়াছি তাহালও; রসনওয়াদ তাহা শুনিয়া সম্মত হইলা কয়ছর রোম অনেক উপঢৌকন ও করের টাকা পাঠাইয়া সন্ধি করিয়া রোম দেশে প্রস্থান করিল রসনওয়াদ এই জয় সংবাদ ও দারাবের যুদ্ধের বিবরণ বিস্তারিত করিয়া হোমাকে লিখিল এবং দারাবের হস্তে যে রত্ন ছিল তাহাও পাঠাইল যখন হোমার নিকট ঐ পত্র ও রত্ন পৌছিল হোমা রত্ন দেখিয়া জানিল যে আমার পুত্র আর মনো মধ্যে কহিল যে দিবস প্রথম কর্ম্মে নিযুক্ত হইল তখনি তাহাকে দেখিয়া আমার স্নেহ হইয়াছিল; হোমা আহ্লাদিত হইয়া অনেক ধন বিতরণ করিলেন আর রসনওয়াদকে লিখিলেন দারাবকে লইয়া শিঘ্র আমার নিকটে আসিবা, যখন রসনওয়াদ দারাবকে সঙ্গে লইয়া নিকটে পৌছিল হোমা একদিনের পথ অগ্রসর জাইয়া দারাবকে ক্রোড়ে লইয়া শির চুম্বন করিয়া বাটিতে আনিয়া শুভদিন দেখিয়া তক্তে বসাইল। হোমা দ্বাত্রিংশৎ বৎসর বাদসাহি করিয়া পরে দারাবকে বাদসাহকরিল

---

দারাবের বাদসাহির বিবরণ ॥

দারাব ঈরানের বাদসাহ হইয়া পূর্ব্ব রিতমতপ্রজার পালন ও দুষ্টের দমন শিষ্টের পালন করাতে ছোট বড সকলে তুষ্ট হইয়া কাল যাপন করিতে লাগিল। দারাব সেই ধোপা ধোপানিকে আনাইয়া অনেকধন তাহারদিগের দিয়া কহিল

তোমরা বস্ত্র ধৌতের কর্ম্ম হইতে ক্ষেন্তহইয়া নদিতীরে জাইয়া সর্ব্বদা অনুসন্ধান করিবা যদি আর কোন সিন্ধুক পাও ও তা-হাতে দারাবের ন্যায় বালক থাকে। ধোপা কহিল আম জাতীয় কর্ম্ম ত্যাগ করিলাম ইহা কহিয়া রজক বিদায় হইল, কিছুদিন পরে সয়েব নামক আরব দেশের বাদসাহ এক লক্ষ্য সেনা সঙ্গে লইয়া ইরানে যুর্দ্ধ করিতে আইলে দারাব তাহা শুনিয়া আপন সেনা গণকে সঙ্গে লইয়াদিবা রাত্র আ-রব দিগের সহিত যুদ্ধ করিয়া চতুর্থ দিবশে দারাব আর বের বাদসাহ সয়েবকে নষ্ট করিল; আরবের অবশিষ্ট যে সেনা ছিল তাহারা প্রাণভয়ে পলায়ন করিলে দারাব কথক দুর তাহারদিগের পশ্চাৎ২ ধাবমাদ হইয়া পুনরাগমন করত তাহারদিগের অনেক ধন সম্পত্তি ও অশ্ব পাইলেন; তাহার কিছুদিন পরে দারাব আপনসেনা দিগ্যে শুসজ্জি ভূত করিয়া রোম দেশে উপস্থিত হইয়া রোমের বাদসাহ ফয়ল কুছের সঙ্গে যুর্দ্ধ করিলেন; তাহাতে ফয়লকুছ অশক্ত হইয়া আমু নগরের দুর্গে প্রবেশ করিয়া দ্বার বর্দ্ধ করিয়া আপনার এক একজন দূতকে অনেক উপঢৌকন সহিতপাঠাইয়া সন্ধিকরিয়া কর ধার্য্যকরিল। পরেদারাবকোন লোকহইতে শুনিল যে ফ-য়লকুছের নাহিদ নাম্নি এক পরম শুন্দরি কন্যা আছে,দারাব ফয়ল কুছের নিকটে সেইকন্যা চাহিলেন ফয়ল কুছ শুনিয়া পরমাহ্লাদিত হইয়া সেই কন্যাকে দারাবের নিকট পাঠাইলে দারাব নাহিদকে বিবাহ করিয়া ইরানে আসিয়া বাদসাহি করিতে লাগিলেন। কিছু দিন পরে দারাব আপন সভাব হকিম ও বৈদ্য দিগের কহিলেন ফয়ল কুছের কন্যা নাহি

দের মুখে অতিসয় দুর্গন্ধ এ নিমিত্ত্য আমি সর্ব্বদা অশুখি আছি, তাহারা কহিল ঔষধ করিলে দুর্গন্ধ দুর হইবে। পরে হকিমেরা কহিল এছন্দর নামক এক প্রকার খুদ্র বৃক্ষ আছে তাহা কিছুদিন চর্ব্বন করিলে মুখের দুর্গন্ধ দুর হইবে, সেই বৃক্ষর পাতা আনাইয়া নাহিদকে চর্ব্বণ করিতে দিলে নাহিদ সেই পত্র চর্ব্বন করিলে মুখের দুর্গন্ধ দুর হইল, কিন্তু সেই পত্রের তিভিরতাতে মুখের মধ্যে ক্ষ্যাত হইল তজন্য আপন পিতা ফয়লকুছের নিকটে যাইবার প্রার্থনা করিল; দারাব তাহার মুখের দুর্গন্ধের নিমিত্ত্য অশুখি ছিল তখনি নাহিদকে রোমে পাঠাইল। নাহিদ দারাব হইতে গর্ভ ধারণ করিয়াছিল তাহা প্রকাস করিলনা, রোমেতে আসিয়া কিছুদিন পরে এক পুত্র প্রসব হইল ফয়ল কুছ অপুত্রক ছিল ঐ নাহিদের পুত্র জর্ম্মিলে প্রাচার করিল আমার এক পুত্র জর্ম্মিয়াছে নাহিদ অন্তঃসত্ত্য সময়েমুখের দুর্গন্ধ প্রযুক্ত এছকন্দর বৃক্ষের পত্র চর্ব্বণ করিয়া মুখে ক্ষ্যাত হইয়াছিল এপ্রযুক্ত আপন পুত্রের এছকন্দর নাম রাখিল কিন্তু এছকন্দর দারাবের পুত্র এ কথা কেহু জানিতে পারিলনা॥

এছকন্দর পুত্র হৈল ফয়লকুছ পিতা।
রোম দেশে এইমত হইল জনতা ॥
কয়লকুছ গতো মইলে রাজা হইল সেই।
সকল পৃথিবী মুসাসিত কৈলসেই ॥

এছকন্দর রোস্তমের ন্যায় বলবান ছিল, রাজনীত, ধর্ম্ম সাস্ত্র, যুদ্ধ বিদ্যা ও হেকমত অর্থাৎ বৈদ্য সাস্ত্র দ্রব্য গুণ ও সিল্প বিদ্যা প্রভৃতি অনেক শাস্ত্রে পণ্ডিত হইল; আর

অনেক পণ্ডিত ও হকিমকেআপন নিকটরাখিল, এবং ফলাতুঁর প্রধান শিষ্য আরস্তাতালিছকে আপন মন্ত্রি করিল এছন্দরের বিশেষ বিবরণ ইহারপর অবগত হইবা এখানে দারাবের আর এক স্ত্রী হইতে একপুত্র হইল তাহারনাম দারা রাখিল, যখন দারা বয়ঃপ্রাপ্ত হইল তখন দারাবের লোকান্তর গমন হইল। চৌদ্দবৎসর চারিমাস দারাব বাদসাহি করিয়া আপন পুত্র দারাকে বাদসাহিতে অভিসেক করিয়া সর্গযাত্রা করিল।

## দারাবের বাদসাহির বিবরণ।

দারাব বাদসাহ হইয়া পৈত্রিক নিয়মানুসারে রাজকার্য্য করিতে আরম্ভ করিল আর যে২ বাদসাহর নিকট হইতে দারাব কর গ্রহণ করিত তাহাদিগের নিকটে দূত পাঠাইয়া করেরটাকা আনাইলা কেবল যেদূত রোমদেশে ফয়লকুছের পুত্র এছকন্দরের নিকট গিয়াছিল সেকহিল এছকন্দর কর দিলনা, কিছুদিনপরে দারা এছকন্দরকে একপত্রলিখিল যে পুর্ব্বাপর যেরূপ করদিয়া আসিতেছ তাহা অনেক দিবস পাঠাও নাই এই দূতের সমভিব্যাহারে পাঠাইবা, এইপত্র দূতদ্বারা এছকন্দরের নিকটে রোমদেশে পাঠাইল। এছকন্দর পত্র পাইয়া উত্তর লিখিল যে আমার পিতা ফয়লকুছ তোমার পিতা দারাব কেকর দিতেন সেসময় গতো হইয়াছে কালের গতি সর্ব্বদা সমান থাকে না এখন তুমি আমাকে কর দেও নতুবা আমি তোমার সঙ্গে যুদ্ধ করিয়া তোমার ইরান লইব, আর তুমি এমত জ্ঞান করিবা না যে আমি কেবল ইরান লইয়া ক্ষেন্ত থাকিব আমার বাঞ্ছা সমস্ত

পৃথিবী গ্রহণ করিব; আর তোমার দূতের পশ্চাৎ অতিশীঘ্র সসৈন্য যূর্দ্ধ করিতে যাইতেছি তুমি যুর্দ্ধের আয়োজন করিয়া প্রস্তুত থাকিবা। এইপত্র দূতকে দিয়া বিদায় করিয়া আপনার সেনাগণকে শুসজ্জী ভূত করিয়া ইরানে যাত্রা করিল। দারা এইপত্র পাইয়া অতিশয় রাগত হইল এবং সেই সময়ে আর কোন ব্যক্তি আসিয়া কহিলএছকন্দর সসৈন্য হইয়া অতিনিকট আসিয়া পৌছিয়াছে? ইহা শুনিয়া ব্যাস্ত হইয়া আপন সৈন্য লইয়া বাহির হইয়া আশুখর ফারছ নামক নগরে উপস্থিত হইলে তখন দুই পক্ষের সেনা সেই মাঠের দূইদিগে শিবির করিয়া থাকিল। পরদিবস এছকন্দর দুতের বেশধারণ করিয়া দারাব নিকট সন্ধান লইতে গমন করিল; দারাতাহাকে দেখিয়া আপন নিকটে ডাকিয়া কহিল ছেকন্দর তোমায় কি নিমিত্ত্যপাঠাইয়াছে; দুত কহিল ছেকন্দর কহিয়াছে; আমি তোমার সঙ্গে যূর্দ্ধ করিতে আসি নাই আমার বাঞ্ছা সমস্ত পৃথিবী ভ্রমণ করিব; তোমার অধিকারের মধ্য দিয়া আমাকে জাইতে পথ ছাড়িয়াদেও আমি অন্যদেশে গমন করি, তাহা নাশুনিয়া যদি যুর্দ্ধকর তাহাতে আমি প্রস্তুত আছি আমি তোমার সেনা দেখিয়া ভীত নহি আমার সঙ্গেও সেনা আছে দারা দুতের রিতি চরিত্র ও কথোপকথনে বিশ্বয়াপন্ন হইয়া কহিল অনেক দুত দেখিয়াছি কিন্তু এতদ্রুপ সাহসিক দূত কখন দেখিনাই কহিয়া কহিল,

কাহা হৈতে জন্ম তব নাম কি তোমার।
তুমি বুঝি না হইবে প্রেরিত কাহার॥

বাক্যের কৌশলে তব হতেছে সংশয়।
ছেকন্দর হবে তুমি হেন মনেলয় ॥

দূত কহিল আমা অপিক্ষা অনেক বিশিষ্ট ভৃত্য ছেকন্দরের নিকট আছে এবং সে এমত নির্ব্বোধ নহে যে আপনি দূত হইয়া আসিবেক সে রাজনীতি সকল জ্ঞাতআছে; পরে দারা তাহাকে নিকটে বসাইয়াপেয়ালা পূরিত মদিরা দিতে কহিল দূত মদিরা পান করিয়া পেয়ালা আপনি রাখিল যেব্যক্তি মদ্য দিতেছিল দারাকে জানাইল যে দূত মদ্য পান করিয়া পেয়ালা রাখিল, দারা দূতকে কহিল কি নিমিত্ত্য পেয়ালা দেওয়াহি; দূত কহিল আমার দেশে এই নিয়ম আছে দূতের হস্তে যে দ্রব্য দেয় তাহা আর লয়না; দারা হাস্য করিয়া কহিল অন্য পেয়ালা আনিয়া মদিরা দেও দূত ক্রমে ২ চারি পেয়ালা লইল; পরে সন্ধের সময় নানাবিধ আহারিয় দ্রব্য আনাইয়া সভাস্থ সকলের সঙ্গে একত্রে আহার করিতে বসিল সেইসময়ে একব্যক্তি আসিয়া উপস্থিত হইল সে ছেকন্দরকে চিনিত্ত সে দারারনিকটে জানাইবার নিমিত্ত্য দণ্ডায়মান হইলে তাহাকে দেখিয়া ছেকন্দর অনুভব করিল যে দারাকে আমার পরিচয় দিবেক।

ছেকন্দর বুঝিল এবে প্রকাশ হইল।
এখন আমার থাকা উছিত না হইল।
এতেক বিচার করি তখনি উঠিল।
দারাকে না জানাইয়া বাহিরেতে গেল॥
আপনার অশ্বেচড়ি গমন করিল।
নিজ সিবিরেতে আসি দরশন দিল॥

পরে দারা ধরিবারে লোক পাঠাইল।
অন্ধকার নিশি ছিল দেখিতে না পাইল ॥

ছেকন্দর আপন শিবিরে আসিয়া আরস্তাতালিছ প্রভৃতি সকলকে ডাকাইয়া সেই চারিটা পেয়ালা দেখাইয়া কহিল অতি শুলক্ষণ হইয়াছে ? শত্রুর ঘর হইতে ধনপ্রাপ্ত হইয়া আসিয়াছি ইহাতে এমত বোধ হইতেছে যে দারাব সমস্ত দেশের চতুর্দ্দিগ আমি গ্রহণ করিব, এবং দারার ও সভাসত গণের রীতি চরিত্র দেখিয়া বুঝিয়াছি সেযুর্দ্ধে আমার সঙ্গে কখন সক্ষম হইতে পারিবেক না।

## দারার সহিত ছেকন্দরের যুদ্ধ।

পরদিবন প্রাতে দুইপক্ষের সেনায় যুর্দ্ধ আরম্ভ হইয়া সপ্তাহ পর্য্যন্ত দিবা রাত্র যুর্দ্ধ করিয়া অষ্ঠম দিবসে দারা পলায়ন করিল সেনাও ছিন্ত্ত ভিন্ন হইল। ছেকন্দরের সেনা তাহার দিগের পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া ফোরাত নদির তিরপর্য্যন্ত গিয়া পুনরাগমন করিয়া তথাকার রাজ্যের নিয়ম নির্ধার্য্য ও শুশাসিত করিবার নিমিত্ত্যে কিয়ৎকাল সেইস্থানে থাকিল দারা সেই সকল সেনা একত্র করিয়া এবং আর কিছু সেনা সংগ্রহ করিয়া পূনর্ব্বার ছেকন্দরেরসঙ্গে যুর্দ্ধ করিল তাহাতে দারা পরাজয় হইয়া পলায়ন করিল। ছেককুর ইরানে থাকিয়া তাবৎ মনুষ্যকে স্নেহ দ্বারায় বসিভূত করিল, আর কহিল তোমরা সকলে জ্ঞাত আছ দারাব বাদসাহ ফয়ল কুছের কন্যা নাহিদকে বিবাহ করিয়া ছিলেন তাহার মুখের দুর্গন্ধের জন্য তাহাকে এছকন্দর নামক বৃক্ষের পত্র চর্ব্বন করিতে দিয়া ছিলেন সেইপত্র চর্ব্বন করিয়া মুখের দুর্গন্ধ

দূর হইয়া মূখের মধ্যে ক্ষান্ত হইল এপ্রযুক্ত তাহাকে রোমে পাঠাইয়া ছিলেন; তৎকালে নাহিদ আমার মাতা গর্ভবতী ছিলেন পরে রোমদেশে পৌঁছিয়া কিছুদিন পরে আমাকে প্রসব হইলেন দারাবের প্রধান পুত্র আমি অতএব আমি তাহার উত্তরাধিকারি তোমরা সকলে মনস যোগ পূর্ব্বক আপন ২ কর্ম্মে নিযুক্ত থাক; এই কথা শুনিয়া সকলে বিশ্বাস করিয়া ছেকন্দরের বাধ্য হইল; দারা দেখিল যে সকল লোকই ছেকন্দরের বাধ্য হইয়াছে তখন ইরানীয় ব্যক্তি সকলকে ডাকাইয়া কহিল রোমের বাদসাহ সর্ব্বদা ইরানের অধীন ভৃত্য তুল্যছিল অধুনা তোমরা ছেকন্দরের মিষ্ঠ বাক্য শুনিয়া তাহার দাসত্ব স্বিকার করিলা ক্রমে তোমার দিগের ধন সম্পত্যাদি লইয়া তোমার দিগকে নষ্ঠ কিম্বা বদ্ধ করিয়া আপন দেশে যাইবে। দারার এইরূপ ভয় প্রদর্শন বাক্য শুনিয়া যাহারা দারার অতি আত্মীয় ছিল তাহারা দারার নিকটে সত্য করিল যে আমরা সকলে ঐক্য হইয়া প্রাণপন করিয়া পুনরায় ছেকন্দরের সহিত যুদ্ধ করিব তাহা শুনিয়া কথক গুলীন সেনা সংগ্রহ করিয়া পুনর্ব্বার ছেক ন্দরের সঙ্গে যূদ্ধ করিতে আইল।

দুইসৈন্য মহাক্রোধে যূর্দ্ধআরম্ভিল।
গদা খড়্গ আদি নানা অস্ত্র হস্তে নিল।।
সেনাগণ কলোরবে হেন জ্ঞান হইল।
স্বর্গ মর্ত্ত আদি সব বাধর হইল।।
পিতা পুত্রের মধ্যে স্নেহ না রহিল।
পৃথিবী হইতে স্নেহ একেবারে গেল।।

যর্দ্ধদেখে দিন নাথ অস্তাচলে গেল।
অপারক হয়ে দ্বারা পৃষ্ঠে ভঙ্গ দিল॥
ছেকন্দর সেই যুর্দ্ধে জয় যুক্ত হৈল।
দারা পলায়ন করে আশু খরে গেল॥

পরে ছেকন্দর তাহার পশ্চাৎতাড়া করিলে তিনসত লোক সঙ্গে লইয়া কোনস্থানে লুকাইত থাকিয়া আপন সরদারদিগকে পরামুস জিজ্ঞাসা করিলে তাহারা কহিল ছেকন্দরের সহিত সন্ধিকরা শ্রেয় ? দ্বারা কহিল আমি প্রাণ দিতে স্বিকৃত আছি কিন্তু ছেকন্দরের সরণাগত হইতে পারিবনা; ছেক দরের পুরুষানুক্রমে আমারদিগের অধিনছিল আমি তাহার পদানত কি পুকারে হইব, তখন দারা কান্য কুব্জ দেশের বাদসাহ কুরহিন্দিকে সহায় হইতে পত্র লিখিল কুরহিন্দি দারার পত্র পাইয়া উত্তর লিখিল যে আপনি অনুগ্রহ করিয়া এখানে আসিবেন আমার সেনা ও আর২ নিকটস্থ বাদসাহ দিগের সৈন্য লইয়া সকলে অক্য হইয়া ছেকন্দরের সহিত যুর্দ্ধ করিব॥

---

## উজিরের হস্তে দারার মৃত্যু

দারা কুরহিন্দির পত্র পাইয়া যে লোক তাহার সঙ্গেছিল তাহারদিগের লইয়া কান্য কুব্জ দেসে যাত্রা করিল। ছেকন্দর লোক দ্বারায় এই সংবাদ প্রাপ্ত হইয়া হিন্দস্থানে জাওনেরপথ রূর্দ্ধকরিতে সেনা পাঠাইল, মাহিয়ার ও জানুছপার নামক দুইজন প্রিয় মন্ত্রি ছিল তাহারা সর্ব্বদা দ্বারার

নিকটে থাকিত তাহারা দুইজনে পরামর্স করিল যে দারার দুঃভাগ্য ঘটিয়াছে দিনেক দুইদিরে মধ্যে ছেকন্দরেরহস্তে ধরা কিম্বা মারা পডিবেক, অতএব আমরা দারাবকে বধ করিয়া ছেকন্দরকে জানাইলে তুষ্ঠ হইয়া আমারদিগেরবহু ধন ওগ্রাম দিবে এবং আমারদিগকে প্রধান মন্ত্রি করিবেক এই মন্ত্রনা স্থির করিয়া যখন দারা আস্তখর হইতে যাত্রা করিয়া কথক দুর গমন করিলে ইহারা দুইজনে দারাব দুই পার্শ্বে রক্ষার্থে জাইতেছিল আর২ লোকেরা অগ্র পশ্চাৎ কিছুদুরে ছিল, দারাকে পথি মধ্যে অন্ধকার রাত্রে একা পাইয়া প্রথমত জানুছপার দারার বক্ষস্থলে এক ছুরিকা ঘাত করিল পরে মাহিয়ার দারার বাহুতে এক তলওয়ার আঘাত করিল তাহাতে দারা অত্যন্তঁ কাতর হইয়া অশ্ব হইতে ভুমে পডিত হইলে ঐ দুইজন উজির দারাকে বিনাশ করিয়া তৎক্ষণাত ছেকন্দরের নিকট কহিয়া পাঠাইল যে দারা হিন্দ স্থানে জাইতে ছিল আমরা দুইজনে পথমধ্যে তাহাকে বি নাশ করিয়াছি, ছেকন্দর এইসংবাদ পাইয়া প্রাতে দারা যে স্থানে আঘাতি হইয়াছিল সেইস্থানে আসিয়া দারাকে দেখিয়া অনেক খেদ পুর্ব্বক রোদণ করিয়া দারার মস্তক আপনি ক্রোড়ে লইয়া অনেক বিলাপ করিতে লাগিল, দারা চক্ষু মুদিত করিয়া ছিল ছেকন্দরের রোদণে চক্ষু উন্মিলন করিয়া দেখিল যে ছেকন্দরের ক্রোড়ে শয়ন করিয়া রহি য়াছি তখন এক দীর্ঘ নিশ্বাস ত্যাগ করিল ছেকন্দর কহিল আপনি ভাবিত হইবেননা; এখনি আপনাকে বাটীতে লইয়া চিকিৎসা ও ঔষধি দ্বারা আরোগ্য করিব দারা কহিল

আমার অন্তকাল উপস্থিত হইয়াছে আর চিকিৎসা ও ঔষধি করিবার সময় নাই তুমি এখন ইরানের বাদসাহ হও ছেকন্দর কহিল তোমাকে নষ্ঠ করিবার মনস্ত কোন প্রকারে আমার ছিলনা; আমার মানস তোমাকে ইরানের বাটিতে লইয়া চিকিৎসা করি যদি পরমেশ্বরের অনগ্রহতে আপনি রক্ষা পাও তবে তোমার রাজ্য ও বাদসাহি তোমাকে দিয়া আমি এখান হইতে অন্যদেশে যাইব, আমি আপন মাতার নিকট সকল জ্ঞাত হইয়াছি তুমিও আমি দূইজন দারাবের পুত্র। অতএব তুমি আমার কনিষ্ঠ ভ্রাতা তোমার এদশা দেখিয়া আমিখেদান্বিত হইয়াছি, ইহা কহিয়া অনেক রোদণ করিল আর কহিল যে২ ব্যক্তি আপনাকে আঘাত করিয়াছে তাহার দিগকে উপযুক্ত দণ্ড করিব তখন দারা কহিল আমার মৃত্যুকাল উপস্থিত হইয়াছে তোমার স্নেহ ও মিষ্ঠ বাক্য দ্বারা আয়ু পাইবনা, কিন্তু তোমার সিষ্ঠাচারিতে হৃষ্ঠ চিত্ত হইলাম তোমাকে কিছু কহিতে বাঞ্ছা করি যদি তুমি আমার বাক্য প্রতিপালন কর ছেকন্দর কহিল আপনি যাহা কহিবেন তাহা আমি সাম্যক প্রকারে প্রাণতুল্য গ্রাহ্য করিব; দারা কহিল আমার তিন চারিটা কথা আছে তাহার প্রথম এই আমার পরিবারকে অসমভ্রম ও অনাদর করিবা না সর্ব্বদা তাহার দিগের মান রক্ষা করিবা। দিতীয় আমার রোসনক নাম্নী প্রীয় এক কন্যা আছে তাহাকে তুমি বিবাহ করিয়া তাহার গর্ভে যদি পুত্র হয় তাহার নাম এছফন্দিয়ার রাখিবা তৃতীয় আমি অগ্নিপুজার ও জরদহস্তধর্ম্মের যে২ নিয়ম প্রচার করিয়াছি তাহা নষ্ট নাকরিয়া পূর্ব্বাগত বাদসাহ সহ

রাস্পা ও গোস্তাস্পা অবধি যে প্রকার হইতেছে তাহাই রাখি- বা কদাচ অন্যথা করিবা না। ছেক-দরক হিল আপনি যেমত যেমত কহিলেন তাহা অবশ্য করিব। পরেদারা ছেকন্দরের হস্ত ধারণ করিয়া আপন মুখের উপর রাখিয়া একদীর্ঘ নি- শ্বাষ ত্যাগ করে তৎ সঙ্গে তাহার প্রাণ বায়ু স্বস্থানে প্রস্থান করিল। ছেকন্দর অনেক রোদন করিয়া এক স্বর্ণময় সিন্ধু কে দারার মৃত্যু কায়া রাখিয়া বাদসাহি রিতিমতো আচ্ছা দিত করিয়া সে স্থানহইতে লইয়া তাহার পৈতৃক গোরস্থানে গোর দিল॥ দারা চত্তুদ্দশ বৎসর ইরানের বাদসাহি করিয়া ছেকন্দরের সহিত যুদ্ধে পরাভব হইয়া হিন্দুস্থানে যাইতে ছিল পথিমধ্যে আপনার দুইজন প্রিয়ো উজির জানুছপার ও মাহিয়ার দারাকে অস্ত্রাঘাত করে তাহাতেই তাহার প্রাণ ত্যাগ হইল॥

ছেকন্দরের বাদসাহি ও পৃথিবি ভ্রমণ ॥

ছেকন্দর দারার মৃত্যুর পর ইরানের বাদসাহ হইয়া সেই দুই উজির জানুছপার ও মাহিয়ারকে আনাইয়া শুলেদিতে আজ্ঞা করিলেন ॥

নগরে ঘোষনা এই দেহ সমুদয়।
প্রভু হত্যা করিয়াছে যেই দুরাসয়,
তার প্রতিফল দেখ সকলে আসিয়া।
ছেকন্দর শুলে দিল বিচার করিয়া॥

ইরানের সমস্ত লোক ইহা দেখিয়া ও শুনিয়া ছেকন্দরকে বিস্তর প্রশংসা করিয়া শরণাগত হইল, ছেকন্দর সমস্ত

প্রধান ও সরদার দিগকে ডাকাইয়া যে যেকর্ম্মে নিযুক্তছিল তাহাকে সেই কর্ম্মে নিযুক্ত করিল; আর পূর্ব্বাপেক্ষা সকলের সম্মান ও মর্য্যাদা অধিক করিল এবং দারার বেগমেরনিকটে কহিয়া পাঠাইল যে দারার মৃত্যু কালে তাহার কন্যা রোসনককে বিবাহ করিতে কহিয়াছে অতএব আপনি রোসনককে আমার নিকট পাঠাইবা, রোসনকের মাতা ইহা শুনিয়া অনেক ধন রত্ন বস্ত্র দাস দাসি সঙ্গে দিয়া রোসনককে ছেকন্দরের নিকট পাঠাইলে ছেকন্দর আপনার রিতিমত রোসনককে বিবাহ করিয়া ইরানে কিছুদিন থাকিয়া তথায়নিয়ম স্থাপিত করিয়া হিন্দস্থানে যাত্রা করিল ॥

---

ছেকন্দরের হিন্দস্থানে যাত্রাও
কিদহিন্দুর বিবরণ

ছেকন্দর সসৈন্যে ইরান হইতে হিন্দস্থানের রাজ্যাধিকার করিতে যাত্রা করিলেন। কিদহিন্দু নামক হিন্দুস্থানের বাদসাহ ছিল সে ক্রমাগত দশরাত্র নিদাবসে আশ্চার্য্য সপ্ন সন্দর্শণ করিয়া পণ্ডিত গণকে সেই সপ্নের ফলাফল জিজ্ঞাসা করিল? তাহারা কিছু উত্তর করিতে পারিলনা পরে উজিরেরা কহিল মেহরান নামক এক জন তপস্বি এই নগরে আছেন কিন্তু তিনি কাহার নিকট গমনাগমন করেন না; তিনি ভূত ভবিষ্যৎ ও মনের কথা সকলি কহিতে পারেন তাঁহাকে জ্ঞাত করিলে অনাআসেএই সপ্নের মর্ম্ম কহিতে পারিবেন। কিদহিন্দু উজিরকে সঙ্গে লইয়া মেহারান তপস্বির বাটিতে গিয়া সপ্ন বিবরণসকল তাঁহাকে জ্ঞাত করিলেন

প্রথম রাত্রের সপ্ন বিবরণ এক অতি বৃহদ পুরি তাহারদ্বার নাই এক ক্ষুদ্র ছিদ্র মাত্র সেই বাটিতে আছে; এক মত্ত হস্তি সেই ক্ষুদ্র ছিদ্র দ্বারা সেই পুরির মধ্যে প্রবেশ করিল তাহাঁতে কোন কষ্ট হইলনা; কিন্তু গমনকালে হস্তির শুণ্ড ঐ ছিদ্রেতে লাগিয়া থাকিল । ১ ।

দ্বিতিয় রাত্রে এক শুন্দর যুবক পুরুষ সেই বাটিতে রাজ সিংহাসনে বসিয়াছে । ২ ।

ত্রিতিয় রাত্রে একখান অতি শুক্ষ্ম শ্বেত বস্ত্রকে চারিজন পুরুষে চত্তুদ্দিগে ধারণ করিয়া আকর্ষণ করিতেছে তাহাতে ঐ বস্ত্র ছিন্ন হইতেছে না এবং ঐ চারিজন পুরুষ বস্ত্র টানিতে ক্ষন্ত হইতেছেনা ঃ ৩ ঃ

চতুর্থ রাত্রে এক পুরুষ তৃষ্টাযুক্ত হইয়া এক নদির তিরে জল পান করিতে গেল সেই সময়ে একমৎস্য ঐ নদীহইতে বাহির হইল সেই পুরুষ ঐ মৎস্য দেখিয়া পলায়ন করিলে মৎস্য এবং নদীর জল ঐ পুরুষের পশ্চাত ধাবমান হইল সেই পুরুষ ক্রমাগত অতি বেগে ধারমান হইতেছে ঃ ৪ ঃ

পঞ্চম রাত্রি অতি শুন্দর এক নগর তথাকার সমস্ত লোক অন্ধ কিন্তু তাহারা তন্নিমিত্ত্য ক্ষুব্ধ নহে, আর স্বাভাবিক মনুস্যর ন্যায় ক্রয় বিক্রয়াদি করিতেছে ঃ ৫ ঃ

যষ্ঠরাত্রে এক নগর দেখিলাম সেখানকার প্রায় সমস্ত লোক পিড়িত অত্যল্প লোক শুস্ত আছে কিন্তু তাহারা সর্ব্বদা খেদিত ও দুখিত এবং অস্থাভাবে ওষ্ঠাগত প্রাণহইয়া রহিয়াছে; আর ঐ সকল পীড়িত লোকেরা আহারদিগেরকে দেখিতে ও তত্ত্বাবধান করিতে জায় ঃ ৬ ঃ

সপ্তরাত্রি একঅশ্বের দুইমুখ দুইমুখে তৃণাদি অধিক আহার করিতেছে কিন্তু তাহার মল দ্বার নাই। ৭।

অষ্টম রাত্র একস্থানে তিনটা জলের জালা রহিয়াছে তাহার দুই পার্শ্বে দুইটায় জল পরিপুর্ণ আছে মধ্যের জালা শুন্য ও শুষ্ক কিন্তু ঐ দুই পার্শ্বের জালাহইতে মধ্যের জালায় অনবরত জল দিতেছে তাহাতে মধ্যের জালা পরিপুর্ণ ও আদ্রো হইতেছেনা; এবং দুই পার্শ্বের জালার জল নূন্য হয় না। ৮।

নবম রাত্র এক ক্ষেত্র মধ্যে গাভি ও বৎস রহিয়াছে সেই গাভী ঐ বৎসেরস্তনপানকরিতেছে তথ্রাপি কৃষ ও দুর্ব্বল হই তেছাকিন্তু বৎস সবল ও পুষ্ট হইতেছে। ৯।

দশম রাত্র এক মাঠের মধ্যস্থলে এক বৃহদ সরোবর তাহাতে জল বিন্দুনাই শুস্ক হইয়া রহিয়াছে কিন্তু ঐ সরোবরের চারি পাড়ে ও মাঠে জল পরিপুর্ণ আছে। ১০।

কিদহিন্দ কহিল হে তপস্বি আপনি বিচার করিয়া এইদশ প্রকার সপ্নের ফলাফল আমাকে বিশেষ করিয়া বল? মেহ রান তপস্বি কহিল তুমি কোন মতে ভাবিত হইবানা; ইহাতে তোমার কোন ব্যাঘাত হইবেনা, ছেকন্দর বাদসাহ এপ্রদেশে আসিতেছে তুমি সাবধান থাকিবা তাহার সঙ্গে যুর্দ্ধ করিলে পরাজয় হইবা অতএব ছেকন্দরের সঙ্গে কদাচ যুর্দ্ধ করিবানা, তোমার নিকট যে চারি অপূর্ব্ব বস্তু আছে সেই চারিবস্তু তাহাকে উপঢৌকন স্বরূপ প্রদান করিলে সন্তুষ্ট হইয়া তোমাকে এখানকার বাদসাহ রাখিয়া আপনি অন্যত্রে জাইবে। সে চারি বিশেষ বস্তু কহি। প্রথমতঃ তোমার এক

পরমশুন্দরি কন্যা আছে; দ্বিতিয়া একজন জৌতিষ পণ্ডিত তোমার সভায় আছে; ত্রিতিয়তঃ একজন বিজ্ঞ সত বিবেচক বৈদ্য তোমার সভায়আছে; চতুর্থতঃ একরত্ন নির্ম্মিত কটোরা তোমার ভাণ্ডারে আছে তহাতে জল অথবা পানিয় দ্রব্য রাখিয়া অগ্নিতে কিম্বাশুর্য্যেররাখিলে উৎপ্ত হয়না, আর পান করিলে ক্ষয় হয় না; এই চারি পদার্থ তাহাকে দিলে তুষ্ঠহইবে কিদহিন্দু কহিল আপনি যেমতআজ্ঞা করিলেন তাহা করিব কিন্তু দশ প্রকার সপ্নের বিবরণ আপনার মুখে শুনিতে বাঞ্ছা করি মেহরান তপস্বি কহিল প্রথম এক বৃহদ পুরি তাহার দার নাই এক শুক্ষ্ম ছিদ্র মাত্র আছে? সে পৃথিবী আর হস্তি স্বরূপ ছেকন্দর বাদসাহ ছিদ্র দ্বারা হস্তি গমনা-গমন করিবে কিন্তু শুণ্ড থাকিবেক অর্থাৎ ছেকন্দর বাদ সাহ কিছুদিন পরে গতো হইবে কিন্তু শুণ্ড স্বরূপ তাহার নাম জাবত্ পৃথিবী তাবত থাকিবেক ঃ ১ ঃ

দ্বিতিয় তুমি এক শুন্দর পুরুষ সিংহাসনে বসিয়াছে দেখি য়াছ সে তুমি গতো হইলে তোকার বংস ভিন্ন অন্য একজন তোমার রাজ্যে বাদসাহ হইবেক ঃ ২ ঃ

ত্রিতিয় শুক্ষ্ম বস্ত্র চারিজনে আকর্ষণ করিতেছে তাহাতে বস্ত্র ছিন্ন হয় না এবং তাহারাও ক্ষন্ত হয় না; সে শুক্ষ্ম বস্ত্র ধর্ম্ম তাহাকে সকলেই স ধর্ম্ম বলিয়া স্থাপিতার্থে আকর্ষণ করিতেছে তাহাতে ধর্ম্ম স্বরূপ সেই বস্ত্র খণ্ড হয় না, এবং কেহ স্বধর্ম্ম ত্যাগ করেনা ঃ ৩ ঃ

চতুর্থ তৃষিত মৎস্য ও নদীর জল দেখিয়া পালাইতেছে ? কোন সময়ে পৃথিবিতে অনেক লোক নাস্তিক দেখিয়া ঈশ্বরের অবতার বিশেষ প্রকাস হইয়া সকলকে ঈশ্বরের শুদ্ধ পথ ও জ্ঞান দিতে ডাকিলে তাহারা সকলে পালাইবে । ৪ ।

পঞ্চম অন্ধ সকলে ক্রয় বিক্রয় করিতেছে ? কিছু দিন পরে এমত সময় উপস্থিত হইবে যে সকলের জ্ঞানচক্ষু থাকিবেনা ও হিতাহিত বোধ থাকিবেনা কেবল বিশয় তৎপর হইবে । ৫ ।

সষ্ঠ পিড়িত লোকেরা শুস্ত লোকের দিগের তত্ত্বাবধান করিতেছে ? পৃথিবীতে এমত এক সময় হইবে যে তৎকালে মনুস্য স্বধর্ম্ম ত্যাগি ও মুর্খ হইবে. অতি অলপ লোক স্বধর্ম্মাশ্রয়ী ও পণ্ডিত থাকিবেক কিন্তু ঐ স্বধর্ম্মি ও পণ্ডিতদিগের তত্ত্বাবধান ঐ ধর্ম্ম ত্যাগি মুর্খেরা করিবে । ৬ ।

সপ্তম দুই মস্তক যুক্ত অশ্ব তাহার মল দ্বার নাই ? কালেতে মনুস্য এমত লোভি হইবে যে সর্ব্বদা মানস ও প্রকাসরূপে কহিবে ঈশ্বর দুই মুখ দিলে পরিতোষ করিয়া আহার করিবি কিন্তু দান রহিত হইবেক । ৭ ।

অষ্টম তিনটা জলের জালা তাহার দুইটায় জল পরিপূর্ণ আছে একটা খালি ? ক্রমে এমত সময় উপস্থিত হইবেক যে পৃথিবীর দুইভাগ লোকধনি আর একভাগ দুখি ও কাঙ্গাল ঐ ধনিলোকেরা কাঙ্গাল গণকে পরিতোষ করিতে পারিবেনা । ৮ ।

॥ ৪৪ ॥

নবম গাভি বৎসের দুগ্ধ পান করিতেছে? আর ব'র এমত এক সময় উপস্থিত হইবেক যে ধনি ব্যক্তিরা এত লোভিহইবেকযে দুখি ও কাঙ্গালদিগের ধন হরণ করিবেক ৯ দশম এক শুষ্কসরোবর তাহার চারি পাডে জল আছে? কিছুদিন পরে পৃথিবীতে একজন মুর্খ বাদসাহ হইবে কিন্তু অনেক বিদ্যান ও পণ্ডিত তাহার দ্বারস্ত থাকিবেক। ১০।

মেহরান হইতে কিদ এই কথা শুনে।
তুষ্ঠ হইয়ে গেল চলে আপন ভবনে॥

কিছুদিন পরে ছেকন্দর হিন্দুস্থানে পৌছিয়া কিদহিন্দকে পত্র লিখিল যে তুমি আসিয়া আমার সহিতসাক্ষ্যাত করিবা কিদহিন্দু বাদসাহ এই পত্র পাইয়া উত্তর লিখিল আপনার পত্রপাইয়া সির ধার্য্যকরিলাম পরন্তু আমারউত্তম চারি দ্রব্য আছে যদি আপনার গ্রহণ যোগ্য হয় তবে তাহা সঙ্গে লইয়া গিয়া সাক্ষ্যাত করি; দুত দারায় পত্রপাইয়া তুষ্ঠ হইয়া ছেকন্দর কহিল এসকল অমুল্য দ্রব্য আমার সভাসত গিয়া আনিবেক, পরে দুতের সঙ্গে ছেকন্দরের সভাসত কিদহিন্দুর নিকট পৌছিলে তাহাকে সমাদর পূর্ব্বক নিকটে বসাইয়া আপন কন্যাকে নানাঅলঙ্কারে ভূষিত করিয়া দাস দাসি এবং জ্যোতিষের পণ্ডিত ও বৈদ্য ও রত্ন নির্ম্মিত পেয়ালা ঐ সভাসতের সঙ্গে ছেকন্দরের নিকট পাঠাইল। ছেকন্দর পণ্ডিত ও বৈদ্যকে আপন সভায় রাখিয়া কন্যা ও পেয়ালা অন্তঃপুরে পাঠাইলেন কিঞ্চিত বিলম্বে কিদহিন্দু আসিয়া ছেকন্দরের সহিত সাক্ষ্যাত করিল ছেকন্দরকিছুদিন তথায় থাকিয়া

কিদহিন্দকে ঐ হিন্দুস্থানের বাদসাহি দিয়া আপনি কান্য কুব্জ দেশে যাত্রা করিল ॥

---

### ছেকন্দর কান্য কুব্জে গমন ও করহিন্দির যুর্দ্ধ ॥

ছেকন্দর হিন্দুস্থান হইতে সসৈন্যে কান্য কুব্জ দেশে পৌঁছিয়া তথাকার বাদসাহ করহিন্দিকে পত্র লিখিল যে তুমি আসিয়া আমার সহিত সাক্ষ্যাত কর। কুরহিন্দি পত্র পাইয়া উত্তর লিখিল তুমি দারাকে মারিয়া আপনাকে অতি যোর্দ্ধা জ্ঞ্যান করিয়াছ তাহাকে তুমি যুর্দ্ধে মারিতে পার নাই তাহার উজিরেরা মারিয়াছিল। আর কিদহিন্দু সে কাপুরুষ ভয়েতে শরণাগত হইয়াছে; বাদসাহ হইয়া যুর্দ্ধ করিতে ভয় করিলে তাহার বাদসাহি থাকেনা; আমিতোমাকে ভয়করিনা এইপত্র ছেকন্দর পাইয়া তাহারসঙ্গে ইরানি ও রোমি অনেক সেনা ছিল তথাপি হিন্দুস্থানি সেনা কিছু সংগ্রহ করিল সর্ব্বশুর্দ্ধ আসি হাজার অশ্বারোহিহইল তাহার চল্লিস হাজার রোমি ত্রিস হাজার ইরানি ও দশহাজার হিন্দুস্থানি। কুরহিন্দের সাইট হাজার অশ্বারোহি সেনা দুই হাজার যোর্দ্ধাহস্তি. ছেকন্দরের সেনা অনেকহস্তি দেখিয়া ভিত্ত হইল, ছেকন্দর তাহা শুনিয়া হকিমদিগে ডাকিয়া কহিল হস্তিমারিবার কোন সদোপায় চিন্তাকর ॥

### আরস্তু প্রভৃতি হকিমের কামানের সৃষ্টিরবিবরণ

তখন আরাস্তা তালিছ হকিম আর হকিমদিগের লইয়া পরামুস করিয়া কামানের শ্রষ্টি করিলেন ঐ কামান লৌহ

নির্ম্মিত শকটোপরি রাখিয়া তাহার মধ্যে বারুদ ও গুলি দিয়া ঐ কামানের পৃষ্ঠে অগ্নি সংযোগ করিলে ঐ কামানের মধ্য হইতে উত্তপ্ত লৌহ গোলা নির্গত হইয়া হস্তি ঘোটক মনুষ্যাদি জাহার উপর পতিত হয় সে তৎখণাৎ প্রাণ ত্যাগ করে· ছেকন্দর তাহা দেখিয়া অত্যন্ত সন্তুষ্ট হইয়া এক সহস্র লৌহ কামান ঘোটাকাকার স্তুতকরাইয়া কুরহিন্দিরসহিত যুদ্ধ করিতেচলিল, করহিন্দির সেনারা ছেকন্দরের সেনার অগ্রভাগে শকটোপরি লোহার ঘোটকসকল দেখিয়া জাছুছ দিগকে জিজ্ঞাসা করিল যে সৈন্যের অগ্রে শকটোপরি ঘোটকাকৃত কি বস্তু ? তাহারা কহিল ছেকন্দরের তোপখানা; হকিমেরা শ্রৃষ্টি করিয়াছে। হিন্দুস্থানের লোকেরা কখন তোপ দেখেনাই এবং ইহার পূর্ব্বে তোপের শ্রৃষ্টি ছিলনা তোপের নাম ও কেহু শুনে নাই; তাহারা অকৃতভয়ে দুই সহস্র যোদ্ধা হস্তি অগ্রে করিয়া যূদ্ধ করিতে আইল;তখন ছেকন্দর আজ্ঞা করিলেন যে একেবারেই একসহশ্র অশ্বারোহি জাহারা তোপের কর্ম্মে শুশিক্ষিত হইয়াছে তাহারা ঐ সহশ্র তোপ অগ্নিসংযোগকরূক। তাহারা তৎক্ষনাত্ তোপে অগ্নি প্রদান করিলে তাহাতে বজ্রাঘাতের অপেক্ষা অধিক শব্দ হইয়া গোলা সকল বাহির হইয়া কুরহিন্দি বাদসাহের হস্তি ও সৈন্য সকলের উপর পড়িতেলাগিল তাহাতে অনেক হস্তি ও সেনা মরিল হস্তি যে কএকটা ছিল তাহারা তোপের শব্দে পলাইল; আর সেনারা তাহা দেখিয়া পলায়ন করিল ছেকন্দর আপন সেনা লইয়া কুরহিন্দির সৈণ্য মধ্যেপড়িয়া অনেক সেনা বিনাশ করিল ॥

তোপেতে মরিল বহু হস্তি আর সেনা
অগ্নি সঙ্গে করে যুদ্ধ নাহি হেন জনা।
অবসিষ্ঠ হস্তি জাহা ছিল পালাইল।
অগ্নিতে পুড়িয়া সেনা অস্থির হইল।

কুরহিন্দির সেনা পলাইল দেখিয়া কুরহিন্দি সে দিবস যুর্দ্ধ স্থকিত রাখিরা পুনর্ব্বায় অনেক সেনা সংগ্রহ করিল কিন্তু হস্তি যে কয়েকটা ছিল তাহার দিগের রণস্থলে কোনমতে লইয়া যাইতে পারিলনা; উভয় সেনায় সায়ংকাল পর্য্যান্ত অনেক যুর্দ্ধ করিয়া রাত্রি আগত দেখিয়া আপনং স্থানে গমন করিল। পর দিবস প্রাতে দুই সেনা শুসজ্জিভূত হইয়া রণস্থলে উপস্থিত হইলে ছেকন্দর কুরহিন্দিকে কহিয়া পাঠাইল অদ্য তোমায় আমায় যুর্দ্ধ করি সেনা গণকে হত করিবার আবিসক নাই।

দুই বলবান বটে বাদসাহ দুজন।
দুইজনে রণস্থলে চল করি রণ।
তির তলওয়ার গদা অস্ত্রাদি লইয়া ঃ
দুইজনে করি যুর্দ্ধ সহায় তেজিয়া ঃ
উভয়ের মধ্যে যেবা জয়যুক্ত হবে ঃ
উভয়ের রাজ্যে সেই অধিকারি হবে ঃ

কুরহিন্দি এই কথা শুনিয়া কহিল আমি ছেকন্দর হইতে কোন অংশে ন্যুন নহি আমারো ছেকন্দরের সহিত যুর্দ্ধ করিতে বাঞ্ছা তুমি ছেকন্দরকে রণস্থলে আসিতে বল দূত মুখে এই বাক্য শুনিয়া ছেকন্দর রণস্থলে আইল

আর কুরহিন্দি তথায় আসিয়া অতি তৎপর হইয়া ছেকন্দর কে এক তলওয়ার মারিল তাহাতে ছেকন্দরের অঙ্গের কবচ কাটিল, তখন ছেকন্দর ঈশ্বরকে স্মরণ করিয়া কুরাহিন্দর মস্তকে এক তলওয়ার মারিল তাহাতে কুরহিন্দর মস্তক হইতে নাভিপর্য্যান্ত দুইভাগ হইয়া অশ্ব হইতে ভূমে পতিত হইল উভয় পক্ষের সেনা ছেকন্দরের বীরত্ব দেখিয়া আশ্চর্য্য জ্ঞ্যান করিয়া তাহাকে অনেক প্রসংসা করিল; পরে ছেক ন্দর কুরাহিন্দির প্রধান সেনাপতি দিগকে ডাকাইয়া প্রবো ধ করিয়া কহিলেন আমি এদেশে থাকিবনা তোমারদিগের মধ্যে একজন উপযুক্ত দেখিয়া বাদসাহ করিয়াঅন্য দেশে জাইব, তাহারা ইহা শুনিয়া সন্তুষ্ঠ হইয়া ছেকন্দরকে উপ ঢৌকনাদি প্রদান করিয়াকুরহিন্দর দুর্গ মধ্যে লইয়া ভাণ্ডা রের দ্বার মুক্ত করিয়া দিলে ছেকন্দর সেই ভাণ্ডারের ধন সেনাদিগকে অংশ করিয়া দিলেন আর তাহাদিগের মধ্যে পহলওয়ান নামে একজন প্রধান ব্যক্তিকে কান্যকুব্জ দে শের বাদসাহ করিয়া দুইমাস তথায়থাকিয়া মককায় যাত্রা করিল ঃ

## ছেকন্দরের মককা দর্শনে গমন।

ছেকন্দর কান্যকুব্জ দেশে শুনিল যে এবরাহিম খলি লল্লা ইশ্বরের পুণ্যার্থে মদিনা সহরে এক পবিত্র গৃহ নির্ম্মাণ করিয়া তাহার নাম মক্কা রাখিয়াছেন। পরন্তু পর মেশ্বর সেই মন্দির আপন গৃহ বলিয়া প্রকাশ করিয়াছেন যদ্যপি পরমেশ্বর আহার, নিদ্রা শুখ; দুঃখ, স্ত্রী; পুত্র, ঘর ইত্যাদি রহিত বটে তথাপি আপন নামে এক স্থান নিরূপণ

করিয়া রাখিয়াছেন, তাহার তাৎপর্য্য এই যে সামান্য ও সংশয় যুক্ত মনুষ্য দিগের ভজনার কারণ এইস্থান আমারে চিহ্নিত রহিল; কিন্তু জ্ঞানিগণের পক্ষে ভজনার স্থান সর্ব্বত্র সমান ভজনার স্থান ও কালের নিয়ম নাই সে যাহা হউক ছেকন্দর ঐ স্থানের প্রস সা শুনিয়া দেখিতে বাঞ্ছিত হইয়া কান্যকুব্জ হইতে মক্কায় যাত্রা করিলেন, যখন মক্কায় পৌছিলেন নছির আকলব নামে এবরাহেম খলি লল্লার পৌত্র মক্কা দেবালয়ের প্রধান পূজক এবং তথা কার অধিপতি ছিল ছেকন্দরের আগমনের বার্ত্তা পাইয়া অনেক উপঢৌকনীয়দব্য লইয়া ছেকন্দরের সহিত সাক্ষাত করিলে ছেকন্দর তাহাকে অনেক সমাদর পুর্ব্বক সঙ্গেলইয়া আপনি পদব্রজে মক্কায় দেবালয় দর্শন করিতে গেলেন। পরে এবরাহিমের সন্তান ছেকন্দরকে জানাইল যে খদায়া নামক এদেশের প্রধান বাদসাহ আমার দিগের প্রতিপালনের ও মক্কার অতিথি সেবার নিমিত্ত্য এমন ও হোজ্জাজ নামে দুই নগর বৃত্তি স্বরূপ ছিল তাহা বলদ্বারা লইয়াছে ছেকন্দর ইহা শুনিয়া আপনসেনা পাঠাইয়া খদায়ার সহিত যুদ্ধ করত তাহাকে বধ করিয়া এমন ও হোজ্জাজ দুই নগর আছমাইল অর্থাৎ এবরাহেমের সন্তাম দিগকে প্রদান করিয়া সেখান হইতে মেছর দেশে যাত্রা করিলেন। মেছরের বাদসাহ শুনিয়া ছেকন্দরের নিকট আসিয়া অনেক উপ ঢৌকন দিয়া সাক্ষাত করিল। ছেকন্দর একবৎসর সসৈন্য সেইস্থানে বিশ্রাম করিলেন; আর মেছর নগরে শুনিলেন যে এন্দিছ দেশে কিদাফা নাম্নি এক স্ত্রিলোক বাদসাহি করি

তেছে তাহার অনেক সৈন্য সামন্ত আছে সেইদেশে যাত্রা করিলেন। কিদাফা এই সমাচার পাইয়া একজন চিত্রকর পাঠাইয়া গোপনে ছেকন্দরের প্রতিমূর্ত্তি নির্ম্মাণ করিয়া লইয়া গেল। কিছুদিন পরে ছেকন্দর কিদাফার রাজ্যের মধ্যে পৌছিয়া তাহাকে পত্র লিখিলেন যে আমার নিকট আসিয়া সাক্ষ্যাৎ করিয়া কর নিরূপণ কর অথবা আমার সহিত যুদ্ধকর; কিদাফা ছেকন্দরের পত্র পাইয়া উত্তর লিখিল তুমি দারাকে মারিয়া অহঙ্কৃত হইয়াছ আমি তোমাকে ভয় করি না, কারণ তাহা অপেক্ষা আমার অনেক সেনা আছে; ছেকন্দর এইপত্র পাইয়া রাগত হইয়া ফরুথার দেশে আসিয়া তথাকার বাদসাহ কিদাফার জামাতা কিদরূস নামক ছিল; তাহার সহিত যুদ্ধ করিয়া কিদরূসকে ও তাহার স্ত্রী কিদাফার কন্যাকে ধৃত করিয়া আনিয়া আপনার এক উজির নয়তকুনকে কহিলেন তুমি আমার পরিছদাদি পরিধান করিয়া আমার তক্তে বসিয়া বাদসাহ হইয়া কিদাফার জামাতা ও কন্যাকে কাটিতে হুকুম দিবা। আমি তোমাকে কহিব হে বাদসাহ, এইদুই জনের অপরাধ মাজনা করিয়া আমাকে ভিক্ষাদেন তুমি সেইমত করিবা, ইহা কহিয়া ছেকন্দর কথিত মত করিলেন। ছেকন্দর নয়তকুন উজিরের পোষাক পরিধান করিয়া ছেকন্দরের দূত হইয়া কিদরূসকে ও তাহার স্ত্রীকে সঙ্গে লইয়া কিদাফার নিকট যাইবার নিমিত্ত কুণ্ডিন ছেকন্দরের নিকট বিদায় হইলেন তখন ভক্তি ছেকন্দর কিদরূসকে কহিল আমার উজির নয়তকুন তোমার দিগের প্রাণদান দিলেক তুমি ইহার সঙ্গে যাইয়া

তোমার মাতা কিদাফাকে আমার নিকট সিগ্ধু আনিবা, যখন দুত কিদরূসকে সঙ্গেকরিয়া কিদাফার নগরে উপস্থিত হইলেন কিদাফা আপনার সভার প্রধান ২ ব্যক্তিকে সঙ্গে করিয়া অগ্রসর আসিয়া দূতকে অনেক সমাদর করিল পরে আপন কন্যা ও জামাতাকে দেখিয়া আহ্লাদিত হইয়া ছেকন্দরের যুদ্ধে কএদ হইবার ও তথা হইতে মুক্তহইবার উপায় জিজ্ঞাসা করিলে কিদরূস কহিল ছেকন্দর আমার দিগের দুইজনার মস্তক কাটিতে আজ্ঞা করিয়াছিল কিন্তু এইদূত ইহার নাম নয়তকুন ছেকন্দরের উজির ছেকন্দরকে অনেক বুঝাইয়া আমার ও তোমার কন্যারপ্রাণদান দিয়াছে অতএব ইহাকে বিশেষ রূপে পুরস্কার করা উচিত। আর ইহাকে এমত যত্ন পূর্ব্বক রাখিবা যে কোন প্রকারে ইহার ক্লেস ও অসন্মান নাহয়, পরে কিদাফা ছেকন্দরের দূতকে সঙ্গে লইয়া বাটিতে আসিয়া আপন নিকট বসাইয়া অনেক সমাদর করিলেন, এবং আপনার এক বাটিতে বাসা দিয়া নানা মত আহারীয় দিব্য পাঠাইল; ক্ষণেকবিলম্বে দূতবিদায় হইয়া বাসায় গেল। পর দিবস প্রাতে কিদাফার নিকট দূতআইলে কিদাফা পুনঃ২ দূতকে নিরক্ষণ করিয়া এক গৃহে আহারীয় দ্রব্য আয়োজন করিতে কহিয়া কিদাফা দূতকে সেই গৃহে লইয়া একত্র আহার করিতে বসাইয়া পুনঃর্ব্বার দূতের মুখ বিলক্ষণ রূপে নিরক্ষণ করিয়া সেখানহইতে উঠিয়া একতক্তে বসিয়া একজনকে ছেকন্দরের প্রতিমূর্ত্তি আনিতে কহিলসে তৎক্ষণাত আনিল তখন ঐ দূতের অবয়ব প্রতিমূর্ত্তির সহিত অক্যে করিয়া বুঝিল যে ছেকন্দর আপনি দূত হইয়া আসি

য়াছে। তৎকালে প্রকাশ নাকরিয়া দূতকে কহিল তোমাকে কি নিমিত্তে ছেকন্দর আমার নিকট পাঠাইয়াছেন তাহা বল? দূত কহিল ছেকন্দর কহিয়াছে যদি তুমি তাঁহাকে কর প্রদান কর তবে আমার সহিত সাক্ষ্যাত করিতে চল; নচেৎ যুর্দ্ধ করিতে প্রস্তুত হও। কিদাফা ইহা শুনিয়া রাগত হইয়া কহিল তুমি অদ্য বাসায় গমন কর কল্য ইহার উত্তর দিব। তখন দূত বিদায় হইয়া বাসায় গেল পর দিবস দূত কিদাফার নিকট আইলে কিদাফা সভা হইতে গাত্রোত্থান করিয়া এক বিরল স্থানে জাইয়া ছেকন্দরের প্রতিমূর্ত্তি আনাইয়া আপন নিকটে রাখিয়া ঐ কৃত্তিম দূতকে সে স্থানেআনিতে কহিল সেই ব্যক্তি ঐ দূতকে লইয়া গেলে কিদাফা এক চৌকিতে বসিতে কহিয়া আর ২ সকলকে বাহিরে জাইতে আজ্ঞা করিলেন; যখন ইহারা দুইজন মাত্র হইলেন তখন কিদফা কহিল ওহে ফয়ল কুছের পুত্র ছেকন্দর সাহ তুমি আমার নিকট এই তক্তে আসিয়া বৈস; দূত কহিল আমাকে আপনি ছেকন্দর সম্বোধন করিলে এ অসঙ্গত উক্তি করিতেছ তখন কিদাফা কহিল ॥

শৃগাল চর্ম্মেতে সিংহ ঢাকা নাহি জায়।
বস্ত্র আচ্ছাদনে অগ্নি কভু না লুকায় ॥

ইহা শুনিয়া দূত কহিল আপনি আমাকে প্রধান জ্ঞান করিয়াছেন আমি তাহা নহি, কিন্তু যে প্রধানের আজ্ঞাবহ তাহাতে অন্য অপিক্ষা প্রধান বটে এই প্রকার উভয়ে অনেক বচসা হইল তথাপি ছেকন্দর আপনাকে কোন মতে প্রকাস না করিলে কিদাফা ছেকন্দরের সেই প্রতিমূর্ত্তি দূতের হস্তে

দিয়া কহিল এই মূর্ত্তি কাহার তুমি নিরক্ষণ করিয়া বল ॥

নিজ প্রতি মূর্ত্তি দেখি আক্কার দেখিল।
কাষ্টের পুথলি ন্যায় নিস্পন্দ হইল ॥
কিদাফা দেখিয়া তাহা উঠিয়া তখন।
নিজ তক্তে বসাইল করিয়া যতন ॥

ছেকন্দরকে তক্তে বসাইয়া কিদাফা কহিল তুমি বাদসাহি কর নিকটে পণ্ডিত রাখনা রাজধর্ম্ম ও সাস্ত্র বহিভূত কর্ম্ম কি নিমিত্ত্যে করিলে; তুমি জ্ঞ্যানকরিয়াছ তোমাকে কেহু চিনিতে পারিবেনা এই বিবেচনা করিয়া আসিয়াছ। কিন্তু বাদসাহ দিগের সকলে দেখেনাই ও চিনে না এ কথা সত্য কিন্তু বাদসাহ দিগের প্রতি মূর্ত্তির দ্বারা সকল বাদসাহকেই সকলা বাদসাহ জ্ঞাতআছে সে যা হউক এমতকর্ম্ম আর কখন তুমি করিওনা এ কথা আমি এখন প্রকাস করিবনা, তুমি ধর্ম্মত সত্য কর যে আমার কিম্বা আমার সন্তানের প্রতি কাঞ্চন কালেও দৈরাত্য করিবানা সর্ব্বদা বন্ধুভাবে থাকিবা ছেকন্দর সম্মত হইয়া কিদাফার সঙ্গে এমত সত্য করিয়া সন্ধিপত্র করিয়া প্রণয় করিলেন। তখন কিদাফা কহিল তুমি এইক্ষণে নিশ্চিন্ত রূপে থাক; পরে খাদ্য দ্রব্য আনাইয়া দুইজনেএকত্রেবসিয়া আহারকরিলেন তৎপরে কিদাফা ছেকন্দরের নিমিত্ত্য নানা বিধ দ্রব্য ও ধন রত্নাদি উপঢৌকন এবং দূতকে পারিতোষিক স্বরূপ অনেক ধন বস্ত্র দিয়া বিদায় করিলেন। ছেকন্দর তথা হইতে যাত্রা করিয়া কএক দিন পরে একস্থানে উপস্থিত হইয়া দেখিলেন যে সে স্থানে কেবল কথক গুলিন তপস্বী ব্রাহ্মণ বাস করে, তাহারা হেক্

ন্দরের আগমন শুনিয়া এক ব্রাহ্মণকে দূতস্বরূপ পাঠাইলেন আর এই পত্র লিখিলেন যে এস্থানে কেহ রাজা কিম্বা ধনি ব্যক্তি নাই আমরা কথক গুলিন ব্রাহ্মণ ফল মূলাদি ভক্ষণ করিয়া ঈশ্বরের ভজনা পূর্ব্বক কাল যাপন করিতেছি আমার দিগের অন্যধন নাই কেবল পরমেশ্বরের নাম মাত্র। ছেকন্দর এই পত্র পাইয়া এবং যে দূত আসিয়াছিল তাহার আকার প্রকারও পরিচ্ছেদ দেখিয়া অবাকহইলেন, দূত কহিল আপনি যদি ধন ও রাজ্য লোভে এস্থানে আসিয়া থাকেন সে ভ্রম হইয়াছে, আর এখানে যদি বাস কর তবে কেবল ফল মূল আহার করিতে হইবে অন্য দ্রব্য এস্থানে অপ্রাপ্তি। ছেকন্দর দূতদ্বারা এইসকল শুনিয়া আপনিও কএকজন পণ্ডিত কে সঙ্গে লইয়া ঐ দূতের সঙ্গে ব্রার্ম্মণ দিগের নিকট গিয়া দেখিল যে স্থানে২ পর্ব্বতের গুহারমধ্যে কথকগুলিন ব্রার্ম্মণ তাহারা সকলেই প্রায় উলঙ্গ কেবল কৌপীন মাত্র; ছেকন্দর জিজ্ঞাসা করিল আপনকার দিগের পরিধান বৃক্ষের ছাল দেখিতেছি আহারের কি বেবস্থাহয়? তাহারা কহিল আমার দিগের আহার ও নিদ্রার কোন যত্ন নাই আহার ফলমূল; সয্যে পৃথিবী; আচ্ছাদন আকাশ, ধন সহিত কেহ জর্ম্মেনাই এবং ধন লইয়া কেহ জাইবেক না। ছেকন্দর কহিল পৃথিবীতে যে জীব বর্ত্তমান আছে ও জাহাগত্যে হইয়াছে তাহার কোন অংস অধিক? ব্রার্ম্মনেরা উত্তর করিল অনিত্য বস্তুর নিশ্চয় হয়না; যে সকল জীব মরিয়াছে তাহা লয় হইয়াছে আর যে আছে ও হইবে এ সকলি লয় হইবে। ছেকন্দর কহিল পৃথিবীর মধ্যে মৃত্তিকার অংশঅধিক কি জলের অংশ

ব্রাহ্মণেরা কহিল ন্যূনাধিক নাই উভয়ে উভয়কে রক্ষা করে। ছেকন্দর কহিল পাপাত্মা কে? ব্রাহ্মণ কহিল সকল জীবেই পাপাত্মা কারণ পাপের মূললোভ, অতএব লোভ রহিত জীব হয় না তবে ইহার প্রভেদ অধিক আর অল্প আর যে অধিক শুখ ও ধন লোভি সেইপাপাত্মা আরদুর্খি; যে পরমার্থ লোভি অর্থাৎ ঈশ্বরের প্রেম আকখি সেইশুখি, এই প্রকার অনেক কথপ কথন হইলে ছেকন্দরতুষ্ট হইয়াকহিল তোমারদিগের বাঞ্ছা য়াহা থাকে তাহা আমাকে বল তাহা অর্থ কিম্বা নাথ জাহাতে হয় আমি করিব। ব্রাহ্মণ কহিল আপনি পৃথিবীর রাজা হইয়াছ আমারদিগের জরা মৃত্যু না হয় এমত কর? ছেকন্দর কহিল জন্ম সব্দের অর্থ জকারে জরা ম কারে মৃত্যু অতএব জরা মৃত্যু এই দুই সব্দের আদি অক্ষর একত্র করিয়া জন্মসব্দ হইয়াছে ইহারপ্রথমজরা সেস মৃত্যু জে জন্ম গ্রহণ করিবে তাহার অবস্য মৃত্যুহইবে; জরা মৃত্যু হইতে কেহ মুক্ত হয় নাই ও হইবেন। ব্রাহ্মণ কহিল তবে আপনি যুদ্ধ পরিশ্রম করিয়া অনেক জিবকে নষ্ট করিয়া বিশয় কেন গ্রহণ করিতেছ তোমার ও মৃত্যু হইলে এসকল সম্পাদ অন্য গ্রহণ করিবে, তোমারপরিশ্রম বৃথা হইবে। ছেকন্দর অনেক ধন ব্রাহ্মণ গণকে প্রদান করিয়া বিদায় হইলেন ব্রাহ্মনেরা তাহা গ্রহণ করিলনা; পরে ছেকন্দর তথা হইতে গমন করিয়া কয়েক দিন পরে এক সমুদ্রের ধারে উপস্থিত হইয়া অনেক মনুস্যের বসতি দেখিলেন কিন্তু তাহার দিগের স্ত্রি ও পরুষের এক প্রকারই বস্ত্র পরিধান এবং তাহার দিগের ভাসাও কিছু বোধ গম্য হইলনা তাহার দিগের আহার কেবল সমুদ্রের

মৎস্য মাত্র; ক্ষণেক কাল বিলম্বে সেই সমুদ্র হইতে পীতবর্ণ পর্ব্বতাকার এক বস্তু প্রকাশ হইল, ছেকন্দর তাহা দেখিয়া কহিল একখান নৌকা আনয়ন কর আমি ঐ পর্ব্বত দেখিতে জাইব, পণ্ডিত ও হকিমেরা কহিল এই নির্জ্জন জল মাত্র ছিল কি আশ্চার্য্য জলের মধ্য হইতে অকস্মাৎ এই পর্ব্বত দৃষ্ট হইতেছে অতএব আমার দিগের বোধ হয় এ পর্ব্বত নহে কোন বৃহৎ জলচর হইবেক ইহার নিকটে জাওয়া অকর্ত্তব্য। পরন্তু কয়েকজন সামান্য লোক এক নৌকারোহণে যখন তাহার নিকট গিয়া দেখিল যে সে এক বৃহদ মৎস্যাকার কোন জলচর মনুস্য দেখিয়া জল মধ্যে প্রবেশ করিল তাহার বেগেতে সেই নৌকা ও আরোহি গণেরা জলে মগ্ন হইলে তখন পণ্ডিতেরা কহিল যদি আপনি গমন করিতেন তবে ঐ রূপ নষ্ট হইতেন পরে তথা হইতে কথক দূর গিয়া এক অতি সুরম্য বন ও সরোবর দেখিয়া সেইস্থানে সকলে আহার করিয়া শয়ন করিল। কিছুকাল বিলম্বে সমুদ্র হইতে এক অজাগর ও অগ্নিবর্ণ বৃহৎ এক বৃশ্চিক উঠিয়া অনেক লোক নষ্ট করিল। তদ্দৃষ্টে ছেকন্দর সেনাগণকে তির নিক্ষেপ করিতে আজ্ঞা করিলেন; সেনারা অনেক তির মারিয়া ঐ দুই জন্তুকে নষ্ট করিল। তাহার পর কথক গুলা বৃহদ শুকর ও একজন্তু তাহার অর্দ্ধেক গো ও অর্দ্ধেক ব্যাঘ্রের আকার তাহারাও অনেক মনস্য হত করিল; পরে তাহার দিগের প্রতি তীর নিক্ষেপ করাতে কতিপয় জন্তু প্রাণ ত্যাগ করিল ও কথক জল মধ্যে প্রবেশ করিলে ছেকন্দর সেই বন দগ্ধ করিয়া তথা হইতে প্রস্থান করিলেন ॥

## ছেকন্দরের নানা দেশ ভ্রমণ॥

কয়েক দিন পরে হাবসির দেশে পৌঁছিয়া দেখিলেন যে তথাকার সকল লোক অতি কৃষ্ণবর্ণ রক্তাক্ষি তাহারা ছেক ন্দরের সেনা দেখিয়া অনেক মনুস্য একত্র হইয়া অস্থি ও প্রস্তর নিক্ষেপ করিতে আরম্ভ করিল, তখন ছেকন্দর সেনা দিগে তীর বর্ষণ করিতে আজ্ঞা করিলেন, তাহারা অস্ত্র দ্বারা অনেক হাবসিকে মারিলে তাহারা সকলেই পালাইল। ছেক ন্দর তথা হইতে গমন করিয়া কয়েক দিন পরে একস্থানে পৌঁছিলেন যে সেস্থানের মনুস্য সমস্ত উলঙ্গ আর অতি দীর্ঘা কার দৈত্যর ন্যায় বলবান তাহারা ছেকন্দরের সেনা দেখিয়া প্রস্তর নিক্ষেপ করিতে আরম্ভ করিল সেনারাও তাহাদিগকে অস্ত্র প্রহার করিতে লাগিল তাহাতে তদ্দিগের অনেক মরিল তখন তাহারা তথা হইতে পলাইয়া গেল। ছেকন্দর তথা হইতে গমন করিয়া কয়েক দিন পরে এক নগরের নিকট উপস্থিত হইলে তথাকার লোক অনেক দ্রব্য সামগ্রী লইয়া ছেকন্দরের সহিত সাক্ষ্যাত করিলে ছেকন্দর তাহারদিগের অনেক সমাদর করিয়া বসাইলেন; পরন্তু নগরের কিঞ্চিৎ দুরে এক পর্ব্বত দেখিয়া তাহারদিগকে জিজ্ঞাসা করিলেন এ পর্ব্বতের উপর দিয়া গমনাগমনের পথ আছে কি না? তাহারা কহিল পর্ব্বত দিয়া গমনাগমনের পথ ছিল কিন্তু ইদানীন্তন এই পর্ব্বতোপরি বৃহৎ এক সর্প আসিয়া সে পথ রুদ্ধ করিয়াছে; সেই সর্প হস্তি আদি ধরিয়া গ্রাস করে তাহার মুখ হইতে অগ্নি নির্গত হয় সে যে দিবস পর্ব্বতে কোন

আহার নাপায় সেই দিবস নগরমধ্যে আসিয়া অনেক মনুষ্য ও অশ্ব এবং গো বৎস্যাদি ধরিয়া খাইত, এনিমিত্ত্য তাবত লোক পরামর্স করিয়া প্রতিদিন সন্ধের সময় পাঁচটা গো ঐ পর্ব্বতে রাখিয়া আসিতে হয় নত্তবা সেই সর্প নগর মধ্যে উপস্থিত হইয়া অনেক লোককে ধরিয়া আহার করে। ছেক ন্দর এই কথা শুনিয়া পাঁচটা গো আনাইয়া তাহার সমুদয় চর্ম্ম খুলিয়া তন্মধ্যে বিষ পুরিত করিয়া যে স্থানে নগরীয় লোকেরা প্রত্যহ রাখিত সেই স্থানে রাখিয়া আপনি কথক গুলিন সেনা সঙ্গে করিয়া গিয়া দেখিল যে অতি বৃহদাকার কৃষ্ণবর্ণ্ণ এক অজাগর চক্রের ন্যায় দুইটা চক্ষু এবং রক্ত বর্ণ্ণ জিহ্বা হইতে অগ্নি নির্গত হইতেছে তাহা দেখিয়া কিঞ্চিৎ দূরে আইলেন; অজাগর গো দেখিয়া সেই স্থানে আসিয়া ক্রমে ঐ পাঁচটা বিশাক্ত গো চর্ব্বন করিয়া গিলিল, ক্ষণেক কাল পরে ঐ বিষ তাহার সরিরে প্রবেস হইলে অতি কাতর হইয়া আছড পিছাড খাইয়া অবসন্ন হইল, তখন ছেকন্দর সেনাদিগে তির নিক্ষেপ করিতে আজ্ঞা করিলেন, অজাগর বিশের জ্বালায় ও তিরের জ্বালায় প্রাণ ত্যাগ করিল তাহা দেখিয়া নগরস্থ তাবতেই ছেকন্দরকে বিস্তরপ্রশংসা করিয়া কহিল আমারদিগকে এআপদ হইতে মুক্ত করিলে। ছেক ন্দর সেস্থান হইতে গমন করিয়া কয়েক দিবস পরে আর এক পর্ব্বতের নিকট পৌছিয়া তদুপরি উত্থিত হইয়া দেখি লেন যে এক স্বর্ণ্ণ নির্ম্মিত তক্তোপরি এক বৃদ্ধের শব রহি য়াছে তদুপরি ক্ষৌমবস্ত্র এবং মস্তকে এক বাদসাহি তাজ আর তক্তের চারি দিগে স্তবে ২ স্বর্ণ্ণ ও রত্ন রহিয়াছে; কিন্তু

মনস্যের গমনাগমন আছে এমত বোধ হইলনা। ছেকন্দর, সেই স্থানে দণ্ডয়মান হইলে এই সব্দ হইল যে তুমি অনেক শত্রু ও মিত্রকে নষ্ট করিয়া সমস্ত পৃথিবীর বাদসাহ হইয়াছে ছেকন্দর এই সব্দ শুনিয়া খিদ্যমান হইয়া সেস্থান হইতে গমন করিয়া কয়েক দিবস পরে অতি দূরে এক নগর দৃষ্টী করিয়া সেইস্থানে গিয়া উক্ত নগরের নাম জিজ্ঞাসা করাতে নগর বাসিরা কহিল এস্থানের নাম হরুম আর নগরের মধ্যে পুরুষ মাত্র নাই কেবল পরম শুন্দরি যুবতী সকল, সেই মাঠে শিবির করিয়া সেই স্থানের বাদসাহকে এই পত্র লিখিলেন যে আমি পৃথিবী ভ্রমন করিতে আসিয়াছি আমার সহিত সাক্ষ্যাত কর আর আমার আজ্ঞা হেলন করিয়া যদি না আইস তবে আমি যুর্দ্ধ করিয়া তোমার রাজ্য নষ্ট করিব। এইপত্র এক জন বিজ্ঞ মনুষ্যকে দূত করিয়া পাঠাইলেন। যখন ঐ দূত নগরের নিকট পৌছিল তখন কথক গুলিন স্ত্রিলোক নগর হইতে বাহির হইয়া দূতের নিকটে আসিয়া পত্রের বৃত্তান্ত জ্ঞাত হইয়া তাহার উত্তর লিখিল যে তুমি লিখিয়াছ তোমার আজ্ঞা হেলন করিলে যুর্দ্ধ করিয়া আমার রাজ্য নষ্টকরিবা এইহরুম রজ্যে এত যোর্দ্ধা স্ত্রিলোক আছে তাহারা সকলে বাহির হইলে তোমারসৈন্য দাড়াইতে স্থান পাইবেনা, যে হেতু ইহারা সকলেই যোর্দ্ধা তুমি স্ত্রিলোকের সহিত যুর্দ্ধ করিলে লজ্জা পাইবে আরযদি তুমি আমার দিগকে পরাভব কর তাহাতে সকলে কহিবে স্ত্রীলোককে জয় করিয়াছেন সে অতি গুরুতর লজ্জার বিশয়; আর যদি

তুমি পরাভব হও তবে সে লজ্জার কথা লিখিয়া কি জানাইব অতএব যদি আপনি প্রণয় কর তবে আমরা গিয়া তোমারে সহিত সাক্ষ্যাত করি। এক চতুরা স্ত্রিলোকের হস্তে এইরূপ লিখিত পত্র দিয়া দসসহস্র যুবতীসেনা সঙ্গে দিয়া দূত স্বরূপ পাঠাইল, যখন সে আইল ছেকন্দর তাহাকে জথেষ্ঠ সমাদর করিয়া আপনার নিকট বসাইয়া লিপি জ্ঞাত হইয়া কহিলেন আমি পৃথিবী ভ্রমন করিতেছি তোমার দিগের সহিত যুর্দ্ধ করিতে আসিনাই, যে কেহু আমার সঙ্গে প্রণয় না করিয়া যুর্দ্ধাআকাঙ্খী হয় তাহার সহিত শুতরাং যুদ্ধ করিতে হয়। আমার বাঞ্ছা তোমার দিগের নগর ও বাদসাহকে দেখিব তদভিন্ন আমা হইতে তোমার দিগের কোন ক্ষতি হইবেনা দূত এইকথা শুনিয়া ছেকন্দরের স্থানে বিদায় হইয়া আপন বাদসাহকে সমস্ত জ্ঞাত করিল; পরে বাদসাহ পণ্ডিত ও মন্ত্রি গণের সহিত পরামর্শ করিলে তাহারা কহিল যদি আসিতে নিষেধ কর তবে তাহারসঙ্গে অনেক সেনা আছে বল প্রকাশ করিয়া আসিবে তুমি তাহা রক্ষা করিতে গেলে যুর্দ্ধ হইবে অতএব তাহাকে আসিতে অনুমতি কর ইহাতে ক্ষেতি নাই তদন্তর সেই দূত দ্বারা ছেকন্দরকে আসতে কহিয়া পাঠাই-লেন, দূত আসিয়া ছেকন্দরকে জাইতে কহিলে ছেকন্দর ঐ দূতের সঙ্গে সসৈন্যে চলিলেন, দুইদিবসের পর এক পর্ব্বতের নিকট পোঁছিয়া বরফে সকলে ক্লেশযুক্ত হইলেন কিন্তু দুই দিবসের পথে বরফ ছিল; তৎপরে এক লোকালয়ে উপস্থিত হইয়া দেখিলেন যে তথাকার মনুষ্য অতি বিকটাকার কদ্ধ বস্ত্র, তাহারা কহিল আমারদিগের দেশে কখন অন্য দেশিয়

লোক আসিতে দেখিনাই। সেখান হইতে কয়েক দিনপরে স্ত্রিলোক দিগের রাজ ধানিতে পৌছিলেন ছেকন্দর সেই স্ত্রি বাদসাহর সহিত সাক্ষ্যাত হইলে অনেক সমাদর পূর্ব্বক আপন তক্তে বসাইয়া রত্নাদি অনেক উপঢৌকন প্রদান করিলেন। পর দিবস ছেকন্দর সেই নগর সমুদয় দেখিয়া স্ত্রি বাদসাহকে কহিলেন তোমার দেশে সকলি স্ত্রিলোক এখানে সন্তান উৎপত্তি কি প্রকারে হয়? সে কহিল এই দেশে এক স্বেত বর্ণ জলময় পুস্করনী আছে যাহারসন্তানের বাঞ্ছা হয় সে ঐ পুস্করনীতে স্নান করিয়া সেই জল পান করে তাহাতেই তাহার গর্ব্ভ হয়; কিন্তু পুত্র হইলে নগরের বাহিরে যে স্থানে আপনি প্রথম আসিয়াছিলেন সেইস্থানে পুরুসেরা বাস করে সেইস্থানে বালক রাখিয়া আইসে এবং কন্যা হইলে এই নগর মধ্যে আনায়ন করে। ইহা ছেকন্দর শুনিয়া আশ্চার্য্য জ্ঞান করিলেন; কয়েক দিবস তথায় থাকিয়া ও দেখিয়া সে স্থানহইতে যাত্রা করিয়া কয়েক দিবস পরে আর এক দেশে পৌছিলেন, তথাকার মনূষ্য অতিদির্ঘা কার ও বলবান তাহার দিগের কেশ রক্ত বর্ণ কাহার বা পিতবর্ণ তাহর দিগের কয়েক জন ছেকন্দরের সহিত সাক্ষ্যাত করিয়া অনেক দ্রব্য উপঢৌকন দিল; ছেকন্দর তাহার দিগকে সমাদর করিয়া নিকটে বসাইলেন তখন এক বৃদ্ধ কহিল এই নগরের প্রান্তভাগে এক পুস্করিণী আছে তাহার জল এপর্য্যন্ত কেহ পান করে নাই, তাহাতে এক আশ্চার্য্য এই যে শুর্য্য উদয় হইয়া সন্ধ্যের সময় সেই পুস্করিণি মধ্যে পড়িয়া অদর্শণ হন তাহাতে অন্ধকার ময় হয়, আর ঐ পুস্ক

রণীর পারে সর্ব্বদা ঘোর অন্ধকার এপ্রযুক্ত কেহ কখন গমন করে নাই; কিন্তু পূর্ব্বাপর এই জনশ্রুতি দ্বারা শ্রুত আছি যে ঐ পুষ্করণীর পারে অন্ধকারের মধ্যে কয়েক দিন গমন করিলে পরে আর এক পুষ্করণী আছে তাহার নাম অমৃত কুণ্ড তাহার জল পান করিলে অজর অমর হয় আর ঐ জলে স্নান করিলে সরির নিষ্পাপি হয়, ছেকন্দর এই কথা শুনিয়া অমৃত কুণ্ড দর্শনের বাঞ্ছিত হইলেন ॥

---

## ছেকন্দরের অমৃত কুণ্ড দর্শনে গমন।

ছেকন্দর ঐনগরে সমস্ত সেনা ও দ্রব্যাদি রাখিয়া দুই সহস্র লোক ও চল্লিষ দিবসের উপযুক্ত খাদ্য দ্রব্য সঙ্গে লইয়া ঐ স্থান হইতে অমৃত কুণ্ড দরসণাখি হইয়া যাত্রা করিলেন খেজর নামক একজন সর্ব্বাগে পথ প্রদর্শকরূপে চলিল, আর২ লোক তাহার পশ্চাৎ তাহার সব্দ অনুসারে চলিল ছেকন্দরের নিকটে দুইখান মানিক রত্নএমত উজ্জল ছিল যে অন্ধকারে রাখিলে দিবসের ন্যায় উজ্জল জোতি হইত তাহারি একখান আপনার নিকটে রাখিলেন; আর একখান খেজরকে দিয়া কহিলেন তুমি এইমানিকহস্তে করিয়া অগ্রসর হওইহারি জোতিতে তুমি অনেক দুর পর্য্যন্ত দেখিতে পাইবা এবং তোমার পশ্চাত যাহারা যাইতেছে তাহার ও ঐ আলোক দেখিয়া জাইবেক ঐ অন্ধকারেরমধ্যে দুইদিবা রাত্রির পর তৃতীয়দিবসে খেজর এক দুই মুখ পথের নিকটে উপস্থিত হইয়া খেজর জে পথে চলিল আর২ সকলকে সেই পথে আসিতে ডাকিলে তাহারা খেজরের সব্দ শুনিতে নাপাইয়া

ঐ দুই মুখ পথের অন্য পথে গমন করিল, খেজর যে পথে গমন করিয়া ছিল কিছু দূর গিয়া অমৃত কুণ্ডের তীরে পৌছিয়া সেই কুণ্ডে স্নান করিয়া ও জলপান করিয়া ছেকন্দরের অনুসন্ধান করিতে পুনর্ব্বার সেই দুই মুখ পথে গেল। ছেকন্দর যে পথে গমন করিয়াছিলেন কথক দূর গিয়া অন্ধকার ত্যাগ করিয়া আলোকময় স্থানে আসিয়া কিঞ্চিদ্দূরে এক উচ্চ পর্ব্বত দেখিয়া তন্নিকটবর্ত্তি হইলে পর্ব্বতের উপর এক বৃক্ষেতে অনেক গুলীন সবুজবর্ণের পক্ষিবসিয়া রোমি ভাষায় কথোপ কথন করিতেছে, ক্রমে ছেকন্দর ঐ বৃক্ষের নিকটে উপস্থিত হইলে ঐ পক্ষিগণ রোমি ভাষায় কহিল অহে ছেকন্দর তুমি সমস্ত পৃথিবী গ্রহণ করিয়াছ আর কি অনুসন্ধান করিতেছ আর কি প্রয়াস আছে আপনি একাকি এই পর্ব্বতের উপরে গিয়া কি আছে তাহা দেখ? ছেকন্দর পক্ষির বাক্য শুনিয়া একাকি পদব্রজে ঐ শিখরোপরি উঠিয়া দেখিলেন যে ছরাফিল নামক ঈশ্বরের এক প্রধান দূত এক শিঙ্গা হস্তে ধরিয়া মুখে সংলগ্ন করিয়া বায়ুতে মুখ পূর্স্তিত করিয়া এই মানসে রোদন করিতেছে যে ঈশ্বর কোন্ ক্ষণে শ্রুষ্টি নাশ করিতে আজ্ঞা করিবেন; যদি আমার শিঙ্গার ফুঁক দিতে বিলম্ব হয় তবেই ঈশ্বরের সন্নিধানে সাপবাধি হইব। ছেকন্দর তাহার নিকটে পৌছিলে বজ্রের ন্যায় শব্দে এই বাক্য ছেকন্দরের শ্রুতিগোচর হইল, ওরে ঈশ্বরের দাস? তুই এ পর্য্যন্ত চেষ্টা করিয়া আসিয়াছিস্ তোর কর্ণে এই শিঙ্গার সব্দ এক দিন যাইবে আর তাজ তক্তের লোভে কেন পরিশ্রম করিতেছিস পারত্রিকের পথের সম্বল কর। ছেক

ন্দর কহিল আমার প্রালব্ধে এ জর্ম্মে কেবল ভ্রমন লিখিয়া ছেন ইহা কহিয়া সেইখানে ঈশ্বরকে প্রণাম করিয়া রোদন করিতে ২ আসিয়া দেখেন পুনরায় খেজর আসিয়াছে; তাহার সঙ্গে পুনর্ব্বার অন্ধকারের মধ্যে চলিয়া কথক দুর গমন করিলে পর্ব্বত হইতে এই শব্দ হইল যে কেহ এই পর্ব্বতের প্রস্তর লইবে সে লজ্জিত হইবে যে না লইবে সেও লজ্জিত হইবে; সকল লোক এই শব্দ শুনিয়া পরস্পরকহিল এ প্রস্তর লওয়া ও না লওয়া তুল্য লজ্জিত হইতে হইবেক। এ অন্ধকার হইতে প্রাণ লইয়া জাওয়াই দুস্কর পাথরের বোঝা বহনের আবিস্যক কিআছে; কেহ কহিল কিঞ্চিৎ লইয়া দেখা কর্ত্তব্য। এই রূপ কেহ অধিক কেহবা অল্প লইল কেহ লইলনা; পরে তথা হইতে কথক দূর গিয়া অমৃতকুণ্ড নাপাইয়া পুনরায় আলোকে পৌছিলেন। তখন হকিমেরা সেই প্রস্তর দেখিয়া কহিলেন ইহার নাম এনাকুত সবজ (অর্থাৎ পান্না) ইহা শুনিয়া সকলে খিদ্যমান হইল, ছেকন্দর সেইস্থানে থাকিয়া বিশ্রাম করিয়া তথা হইতে যাত্রা করিয়া কথক দুরে গিয়া এক নগর দর্শন করত সেইস্থানে গমন করিলেন; তথাকার লোকেরা সৈন্যের কোলাহল শুনিয়া দেখিতে আইলে ছেকন্দর তাহারদিগকে নিকটেআনাইয়া সমাদর পূর্ব্বক কহিলেন এ কোন দেশ এখানকার বাদসাহ কে? তাহারা কহিল এদেশের নাম বাখ্তর এখনে বাদসাহ কিম্বা রাজা কেহ নাই, আমরা কথক গুলিন সামান্য লোক এই দেশে বাস করি আমার দিগের এক উৎপাত উপস্থিত হইয়াছে, আপনি বাদসাহ আমাদিগকে সেই আপদ

হইতে রক্ষা কর নতুবা আমরা সকলে এ দেশ ত্যাগ করিয়া আপনার সঙ্গে জাইব; ছেকন্দর কহিল কি আপদ গ্রস্ত তোমরা হইয়াছ? তাহারা কহিল আমার দিগের দেশে এয়াজুজ মাজুজ নামক এক প্রকার দৈত্যর উৎপাত হইয়াছে। ছেকন্দর কহিল তাহার দিগের আকার প্রকার আহার কি কি প্রকার তাহা বল আর কি উৎপাত করে? তাহারা কহিল আমারদিগের দেশের প্রান্তভাগে এক পর্ব্বত আছে সেই পর্ব্বতে এয়াজুজ মাজুজ নামে দৈত্য সকল বাস করে; শীত কালে ঐ পর্ব্বতে থাকে শীতান্তে এদেশে আসিতে আরম্ভ হয় তাহার দিগের আকার ও খাদ্যের বিশয় কহি শ্রবণ কর; তাহার দিগের আকার মুখ ঘোটকের ন্যায়, চক্ষু রক্ত বর্ণ জিহ্বা কৃষ্ণ বর্ণ, দন্ত শুকরেরমত, আর শুকরের ন্যায় লোম সর্ব্বাঙ্গ; কর্ণ অতি দীর্ঘ তাহারা এক কর্ণ পাতিয়া সয়ন করে এক কর্ণ গাত্রে আচ্ছাদনকরে এবং শুকরের ন্যায় দষবারটা কাহারো অধিক সাবক একেবারেই জর্ম্মে; কখন দুই পায় কখন চারিপায় চলে; যখন পাঁচ সাতটা একত্র হইয়া চিৎ কার করে তখন বজ্রাঘতের অপিক্ষা অধিক শব্দ বোধ হয় আর আহার গো মহিসছাগ ইত্যাদি এবং সস্য মাত্র সকলি আহার করে মনুস্যকে প্রায় আহার করে না কদাচিত কখন তাহারদিগের নিকট আমরা জাইতে পারিনা। শীতকালে অতি কৃষ ও দুর্ব্বল হয় এপ্রযুক্ত এস্থান হইতে পর্ব্বতোপরি বাস করে; এ দেশে কেহ প্রধান বাদসাহ নাই আর অন্য কোন বাদসাহ কখন আইসে নাই যদি আপনি অনুগ্রহ করিয়া আমার দিগের এ আপদ হইতে রক্ষা না কর তবে আমার

দিগেকে সঙ্গে লইয়া চল। ছেকন্দর ইহা শুনিয়া হকিম দিগকে কহিলেন তোমরা সকলে পরামর্স করিয়া জাহাতে এআপদ হইতে এদেশ রক্ষা পায় তাহার উপায় স্থির কর। হকিমেরা অনেক বিবচনা করিয়া কহিলেন সপ্ত ধাতু অর্থাৎ লোহা, তাম্বা; রাঙ্গা; সিসা; দস্তা প্রভৃতি একত্র গলাইয়া নগর বাহিরে তাহার দিগের গমনা গমনের পথে এক প্রাচির নির্ম্মাণ করিলে তাহা ভগ্ন করিয়া আসিতে পারিবেনা। ছেকন্দর ইহা শুনিয়া তথাকার মনুস্যাদিগকে কহিলেন যে ধন ব্যায় যত হইবে তাহা আমি করিব তোমরা আমার সঙ্গে থাকিয়া পরিশ্রম কর: পরে ছেকন্দর নানা দেশে লোক পাঠাইয়া কর্ম্মকার কাঁসারি প্রভৃতি অনেক কারিকর ও লৌহ তাম্বাইত্যাদি ধাতুসকল আনাইয়া এয়াজুজমাজুজ যে পর্ব্বতে থাকিত তাহার চতুদিগ বেষ্ঠিত করিয়া পাচশত গজ উদ্ধএক শত গজ প্রস্থে সপ্ত ধাতুর প্রাচির দুই বৎসরে সমাপ্ত করিয়া তথা হইতে যাত্রা করিয়া একমাস ভ্রমনানন্তর এক পর্ব্বতের নিকট পৌছিলেন তথায় আসিয়া দেখিলেন ঐ পর্ব্বতোপরি এক ফিরোজার শৃঙ্গ তাহার উপরি ভাগে এক জরদ এয়াকূতের এক অট্টালিকা (অর্থাৎ পোকরাগের বাড়ি) তাহার উপর উপস্থিত হইয়া দেখিলেন যে সেই বাটির সকল গৃহে বেল ওয়ারি লণ্টন ঐ বাটির মধ্যে এক পুষ্করণী সেই পুষ্করণীর ধারে স্বর্ণ নির্ম্মিত তক্তার উপর কপূরের শয্যায় এক পুরুষ নিদ্রিত আছে; তাহারসরিরে এক শুভ্রবস্ত্র আচ্ছাদিত তাহার সরির মনুস্যের ন্যায় মুখ শুকরের তুল্য তাহার নিকট এক মানিক আছে তাহারজোতিতে সেই বাটি দিবা রাত্রি উজ্জ্বল

রহিয়াছে। ছেকন্দর এই সকল আশ্চার্য্য দৃষ্টি করিতেছে এমত সময়ে এই শব্দ হইল; তুমি পৃথিবীতে অনেক আশ্চার্য্য দরসন করিলে এমত আর কেহ দেখেনাই, তুমি এস্থানহইতে প্রস্থান কর তোমার আয়ু শেষ হইয়াছে। ছেকন্দর এই শব্দ শুনিয়া সে স্থান হইতে নিম্নে আসিয়া হকিম ও পণ্ডিত দিগের ঐ পুরুষের ও বাটির বৃত্তান্ত জিজ্ঞাসা করিলেন ঃ তাহারা কহিল আমরা গ্রন্থাদি দ্বারা জ্ঞাত আছি, পূর্ব্বে কোন কালে কেলয়ান্ দেশে সদ্দাদ নামক একজন অতি প্রধান বাদসাহ সে এক বৈকুণ্ঠ নির্ম্মান করিয়াছিল যখন সে ঐ বৈকুণ্ঠ দেখিতে আসিয়া দ্বারের মধ্যে এক পদ আর এক পদ বাহিরে ছিল সেই সময় তাহার মৃত্যু হইল। সদ্দাদ জীবদ্দাশায় লোককে কহিয়াছিল যে আমাকে সকলে ঈশ্বর কহিবা, তাহার মৃত্যু হইলে পর সেই পাপে শুকরের ন্যায় মুখ হইল। তাহাকে সম্ম তক্তে বস্ত্র আচ্ছাদন করিয়া রাখিয়াছে তাহার মৃত্যু সরির ঐরূপ চিরকাল থাকিবে কখন নষ্ট হবেনা; ছেকন্দর ইহা শুনিয়া সেস্থান হইতে গমন করিয়া কয়েক দিবস পরে এক নগর ও লোকালয় দেখিয়া সেস্থানে আইলেন তাহারাও বাদসাহকে দেখিতে আইল; বাদসাহ তাহারদিগের নিকট ডাকিয়া সমাদর করিলেন তাহারা কহিল আমারদিগের দেশে এক জোড়া বক্তা বৃক্ষ আছে যেমন দুই মনুস্য উভয়ে উভয়ের গলদেশে হস্তার্পণ করিয়া দাড়াইয়া রহিয়াছে; তাহার দিগের মস্তকোপরি সাখা পল্লাবাদি আছে তাহার একটা পুরুষ একটাস্ত্রি

তাহার দিগের কোন প্রস্ত করিলে তাহারা যাহা হইবে তাহা ই উত্তর করে; পুরুসাকার বৃক্ষ দিবসে উত্তর করে আর স্ত্রি আকার বৃক্ষ রাত্রিকালে উত্তর প্রদান করে ছেকন্দর কহিল সে বৃক্ষ কোথায় আর কি রূপ বাক্য কহে আমি দেখিতে ও শুনিতে বাঞ্ছা করি? সে কহিল এ বৃক্ষের বাক্য এখান কার পণ্ডিত দিগের মধ্যে কেহ২ বুঝিতে পারে সকলে বুঝিতে পারেনা, বাদসাহ কহিলেন যে পণ্ডিত বৃক্ষের বাক্য বুঝিতে পারে তাহাকে আনাইয়া আমাকে সঙ্গে লইয়া সেই বৃক্ষের নিকট চল; তাহারা একজন পণ্ডিতকে সঙ্গে লইয়া ছেকন্দরকে সেই বৃক্ষের নিকট লইয়া গেল, ছেকন্দর সেই বৃক্ষের সন্মুখে দাডাইবা মাত্রবৃক্ষের শাখা পল্লব হইতে এক শব্দ হইল। ছেকন্দর পণ্ডিতকে জিজ্ঞাসা করিলেন এ বৃক্ষ কি কহিতেছে? পণ্ডিত কহিল বৃক্ষ কহিলেন এই যে আপ নার নাম ছেকন্দর বাদসাহ এ ব্যাক্তি প্রায় সমস্ত পৃথিবী ভ্রমন পূর্ব্বক অনেক যুদ্ধ বিগ্রহ করিয়া পৃথ্বি পতি হইয়াছে এবং অনেক আশ্চার্য্য সন্দর্শন করিয়াছে আর চত্তদশ বৎ সর পরে লোকান্তর গমন করিবেক। ছেকন্দর বৃক্ষকে জিজ্ঞাসা করিলেন এই চত্তদ্দশ বৎসর মধ্যে আপন জর্ম্মভুমি রোম দেশে পৌছিতে পারিবো কি না? বৃক্ষ কহিল তুমি রোম দেশে পৌছিতে পারিবা না। ছেকন্দর পুনরায় জি জ্ঞাসা করিলেন আমার মাতা ও পরিবার এবং অন্তরঙ্গ দি গের সহিত সাক্ষ্যাত হইবে কি না? বৃক্ষ কহিল তোমার মাতা কি পারিবার কি আত্মিয় কাহার সহিত সাক্ষ্যাত হই বেনা; রোমের নিকট কেছ্বান নামে এক নগর আছে সেই

নগরে তোমার মৃত্যু হইবেক। পরে ছেকন্দর তথা হইতে যাত্রা করিয়া অনেক পাহাড় পর্ব্বত বন উপবন নদ নদী পর্য্যাটন উত্তীর্ণ হইয়া চল্লিষ দিন পরে চিন দেশীয় সমুদ্রের ধারে পৌছিলেন, সেই স্থানে থাকিয়া আপনার সঙ্গে যে সর্ব্বোপরি প্রধান ছিল তাহাকে সমস্ত কর্ম্মের ভারার্পিণ করিয়া এক পত্র লইয়া আপনি দুত হইয়া চিন দেশের বাদসাহ ফগফুরের নিকট গমন করিলেন। চিনের বাদসাহ ছেকন্দরের দুতের আগমন শুনিয়া আপনার সভাসত পণ্ডিত কয়েক জনকে কথক গুলিন লোক সঙ্গে দিয়া অগ্রসর পাঠাইলেন যখন দুত তাহার দিগের সঙ্গে চিনের বাদসাহর নিকট পৌছিলে তখন চিনের বাদসাহ অনেক সমাদর পূর্ব্বক আলিঙ্গন করিয়া আপন নিকটে এক স্বর্ণময় সিংহাসনে বসাইলেন আর আপনার একবাটিতে বাসা দিয়া নানা বিধ খাদ্য দ্রব্য পাটাইয়া সে দিবস বিদায় করিলেন, পর দিবস প্রাতে ফগফুর চিন ছেকন্দরের দুতকে ডাকিতে আজ্ঞা করিলেন। দুত আসিয়া রিতী মত ছেলাম করিয়া ছেকন্দরের পত্র দিয়া আর বাচনিক যাহা কহিবার তাহা কহিলেন, চিনের বাদসাহ পত্র পাঠ করিতে আপন মুনসিকে আজ্ঞা করিলেন; মুনসি পত্র খুলিয়া পাঠ করিল যে ঈশ্বরের অনুগ্রহতে পৃথ্বিপতি ছেকন্দর বাদসাহ ফগফুর চিনকে লিখিতেছেন, আমার আজ্ঞায় তোমার অধিন দেশ সকল সর্ব্বদা আবাদ করিবা, আর আমার সহিত আসিয়া সাক্ষ্যাত করিবা আর যদি আমার এ আজ্ঞা লংঘন করিয়া যুর্দ্ধের মানস কর তবে দারা প্রভৃতি অনেক বাদসাহ আমার

সঙ্গে যুদ্ধ করিয়া নষ্ট হইয়াছে তাহা শুনিয়াছ, এবং উদয়া-
চলঅবধি অস্তাচলপয্যান্তযত বাদসাহআছে সকলেইআমার
অধিন ও আজ্ঞা বহ তুমি ও সেই নিতীমত থাকিবা তবে
তোমাকে এখানকার অধিপতি করিয়া আমি অন্য দেশে
গন্দন করিব; পরন্ত দুর্বুদ্ধি প্রযুক্ত যদি যুর্দ্ধকর তবে আপনার
প্রাণ ও রাজ্য এবং সেনা সকলই নষ্ট করিবা। ফগ্ফুর
এই পত্র শুনিয়া রাগত হইয়া ক্ষণকাল নিরব থাকিয়া পরে
হাস্য করিয়া দুতকে কহিল তোমার বাদসাহর ঈশ্বর বন্ধুনহে
দুত কহিল হে চিনের প্রধান। ছেকন্দর তুল্য পুরুসর্ব্বে,
বলে, বুর্দ্ধিতে, বিদ্যাতে, দানে, মানে, সাহসে, এবং দৃস্যতে
পৃথিবী মধ্যে আর কে আছে। ফগ্ফুরচিন এই কথা
শুনিয়া আর কোন উত্তর নাকরিয়া খাদ্য দ্রব্য ও মদিরা,
আনিয়া দুতকে লইয়া একত্রে আহার করিয়া মদ্যপান করি
তে২ সন্ধ্যাকাল উপস্থিত হইল তখন ফগ্ফুর চিন কহিল
কল্য পত্রের উত্তর দিব অদ্য আপনি বাশায় বিশ্রাম করুণ।
দুত বিদায় হইয়া আপন বাসায় আইল, পর দিবস প্রাতে
ফগফুর দুতকে ডাকিয়া আপন নিকট বসাইয়া পত্রের এই
উত্তর লিখিলেন যে তুমি দারা প্রভৃতি অনেক বাদসাহকে
বিনাশ করিয়াছ তাহারা তোমা হইতে দুর্ব্বল ছিল না যখন
জাহার সৌভাগ্যের উদয় হয় তখন সেই বলবান্ ও জয়ি হয়
তন্নিমিত্ত্য আমি ভিত্ত নহি আর আমার অনেক সেনা আছে
আপনার এতদ্রুপ অহঙ্কার করা উচিত নহে, দেখ ফরেদুঁ,
জোহাক, জমষেদ আদি তোমা অপিক্ষা সর্ব্বাংসে শ্রেষ্টছি
লেন তাঁহারা সকলেই গত্যো হইয়াছেন, তুমি ও আমি ক্রমে

গতো হইব এইসকল বিবেচনা করিবে আর আপনি আমার সঙ্গে যুদ্ধার্থি হইয়া আইস্সেন নাই আমি ও আপনার সহিত যুদ্ধ করিবনা উভয়ে প্রণয় করাই কর্ত্তব্য। এই পত্র লিখিয়া আপন ধনাধ্যক্ষকে ছেকন্দরের নিকট পাঠাইবার নিমিত্ত্য নানা প্রকার দ্রব্য আনিতে আজ্ঞা করিলেন। বাদসাহি রত্ন নির্ম্মিত তাজ পঞ্চাস, হস্তি দণ্ডের রত্ন জড়িত তক্ত এক রত্ন অভরণ এক সহস্র উষ্টের বোঝা, জরির ও রেসমের বস্ত্র এবং মৃগনাভি; কর্পুর, অগুরু, চন্দন, সগন্ধ ইত্যাদি। অনেক প্রকার রত্ন জডিত তলওয়ার, এক সত রক্ত বর্ণের উষ্ট্র, তিন সত শ্বেত হস্তি; ও কতকগুলীন উত্তমঅশ্ব, ওদাস দাসি প্রস্তুত করিয়া একজন বিজ্ঞ সভাসত কে পত্র ও ঐসকল দ্রব্য সঙ্গে দিয়া ছেকন্দরের দুতের সহিত পাঠাইলেন। দূত চিনের বাদসাহর নিকট বিদায় হইয়া যখন সমুদ্রের তীরে আইল সেখানে যে সকল লোক ছিল তাহারা বাদসাহকে দেখিয়া রিতী মত সম্বোধন পূর্ব্বক ছেলাম করিল, তখন চিনের বাদ সাহর দুত জানিল যে ছেকন্দর আপনি দূত হইয়া গিয়াছি লেন পরে ছেকন্দর ঐ দুতকে অনেক পুরস্কার করিয়া সমা- দর পূর্ব্বক বিদায় করিয়া আপনি স্থল পথে গমন করিলেন কয়েক দিবসান্তরে এক নগর ও দুর্গ দৃষ্ট হইল সেই দিগে চলিলেন; তাহারা ছেকন্দরের আগমন বার্ত্তা শুনিয়া অনেক উপঢৌকনীয় দ্রব্য লইয়া অগ্রসর আইল; ছেকন্দর তাহার দিগকে বহুবিধ প্রশংসা করিয়া আপন নিকট বসাইয়া সেই দেশের নাম ও কি আশ্চার্য্য তথায় আছে তাহা জিজ্ঞাসা করিলে তাহারা কহিল এদেশের নামজগওয়ান আর এদেশে

এমত কোন আশ্চয্য নাই যে আপনাকে দিব কিম্বা দেখাইব তদন্তর ছেকন্দর তথা হইতে যাত্রা করিয়া সিন্দুদেশে আ-সিয়া পৌছিলেন বন্ধুনামক সিন্ধু দেশের বাদসাহ সে ছেক্ন্দরের আগমন শুনিয়া আপন সসৈন্য পথ রুর্দ্ধ করিল, ছেকন্দর ইহা শুনিয়া কহিয়া পাঠাইলেন যে আমি যুর্দ্ধ করিতে আসিনাই পৃথিবী ভ্রমণকরিয়া বেড়াইতেছি, আমার সহিত সাক্ষ্যাত করিয়া প্রণয় কর। বন্দু বাদসাহ তাহা নাশুনিয়া যুর্দ্ধ আরম্ভ করিল সমস্ত দিবস যুর্দ্ধকরাতে তাহার অনেক সেনা মারা পড়িলে তদ্দৃষ্টে অবশিষ্ট সেনা লইয়া পলায়ন করিল। ছেকন্দর তাহার পশ্চাতং ধাবমান হইয়া অনেক সরদারকে ধৃত করিলে তথাকার সকলে আসিয়া ছেকন্দরের শরণাগত হইল, ছেকন্দর আপনার একজন সরদারকে তথাকার বাদসাহ করিয়া সেস্থান হইতে নিম রোজ নামকদেশে যাত্রা করিলেন নিমরোজের বাদসাহ ছেকন্দরের আগমনের সংবাদ পাইয়া আপনি আসিয়া ছেকন্দরের সহিত সাক্ষ্যাত করিয়া উপঢৌকন প্রদানকরিল ছেকন্দর তাহাকে সম্ভ্রম পূর্ব্বক আলিঙ্গন করিয়া তথায় আপনার রাজকর নিরূপিত করিয়া তথা হইতে এমন দেশে যাত্রা করিলেন। এমন দেশের বাদসাহ সংবাদ পাইয়া আপনি আসিয়া ছেকন্দরের সহিত সাক্ষ্যাত করিয়া পদানত হইল; ছেকন্দর তাহার সহিত করের নিয়ম নির্দ্দিষ্ট করিয়া তথা হইতে বাবল দেশে যাত্রা করিলেন। এক মাসের পর এক পর্ব্বতের নিকট উপস্থিত হইয়া পাহাড়ের উপর কয়েক দিন গমন করিয়া এক অতি বৃহদ নদী সমূদ্রের

ন্যায় দেখিয়া সেইথানে সেনারা অনেক পশু পক্ষ সিকার করিল কথক দূরেতে এক অতিসয় দিঘাকার মনুস্য দেখিয়া একজন সেপাহি, তাহাকে বাদসাহর নিকটে আনিলে ছেকন্দর তাহার নাম ও বাটি জিজ্ঞাসা করিলেন; সে কহিল আমার নাম দির্ঘ কর্ণ আমি! জলচর মনুস্য আমরা এই নদী মধ্যে বাস করি এবং মৎস্যাদি আহার করি যদি আমাকে ছাডিয়া দেন তবে আর কয়েক জন আমারদিগের জলচর মনুস্য তোমার নিকট আনি এই পর্ব্বতের উপরি ভাগে এক বৃহৎ অট্টালিকা আছে তাহার মধ্যে আয রাছিয়াব বাদসাহর ও কয়খোছরো বাদসাহর এবং আর২ অনেক বাদসাহ ও সরদারের প্রতিমূর্ত্তিআছে, এতৎ শ্রবণে তাহাকে ছাডিয়া দিলেন অনেক কাল বিলম্বে দির্ঘ কর্ণ আর কয়েক জন স্বজাতিকেসঙ্গে লইয়াআইলে ছেকন্দর তাহার দিগকে সঙ্গে লইয়া পর্ব্বতোপরি গমনকরিয়া সকল দেখিয়া পরে কয়খোছরোর রক্ষিত অনেক ধন রত্ন সেই স্থানেছিল তাহা লইয়া কিয়দংশ সেনাদিগকে দিলেন, যেসকল সেনারা অমৃত কুণ্ড জাওন কালিন সেই দেশে ছাডিয়া আসিয়াছিলেন তাহারা সে স্থলে অনেক দিবস থাকিয়া ছেকন্দরের কোন সমাচার এবং অন্বেষণ নাপাইয়া সে স্থান হইতে স্বদেশে আসিতেছিল তাহারা ও ঐ স্থানে আসিয়া মিলিত হইল, তাহারদের সঙ্গে ছেকন্দরের অনেকধন রত্ন ছিলএবং আর২ দেশে অনেক পাইয়াছিলেন আরপাহাডারের উপর অনেক ধনছিল সকল ধন লইতে নাপারিয়া বাবল দেশের পর্বতে রাখিয়া কহিলেন, বক্তা বৃক্ষ আমার আয়ু চতুর্দ্দশ

বৎসর আছে কহিয়াছিল তাহার ত্রিয়োদস বৎসর গতো হইয়াছে, অধুনা যে এক বৎসর বাকি আছে ইহার মধ্যে সমস্ত পৃথিবীর নিয়ম নিদ্দিষ্ট করিব ইহা কহিয়া আপন প্রধান উজির আরস্তাতালিছ জাহাকে আপন প্রতিমুর্ত্তিস্বরূপ রোমে রাখিয়া গিয়াছিলেন তাহাকে এই প্রকার পত্র লিখি-লেন যে আমার শেষ কাল উপস্থিত হইয়াছে আমার সঙ্গে কয় বংসিয় অনেক বাদসাহ জাদা আছে, ইহার দিগের মধ্যে একজন উপযুক্ত বুঝিয়া সমুদয় বাদসাহির ভার তাহাকে অর্পণ করিব তদভিন্য সকলের মস্তক ছেদন করিব মানস করিয়াছি তাহা করিলে রোমের অধিন পৃথিবীর সমস্ত দেশ ও বাদসাহ গণেরা কিছু দিন থাকিবেক ইহাতে তোমার কি পরামুস ও বিবচনা হয় লিখিবা ? আরস্তাতালিছ এইপত্র পাইয়া অতি ব্যাকুল হইয়া উত্তর লিখিল যে এ অতি অনো-চিত কর্ম্ম যে কয়েক জন কয় বংশীয় বাদসাহ জাদা আপনার নিকট আছেন তাঁহারদিগের সকলকে সমান অংস করিয়া দেশ বিভাগ করিয়া দেন। ছেকন্দর আরস্তাতালিছের এতদ্রূপ পত্র পাইয়া সেইমত করিয়া সকলের নিকট হইতে প্রতিজ্ঞা পত্র লেখাইয়া লইলেন; যে জে কেহু কাহার উপর অন্যায় করিবনা তাহার দিগের নামমলুক তত্তুযাএফ রাখি-লেন ( অর্থাৎ কয় গোষ্ঠীয় সাহজাদা ) যে দিবস ছেকন্দর পর্ব্বত হইতে বাবল দেশে আইলেন সেই রাত্রে ঐ দেশ বাসিনী একস্ত্রী একঅপূর্ব্ব বালক প্রসবহইল, তাহার সর্ব্বাঙ্গ মনুষ্যাকৃতি মুখ ব্যাঘ্রের ন্যায় পশুবৎ পদদ্বয় এবং পুচ্ছ ছিল ভুমিষ্ঠ হইয়া কিঞ্চিৎ বিলম্বে প্রাণ ত্যাগ করিল। অতি

আশ্চার্য্য বালক দেখিয়া তাহারা ঐ মৃত বালককে ছেকন্দর বাদসাহকে দেখাইতে আনিল, বাদসাহ দেখিয়া ঐ মৃত বালককে গোরদিতে আজ্ঞা করিয়া জোতিষ বেত্তা ও পাণ্ডিত গণকে কহিলেন এই আশ্চার্য্য বালক হইয়াছিল ইহার শুভা শুভ ফল কি তাহা বিচার করিয়া আমাকে কহ? তাহারা অনেক গণনা ও বিচার করিয়া অতি দখিত হইয়া নিরব থাকিলে ছেকন্দরক্রোধাসক্ত হইয়া কহিলেন তোমরাবিচার করিয়া শুভাশুভ যাহা বঝিয়াছ তাহা সত্য বল নন্তবা অতি সিঘ তোমার দিগের সির ছেদন করিব; তাহারা প্রাণভয়ে ভীত হইয়া কহিল আপনি সিংহ রাসিতে পৃথিবী মধ্যে জর্ম্ম গৃহন করিয়াছিলেন সেই সিংহ রাসি পুনরায় পৃথিবীতে আসিয়া জন্ম গৃহণ করিয়া লোকান্তর হইয়াছেন তাহা আপনাকে দেখাইয়া গেলেন, ইহার ফল আপনি আর অধিক দিন পৃথিবীতে থাকিবেননা, ছেকন্দর কহিল আমি অধিক দিন থাকিবনা তাহা বক্তা বৃক্ষ হইতে বহুদিন শুনিয়াছি তাহার অনেক দিন গতো হইয়ছে অতিঅল্প কাল বাকি আছে তজ্জন্য আমি ভাবিত ও খেদিত নাহি ॥

---

ছেকন্দর বাদসাহর মৃত্যু ॥

পরে সেই রাত্রে ছেকন্দর বাবল নগরে পিড়িত হইয়া আপন মাতাকে এক পত্র এই প্রকার লিখিলেন হে মাতা? আমার মৃত্যু সংবাদ শুনিয়া তুমি তাপিত ও শোকাকুলী হইবানা, এ মৃত্যু নতুন নহে যত জীব পৃথিবীতে জন্ম গৃহণ

করিয়াছে সকলেই মরিবেক; আর আমার সকল রাজ্য বাদ সাহ দিগকে অংশ করিয়া দিলাম ইহারা সকলে তোমার অধিন সর্ব্বদা থাকিবেক, পরন্তু আপনি প্রতি বৎসর লক্ষ টাকা দুখিদিগকে দান করিবেন; আমার স্ত্রী রোসনক গর্ব্ভ বতী আছে যদি ইহার পুত্র হয় তবে সেই রোমের বাদসাহ হইবে, আর যদি কন্যা হয় তবে কয় বংশীয় কোন উপযুক্ত পাত্র দেখিয়া তাহার সহিত বিবাহ দিয়া তাহাকে বাদসাহ করিবেন। অপিচ কিদহিন্দু বাদসাহর যে কন্যাকে আমি বিবাহ করিয়াছিলাম তাহাকে হিন্দুস্থানে তাহার পিতার নিকটে তাহার সমস্ত দ্রব্যাদি ও অলঙ্কার বস্ত্র ও ধন রত্নাদি সহিত পাঠাইবেন, আর আমার এই প্রার্থনা যে আপনি আমার নিমিত্ত্য কদাচ কাতর হইবেননা, চিরকাল পৃথিবীতে কেহু থাকিবেনা অগ্র পশ্চাৎ সকলেই নিত্যধামে জাইবেক আমি আপনকার নিকট বিদায় হইলাম এই পত্র মোহর করিয়া রোম দেশে পাঠাইলেন, তাহা শুনিয়া সমস্ত সেনা গণেরা রোদন করিতে আরম্ভ করিল, ছেকন্দর কহিলেন আমাকে গহ মধ্য হইতে মাঠে লইয়া চল আমি সকল মনুস্য কে দেখিব এবং তাহারাও আমাকে দেখিবেক; তখন তক্ত সহিত গৃহ হইতে বাহির করিয়া রাখিলে কিঞ্চিৎ কাল পরে ছেকন্দরের প্রাণ বায়ু সস্থানে প্রস্থান করিল। তদনন্তর এক স্বর্ণ ময় সিন্ধুকের মধ্যে ছেকন্দরের মৃত্যুদেহ বাদসাহি রিতী মত রাখিয়া বস্ত্রাচ্ছাদন করিয়া সিন্দুক বন্দ করত গোর দিবার নিমিত্ত্য রোমের ও ইরানের লোকেতে বিবাদ উপস্থিত হইল; ইরানিরা কহিল ছেকন্দর ইরানের বাদসাহ

হইয়াছিলেন ইহাঁকে ইরানে গোর দিব। রোমের বাসিরা কহিল ছেকন্দরের জর্ম্ম রোম দেশে হইয়াছিল সেইস্থানে গোর দিব, এই মত বিবাদ উপস্থিত দেখিয়া একজন বৃদ্ধ পারসি কহিল তোমরা অকারণ কেন বিবাদ করিতেছ এখান হইতে অতিনিকট হরম নামে এক পর্ব্বত আছে সেঅতিসু রম্যস্থান সেই স্থানে গিয়া জিজ্ঞাসা করিলে পর্ব্বতহইতে শব্দ হইবেক সকলে শুনিতেপাইবা; অতএব এই কফনের সিন্দুক সেইস্থানে রাখিয়া জিজ্ঞাসা করিলে যদি পর্ব্বত তাহারউত্তর করে তবে সকলে ঐক্য হইয়া তাহা করিব নতুবা তোমারদিগের যাহা মত হইবে তাহা করিবা। এই কথা ধার্য্য করিয়া হরম পর্ব্বতের নিকটে ঐ সিন্দুক রাখিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন যে ছেকন্দরের গোর কোন স্থানে দেয়া কর্ত্তব্য? পর্ব্বত হইতে শব্দ হইল যে এছকন্দরিয়া নামক যেনগর ছেকন্দর স্থাপিত করিয়াছে সেই স্থানে ছেকন্দরকে গোর দেও, পরে ওখান হইতে এছকন্দরিয়াতে যখন পৌছিল তখন ছেকন্দরের মাতা ও আরাস্ত প্রভৃতি সকলে সেই স্থানে আসিয়া অনেক রোদন করিল, পরে সকলে ঐক্য হইয়া সেই এছকন্দরিয়া নগরে ছেকন্দরের গোর দিলেন॥

ছেকন্দর চৌদ্দবষ রাজত্ত করিল।
তারপর নিরবধি পৃথিবী ভ্রমিল॥
সকলের সঙ্গে যুদ্ধে সে যয়ি হইল।
অনেক নগর দেশ সেই বসাইল॥
অনেক আশ্চার্য্য পৃথিবীতে সে দেখিল।
সমুদ্র পাহাড় বন অনেক ফিরিল॥

ছত্রিস বৎসর তার আয়ু সঙ্খে ছিল।
ইহার মধ্যেতে বহু কৃত্তি প্রকাশিল ॥
অমৃত লইতে অন্ধকারে গিয়াছিল।
অল্প আয়ু কারণে দেখিতে নাপাইল ॥
ছত্রিস জন বড় বাদসাহকে মারিল।
আপনি শেষ কালে শরীর তেজিল ॥
পৃথিবীর পতি ছেকন্দর না রহিল।
কেআর থাকিবে যদি ছেক ন্দরমলো ॥

ছেকন্দরের স্থাপিত মলুক তওয়াএফের বিবরণ ॥

ছেকন্দরের মৃত্যু সময় তাহার নিকট যে কয়েক জন কয় গোষ্ঠির প্রধান বাদসাহ জাদা উপস্থিত ছিল তাহারদিগের সকলকে আপনার সমস্ত রাজ্য বিভাগ করিয়া দিয়া তাহার দিগের স্থান হইতে এক ধর্ম্মত নিয়মপত্র লেখাইয়া লইলেন কেহু আপন অংশের দেশ ভিন্ন অন্যর অংসের উপর হস্তার্পণ করিবেন না। ছেকন্দরের মৃত্যুর পরে তাহারা আপন২ অংশিত দেশে গমন করিয়া স্ব স্ব রাজ্যে রাজত্ব করিতে লাগিল। এই সকল বাদসাহদিগের মলুক তওয়াএফ ও আস্কা নিয়ান এই দুইপ্রকার নামে খ্যাত হইল; তাহারা দুই সত বৎসর অবিবাদে বাদসাহি করিল। ছেকন্দর এমত বিবেচনা করিয়া অংশ করিয়াছিল যে দুইসত বৎসরের মধ্যে কাহার সঙ্গে যুদ্ধ বিগ্রহ হইলনা, ঐআস্কানিয়ান কিম্বা মলুক তওয়াএফ ছেকন্দরের স্থাপিত বাদসাহ মাত্র; ইহার দিগের কোন যুদ্ধবিগ্রহ কিম্বা কোন বিশেষকর্ম্মের পুরাতন

কোন গ্রন্থে কিছু বর্ণনা নাই কেবল মলুক তওয়াএফ কিম্বা আস্কানিয়ান এই নাম মাত্রআছে, এনিমিত্ত্য ফেরদৌছি তুছি সাহ নামার মধ্যে তাহার দিগের কোন বিশেষ বর্ণনা না করিয়া নাম মাত্র লিখিয়াছে, কিন্তু তাহারদিগের রাজ্য চ্যুত হওনের মুল ছাছান সাহ তাহার বিবরণ পশ্চাৎ লিখিতেছি ॥

ছাছান বংশীয় দিগের বাদ সাহি ॥

দারা বাদসাহ ছেকন্দরের যুর্দ্ধে মৃত্যু হইলেপর ছেকন্দর দারার কন্যা রোসনকে বিবাহ করিয়া ইরানের বাদসাহ হইয়া তক্তে বসিল; দারার কোন উপ ভোগ্য স্ত্রী ( অথাৎ সয়লিনী হইতে ছাছান নামে এক পুত্র ছিল সে বিবেচনা করিল ছেকন্দরের সঙ্গে যুর্দ্ধে সমর্থ হইব না কারণ সমস্ত প্রধান লোক ও সরদার সেপাহি ছেকন্দরের বাধ্য হইয়াছে আর আমি ছেকন্দরের পদানত হইয়া থাকিতে পারিবনা এই রূপ বিবচনা করিয়া কিঞ্চিৎ রত্নাদি লইয়া হিন্দুস্থানে গিয়া গুপ্ত ভাবে থাকিয়া কালযাপনকরিয়া লোকান্তর হইল তাহার পুত্র ঐ স্থানে থাকিয়া যে কিঞ্চিৎ ধন ছিল তাহা সমস্ত ব্যায় করিয়া মরিল, তাহার এক পুত্র তাহার নাম ছাছন রাখিয়াছিল সে অতি দিন ভাবাপন্ন হইয়া হিন্দুস্থান হইতে কাবল দেশে যাইয়া বাবক নামে কাবলের সুবাদার ছিল, তাহার গো মহিষাদির প্রধান রক্ষকের নিকট গো চারণ কর্ম্মে নিযুক্ত হইল; বাবক রাত্রিকালে সপ্ন দেখিল যে একজন যুবক পুরুষ এক হস্তির উপর বসিয়াছে আর

অনেক লোক তাহার চতুর্দ্দিগে দণ্ডয়মান হইয়া কহিতেছে
এ তোমারিই অধিকার তুমি বাদসাহি কর, বাবক ঐ সকল
লোককে জিজ্ঞাসা করিলেন হস্তির উপর কে ইহার নাম
কি? তাহারা কহিল ছাছান। তাহার পর রাত্রে বাবক পুন
রায় স্বপ্ন দেখিল সেই যুবক পুরুষ হস্তির উপর হইতে কহি
তেছে সকলে অগ্নি পুজা কর আমার পৈতৃক ধর্ম্ম প্রকাশ
করিব, সকল লোক তাহার আজ্ঞায় অগ্নি পুজা করিতেছে;
বাবক জিজ্ঞাসা করিলেন এই যুবকপুরুসের নাম কি? তাহা-
রা কহিল ছাছান আরদেশির। বাবককহিল কোথায় থাকেন
তাহারা কহিল কাবলে অমক গোরক্ষের ভৃত্য। বাবকপ্রাতে
সেই গোরক্ষককে তাহার নতন দাস সহিত ডাকিতে কহিল
যখন ঐ রক্ষক তাহার নতন দাস ছাছানকে সঙ্গেলইয়াআইল
বাবক তাহাকে দুর হইতে দেখিয়া জানিল; নিকটে আইলে
তাহাকে নির্জ্জনস্থানে লইয়া কহিল তোমার নাম কি কোন
বংশে জর্ম্ম তাহা সত্য করিয়া আমাকে কহ? ছাছান ইহা
শুনিয়া ভীত হইয়া নিরব রহিল, বাবক তখন ধর্ম্মত শপত
করিয়া কহিলেন আমি তোমার মন্দ কখন করিবনা বরং
ভাল হয় তাহাই করিব তুমি আপনার যথার্থ পরিচয় আমা
কে দেও তখন ঐ ব্যাক্তি কহিল আমার নাম ছাছান দারার
সন্তান। বাবাক তাহাকে আপন বাটিতে রাখিয়া উত্তম
বস্ত্র ও আহার করাইতে লাগিলেন; কিছু দিনপরে বাবকের
কন্যার সহিত তাহার বিবাহ দিল। বাবকের কন্যার গর্ব্ভে
ছাছানের এক পুত্র হইলে বাবক তাহার নাম আর্দাসির
বাবক রাখিলেন; তাহার পর ছাছানের মৃত্যু হইলে বাবক

ঐ বালককে বিদ্যা সিক্ষ্যা এবং রাজ নিতী ও ধর্ম্ম সাস্ত্র যুদ্ধ বিদ্যা আদি সমস্ত সিক্ষ্যা করাইলেন, রুম দেশের আরদওয়ান নামক বাদসাহ বাবক তাহার অধিনছিলেন সে শুনিল দারা, বাদসাহার এক সন্তান কাবল দেশে আছে; কাবলের অধিপতি বাবককে পত্র লিখিল যে আর্দসির নামক দারার সন্তান একজন তোমার বাটিতে আছেতাহাকে আমারনিকট পাঠাইবা আমি ধর্ম্মত সত্য করিয়া তোমাকে লিখিতেছি তাহাকে আপন পুত্রের ন্যায় প্রতিপালন করিব। বাবক এই পত্র পাইয়া তাহার লিখনানুসারে বিশ্বাষ ও ঈশ্বরের উপর নির্ভর করিয়া আর্দসিরকে রুম দেশে আরদওয়ানের নিকটে পাঠাইলেন॥

## অর্দ্দসিরের বিবরণ॥

যখন আর্দসির আরদওয়ানের নিকট পৌছিল সে তাহাকে দেখিয়া আনন্দিত হইয়া তাহার চারি পুত্রছিল তাহারদিগের তুল্য করিয়া রাখিলেন আরর্দসির তাহারদিগের সঙ্গে সর্ব্বদা সহবাস ও মৃগয়া করিতেজাইত, এক দিন সিকার করিতে গিয়া আরদসির এক হরিণ সিকার করিল আরদওয়ানের পুত্র কহিল এহরিন আমি মারিয়াছি। আদসির কহিল আমি মারিয়াছি, উভয়ে বচসা হইতে লাগিল এই কথা আরদওয়ান শুনিয়া আপনি সেই স্থানে আসিয়া পুত্রের প্রতি পক্ষ হইয়া কহিল তুমি কি আমার পুত্র দিগের তুল্য হইতে বাঞ্ছা কর আর ইহার দিগকে অমান্য করিতেছ আমি কি এই নিমিত্ত্যে তোমায় প্রতিপালন করিতেছি ইহা কহিয়া আর্দ্দসিরকে কহিল অদ্য অবধি তুমি আমার ঘোটক সকলের

রক্ষক হইয়া অশ্বশালার নিকট যে বাটি আছে সেইস্থানে গিয়া বাস কর, অর্দসির নিরোপায় হইয়া সেই বাটিতে গিয়া রহিল কিছুদিন পরে আর্দওয়ানের এক প্রিয়সী সয়লিনী তাহার নাম গোলনার সে আপন প্রসাদে উটিয়াছিল আর্দসিরকে দেখিয়া কামাসক্ত হইয়া যামিনী যোগে কোন প্রকারান্তরে আর্দসিরের নিকটে আসিয়া আপন বিবরণ জানাইয়া অনেক মিষ্টালাপ করিলে আদসির আর্দওয়ানের ভয়ে ভীত হইয়া তৎকালীন তাহার সহিত আলপ না করাতে গোলনারে অনেক হাব ভাব কটাক্ষ দ্বারা তাহাকে মুগ্ধ করিল, এইরূপে কিছুদিন গোপনে গমনাগমন করিয়া এক দিবস গোলনার কহিল একথা প্রকাশ হইলে দুই জনেই মারা পড়িব অতএব এখান হইতে প্রস্থান করাই উচিত, এইরূপ পরামুর্স স্থির করিয়া বাদসাহর অশ্বালয় হইতে অতিউৎকৃষ্ট দুইটা ঘোটক লইয়া গোপন করিয়া রাখিল; রাত্র দুই প্রহরের সময় গোলনার যৎকিঞ্চিৎ বহু মুল্য রত্নাদি লইয়া আর্দসিরের নিকট আইল আর্দসির তাহাকে সঙ্গে লইয়া দুই জনে দুই অশ্বারোহণে বাহির হইলেন। প্রাতে আর্দওয়ান শুনিল যে গোলনার বাটিতে নাই এবং সন্ধান করিয়া ও তাহাকে পাওয়া গেলনা, পরে অশ্বালয়স্থ লোকেরা আসিয়া বাদসাহকে জানাইল আর্দসির গতো রাত্রে এখান হইতে পালাইয়াছে; তখন বুঝিল দুইজনে পরামুর্স করিয়া এখান হইতে প্রস্থান করিয়াছে; কথক গুলিন অশ্বারোহ তাহার দিগকে ধরিতে পাঠাইল, বেলা দুই প্রহরের সময় আর্দসির ও গোলনার ক্লান্তহইয়া এক সরোবরের নিকট পৌছিয়

ইচ্ছা করিলেন এই স্থানে শ্রান্তি দূর করিয়া আহার ও বিশ্রাম করি এই মানসে অশ্ব হইতে নামিতে ছিল ইতো মধ্যে সেই সরোবরের ধারে যে সকল লোকছিল তাহার দুইজনে আপসে এই কহিল এখন এখানে অবস্থান করা ভাল নহে পারস দেশে সিঘ্র জাওয়াই কর্ত্তব্য। আরদসির এই নরাক্কিত ধ্বনি শুনিয়া গোলনারকে কহিয়া পারস দেশের পথে গমন করিল আরদসির ও স্থান হইতে গমন করিলে পর বেলা অবসানে আরদওয়ানের লোক সকল তথায় পৌছিয়া সেই পুস্কর্ন্নির ধারের লোককে জিজ্ঞাসা করিল দুইজন অশ্বারোহি এখানে আসিয়াছে তাহারা কোথায়আছে? তাহারা কহিল দুইজন অশ্বারোহি দুই প্রহরের সময় আসিয়া অশ্ব হইতে নামিতে ছিল কিন্তু না নামিয়া এখান হইতে পারস দেশের পথে গিয়াছে। আরদওয়ানের প্রেরিত লোকেরা সূর্য্যকিরণে ক্লান্ত হইয়াছিল এবং সন্ধ্যা উপস্থিত দেখিয়া সেই রাত্রি ঐ সরাইতে থাকিয়া পর দিবস কথক দুর অনুসন্ধান করিয়া তাহার দিগকে নাপাইয়া আরদওয়ানের নিকট আসিয়া কহিল তাহারদিগের দেখা পাই লামনা, আরদওয়ান গনকদিগকে ডাকাইয়া কহিল আর্দসির কোথায় আছে আর তাহার ভাগ্য কিপ্রকার? তাহারা অনেক গণনা করিয়া কহিল সে এখন পারস দেশে আছে আর সে বড বাদসাহ হইবে তোমার সপরিবারকে অনেক ক্লেস দিবেক। আরদওয়ান ইহা শুনিয়া খিদ্যমান হইয়া রহিল কিছুদিন পরে আপন জেষ্ট পুত্র আরদওয়ান বহমনকে কিছু সেনা সঙ্গে দিয়া পারস দেশে তাহারদিগেকে ধৃত

করণার্থে পাঠাইল। এখানে আরদসির পারস দেশে আসিয়া এক সরাইতে বাসকরিল, সেইরাত্রে পারস দেশের আস্তখর নগরের অধিপতি সপ্ন দেখিল যে দারার সন্তান আরদসির নামক এক যুবক পুরুষ তোমার এই নগরে আসিয়াছে পরমেশ্বর তাহাকে ইরানের বাদসাহ করিবেন তাহাকে আনিয়া জত্ন করিয়া ও সহায় হইয়া আপনার নিকটে রাখ, আস্তখরের অধিপতি এই সপ্ন দেখিয়া প্রাতে নগর মধ্যে ঘোষনা করিল যে আরদসির নামক এক যুবক পুরুষ যে খানে বাসা করিয়া থাক আপনাকে প্রকাশ কর ঈশ্বর তাহাকে এদেশের বাদসাহ করিবেন এদেশস্থসকলে তাহার আজ্ঞাকারি জানিবা। আরদসির তাহারিপুর্ব্বরাত্রে সরাইতে পৌছিয়া আপন নাম কহিয়া ছিল জাহারা ঘোষনা দিতে আসিয়াছিল তাহারা ঐ কথা শুনিয়া দেশাধিপকে জ্ঞাত করিলে তৎখনাৎ আসিয়া আরদসিকে সমাদর পূর্ব্বক অপান বাটিতে লইয়া রাখিল, পরে নগরস্থ সমস্ত মনুস্যকে ডাকাইয়া সপ্ন বিবরণ প্রকাশ করিয়া সকলকেসম্মত করিয়া আরদসিকে পারস দেশের বাদসাহ করিলেন॥

---

## আরদসিরের সহিত আরদওয়ান বহমনের যুদ্ধ॥

পারস দেসের আস্তখর নগরীয় সমস্ত লোকে সম্মত হইয়া আরদসিরকে বাদসাহ করিয়া তক্তে বসাইল পরে আস্তখর দেশের নগরাধিপতি আরদসিরের সহিত পরামর্শ করিল যে প্রথমতঃ রয় দেশের বাদসাহ আরদওয়ানের সঙ্গে যুদ্ধ

করিয়া পরাস্ত করিলে আর কেহ আমার দিগের সহিত যুদ্ধ বিগ্রহ করিবেকনা। আরদসির এই পরামর্শ স্থির করিয়া যুদ্ধের আয়োজন প্রস্তুত করিতে আজ্ঞা করিলেন, ইতমধ্যে কেহ আসিয়া কহিল আরদওয়ানের পুত্র আরদওয়ান বহমন সসৈন্য আরদসিরকে ধৃত করণার্থে আসিতেছে, ইহা শুনিয়া আর্দসির আস্তখরের অধিপতির সেনা লইয়া তাহার সহিত যুদ্ধে যাত্রা করিলেন।

আরদওয়ান বহমনের তর্ব্বাক নামক একজন প্রধান সেনা পতিকে কথক গুলীন সেনা দিয়া আর্দসিরের সহিত যুদ্ধে পাঠাইল, তব্বাক যখন নিকটস্থ হইল আর্দসির আপনার একজন সরদারকে তাহার নিকট কহিয়া পাঠাইলেন যদি তুমি আমার পক্ষ হও তবে যুদ্ধে যয়ি হইলে তোমাকে আমার প্রধান সেনাপতি করিব আমি এই সত্য করিতেছি, তব্বাক এই লোভে আরদওয়ান বহমনকে পরিত্যাগ করিয়া আর্দসিরের নিকট আইল, বহমন এই কথা শুনিয়া ভাবিত হইয়া আপন পিতাকে সমস্ত বিবরণ, আর কিছু সেনা পাঠাইতে লিখিল। আর যে সকল সেনা ছিল তাহা সঙ্গে লইয়া আপনি আরদসিরের সহিত যুদ্ধ করিতে আইল, তব্বাক আরদসিরের স্থানে বিদায় হইয়া বহমনের সঙ্গে যুদ্ধ করিতে গিয়া বহমনের সহিত যুদ্ধ করিয়া তাহার অনেক সেনা নষ্ট করিল আরদসির তাহা দেখিয়া আপনি তাহার সহায়ের নিমিত্তে সেই খানে আসিয়া বহমনের প্রতি এক বাণ নিক্ষেপ করিল তাহাতে আরদওয়ান বহমন ব্যথিত হইয়া পলায়ন করিলে আর্দসির তাহার পশ্চাৎ২ কথক দূর গমন করিলে তাহার

সমস্ত সেনা অর্দসিরের সরণাগত হইল, আরদওয়ান যখন পলাইলে তাহার সঙ্গে যত ধনছিল তাহা সমস্ত সেনা গণকে বণ্টন করিয়া দিলেন৻ পরে সমস্ত সেনা সঙ্গে লইয়া রয়দেশে যুদ্ধার্থি হইয়া যাত্রা করিলেন। আরদওয়ান এই কথা শুনিয়া অনেক সেনা লইয়া যুদ্ধ করিতে আইল ॥

---

আর্দসির ও আরদওয়ানের যুদ্ধ ॥

আর্দসির আরদওয়ানের সেনা দেখিয়া যুদ্ধ আরম্ভ করিলেন চল্লিষ দিবস দিবা রাত্রি ক্রমাগত উভয় সেনায় যুদ্ধ করিল। একচল্লিষদিবসের প্রাতে অতিবিপরিতপ্রতিকুল ঝড হইয়া আরদওয়ানের সেনা গণকে ধুলায় আচ্ছন্ন করিল আর্দসিরের সেনা গণেরা ঐ ঝড়ের পশ্চাতে থাকিয়া বিপক্ষ দলের অনেক সেনা বিনাশ করিল তাহা দেখিয়া আরদও য়ান পলায়নকরিলে আর্দসিরের সরদারেরা তাহার পশ্চাৎ২ ধাবমান হইয়া আরদওয়ানকে ধৃত করিযা আর্দসিরের নিকট আনিল, আরদসির তৎখনাত তাহার মস্তক ছেদন করিলেন। তাহার সেনা আরদওয়ানের দুই পুত্রকে ধরিয়া কয়েদ করিল আর দুই পুত্র হিন্দুস্থানে পলায়ন করিল, তখন আরদসির বাবকান ইরানের তক্তে নির্ভয়ে রাজ্য করিতে লাগিলেন ॥

হপ্তওয়াদের সহিত আরদসিরের যুদ্ধ ॥

আরদসির ইরানের বাদসাহ হইয়া কিছুদিন বাদসাহিকরিয়া একদিবস সভায় বসিয়া নানাপ্রকার কথপকথন করিতেছে তন্মধ্যে একজন প্রস্তাপ করিল যে পারস সমুদ্রের ধারে

গজারান নামে এক খুদ্র গ্রামছিল সেস্থানে সকলেই খুদ্র লোক তাহারা কায় ক্লেসে কাল যাপন করিত, সেইস্থানে এক পর্ব্বত আছে তাহাতে অনেক কাপাস জম্মে ঐ গজরানের স্ত্রিলোকেরা উক্ত পর্ব্বত হইতে কাপাস আনায়ন করত বিক্রয় করিয়া প্রতিপালন হয়, সেই গ্রামে হপ্তওয়াদ নামক একজন সামান্য লোক তাহার সাত পুত্র ও এক কন্যা ছিল। এক দিবস ঐ হপ্তওয়াদের কন্যা আর ২ প্রতিবাসি স্ত্রিলোকের দিগের সহিত কাপাস তুলিতে পর্ব্বতের উপরে গেল হপ্তওয়াদের কন্যা যে স্থানে কাপাস তুলিতে গিয়াছিল সেই স্থানে এক সেবের বৃক্ষছিল সেই বৃক্ষ হইতে একটি সেব হপ্ত-ওয়াদের কন্যার সম্মুখে পড়িল ঐ কন্যা সেই ফল লইয়া দেখিল তাহাতে একটি অতি সুন্দর কীট রহিয়াছে তাহা দেখিয়া সেই কন্যা কহিল যদি অদ্য আমার কিছু অধিক লভ্য হয় তবে তোমার পূজা করিব এই মনন করিয়া সেই কীট সহিত ফল আপন কাপাসের চুপড়িতে রাখিল, সে দিবস ঐ কন্যা আর ২ সকল অপেক্ষা অধিক কাপাস প্রাপ্ত হইয়া গৃহে আসিয়া আপন মাতাকে ঐ কীটের কথা কহিয়া তাহার হস্তে সেব সহিত উক্ত কীট এবং কাপাস দিল; তাহার মাতা তুষ্টা হইয়া কীট চুপড়িতে রাখিল এবং ঐকন্যা তাহাকে দুগ্ধ ও মধু খাইতে দিত; আর প্রত্যহ কাপাস তুলিতে জাইয়া অন্য অপেক্ষা অধিক আনিত, ঐ কাপাস বিক্রয় করিয়া অত্যল্প কালের মধ্যে কিছু ধন সঞ্চয় করিল তখন হপ্তওয়াদ জ্ঞাত হইয়া ঐ কীট শুভ দায়ক ও শুলক্ষণ জ্ঞ্যান করিয়া যখন যে কর্ম্ম করিত ঐ কীটকে মাননা করিয়া করিত

তাহাতে ক্রমে তাহার শ্রীবৃদ্ধি হইল। ঐ কীট ক্রমে অতি সুদৃস্য এবং,বড হইল তখন হপ্তহওয়াদ দীর্ঘ এক সিন্দুকের ন্যায় আনিয়া তাহাতে ঐ কীটকে রাখিল, ঐ গজরান গ্রামে একজন সরদারের ন্যায়ছিল সে মনে করিল হপ্তওয়াদ এখন ধনবান হইয়াছে ইহার নিকটে কিছু লইতে হইবে এই মনে করিয়া হপ্তওয়াদকে ডাকাইয়া কিছু ধন চাহিল সে তাহা গ্রাহ্য করিলনা, তখন ঐ সরদার কথক গুলিন লোক সঙ্গে লইয়া হপ্তওয়াদের বাটিতে চলিল সে এইসম্বাদ পাইয়া পুর্ব্বোক্ত পর্ব্বতের উপর এক পুরাতন ক্ষুদ্র দুর্গছিল তন্মধ্যে প্রবেশ করিয়া তাহার দ্বার বর্দ্ধ করিল; ঐ সরদার হপ্তওয়াদের বাটীতে জাইয়া শুনিলেন সে পর্ব্বতোপরি লুক্কায়িত হইয়া রহিয়াছে। সরদার সেই পর্ব্বতে গিয়া দুর্গমধ্যে প্রবেস করিতে নাপারিয়া তৎস্থান হইতে প্রস্থান করিলেন। হপ্তওয়াদ ঐ দুর্গমধ্যে বাস করিল কিছুদিন পরে ঐ কীট সিন্দুক হইতে ও বৃহৎ হইল তখন হপ্তওয়াদ পর্ব্বতের উপর এক গর্ত্ত খনন করিয়া তাহার মধ্যে কীটকে রাখিল, হপ্তওয়াদের কন্যা ঐ কীটকে দগ্ধ মধু পান করাইত আর সর্ব্বদা দেখিত ক্রমে উক্ত কীট হস্তির ন্যায় হইলে হপ্তওয়াদ ক্রমে২ দশ সহস্র সেপাহি রাখিয়া ক্ষুদ্র২ রাজা ও জমিদারকে মারিয়া তাহারদিগের রাজ্য অধিকার করিয়াছে। আদসির ইহা শুনিয়া অপ্রমান করিলেন, তাহাতে সভাসত গণেরা কহিল একথা সত্য বটে, তখন আর্দসির আপন সেনাপতিকে আজ্ঞা করিলেন যে তুমি কথক গুলিন সেনা সঙ্গে লইয়া হপ্তওয়াদকে মারিয়া তাহার দুর্গ অধিকার করিয়া আইস

সেনাপতি যখন পর্ব্বতের নিকট পৌছিল হপ্তওয়াদ ইহা শুনিয়া অনেক সেনা সুসজ্জিভূত করিয়া আরদসিরের সেনার সহিত যুর্দ্ধ করিয়া অনেক সেনা বিনাশ করিল তাহা দেখিয়া সেনাপতি অবসিষ্ট সেনা যাহা ছিল তাহা লইয়া পালাইয়া আরদসিরকে কহিল, আরদসির রাগত হইয়া নানাস্থান হইতে অনেক সেনা সংগ্রহ করিয়া সরদার দিগকে সঙ্গে লইয়া আপনি হপ্তওয়াদের সহিত যুর্দ্ধ করিতে গেলেন। হপ্ত ওয়াদ ইহা শুনিয়া পুনরায় আপন সেনা ও দুই পুত্রকে লইয়া যুর্দ্ধে চলিল; আরদসিরের শিবির একক্ষুদ্র নদীর ধারে ছিল ঐ নদীর পারে চেহরম নামে এক ক্ষুদ্র নগর তাহাতে মেহরক নামক একজন সরদার হপ্তওয়াদের সহিত তাহার অতিশয় প্রণয়ছিল সে আর্দসিরের পুনর্ব্বার আসিবার সমাচার পাইয়া খাদ্যদ্রব্য বন্দ করিল এবং আপনি ও গুপ্ত আসিয়া আরদসিরের শিবির লুট করিয়া লইয়া পলায়ন করিল। আরদসির আপন সরদার দিগকে কহিলেন যে মেহরক আমার সঙ্গে সত্রুতা আরম্ভ করিল, সরদারেরা কহিল অগ্রে হপ্তওয়াদকে মারি পরে ইহার সমোচিত ফল দিব। পরে আর্দসির সরদার দিগকে সঙ্গে লইয়া আহার করিতেছেন এমত সময়ে শুন্য হইতে একতীর ভোজন পাত্রে পতিত হইল তাহা দেখিয়া সকলে ভীত হইলেন তখন এক জন সরদার ঐ তীর হস্তে লইয়া দেখিল যে তাহাতে পহলবি অক্ষরে লিখিত আছে যে এই কীটের দর্প ইহাকে কেহু মারিতে পারিবান; আর এই তির যদি আরদসিরকে মারিতাম তবে এখনি মরিত কিন্তু কীটের এমত বাসনা নাই যে

আরদসিরকে নষ্ট করেন আরদসিরের শিবির হইতে সে দুর্গ ছয় ক্রোস অন্তর ছিল, আরদসির তীরের উপরের লিখন শুনিয়া ঈশ্বরকে ধন্যবাদ করিয়া প্রাতে আপন সৈন্য লইয়া ঈরানে প্রস্থান করিলেন। হপ্তওয়াদ আপন সৈন্য লইয়া আরদসিরের পশ্চাৎ২ তাড়া করিয়া অনেক সেনা বিনাশ করিলে আরদসির পলায়ন করিয়া কয়েক দিবস পরে এক গ্রাম দেখিয়া তন্মধ্যে প্রবেশ করিয়া দেখে যে এক বাটির দ্বারে দুইজন যুবক পুরুষ দাঁড়াইয়াছিল সেইস্থানে আইলে তাহারা কহিল আপনাকে সভয় দেখিতেছি ইহার কারণ কি? আরদসির কহিল আরদসির বাদসাহ হপ্তওয়াদের সঙ্গে যুদ্ধে গিয়াছিল সেই যুদ্ধে পরাভব হইয়া পলায়ন করিয়াছে, আমি তাহার অনুচর অনুসন্ধান করিতেছি। তাহারা আরদসিরকে নিকটে বসাইয়া অন্ন বেঞ্জন ও মদিরা আনাইয়া দিল আরদসির আহার করিতে বসিলেন ঐ দুইজন যুবক তাহার নিকটে বসিয়া কহিতে লাগিল যে জোহাক বাদসা যখন অতি দৌরাত্ম্য আরম্ভ করিল তখন ঈশ্বর ফরেদুকে পাঠাইয়া জোহাককে নষ্ট করিলেন, তাহার পর আফরাছিয়াব ও দুরাত্মা হইলে কয়খোছরোকে পাঠাইয়া তাহাকে নষ্ট করিলেন। এইক্ষণে হপ্তওয়াদ সেইরূপ দুরাত্মা হইয়াছে ঈশ্বর অবস্য কোন ব্যক্তিকে পাঠাইয়া ইহার দমন করিবেন। ঐ যুবকদিগের প্রবোধ বাক্য শুনিয়া কহিলেন আমারি নাম আদসির, তাহারা ইহা শুনিয়া প্রণাম করিয়া কহিল আমরা আপনার ভৃত্য আমরা যে উপায় কহি সেইরূপ করিলে যয়ি হইবেন নতুবা হপ্তওয়াদকে

পারিবেননা আরদসির কহিল সে উপায় কি? তাহারা কহিল হপ্তওয়াদের বাটিতে এক বৃহৎ কীট আছে সে যথার্থ কীট নহে কোন দৈত্য কীট দেহ ধারণ করিয়া রহিয়াছে, ঐ পর্ব্বতের উপর এক গর্ত্ত মধ্যে সেই কীটরূপ দৈত্য থাকে সেই কীটকে কোন প্রকারে নষ্ট না করিলে হপ্তওয়াদকে জয় করিতে পারিবানা। আরদসির ইহা শুনিয়া ঐ দুই যুবককে সঙ্গে লইয়া তথা হইতে বাহির হইয়া কথকদূর আইলে আপনার সৈন্যগণের সহিত সাক্ষ্যাত হইলে কিয়দ্দিবস কোন স্থানে অবস্থান করিয়া পুনর্ব্বার যুদ্ধের আয়োজন প্রস্তুত করিয়া প্রথমত মেহরানের প্রতি আক্রমণ করিয়া তাহার বাটি বেষ্টন করিলেন; সে প্রথমে লুক্কাইয়াছিল পরে তাহাকে ধৃত করত তাহার মস্তক ছেদন এবং তাহার সপরিবার ও দাস দাসী প্রভৃতি জাহাকে পাইলেন তাহাকেই যমালয়ে পাঠাইলেন পরঞ্চ মেহরকের একটি ছোট কন্যাছিল সে পালাইয়া কোন কৃষকালয়ে লুক্কায়িত হইয়া রহিল। তথা হইতে ঐ কীট ও হপ্তওয়াদকে মারিতে বারসহস্র সৈন্য লইয়া পর্ব্বতের কিছুদূরে আপন সেনাপতিকে কহিলেন তুমি সেনা লইয়া এইস্থানে সাবধান পূর্ব্বক অবস্থিতি কর আমি সওদাগরের বেশে পর্ব্বতোপরি গমন করি যখন প্রজ্জ্বলিত অগ্নি তোমরা দেখিবা তখন তোমরা জানিবা যে আমি ঐ কীটকে নষ্টকরিয়াছি তৎক্ষণাৎ তুমি সসৈন্যে অতিশীঘ্র দুর্গ মধ্যে প্রবেশ করিবা, ইহা কহিয়া কয়েক জন বলবানকেসঙ্গে লইয়া যৎকিঞ্চিৎ বাণিয্য দ্রব্য উষ্ট্রের উপর

বোঝাই করিয়া দুর্গের নিকট উপস্থিত হইলে তথাকার রক্ষক ও কীটের সেবাতিয়া জিজ্ঞাসা করিল তোমরা কে কোথা হইতে আইলা? আরদসির কহিল আমি সওদাগর খোরাসান দেশ হইতে আসিতেছি কীটের নিকট আমার মাননা পূজা আছে। এই কথা শুনিয়া দুর্গের দ্বার মুক্ত করিয়া আরদসিরকে দুর্গ মধ্যে লইয়াগেলে আরদসির দুর্গ মধ্যে একস্থানে বাসা করিয়া রহিল, এক দিবস দুইটা হিরকাদি যড়িত পেয়ালা ও আর২ অনেক দ্রব্য সঙ্গে লইয়া কীটের অনুচর দিগের নিকট গেলেন তাহারা উক্ত পেয়ালা দেখিয়া কহিল এই পেয়ালায় আমারদিগের কীটকে দুগ্ধ ও মধু পান করাইব, আরদসির কহিল আমার বাসায় মধু ও দুগ্ধ আছে আজ্ঞা করিলে আনয়ন করি এবং তোমাদিগকে ও কিঞ্চিৎ আহার করাইইচ্ছা শুনিয়া তাহারা সম্মত হইলে তখন আরদসির তাহাদিগকে সঙ্গে করিয়া আপন বাসায় আনিয়া নানা প্রকার খাদ্য দ্রব্য এবং অনেক প্রকার মদিরা দিলেন; তাহারা আহার করিয়া পরিশেষে মদ্যপান করিতে লাগিল, আরদসির দুগ্ধ ও মধু লইয়া তদ্দিগকে কহিলেন কীটকে দেও তাহারা কহিল তুমি জাইয়া কীটকেপান করাও তখন আরদসির দুগ্ধ ও মধু লইয়া আর গোপনে খানিক রাঙ্গ লইয়া ঐ কীটের নিকট উপস্থিত হইয়া রাঙ্গ গালাইয়া তাহার মুখের মধ্যে ঢালিয়া দিলেন পোকা ঐ উত্তপ্ত রাঙ্গ মুখ মধ্যে পতিত হইবায় তৎক্ষণাত প্রাণ ত্যাগ করিল তৎপরে আরদসির বাসায় আসিয়া

আপন সঙ্গি গণকে সঙ্গে লইয়া ঐ পোকার সেবাত দিগের ও দুর্গরক্ষক দিগের সকলকে বিনাশ করিয়া দুর্গোপরি অনেক কাষ্ঠ একত্র করিয়া অগ্নি প্রজ্জ্বলিত করিলেন; সেই অগ্নি দেখিয়া আরদসিরের সেনাপতি সেনা সঙ্গে করিয়া দুর্গ মধ্যে প্রবেশ করিল। দুর্গস্থ জনেক দুইজন পালাইয়া হপ্তওয়াদকে কহিল যে কথক গুলিন সওদাগর আসিয়া কীট ও পুজক ও দুর্গ রক্ষকদিগকে নষ্ট করিয়াছে হপ্তওয়াদ এই কথা শুনিয়া আপন সেনা সঙ্গে লইয়া দুর্গ মধ্যে প্রবেশ করিয়া আরদসিরের সহিত যুদ্ধে প্রবর্ত্ত হইল সেই সময় আরদসিরের সেনাপতি ঐ স্থানে আসিয়া উপস্থিত হইলে তাহাকে দেখিয়া আরদসির কহিলেন যে তোমরা সকলে একত্রিত হইয়া হপ্তওয়াদকে চতুর্দ্দিগে বেষ্টন করিয়া ধৃত কর আরদসিরের বার সহস্র সেনায় বেষ্টন করিয়া হপ্তওয়াদকে ধৃত করিলে তাহার পুত্র সাহুই ইহা শুনিয়া কথক গুলিন সেনা সঙ্গে লইয়া আরদসিরের সহিত যুদ্ধ করিতে আইল কিন্তু উপস্থিত হইবা মাত্রই তৎক্ষণাৎ ধৃত হইল। আরদসির তাহারদিগের মস্তক ছেদন করিলেন; এবং সেই খানে যত ধন সম্পত্তি ছিল তাহা লইয়া সেনা গণকে দিয়া সেই দুই যুবক পুরুষ জাহারা কিটের অনুসন্ধান কহিয়াছিল ঐ দুর্গ ও তাহার অন্তঃপাতি দেশ সকল তাহাদিগকে দিয়া আপনি ইরানে আইলেন কিয়দ্দিবসান্তরে বগদাদের বাদসাহের সঙ্গে যুদ্ধ করিয়া তাহাকে বধ করিয়া তদ্দেশ অধিকার করিলেন ॥

আরদসির আপন স্ত্রিকে বধার্থে আজ্ঞা দেন

আরদসির যখন আরদওয়ান বাদসাহকে যুর্দ্ধে নষ্ট করিয়াছিলেন তাহার দুই পুত্র পলাইয়া হিন্দুস্থানে গেল আর দুই জনকে বর্দ্ধ করিয়া রাখিলেন, এবং আরদওয়ানের এককন্যা ছিল তাহাকে বিবাহ করিয়াছিলেন; আরদসির এক দিন মৃগয়া করিতে গিয়া দিবার্দ্ধ সময়ে উৎতপ্ত রৌদ্রে দ্বারায় শ্রান্ত ও তৃষ্টা যুক্ত হইয়া বাটীতে আসিয়া আপন স্ত্রী আর দওয়ানের কন্যার নিকটে শকরোদক চাহিলেন সে তৎক্ষণাত্ একপাত্রে শর্করোদকে বিশমিশৃত করিয়া আরদসিরের হস্তেদিল, তাহার মানসএই যে আরদসিরকে নষ্টকরিয়া তাহার ভ্রতা আরদওয়ান বহমন জাহাকে আরদসির বয়েদ রাখিয়া ছিলেন তাহাকে বাদসাহ করিবেক কিন্তু দৈব যাহা হয় তাহা কেহ অন্যথা করিতে পারেনা যখন আরদসিরের হস্তে ঐ পাত্র দেয় তৎক্ষণাত্ আরদসিরের হস্ত হইতে সেই পাত্র ভূমে পডিয়া ভগ্ন হইল তাহা দেখিয়া বেগম অতিশয় ভীতা হইয়া কাঁপিতে লাগিল বাদসাহ তাহা দেখিয়াসন্দেহ যুক্ত হইয়া এক দাসিকে চারিটা মোরগ আনিতে আজ্ঞা করিলেন; সে তৎক্ষণাত্ আনিল বাদসাহ সেই দক ঔ মোরগকে পান করাইলে তাহারা তৎক্ষণাত্ মরিল। তখন বাদসাহ আপন উজিরকে ডাকাইয়া সমস্ত বিবরণ কহিয়া পরে আরদওয়ানের কন্যার মস্তক ছেদন করিতে আজ্ঞা করিলেন, উজির বেগমকে কাটিবার নিমিত্ত্য মাঠে লইয়া চলিল পথি মধ্যে বেগম উজিরকে কহিল আমি বাদসাহ হইতে গর্ব্ভ

ধারণ করিয়াছি এইক্ষণে আমাকে বধ না করিয়া প্রসবান্তে বধ করিলে উত্তম হয়, উজির এই কথা শুনিয়া বেগমকে আপন বাটিতে এক বন্ধে রাখিয়া আপন স্ত্রীকে বেগমের তত্ত্বাবধান করিতে কহিল কিছুদিন পরে বেগম এক পুত্র প্রসব হইল উজির তাহার নাম সাপুর রাখিল, যখন সাপুর সাত বৎসরের হইল তখন একদিন আরদসির বাদসাহর সভায় নৃত্যগীত হইতেছে আর নগরীয় প্রধান লোক সকল বসিয়াছে এই সময়ে উজির ছেলাম করিয়া বাদসাহির মখ কিঞ্চিৎ বিমর্ষ দেখিয়া বাদসাহকে কহিল আপনি এইক্ষণে পৃথিবীর বাদসাহ হইয়া নিস্কণ্টকে রাযা করিতেছ আর নৃত্য গীত আনন্দের সময় বিমর্ষ দেখিতেছি ইহার কারণ কি? বাদসাহ কহিলেন শুন উজির আমার বয়ক্রম একান্ন বৎসর হইল এপর্য্যন্ত অনেক যুদ্ধ বিগ্রহ ও ক্লেশকরিয়া অনেক দেশ অধিকার করিলাম কিন্তু এ সকলি বৃথা আমার এখন পর্য্যান্ত সন্তান হয় নাই আমি গতো হইলে আমার রাজ্য ধন অন্যে ভোগ করিবে বিমর্ষের কারণ এই। তখন উজির মনোমধ্যে বিবেচনা করিল যে বাদসাহর পুত্র হইয়াছে সে প্রকাশ করিবার সময় এই ইহা বিবেচনা করিয়া উজির গাত্রোত্থান করিয়া ছেলাম করিয়া কহিল হে বাদসাহ? যদি আমার প্রাণ ও অভয় আমাকে দান করেণ তবে আপনকার এমন দুঃখ দূর করিতে পারি, বাদসাহ কহিলেন এ বড় আশ্চর্য্যের কথা তুমি আমার মনদুঃখ দূর করিবে ইহার পর আর কি আনন্দ আছে ইহাতে প্রাণ ভিক্ষা ও অভয় চাহিতেছ ইহার কারণ কি? জাহা হউক আমি তোমাকে অভয়

দান দিলাম তোমার মানস জাহা থাকে তাহা বল, তখন উজির কহিল আপনার স্মরণ থাকিতে পারে বহু দিবস, হইল এক দিবস আপনি সিকার করিতে গিয়া ক্লান্ত হইয়া গহে আসিয়া আরদওয়ানের কন্যা আপনার বেগম কোন কারণ বশত তাঁহার মস্তক ছেদন করিতে আমাকে আজ্ঞা করিয়াছিলেন আমি তাঁহাকে এখান হইতে সঙ্গে করিয়া মাটে যাইবার সময়ে পথি মধ্যে বেগম আমাকে জানাই লেন যে তুম বাদসাহর আজ্ঞায় আমার মস্তক কাটিতে লইয়া যাইতেছ কিন্তু আমি এইক্ষণে গর্ভবতী হইয়াছি আমাকে এখন না কাটিয়া প্রসবান্তে কাটিলে ভাল হয়; আমি এই কথা শ্রবণ করিয়া তাহাকে না মারিয়া আমার বাটিতে এক বৃদ্ধে রাখিয়া আমার স্ত্রীকে তাহার সেবাথে নিযুক্ত করিলাম। কিছুদিন পরে বেগমের এক পুত্র হইল তাহার নাম আমি সাহপুর রাখিয়াছি, আপনকার সেই পুত্র সাত বৎ সরের হইয়াছেন, আমার প্রাণ ও অভয় চাহিবার কারণ এই যে আমি আপনকার আজ্ঞা হেলন করিয়াছি। বাদসাহ কহিলেন ওহে সত বিবেচক উজির তুমি যে কর্ম্ম করিয়াছ তাহার ফল অবস্য হইবে অনথক হইবেনা: কিন্তু আমি সেই পুত্রকে পরিক্ষা করিয়া গ্রহণ করিব; তুমি কস্য সেই বাল কের সম বয়স্ক এক সত বালক আনিয়া সকলকে সমান অলঙ্কার যস্ত্র শুসজ্জিভুত করিয়া তোমার বাটির নিকটে যে মাঠ আছে সেই মাঠে সকল বালককে গুলি দাঁড়া খেলা- ইতে দিবা, আমি সেইস্থানে গিয়া পরিক্ষা করিয়া বালক লইব। পর দিবস উজির প্রতিবাসি ও অন্যং স্থান হইতে

সাহপুরের সম বয়স্ক এক সত বালক আনাইয়া সকলকে বসন ভূসণে ভূষিত করিয়া বৈকালে মাঠে লইয়া গুলি দাণ্ডা খেলাইতে দিল; আরদসির বাদসাহ কয়েক জন সভাসত সঙ্গে করিয়া সেই খানে উপস্থিত হইয়া সাহ পুরকে দেখিয়া কহিলেন এই বালকটির মুখ আমার মুখের ন্যায় দেখি তেছি পরে এক জনকে কহিলেন তুমি বালক দিগের মধ্যে গিয়া খেলিবার গুলি আমার নিকটে ফেলিয়া দেও সে ব্যক্তি কথিতমত করিলে সকল বালক ঐ গুলি লইতে অতি বেগে ধাবনান হইয়া বাদসাহর নিকট গুলি রহিয়াছে দেখিয়া সকল বালক দাঁড়াইয়া থাকিল তাহা দেখিয়া সাহ পুর বাদসাহর নিকট আসিয়া গুলি লইয়া বালক দিগে দিলে তখন আরদসির সাহপুরকে ক্রোড়ে লইয়া চুম্বন করি য়া কহিলেন আমার পুত্র হইয়াছে কি আছে এমত বোধ আমার কখন হয় নাই কেবল এই পণ্ডিত ও সত বিবেচক উজিরের বিবেচনা দ্বারা আমি পুত্র পাইলাম পরে সাহ পুরকে লইয়া বেগমের অপরাধ মার্জনা করিয়া আপন বাটিতে লইয়া গেলেন তৎপরে পণ্ডিত দিগকে আনাইয়া সাহপুরকে রাজ নিতি প্রভৃতিবিদ্যা শিক্ষা করাইতে লাগি লেন এবং উজিরকে বিস্তর রত্নাদি দিলেন; আর টাকার উপর আরদসির বাদসাহর নাম চলিত রিত মত ছিল সেই অবধি ঐ টাকার এক দিগে বাদসাহর নাম আর এক দিগে উজিরের নাম লিখিতে আজ্ঞা করিলেন যখন সাহপুর যুবা হইল তখন উজিরকে জিজ্ঞাসা করিলেন ইহার বিবাহ কাহার কন্যার সহিত দেওয়া যায়? উজির কহিল কিদহিন্দি নামক

এক জন উত্তম গনক আছে তাহার নিকট এক জন পণ্ডিত জাইয়া এই প্রস্ন করুক সে গননা করিয়া জেমত কহিবেক সেই মত করা কর্ত্তব্য। তখন এক জন পণ্ডিত কে কিঞ্চিৎ ধন দিয়া কিদহিন্দির নিকট ঐ প্রস্ন করিয়া ও গনক জাহা গননা করিয়া কহে জানিয়া আসিতে পাঠাইলেন পণ্ডিত তাহার নিকট জাইয়া প্রস্ন করিলে গনক গননা শুভাশুভ বিচার করিয়া কহিল মেহরকের কন্যারসহিত সাহপুরের বিবাহ হইবে আমার বিচার এই হইতেছে তাহা হইলে বংশের ও রাজ্যের কুসল হইবে বাদসাহকে এইকথা কহিবা পণ্ডিত গণকের নিকট হইতে বাদসাহর সন্মুখে উপস্থিত হইয়া ঐ রূপ কহিলে বাদসাহ কহিল মেহরক আমার সত্রু ছিল তাহার কন্যার সহিত আমার পুত্রের বিবাহ কদাচ দিবনা, আর মেহরককে ও তাহার গোষ্ঠিকে যখন আমি নষ্ট করিয়াছিলাম তখন তাহার এক ছোট কন্যা ছিল সে কোথায় পালাইয়াছে তৎ কালে তাহার অনসন্ধান করিয়া পাওয়া জায়নাই আছে কি মরিয়াছে, তাহা ও কহিতে পারি না, যদি তাহাকে পাওয়া জায় তবে তাহাকে অগ্নিতে পোড়াইয়া মারিব ইহা কহিয়া একজন সরদারকে আজ্ঞা করিলেন তুমি কথক গুলিন সেনা সঙ্গে লইয়া চেহরম নগরে যে স্থানে মেহরকের বাটিছিল সেইস্থানে জাইয়া অনুসন্ধান করিয়া যদি মেহরকের কন্যা থাকে তবে তাহাকে ধরিয়া আন সরদার বাদসাহর আজ্ঞা মত চেহরম নগরে যাত্রা করিল। মেহরকের কন্যা পরম পরায় এই কথা শুনিয়া চেহরম নগর হইতে পলাইয়া কিছুদুরে এক কৃষকের বাটিতে গিয়া থাকিল

ঐ সরদার তথায় পৌছিয়া কিছুদিন থাকিয়া মেহরকের কন্যার অনেকঅনুসন্ধান করিয়া নাপাইয়া ফিরিয়া আসিয়া বাদিসাহকে জানাইল। কিয়ৎ কাল পরে আরদসির সাহাপুর কে লইয়াএক দিবস সিকার করিতে গেলেন সাহপুর এক সিকারের পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া অনেক দূর গিয়া রৌদ্রে কাতর ও তৃষ্টা যুক্ত হইয়া অতিদূরে একগ্রাম দেখিয়া সেই স্থানে উপস্থিত হইয়া এক কৃষকের আলয়েএক যুবতী শুন্দরী কূপ হইতে ডোলে জল তুলিতেছে ইহা দেখিয়া তাহাকে কহিলেন আমি অত্যন্ত তৃষ্টাযুক্ত হইয়াছি আমাকে জল দেও পান করিব, যুবতী কহিলএ কূপের জল নবণাক্ত আমার সঙ্গে আইস অন্য কূপ হইতে মিষ্ট জল দিব। সাহপুর তাহার সঙ্গে চলিলেন এমত সময়ে সাহপুরের একজন অনুচর আসিয়া পৌছিল ঐ যুবতী সেই কূপে ডোল নিক্ষেপ করিয়া টানিতে আরম্ভ করিলে সাহপুর তাহাকে কহিলেন আর কেন তুমি পরিশ্রম কর আমার ভৃত্য আসিয়াছে ইহার হস্তে ডোলের রজ্জু দেও টানিবেক। যুবতী ঐ ব্যক্তির হস্তে রজ্জু দিয়া সেইস্থানে বিশ্রাম করিল, ঐ ব্যক্তি ঐ রজ্জু ডোল পুরিত জল সহিত তুলিতে অনেক বল প্রকাশ করিল কিন্তু কোনমতে তুলিতে নাপারিয়া সাহপুরকে কহিল এ ডোল অতি ভারি আমি টানিয়া তুলিতে পারিবনা, সাহপুর কহিল এই যুবতী এই ডোলে জল তুলিতে ছিল তুমি পুরুষ হইয়া ডোল টানিতে পারিলেনা; পরে আপনি সেই রজ্জু ধারণ করিয়া বহুকষ্টে ডোলতুলিয়া যুবতীকে বিস্তর প্রশংসা

করিলেন। যুবতী কহিল ওহে সাহপুর বাদসাহ; এ কূপের মিষ্টজল পান কর, সাহপুর কহিল তুমি কি প্রকারে জানিলে যেআমি সাহপুর বাদসাহ? যুবতী কহিল আমি শুনিয়াছি সাহপুর বাদসাহ অতি বলবান্ সাধারণ লোকে এ ডোল জল পুর্ণ হইলে টানিয়া তুলিতে পারে না এই হেতু অনুমান করিলাম তুমি সাহপুর বাদসাহ হইবে। পরে সাহপুর সেই যুবতীকে কহিলেন তুমি কাহার কন্যা তোমার পিতার নাম কি তাহা সত্য করিয়া আমাকে কহ? সে কহিল আমি কৃষকের কন্যা, সাহাপুর কহিল চাসার কন্যা এমত সুন্দরী ও বলবিশিষ্টা এবং সভ্যা কখন হয় না তুমি মিথ্যা কহিতেছ, অতএব আপন পিতার নাম গোপন করা বিসিষ্ট ধারা নহে তোমার পিতা কে তাহা সত্য করিয়া আমাকে কহ? আমি ও সত্য করিতেছি তোমার মন্দ করিবনা বরং ভাল করিব, ইহা শুনিয়া ঐ যুবতী রোদন করিয়া কহিল চেহরম সহরের বাদসাহ মেহরক ছিল ইহা শুনিয়া থাকিবা আমি তাহারি কন্যা গুরু বৈগুন্য প্রযুক্ত তোমার পিতা আরদসির বাদসাহর ভয়ে ভাগা হইয়া এই কৃষির বাটিতে দাস্যবৃত্তি করিয়া কালযাপন করিতেছি। সাহপুর এই কথা শুনিয়া সেই কৃষককে ডাকাইয়া ঐ যুবতীকে বিবাহ করিবার প্রার্থনা করিলেন; কৃষি তৎখনাত সম্মত হইয়া সেই যুবতী সাহপুরকে অর্পণ করিল সাহপুর তাহাকে আপন বাটীতে আনিয়া আপনার দিগের নিয়ম মত ঐ যুবতীকে পিতার অজ্ঞাতে গোপনে বিবাহ করিয়া আপন বাটিতে রাখিলেন। কিছুদিন পরে তাহার গর্ভে এক পুত্র হইল তাহার নাম ওজমোরদ রাখিলেন, সাত

আট বৎসরের পরে আরদসির বাদসাহ সাহপুরকে সঙ্গে লইয়া সিকার করিতে চলিলেন, কিঞ্চিৎ দূরে জাইয়া দেখিলেন কথক গুলিন বালক গুলি দাণ্ডা খেলিতেছে; বাদসাহ সেই স্থানে দণ্ডাইলেন দৈবাত তাহার দিগের গুলি বাদসাহের সম্মুখে আসিয়া পড়িল কোন বালক সেখানে আসিয়া গুলি লইতে পারিলনা, তাহা দেখিয়া সাহপরের পুত্র ওজমোরদ জাইয়া গুলি আনিয়া বালক দিগ্যে দিলেন, ইহা দেখিয়া বাদসাহ উজিরকে কহিলেন এ বালকটা কাহার জিজ্ঞাসা কর? উজির তাহার নিকট গিয়া আহার পিতারনাম জিজ্ঞাসা করিল? বালক উত্তর করিলনা, উজির আসিয়া বাদসাহকে জানাইলে বাদসাহ কহিলেন ঐ বালককে আমার নিকট ডাকিয়া আন। পুনরায় উজির জাইয়া বালককে সঙ্গে লইয়া বাদসাহের নিকট আনিলে বাদসাহ তাহাকে কহিলেন তোমার পিতার নাম কি? বালক কহিল।।

সাহপুর আমার পিতা তুমি পিতা তার ঃ<br>মেহরক মাতামহ মমগুন সারদ্দার ।।

বাদসাহ এই কথা শুনিয়া বিস্ময়া পন্ন হইয়া সাহপুরকে ডাকাইয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, সাহপুর ভিত হইয়া নিরব থাকিলে বাদসাহ সাহপুরকে বিমর্স দেখিয়া তাহাকে অভয় দিয়া কহিলেন হে পুত্র? তোমার পুত্র হইয়াছে এআহ্লাদের বিশয় এতদিন একথা কেন আমাকে নাজানইয়া গোপন রাখিয়াছ, তখন সাহপুর পূর্ব্বে যে বাদসাহের সঙ্গে সিকার করিতে গিয়া কুপের জল তোলার বিবরণ এবং সেই মেহরকের কন্যাকে বিবাহ করা ও তাহারগর্ভে ওজমোরদের

জর্ম্ম হওয়া সকল বিস্তারিত করিয়া কহিলে আরদসির সকল কথা শুনিয়া তুষ্ট হইয়া বাটিতে আসিয়া নৃত্যগীতাদি করিলেন, কিছুদিনপরে সাহপুরকে বাদসাহি দিয়াপিড়িত হইয়া সর্গারোহণ করিলেন। আরদসির বাদসাহ চল্লিষ বৎসর বাদসাহি করিয়াছিলেন ॥

## সাহপুর বাদসাহের বিবরণ ॥

সাহপুর বাদসাহ হইয়া পিতা অপিক্ষা বিচার ও দান করিতে আরম্ভ করিলেন তাহাতে তাবৎ মনুস্য তুষ্ট হইয়া তাহার বসিভুত হইল, কিছুদিন পরে কর্ম্মচারিগণেরা জ্ঞাপন করিল যে কয়ছর রোম রোমের বাদসাহ পূর্ব্বে যেমত কর দিত তাহা না দিয়া বরং বজানোস নামে একজন বলবান্ ব্যক্তিকে সেনাপতি করিয়া যুর্দ্ধ করিতে আসিতেছে; সাহপুর এই বাক্য শুনিয়া গরদাম্প নামে সেনাপতিকে সঙ্গে লইয়া কয়ছর রোমের সহিত যুদ্ধ করিতে গেলেন; তাহারা সাহপুরের সেনা সন্দর্ষণ করিয়া যুদ্ধআরম্ভ করিয়া ক্ষণেক কাল পরে কয়ছরের সেনাপতি বজানোস ধৃত হইল, কয়ছর রোম তাহা দেখিয়া আপনার একজন দুত তাহার সহিত নানাবিধ উপঢৌকনীয় দ্রব্য এবং করের যে মুদ্রা বাকি ছিল তাহা দিয়া সন্ধি নির্ব্বন্ধ করিয়া আপন দেশে প্রস্থান করিল। সাহপুর ইরানে চল্লিষ বৎসর বাদসাহি করিয়া ওজমোরদকে বাদসাহিতে অভিষেক করিলেন কিয়দ্দিবস পরে সাংঘাতিক রোগে আক্রান্ত হইয়া স্বর্গে গমন করিলেন ॥

সাহপুরের পুত্র ওজমোরদ সাহ ত্রিস বৎসর
বাদসাহি করিয়া স্বর্গে গমন করিলেন ॥

তাহার পর ওজমোরদ সাহের পুত্র বহরাম সাহ
আটবৎসর বাদসাহি করিয়া লোকান্তর হইলেন ॥

তাহার পর বহারাম সাহের পুত্র বেন বহারাম সাহ
ঊনিস বৎসর বাদসাহি করিয়া স্বর্গে যাত্রা করিলেন ॥

তাহার পর তাহার পুত্র বহরাম বহরামিয়ান
চারি মাস বাদসাহি করিয়া মরিলেন ॥

তাহার পর তাহার ভ্রাতা নরছিসাহ নয়বৎসর
বাদসাহি করিয়া স্বর্গে যাত্রা করিলেন ॥

তাহার পর তাহার পুত্র ওজমোরদ নয়বৎসর
বাদসাহি করিয়া পৃথিবী ত্যাগ করিলেন ॥

ওজমোরদ সাহপুরের বিবরণ ॥

তাহারপর তাহারপুত্র ওজমোরদসাহপুর বাদসাহ হইয়া সুবিচারদ্বারা বাদসাহি করিতে লাগিলেন, কিছুদিনপরে তারের আরব নামক আরবের বাদসাহ সৈন্য লইয়া তয়ছকুন নামে ইরানের অন্তঃপাতি এক নগর সেস্থানে সাহপুর সাহের পিতৃস্বসা নরছি সাহের কন্যা নৌসা সেই নগরের রাজ্ঞি ছিল উক্ত নগর লুটকরিয়া ঐ নৌসা বেগমকে ধৃতকরিয়া আপন

দেশে লইয়া বিবাহ করিলেন; কিয়দ্দিবস গতে ঐ দৌসার এক কন্যা হইল তাহার নাম মালকা রাখিল, এখানে ওজ-মোরদ সাহপুর এই কথা শুনিয়া বহুবিধ সেনা ক্রমেশে একত্রিত. করিয়া আরব দেশে তায়ের আরবের সঙ্গে যুর্দ্ধে গমন করিয়া বহু দিবস তাহার সহিত যুদ্ধ করিয়া তাহার অনেক সেনা মারা পড়িল দেখিয়া ভিত হইয়া দুর্গ মধ্যে প্রবেশ হইয়া তৎদ্বার বর্দ্ধ করিল। সাহপুর ঐ দুর্গ বেষ্টন করিয়া রহিলেন; তায়ের আরব কোন প্রকারে পালাইতে নাপারিয়া দুর্গের ভিতর হইতে মধ্যে২যুর্দ্ধ করিত এই প্রকার একমাস যুর্দ্ধ করিল, সাহপুর সাহ এক দিবস প্রাতে দুর্গের চতুর্দিগ নিরক্ষণ করিয়া পথের অবসন্ধান করিতে গেলেন। তায়ের আরবের কন্যা মালকা সেই দুর্গের উপরিভাগে এক অট্টালিকাতে ভ্রমণ করিতেছিল, সাহপুর সাহকে দেখিয়া কামাশক্ত হইয়া আপন দাসীকে কহিল তুমি সাহপুর সাহের নিকট গিয়া কহ তিনি নরছি সাহের পৌত্র আমি নরছিসাহের দৌহিত্রি আমার মাতাকে তায়ের আরব ধৃত করিয়া আনিয়াছিল যদি আমাকে অনুগ্রহ করিয়া বিবাহ করেন তবে এই দুর্গের দ্বার খুলিয়া তাহাকে আনি, দাসি সন্ধ্যের সময় সাহপুর সাহের সৈন্য গণের নিকট গিয়া এক জনকে কহিল তুমি যদি আমাকে সাহপুর সাহের সমীপে লইয়া জাও তবে তোমাকে তুষ্ট করিব, সে সাহপুর কে জানাইয়া ঐ দাসিকে সাহপুর সাহের নিকটে লইয়া গেলে দাসি ছেলাম করিয়া মালকা যেমত২ কহিয়াছিল তাহা সাহপুরকে জ্ঞাত করিল, সাহপুর আনন্দিত হইয়া দাসীকে

অনেক অলঙ্কার বস্ত্র দিয়া বিদায় করিলেন। দাসী সাহপুর রের নিকট হইতে মালকার সর্ম্মুখে আসিয়া সাহপুরের সর্ম্মত হওয়া জানাইলেন; মালকা হৃষ্টা হইয়া পর দিবস সন্ধ্যা গতে সভা করিয়া আপনার পিতা ও সরদার দিগকে ভোজ-নার্থে আহ্বান করিয়া ভোজন করাইয়া পরিশেষে মদ্যপান করাইল ;যখন তাহারা উন্মত্ত হইয়া আপন২ গৃহে শয়ন করিতে গেল তখন মালকা আপন দাসিকেকহিল এই সময়ে তুমি দুর্গের দ্বার খুলিয়া সাহপুরকে আন' দাসি তৎখনাত্ মালকার নিকট হইতে যাত্রা করিয়া দুর্গের দ্বার খুলিয়া সাহপুর শাহর নিকট গেল; সাহপুর পূর্ব্ব বাক্যমত কথক গুলিন সেনা সঙ্গে লইয়া কোন সঙ্কেতস্থানে গোপনেছিলেন দাসি আসিবা মাত্র তাহার সঙ্গে দুর্গ মধ্যে প্রবেশ করিয়া রক্ষকদিগকে বধ করিতে আরম্ভ করিলেন এই গোলযোগে তায়ের আরব ও সরদারেরা জাগৃত হইল যদি ও তাহারা মদ্যপানে উন্মতছিল তত্রাপি যুদ্ধ করিতে অশক্ত নাহইয়া সম্পূর্ণ রূপে যুদ্ধারম্ভ করিল। সাহপুরের সেনারা অনেক সৈন্য নষ্ট করিয়া তায়ের আরবকে ধৃত করিল, এই সময়ে রাত্রি প্রভাতা হইলে মালকা দুর্গের উপর আপন বালাখা-নায় একাসনে সাহপুরের সঙ্গে বসিয়া রহিয়াছে; তায়ের আরব তাহা দেখিয়া বোধ করিল যে কন্যাই সাহপুরকে দুর্গ মধ্যে আনিয়াছে। তখন তায়ের আরব সাহপুরকে কহিল আমার কন্যা এই কাণ্ড করিয়াছে ইহার রিতী চরিত্র বিচার করিয়া কর্ম্ম করিবা ইহা হইতে তোমার কখন ইষ্টসিদ্ধ হইবে কনা। সাহপুর কহিল তুমি আমার ঘরের স্ত্রিলোক

কে আনিয়াছিলা এ নিমিত্ত্য সেই তোমার ঘর নষ্ট করিল পরে সাহপুর তায়ের আরব ও তাহার সরদারগণকে বিনাশ করিয়া তথাকার ধন রত্নাদি লইয়া মালকা ও নৌসাকে সঙ্গে লইয়াআপন অধিনস্থ লোক সেই দুগে রক্ষিত করিয়া ইরানে আসিয়া কিছুদিন শুখে বাদসাহ করিতে লাগিলেন

ওজমোরদ সাহপুর সাহর রোমদেশে বর্দ্ধ ॥

একদিন সাহপুর সাহ অকারণে অত্যন্ত ভাবিত হইলেন দিবাগতো হইল রাত্রে সয়ন করিলেন কিন্তু নিদ্রা হইলনা, রাত্র দুইপ্রহরের সময়ে অতিসয় ব্যাকুল হইয়া গণককে ডাকিতে আজ্ঞা করিলেন, গণককে দেখিয়া কহিলেন অকারণ আমার মনে নানা ভয় ও ভাবনা হইতেছে ইহার কারণ কি? গণক অনেক গণনা করিয়া কহিল অপনি অতি সিঘ্র অকারণে কিছুদিন ক্লেস পাইবেন কিন্তু প্রাণের কোনআঘাত হইবেনা, বাদসাহ কহিলেন কোন উপায়ে তাহা রহিত করাজায়না ?

গণক কহিল শুন ওহে নরপতি ।
কার সাধ্য নাড়িবেক গ্রহদের গতি ॥
বলেতে বুদ্ধিতে তাহা নাড়া নাহি জায় ।
গ্রহদ্দের ভোগ হয় ঈশ্বর ইচ্ছায় ॥

বাদসাহ ইহা শুনিয়া গণককে বিদায় করিলেন: কিছুদিন পরে মনে করিলেন রোমের বাদসাহ কিরূপ বিচার করে আর সেনা কত ও প্রজারা কিরূপ মান্য করে তাহা দেখিব, এই স্থির করিয়া একজন বিজ্ঞ এবং বলবানকে বিরলে

কহিলেন কিছু সওদাগরি দ্রব্যের আয়োজন কর, সে অতি সিঘ্র প্রস্তুত করিয়া নিবেদন করিল তখন বাদসাহ উজিরকে রাজকর্ম্ম ও রাজ্যের সমস্ত ভারার্পণ করিয়া কয়েকজন অনুচর লইয়া সওদাগরের বেশ ধারণ করিয়া রোম দেশেযাত্রা করিলেন, কয়েক দিবস পরে তথায় উত্তীর্ণ হইয়া এক সরাইতে বাসা করিলেন। পরদিবস উত্তমং দ্রব্য সঙ্গে লইয়া কয়ছর রোমের নিকট উপস্থিত হইয়া ছেলাম করিয়া উপঢৌকন প্রদান করিলেন, কয়ছর রোম জিজ্ঞাসা করিল তুমি কে?

রোমপতি কহে কহ তুমি কোন জন।
আকার প্রকারে দেখি রাজার লক্ষণ ।।
রাজা কিম্বা রাজপুত্র হইবে নিশ্চয়।
কে বটে আপনি সিঘ্র দেহ পরিচয় ।।
সাহপুর কহে আমি হই সওদাগর।
পারসির জাতি বাটি পারস নগর ।।
বানিজ্য করিয়া দেশে বিদেশে বেড়াই।
এখানে বানিয্য হেতু পরিচয় এই ।।

আমি বানিজ্য কারী নানা দেশীয় উত্তমং দ্রব্য সামীগ্র আনিয়াছি যাহা আপনার মনোনিত হয় তাহা গ্রহণ করুন; কয়ছর রোম তাহার বাক্যে তুষ্ট হইয়া অনেক কথপ কথন করিয়া খাদ্য দ্রব্য আনাইয়া আহার করিতে কহিলেন, সাহপুর আহার করিতে বসিলেন ঐ সময়ে একজন সভায় আইল সে সাহপুরকে জানিত; সাহপুরসাহ আহার করিতেছেন

দেখিয়া কয়ছর রোমের নিকট গিয়া কহিল এই যে বণিক বেশে আহার করিতেছে এ ব্যক্তি ইরানের বাদসাহ ইহার নাম ওজমোরমু সাহপুরসাহ। কয়ছর রোম তাহার রিতী চরিত্র আকার প্রকার দেখিয়া সন্দিগ্ধ হইয়াছিল তাহার বাক্য শুনিয়া বিস্ময় হইয়া অন্য কাহাকেও কিছু না কহিয়া রক্ষক গণকে কহিলেন ঐ যে সওদাগর আহার করিতেছে উহার নাম সাহপুর সাহ ইরানের বাদসাহ; যখন আমার নিকট হইতে বিদায় হইয়া বাসায় যাইবেক তখন উহাকে ধৃত করিবা। সাহপুর আহার করিয়া কয়ছরের সমীপে আসিয়া বাসায় জাইতে বিদায় হইলেন; এমত সময়ে রক্ষকেরা তাহার হস্ত ধারণ করিয়া কহিল তুমি কোথা জাইবা তুমি সাহপুর সাহ আমার বাদশাহর দেশের অনুসন্ধান করিতে আসিয়াছ তোমাকে ছাড়িবনা, ইহা কহিয়া সাহপুর সাহর দুই হস্ত বন্ধন করিয়া কয়ছর রোমের নিকটে লইয়া গেল, কয়ছর রোম তাহার পায়ে লৌহ সৃঙ্খল দ্বারা বর্দ্ধ করিয়া আপন বাটীর মধ্যে এক গৃহে চাবি দিয়া রাখিলেন, পরে আপন বেগমকে ডাকিয়া চাবি তাহার হস্তে দিয়া কহিলেন এই কয়েদি ব্যক্তিকে প্রাণ ধারণ উপযুক্ত আহার দিবা এই কহিয়া রক্ষক গণকে কহিলেন সাহপুরের বাসায় যে সকল মনুস্য আছে তাহার দিগকে আনিয়া কারাগারে বর্দ্ধ করিয়া রাখ। ইহা কহিয়া সসৈন্যে ইরান দেশে লুট করিতে গমন করিলেন। কয়ছরের বেগম ঐ চাবি তাহার প্রধান দাসী ইরানি এক যুবতী ছিল তাহাকে দিয়া ঐ কয়েদীকে আহার দিতে আজ্ঞা করিলেন; সে প্রত্যাহ

সাহপুরকে খাদ্য দিব্য দিতে জাইত কিন্তু সর্ব্বদা সাহপুরকে খিদ্যমান ও রোদন করিতে দেখিয়া এক দিবস কহিল তুমি সর্ব্বদা রোদন কর ইহার কারণ কি আর তুমি কে কি অপরাধে কয়েদ হইয়াছ তাহা বল? সাহপুর কহিল যদি দয়া করিয়া জিজ্ঞাসা করিলে যদ্যপি ধর্ম্মতঃ সত্য কর এ কথা প্রকাশ করিবানা তবে আমার বৃত্তান্ত কহি? সেই যুবতী ইহা শুনিয়া সত্য করিয়া কহিল তোমারকথা প্রকাশ করিব না বরং তোমার যাহাতে ভালহয় তাহার চেষ্টা করিব; তখন সাহপুর কহিল আমি ইরানের বাদসাহ সাহপুর, সওদাগরি করিতে এ দেশে আসিয়া ছিলাম কয়হর রোম তাহার নিকট এই কথা শুনিয়া আমাকে বর্দ্ধ করিয়া ইরান দেশ লুট করিতে গিয়াছে, যদি তুমি আমাকে এই বন্ধন হইতে মুক্ত করিয়া আমার সঙ্গে জাও তবে তোমাকে ইরানের প্রধান বেগম করিব। ইহা শুনিয়া সেই যুবতী কহিল আমি সিঘ্র তোমাকে কয়েদ হইতে মুক্ত করিব, আর সেই দিবস অবধি উত্তম খাদ্য দ্রব্য সাহপুরকে দিত এই রূপে পোনের দিবস গতো হইলে সাহপুরকে কহিল কল্য নগর প্রান্তে এক মাঠে কোন উৎসবোপলক্ষে দেশস্থ মনুস্য প্রায়সকলেই জাইবেক; এবং আমার দিগের বেগম তাহা দেখিতে গমন করিবেন কেবল আমি এখানে একাকি থাকিব আর তোমার রক্ষকেরা ও রাজ বাটির রক্ষকেরা প্রায় সকলে বেগমের সমভিব্যবহারে জাইবেক।

নিশ্চয় জানিও তুমি ওহে নরপতি।
কল্য আপনাকে আমি দিব অব্যাহতি

আমাকে লইয়া যেতে হবে মহারাজ।
বিসম্রতি নাহবে তুমি সাধি নিজ কায॥

এই কহিয়া আপন বাটিতে জাইয়া উত্তম সুশিক্ষিত দুই ঘোটক ও দুই সেপাহির পরিচ্ছদ ও অস্ত্রাদি আনিয়া প্রস্তুত করিয়া রাখিল, পর দিবস প্রাতে বেগম মেলা দেখিতে গেলেন সেনা ও রক্ষকেরা অনেক তাঁহার সঙ্গে গেল, সেই যুবতী শুন্যাগার দেখিয়া সাহপুরের নিকট আসিয়া তাহাকে কারাগার হইতে মুক্ত করিয়া দুইজনে সেপাহির বেশ ও অস্ত্রাদি ধারণ করিয়া দুই ঘোটকে আরোহণ করিয়া ইরানে যাত্রা করিলেন। কয়েক দিন দিবা রাত্রি গমনে শ্রান্তযুক্ত হইয়া অতি দুরে এক গ্রাম দেখিয়া সেই দিগে গিয়া সন্ধের সময় এক উদ্যান দ্বারে পৌছিয়া সব্দ করিলে মালি দ্বার খুলিয়া দুইজন অশ্বারোহি শ্রান্ত যুক্ত দেখিয়া কহিল আপনারা কে কোথা হইতে আইসে কোথা যাইবা সাহপুর কহিল আমরা ইরানি মৃগয়া করিতে গিয়াছিলাম পথ ভ্রমে অনেক স্থানে ভ্রমন করিয়া অত্যন্ত ক্লান্ত হইয়াছি যদি এই রাত্রে আমারদিগের প্রতি অনুগ্রহ করিয়া আপন বাটিতে স্থান দেও তবে চির বাধিত হইব। মালি সিষ্টাচারি করিয়া কহিল এ তোমারি ঘর স্বচ্ছন্দে রাত্রি যাপন কর, তখন দুইজনে ঘোটক হইতে নামিয়া মালির এক গৃহে থাকিলেন, মালির স্ত্রি কিছু খাদ্য দ্রব্য প্রস্তুত করিয়া দিল সাহপুর আহার করিয়া মালিকে ইরানের সংবাদ জিজ্ঞাসা করিলে মালি রোদন করিতে২ কহিল কয়ছর রোম আসিয়া ইরান লুট করিয়া আর অনেক লোককে নষ্ট ও ধৃত্ত করিয়া

লইয়া গিয়াছে। সাহপুর কহিল ইরানের বাদসাহ সাহপুর কোথা গিয়াছে? মালি কহিল সাহপুর সাহ প্রাণে আছেন কি মরিয়াছেন তাহার সন্ধান কেহু কহিতে পারেনা; কিন্তু তাহার সঙ্গে যে সকল লোকছিল তাহারা রোমদেশে কয়েদ আছে শুনিয়াছি, এই কথা কহিয়া মালি অনেক খেদ ও রোদন করিলে সাহপুর কহিল তুমি ধৈর্য্য হও আমি পথি মধ্যে শুনিয়াছি দুইতিন দিবসের মধ্যে সাহপুর সাহ আপন দেশে আসিবেক। প্রাতে মালি সাহপুরকে অনেক সিষ্টাচারি করিয়া কহিল তোমার বাসার যোগ্য এ কাঠর নয় ॥ সঙ্কটে পড়িয়া বাস করিলে হেথায় ॥ মালি এক ফুলের তোড়ারাসাহপুরকে দিল সাহপুর মালিকে কহিলেন সাহপুর সাহর উজির এইক্ষণে কোথায় তুমি জ্ঞাত আছো? সে কহিল উজির আপন বাটিতে আছে, পরে মালিকে কহিলেন কিঞ্চিৎ কাগজ আন মালি কাগজ আনিয়া দিলে সাহপুর ঐ কাগজে সেই ফুলের তোডরা আচ্ছদন করিয়া আপনার মোহর চিহ্ন করিয়া কহিলেন এই কাগজ সহিত তোডরা উজিরের হস্তে দিয়া সে জাহা কহে আমাকে আসিয়া কহ ॥ মালি ঐ তোডরা লইয়া উজিরকে দিলে উজির বাদসাহর মোহর দেখিয়া আনন্দিতহইয়া মালিকেকহিলেন এ তোডরা কাহার নিকট হইতে আনিয়াছ; এবং যে ব্যক্তি তোমাকে দিয়াছে সে কোথায় আছে? মালি কহিল একজন অশ্বা রোহি এক যুবতীকে সঙ্গে করিয়া গতো কল্য সন্ধ্যার সময়ে আসিয়া আমার বাটিতে আছে। উজির ইহাশুনিয়া একজন সরদারকে মালির সঙ্গে সাহপুরকে দেখিতে পাঠাইলেন,

মালি তাহাকে আপন বাটিতে লইয়া সাহপুরকে কহিল উজির এক লোক পাঠাইয়াছে, সাহপুর তাহাকে ডাকিয়া উজিরকে আনিতে কহিলেন সে ছেলাম করিয়া বিদায় হইয়া উজিরকে আসিয়া কহিল সাহপর সাহ আসিয়াছেন আপনাকে সরণ করিয়াছেন, তখন উজির সরদার দিগকে সঙ্গে লইয়া মালির বাটিতে গিয়া বাদসাহর সহিত সাক্ষ্যাত করিলেন। বাদসাহ উজিরকে আলিঙ্গন দিয়া ও সরদার দিগকে সমাদর পূর্ব্বক বসাইয়া কয়ছর রোমের বাটিতে যে প্রকার বর্দ্ধ হইয়াছিলেন ও বেগমের প্রধান সয়লিনী যে প্রকারে মুক্ত করিয়াছে তাহা সমুদয় কহিয়া আজ্ঞা করিলেন তোমরা সীঘ্র কথক গুলিনসেনা প্রস্তুত কর: সরদারেরা আজ্ঞা মত কথক গুলিন সেনা সংগ্রহ করিয়া কহিল, বাদসাহ কয়েক জন মনুস্য রোম দেশে পাঠাইলেন তাহারা তথায় গিয়া তত্ত্ব জানিয়া কহিল যে কয়ছর রোম দিবা রাত্রে নৃত্য গীত বাদ্য ও মদিরা পানে মত্ত আছে আর তাহার সরদার ও সেনারা কে কোথায় তাহার সন্ধান কেহু জিজ্ঞাসা করেনা সাহপুর এই কথা শুনিয়া বারসহস্র সেনা লইয়া রোমদেশে যাত্রা করিলেন। কয়েক দিবস গত হইলে রোমে পৌছিয়া সেনা গণকে আজ্ঞা করিলেন যে জাহাকে দেখিবা তাহাকে তৎক্ষণাত নষ্ট করিবা তাহারা ঐ মত করিল। কয়ছর এই সংবাদ শুনিয়া আপন নগরে যে সেনা ছিল তাহা একত্র করিয়া যুর্দ্ধ করিতে প্রবৃত্তহইল, সাহপুর রোমের অনেকসেনা কে বিনাশ করিয়া কয়ছর রোম ও তাহার সরদার দিগকে কয়েদ করিলেন। কয়ছর রোমকে বান্ধিয়া বাদসাহর

নিকটে আনিত হইলে তাহাকে কহিলেন আমি তোমার দেশে বাণিজ্য করিতে আসিয়া ছিলাম তুমি আমাকে বিনা অপরাধে কি নিমিত্ত্য কয়েদ করিয়া ছিলে ইহাতে বোধ হইতেছে তোমার রিতী এই যে বিদেশি ও সওদাগর লোক তোমার দেশে আইসে তাহার দিগেকে কয়েদ করিয়া ধন সম্পত্তি লুটিয়া লও। কয়ছর রোম অনেক বিনয় পূর্ব্বক কহিল যে আমার অপরাধ হইয়াছে ক্ষেমা কর, এই তোমার নিকট প্রতিজ্ঞা করিতেছি যে যত দিন জীবিত থাকিব তত দিন তোমায় আজ্ঞাবহ হইয়া রহিব। সাহপুর কহিল তুমি ইরান দেশে আইয়া সে দেশ লুটিয়া পুড়িয়া উচ্ছন্ন কেন করিলে এবং তথাকার প্রজাগণ কেন নষ্টকরিলে? ইহা শুনিয়া কয়ছর রোম নিরব হইয়া থাকিল তখন তাহার দুই কর্ণ ছেদন ও নাসিকা ছিদ্র করিয়া তাহাতে রজ্জু সংযোগ করিয় এবং দুই পদে লোহার বেড়ি দিয়া কয়েদ রাখিলেন কয়ছরের কনিষ্ট ভ্রাতা বাবছ এই কথা শুনিয়া কথক গুলিন সেনা সঙ্গে করিয়া যুর্দ্ধ করিতে আইল সাহপুর তাহা দেখিয়া আপন সেনা লইয়া তাহার প্রতি আক্রমন করিলেন সাহাপুরের অনেক সৈন্য দেখিয়া সে পলায়ন করিল তাহার পর বজানোস নামক এক সরদার সন্ধি করিবার নিমিত্ত্য পত্র লিখিয়া পাঠাইল। সাহপুর তাহাকে ডাকাইয়া করের নিয়ম নিরূপণ করিয়া বজানোসকে রোমের বাদসাহ করিয়া আপনি ইরানে আসিয়া শুখে কাল যাপন করিতে লাগিলেন কয়ছর রোম কিছু কাল পরে কারাগারে প্রাণত্যাগ করিলেন এই সময়ে মানি নামক একজন চিত্র কর চিন দেশ হইতে

আসিয়া সাঁহপুরের সহিত সাক্ষ্যাত করিয়া চিত্র বিদ্যার দ্বারা বাদসাহকে বাধ্য করিয়া শেষে কহিল আমি ঈশ্বরের পেগম্বর; অর্থাৎ অবতার বাদসাহ এই কথা শুনিয়া পণ্ডিত দিগকেডাকাইয়া ধর্ম্মসাস্ত্র মত বিচার করিয়া তাহার সরিরের চামড়া খুলিয়া লইতে আজ্ঞাকরিলেন যেমনস্য হইয়া এরূপ অবতারআপনাকে প্রকাশ করিবে তাহার এইরূপ দণ্ডহইবে যখন সাহপুর সত্তরী বৎসর বাদসাহি করিলেন তাহার এক পুত্র অতি বালকাছিল এঁনিনিত্ত্য আপনার কনিষ্ট ভ্রাতা আর দসিরকে কহিলেন যদি তুমি সত্য কর আমার পুত্র উপযুক্ত হইলে তাহাকে বাদসাহি দিবা, আর তুমি তাহার উজির থাকিবা তবে এইক্ষণে তোমাকে বাদসাহ করি। আরদসির এতৎবাক্য স্বিকার করিল তখন আরদসিরকে বাদসাহিতে অভিসেক করিলেন। ওজমোরদ সাহপুর সত্তরী বৎসর বাদসাহি করিয়া সর্গারোহণ করিলেন ॥

---

## সাহপুররের ভ্রাতা আরদসির বাদসাহি

আরদসির বাদসাহ দস বৎসর বাদসাহি করিয়া যখন সাহপুরের পুত্র উপযুক্ত হইল তাহাকে বাদসাহ করিয়া আপনি উজির হইলেন ॥

সাহপুর বেন সাহপুর বাদসাহ হইয়া পৈত্রিক রিতীমত দান ধ্যান আচার বিচার করিতে আরম্ভ করিলেন৹ পাঁচ বৎসর চারিমাস পরে এক দিবস সরদারদিগকে সঙ্গে লইয়া সিকার করিতে গিয়া সমস্তদিন সকলে সিকার করিয়া সন্ধের পর আহার করিয়া আপন২ শিবিরে সকলে সয়ন করিলেন,

রাত্র দুই প্রহরের সময়ে অত্যন্ত ঝড় আরম্ভ হইয়া বাদসাহের শিবিরের স্তম্ভ ভগ্ন হইয়া বাদসাহের মস্তকে পতিত হইয়া মস্তক চূর্ণ হইল তাহাতেই বাদসাহের মৃত্যু হইল ॥

## বহরাম সাহপুরের বাদসাহি

তাহার পর তাহার পুত্র বহরাম সাহপুর বাদসাহ হইয়া চন্দ্দবৎসর বাদসাহি করিয়া পীড়িতহইয়া মরিলেন, তাঁহার এক কন্যা ও ভ্রাতা এজদ্দ জোরদ সাহপুরছিল তাহাকে বাদ সাহ করিয়া লোকান্তর্গত হইলেন ॥

## এজদ জোর্দ সাহপুরের বাদসাহি

এজ্দ জোরদ সাহপুর বাদসাহ হইয়া পৈত্রিক নিতী ত্যাগ করিয়া অতি দৌরাত্ম্য ও অন্যায় আরম্ভ করিলেন। কিছু দিন পরে তাহার এক পুত্র হইল তাহার নাম বহরাম রাখি- লেন। মন্দজ নামক একজন পণ্ডিতকে আনাইয়া বহরামকে রাজনীত ধর্ম্ম সাস্ত্র আদি সিক্ষ্যা করিতে দিলেন, যখন বহ রাম পণ্ডিত হইল তখন আপন পিতার সহিত সাক্ষ্যাত করি তে আইল, এজ্দ জোরদ সাহপর বহরামকে কয়েদ করিয়া রাখিলেন। একবৎসরেরপর বহরামকে মুক্ত করিয়া ঐমন্দজ পণ্ডিতের সহিত এমন দেশে পাঠাইলেন; কিছুকাল পরে বাদসাহের নাসারন্ধ্রহইতে রক্তশ্রাব পীড়া হইল তন্নিমিত্তে অনেক ঔষধ করিলেন তত্রাচ কিঞ্চিৎ ছকিতরহিল সাম্যক রূপে আরোগ্য হইলনা। কিয়ৎকাল পরে বাদসাহ এক দিবস

সমুদ্রের তীরে ভ্রমন করিতে গিয়া নানা স্থানে নানা প্রকার কৌতুক সন্দর্শন করিতেছেন, এমৎ সময়ে সমুদ্র হইতে অতি সুন্দর এক ঘোটক তটে আসিয়া চরিতে লাগিল, তাহা দেখিয়া বাদসাই সেনাগণকে কহিলেন সকলেমিলিত হইয়া এই সমুদ্রীয় ঘোটককে ধৃত করিয়া আন ইহা শুনিয়া সকলে জাইয়া সেই ঘোটককে ধরিয়া তাহার মুখে লাগাম ও পৃষ্ঠে জিন বান্ধিয়া বাদসাহের নিকটে আনিল, বাদসাহ ঐ ঘোটক দেখিয়া অতিসয় সন্তুষ্ট হইয়া সেই অশ্বোপরি আরোহণ হই লেন, বাদসাহ আরোহণ করিলে সেই ঘোটক অত্যন্ত লম্প ঝম্প করিয়া বাদসাহকে ভূমে নিক্ষেপ করিয়া তাঁহার বক্ষ স্থলে এতদ্রূপ পদাঘাত করিল যে তাহাতেই বাদসাহ তৎ ক্ষণাত প্রাণ ত্যাগ করিলেন। এবং ঘোটক লম্ফ দিয়া সমুদ্রে পড়িয়া জল মধ্যে প্রবেশ করিল আর কেহ দেখিতে পাইলনা এজদ জোরদ সাহপুরসাহ মরিলে সরদারেরাদেখিয়া তাহার মৃত্যুদেহ লইয়া গোর দিলেন॥

---

## খোছরো বাদসাহের বিবরণ ॥

এজদ জোরদ সাহপুর সাহর মৃত্যু হইলে সকল প্রধান ও সর দারেরা একত্র হইয়া পরামর্স করিলেন যে এজদ জোরদ বাদসাহ অতি দুরাত্মা ছিল তাহার পুত্র বহরামও সেইরূপ হইবেক সে এমন দেশে আছে তাহাকে আমরা বাদসাহ করিবনা, এইস্থির করিয়া ঐ রাজবংশীয় খোছরো নামক একবৃদ্ধছিল তাহাকে ইরানের বাদসাহ করিল। কিছুদিন পরে বহরাম আপন পিতার মৃত্যু ও খোছরোকে সরদারেরা

অক্য হইয়া বাদসাহ করিয়াছে এই সংবাদ পাইয়া ইরানের সরদারদিগকে এই প্রকার এক পত্র লিখিল যে আমি শুনিলাম এজ্‌দ জোরদ সাহপুর বাদসাহের মৃত্যু হইলে আমি দেশে আছি তাহা তোমরা সকলে জ্ঞাতথাকিয়াও আমাকে কোন সম্বাদ নাকরিয়া খোছরোকে বাদসাহ করিয়াছ ইহার কারণ কি? সরদারেরা ঐ পত্র পাইয়া সকলে পরামর্স করিয়া উত্তর লিখিল যে বাদসাহ মরিলে তক্ত খালি হওয়াতে অতিশয় গোলযোগ উপস্থিত হইল এ নিমিত্ত্য বাদসাহের বংসীয় একজন খোছরো নামছিল তাহাকে সকলে অক্য হইয়া বাদসাহ করিয়াছি, এই পত্র লিখিয়া জওয়ানুই নামক একজন পণ্ডিত দ্বারা পাঠাইল; সে বহরামের নিকট গেলে বহরাম তাহাকে মন্দজ পণ্ডিতের নিকট ( সে বহরামের শিক্ষ্যা গুরু এবং উজিরছিল ) তাহার নিকট পাঠাইলেন। সে পত্র জ্ঞাত হইয়া জওয়ানুইকে কহিল বহরাম পাণ্ডিত্যাবিজ্ঞ ও সত বিবেচক এবং মহা বলবান থাকিতে খোছরোকে কেন তোমরা তক্তে বসাইলে যদি তোমরা বহরামকে বাদসাহ স্বিকার নাকর তবে আমরা অতি সিঘ্র যুদ্ধ করিব জওয়ানুই কহিল তোমরা মৃগয়ার ছলে সসৈন্যে বহরামকে লইয়া ইরানে গমন কর। সেই স্থানে সকল সরদারকে ডাকাইয়া পরামর্স করিয়া বহরামকে তক্তে বসাইবে এই যুক্তি স্থির করিয়া জওয়ানুই বিদায় হইল। মন্দজ ত্রিস সহস্র সৈন্য সংগ্রহ করিয়া বহরামকে সঙ্গে লইয়া মৃগয়ার ছলে ইরানে যাত্রা করিল, যখন বহরাম ইরানের সন্নিকট চেহরম নগরে পৌছিয়া শিবির

স্থাপিতকরিল ইরানের সরদারেরা এওয়ানুই মুখেশুনিয়া অতিসয় চিন্তিত হইয়া সৈন্য লইয়া মাঠে আইল, তখন বহরাম মন্দজকে কহিল এখন যুর্দ্ধ করা কি সরদার. দিগকে ডাকিয়া তাহার দিগের অভিপ্রায় জানা কর্ত্তব্য? মন্দজ কহিল তাহারদের ডাকাইয়া জিজ্ঞাসা করিলে যেমত কহিবে সেইমত কর্ম্ম করিব বহরাম এক জন বিজ্ঞব্যক্তিকে ইরানের সরদারদিগকে ডাকিতে পাঠাইলেন, পরদিবস প্রাতে সমস্ত সরদার একত্র হইয়া বহরামের নিকট আইল বহরাম তক্তে বসিয়া সরদার দিগের আসিতে আজ্ঞা দিলেন; তাহারা গিয়া রিত মত ছেলাম করিয়া দণ্ডয় মান হইল তখন বহরাম তাহাদিগকে সমাদরপূর্ব্বক বসা ইয়া কহিলেন ওহে পণ্ডিতেরা আমার পৈত্রিক ইরানের বাদ সাহি আমাকে ত্যাগ করিয়া অন্যকে কেন স্থাপিত করিলে? তাহারা কহিল আমরা আপনাকে বাদসাহ করি এমত বাস না নয় কারণ তোমার পিতা অতিদুরাত্মা হইয়া অনেক দৌ রাত্ম্য করিয়া ছিলেন তুমি তাহারি সন্তান এই নিমিত্ত্য অন্য কে বাদসাহ করিয়াছি, তোমারপিতা অকৃতঅপরাধে কাহার হস্ত কাহার পদ কাহার নাসা কাহার কর্ণ কাহার প্রাণ দণ্ড করিয়াছেন, কাহার বাড়ি ঘর ভাঙ্গিয়া দেশ হইতে দুরকরিয়াছেন। বহরাম শুনিয়া পিতাকে অনেক নিন্দা করিয়া কহিল আমি তোমাদিগের মত ভিন্ন কোন কর্ম্ম করিবনা; আর এক গৃহে তক্ত ও তাহার উপর তাজ রাখি য়া সেই গৃহে দুইটা ব্যাঘ্রছাড়িয়া দেহ, পরে খোছরো আর আমি সেই গৃহে প্রবেস করিয়া যে তাজ লইতে পারিবেক

সেই বাদসাহ হইবেক এই নিয়ম কর, সরদারেরা এতৎ শ্রবণে কহিলেন যে আমরা ধর্ম্মত সত্য করিয়া খোছরকে বাদসাহ করিয়াছি এখন তাহার বেতিক্রম কি প্রকারে করিব, কিন্তু আপনকার বাক্য দ্বারা প্রতীত হইতেছে যে আপনি বিজ্ঞ আপনাকে এখন বাদসাহ করিতে মানস হয়, এই ব্যাঘ্রের যে কথা আপনি প্রস্তাব করিলেন এই উপলক্ষ করিয়া খোছরোকে কহিয়া যাহা হয় কল্য আসিয়া কহিব। এই কহিয়া তাহারা বিদায় হইয়া ব্যাঘ্রের কথা খোছরোকে কহিলে সে কহিল বহরাম যদি ব্যাঘ্রের মধ্য হইতে তাজ লইতে পারে তবেতাহাকেই বাদসাহি করা উচিত, আমি গৃহে বসিয়া ঈশ্বরের ভজন করিব। পরদিবস তাহারা এই কথা বহরামের নিকটগিয়া জানাইলেন বহরাম দুইটা বৃহদ ব্যাঘ্র লোক দ্বারা আনাইয়া এক গৃহে তক্তের উপর তাজ রাখিয়া সেই গৃহে দুইটা ব্যাঘ্রকে ছাড়িয়া দ্বার বন্ধ করত সরদারদিগে কহিল এই গৃহ মধ্যে তাজ তক্ত ও ব্যাঘ্র রহিল এখন কি কর্ত্তব্য? সরদারেরা কহিল খোছরো এবং আপনি দুইজন উপস্থিত আছেন দুইজনার মধ্যে যে ব্যাক্তি ব্যাঘ্র মধ্য হইতে তাজ আনিয়া মস্তকে দিবেন তিনি ইরানের বাদসাহ হইবেন, ইহা শুনিয়া আর সেই দুই ব্যাঘ্র দেখিয়া খোছরো কহিল আমি বৃদ্ধ হইয়াছি আর বাদসাহির প্রার্থিত ছিলাম না তোমরা আমাকে আনিয়া বাদসাহ করিয়াছ, বহরাম যুবা এবং তাহারিপৈত্রিক এ বাদসাহি তিনি তাজ লইলে আমি তুষ্ট হইয়া ঈশ্বরের আরাধনায় মগ্ন হইব। বহরাম ইহা শুনিয়া কহিল এ কথা যথার্থ আর

ব্যাঘের সহিত স্পর্দ্ধা করা আমার কর্ম্ম বটে ইহা কহিয়া এক গদা হস্তে লইয়া উঠিল. তখন সরদারেরা কহিলেন হে বাদ সাহ, তাজ তক্তের প্রত্যাশায় ব্যাঘের মুখে জাওয়া কর্ত্তব্য নহে আমরা এ কর্ম্ম করিতে কহি নাই যদি দৈবে কোন ব্যাঘাত হয় তবে তাহাতে আমার দিগের কোন অপরাধ নাই

বহরাম কহিল শুন ওহে খিজুগণ।
ইহাতে কাহার দোষ নাহি কদাচন॥

বহরাম তাজ লইতে ঐ গৃহ মধ্যে প্রবেস করিলে একটা ব্যাঘ তাড়া করিয়া আইলে বহরাম তাহার মস্তকে এক গদা প্রহার করিল তাহাতে সে ব্যাঘ তৎক্ষণাৎ মরিল পরে আর একটা ব্যাঘ আসিয়া বহরামের উপর পড়িলে বহরাম তাহার মাথায় একগদা প্রহারকরিল তাহাতেব্যাঘের মস্তক ভাঙ্গিয়া চক্ষু বাহির হইয়া পড়িল তখন বহরাম তক্তের উপর বসিয়া তাজ মস্তকে রাখিল, খোছরো ও সরদারেরা দেখিয়া ধন্য২ করিয়া নানাবিধ রত্ন আনিয়া জৌতুক দিয়া সকলে অক্য হইয়া বহরামকে ইরানের বাদসাহ করিলেন, খোছরো ঈশ্বর আরাধনা করিয়া কিছু কাল পরে স্বর্গারোহণ করিলেন

বহরাম গোর বাদসাহের বিবরণ॥

বহরাম গোর বাদসাহ হইয়া বহুবিধ দান দ্বারা জন সমাজে প্রশংসিত হইলেন. এবং বহরাম সাহ শিকার প্রিয় ছিলেন এতন্নিমিত্ত্য আপন কনিষ্ঠ ভ্রাতা নরছি সাহকে রাজ্যের ভারর্পণ করিয়া আপনি সর্ব্বদা মৃগয়ার্থ হইয়া ভ্রমণ করিতেন, একসময়ে আপনি বহরামসাহের উকিল হইয়া

হিন্দুস্থানের বাদসাহের নিকট গিয়া এক ব্যাঘ্র ও এক অজাগর মারিয়া তাহার কন্যাকে বিবাহ করিয়া ইরানে আসিয়া তৃষষ্টি বৎসর বাদসাহি করিয়া আপন পুত্র এজ্দ জোরদ বহরামকে রাজ্যে অভিসিক্ত করিয়া আপনি স্বর্গারোহণ করিলেন ॥

## এজ্দ জোরদ বহরাম সাহের বিবরণ ॥

এজ্দ জোরদ বহরাম বাদসাহ হইয়া প্রজার পালন ও দান আদি সর্ব্বদা করিতেন, আঠারো বৎসর বাদসাহি করিয়া পরে অতিসয় পিড়িত হইয়া আপন পুত্র হোরমজকে বাদসাহ করিয়া সাতদিন পরে প্রাণ ত্যাগ করিলেন ॥

## হোরমজ সাহের বিবরণ ॥

হোরমজ সাহ তক্তে বসিয়া একবৎসর বাদসাহি করিলেন তাহার পর তাহার জেষ্ঠ ভ্রাতা পিরোজ সাহ হয়তাল দেশের বাদসাহের নিকট জাইয়া তাহার সহিত মিলিত হইয়া তাহার সৈন্য লইয়া হোরমজ সাহের সঙ্গে যুদ্ধকরিয়া তাহাকে কয়েদ করিয়া পিরোজ সাহ ইরানের বাদসাহ হইয়া ক্রমে তুরানের অনেক দেশ করস্থ করিয়া লইলেন। তুরানের বাদসাহ খোস নওয়াজ সাহ ইহা শুনিয়া পিরোজসাহকে লিখিল যে তুমি তোমার পিতামহ বহরাম সাহের নিয়ম পত্র অন্যথা করিয়া তুরানের অন্তঃপাতি দেশ সকললইতেছে। পিরোজ সাহ এই পত্র পাইয়া রাগাসক্ত হইয়া আপন সৈন্য লইয়া তুরানে আক্রমন করিয়া খোসনওয়াজ সাহের সঙ্গে যুদ্ধ করি

লেন। খোসনওয়াজ অনেক যুদ্ধ করিয়া পিরোজ সাহকে মারিয়া ও তাহার এক পুত্র ও সরদারদিগকে কয়েদ করিয়া রাখিল, তাহা শুনিয়া পিরোজ সাহর আর এক পুত্র বেলা-ছান সাহ অনেক সেনা সঙ্গে লইয়া খোসনওয়াজ সাহর সহিত যুদ্ধ করিতে তুরানে যাত্রা করিলেন, খোসনওয়াজ সাহ এই সংবাদ পাইয়া আপন সেনা লইয়া বেলাছানসাহর সহিত যুদ্ধে পরাভব হইয়া বেলাছান সাহর সহিত সন্ধিকরণার্থে এক পত্র লিখিলেন। বেলাছান সাহ ঐ পত্র পাইয়া লিখিল আমার যেং লোককে তুমি বদ্ধ রাখিয়াছ তাহাদিগকে মুক্ত করিয়া দেও আর আমার পিতা যেং দেশ লইয়া-ছিলেন তাহা যদি ত্যাগকর তবে আমি তোমার সহিত সন্ধি করিব। খোসনওয়াজ সাহ তাহা স্বিকার করিয়া বেলাছান সাহর সহিত সন্ধি করিলেন; বেলাছান সাহ ইরানে আসিয়া কিছুদিন বাদসাহি করিয়া আপন কনিষ্ঠ ভ্রাতা কোবাদ সাহকে ইরানের বাদসাহ করিয়া আপনি ঈশ্বরের ভজনায় নিযুক্তথাকিয়া পরিশেষে মায়াময়দেহ ত্যাগ করিয়া নিত্যধামে গমন করিলেন ॥

কোবাদ বাদসাহর বিবরণ ॥

কোবাদ ইরানের বাদসাহ হইয়া কিছুদিন পৈত্রিক নিয়ম মত বাদসাহি করিয়া পরে অত্যন্ত দৌরাত্য আরম্ভ করিল এ নিমিত্ত্য ইরানের সকল লোক তেক্ত হইয়া সরদার দিগের সহিত ঐক্য হইয়া কোবাদ সাহকে কয়েদকরিয়া তাহার কনিষ্ঠ ভ্রাতা ছুরমংরাজ সাহকে ইরানের বাদসাহ করিল কোবাদ সাহ কোন উপায় দ্বারা কারাগার হইতে পালাইয়া

ইয়ত্তাল দেশের বাদসাহের নিকট গমন করিল, পথিমধ্যে এক সামান্য লোকের বাটিতে উত্তিষ্ঠ হইয়া তাহার কন্যাকে বিবাহ করিয়া কিছুকাল সেই স্থানেবাস করিল, যখন তাহার স্ত্রি গর্ব্ববতী হইল তখন সে স্থান হইতে হয়তাল সাহের নিকট গিয়া আত্ম বিবরণ তাহাকে জানাইয়া তাহার সেনা লইয়া ইরান দেশে যর্দ্ধ করিতে গমন করিল। যে স্থানে বিবাহ করিয়া গিয়াছিল যখন সেই স্থানে আসিয়া পৌছিল তদ্দিবস কোবাদসাহের স্ত্রি এক পুত্র প্রসবহইল কোবাদসাহ তাহার নাম কেছুরা রাখিল (ঐ কেছরা নওসেরওয়ান নামে ক্ষ্যাত হইবে) কোবাদ আপন স্ত্রি পুত্রকে সঙ্গে লইয়া ইরানে যাত্রা করিলেন, যখন ইরানের সন্নিকট আসিয়া পৌছিল তখন ইরানের সরদারেরা শুনিয়া ভীত হইয়া কোবাদ সাহের নিকট গিয়া সরণাগত হইলে কোবাদ তাহা রদিগকে অভয় দান দিয়া ইরানে জাইয়া বাদসাহ হইয়া সর্ব্বদা দান ও প্রজার পালন করিতে লাগিলেন। যখন তাঁহার আসিবৎসর বয়ক্রম হইল আর চল্লিষ বৎসর কো- বাদসাহ বাদসাহি করিয়া আপন পুত্র কেছরাকে বাদসাহি তে অভিষিক্ত করিয়া আপনি অনিত্য সংসার পরিত্যাগ করিয়া নিত্য ধামে গমন করিলেন॥

---

নওসেরওয়ান বাদসাহের বিবরণ॥

কেছুরা অর্থাৎ নয়সেরওয়ান বাদসাহ হইয়া দীনহীন উপায় বিহীন মনুস্যকে অনেক দান করিলেন আর সর্ব্বদা

প্রজা গণেরা জাহাতে শুখে বাসকরে তাহার উপায় করিতে আরম্ভ করিলেন এবং আপনার সম্মুখে এক স্থান নিরূপন করিয়া আজ্ঞা করিলেন জাহার যে নালিষ থাকে সে তাহা লিখিয়া এইস্থানে রাখিবে আমি পণ্ডিত ও মন্ত্রিদিগকে লইয়া বিচার করিয়া যথার্থবিচার করিব। আরঘোষণদ্বারা সমস্ত লোলকে জানাইলেন যে যখন যে ব্যাক্তি নালিষ করিতে আসিবেক, যদি রাত্রিকালে আমি বেগমের নিকটে সয়ন করিয়া থাকি তথাপি তোমরা সেই খানে সমাচার পাঠাইবা তদভিন্য আপন অধিকারের সমস্ত কর্ম্ম কারক দিগের নিকটে দেশে ২ লিখিয়া পাঠাইলেন যে প্রজাগণের ভূমি ভিন্য বন পর্ব্বত পতিত ভূমি যে খানে যত আছে তাহা বাদসাহি ভাণ্ডারের ধন দ্বারা কৃষি কারকদিগকে বেতনভুক্ত রাখিয়া সেইসকল ভূমি আবাদ করিয়া তাহাতে যে সস্য উৎপন্ন হইবে তাহা গোলা গৃহপূর্ণ করিয়া রাখিয়া ভিক্ষুক ফকির দুঃখি অতিত আর যে সকল প্রজার অন্ন কষ্ট হয় এই সকল লোককে বাদসাহি গোলা হইতে অন্ন বিতরণ করিবা এই আজ্ঞা প্রচার হইলে কিযৎ কালের মধ্যে ইরানের রার্জ্যর সমস্ত দেশে গোলা গৃহ প্রস্তুত হইয়া অনেক মনুস্য তদ্দারা প্রতিপালন হইতে লাগিল ইহাতে নস্তর্সেরও-য়ান বাদসাহর শুক্ষ্যাতি সর্ব্বত্র ব্যাপ্ত হইল এঁতদ্রূপে দীর্ঘ কাল বাদসাহি করিলেন। এক দিবসকর্ম্ম কারকেরা বাদসাহকে জানাইল যে কয়ছর রোম যে রূপ নিয়মে কর দিত তাহা দেয় নাই এই কথা শুনিয়া আজ্ঞা করিলেন যে তাহাকে পত্র লিখিয়া উকিল পাঠাও পরন্ত উকিল তাহার নিকট

গেলে কয়ছর রোম পত্র জ্ঞাত হইয়া রাগবসতঃ উত্তরালিখিল যে তুমি বাদসাহ্‌আমিও বাদসাহ তবে আমি তোমাকে কি নিমিত্ত্য কর দিব ইহাতে তোমার যূর্দ্ধ করিতে বাঞ্ছা হয় তাহাতে আমি ভীত্ত নহি; এই পত্র উকিলকে দিয়া বিদায় করিলেন। উকিল আসিয়া পত্র দিয়া যে রূপ কথপ কথন হইয়াছিল তাহা জানাইলে নওসেরওয়ান রাগম্বিত হইয়া অনেক সেনা সঙ্গে করিয়া রোম দেশে যাত্রা করিলেন, পথি মধ্যে রোমের অন্তঃপাতি এক নগর ও দুর্গ ছিল তথাকার অধিপতি নওসেরওয়ানের সহিত যুর্দ্ধ করিল, নওসেরওয়া তাহারদিগকে পরাভব করিয়া সে স্থান অধিকার করত তথা কার সরদারকে কারাকুটিরে রাখিয়া তথা হইতে প্রস্থান করিলেন কয়েক দিবস পরে আরাযেসেরোম নামে রোমের অন্তঃপাতি আর এক নগর ও দুর্গ ছিল তথায় রোমের বাদসা হর ভাণ্ডারছিল তথায় ধন রত্নাদি থাকিত সেইস্থানে পৌছি লে তথাকার অধিকারি যুর্দ্ধ করিল, নওসেরওয়ান তাহার দিগকে পরাজয় করিয়া সেস্থান করস্থ করত সরদারকে কয়েদ করিয়া তথা হইতে রোমে শুভাগমন করিলেন। কথক গুলিন লোক তথা হইতে পলায়ন করিয়া কয়ছর রোমকে এই সমাচার কহিল সে শ্রুত মাত্রেই সসৈন্যে নওসেরওয়ার সহিত যুর্দ্ধে প্রবর্ত্ত হইয়া তিন দিবস যুর্দ্ধ করিয়া চতুর্থ দিবস মদিনা নামে এক নগর ও দুর্গ ছিল পলাইয়া সেইস্থানের দুর্গ মধ্যে প্রবেশ করত দ্বার বন্দ করিল; নওসেরওয়া সেই দুর্গ বেষ্টন করিবার মন্ত্রনা করিলেন, কয়ছর রোম তাহা শুনিয়া দূত পাঠাইয়া পুনঃ নির্দ্ধিষ্ট কর দিয়া সন্ধি করিল

নওসেরওয়া ইরানে আসিয়া সুখেরাজ্য করিতে লাগিলেন।

বুজরচেমেহর নওসেরওয়াঁর উজির হওনের বিবরণ

একদা নওসেরওয়া বাদসাহর ত্রিকালে সপ্ন দেখিলেন যে তাহার তক্তের সম্মুখে একটি বৃক্ষ জন্মিয়াছে সেই বৃক্ষের নিম্নে এক শুকর বসিয়া রহিয়াছে, প্রাতে গাত্রোত্থান করিয়া আপন সভাস্থ পণ্ডিত ও গণক দিগকে ঐ সপ্ন বিবরণ কহিয়া তাহার ফলাফল গিজ্ঞাসা করিলে তাহারা ইহার শুভা শুভ কিছুই কহিতে পারিলেন না, পরে একজন সভাসতকে কিঞ্চিৎ অর্থ দিয়া বিদায় করিলেন আর কহিলেন তুমি স্থানে স্থানে ভ্রমণ করিয়া পণ্ডিত গণকে এই সপ্ন বিবরণ জানাইলে যে ইহার ফলাফল কহিতে পারিবেক তাহাকে আমার নিকট আনিবা; সেব্যক্তি অনেকস্থানে ভ্রমণ করিয়া একস্থানে বুজরচেমেহর নামে একজন পণ্ডিত গণকের সহিত সাক্ষাত হইলে তাহাকে বাদসাহর সপ্নের ফলাফল জিজ্ঞাসা করাতে সে কহিল এ সপ্নর বিবরণ বাদসাহ ব্যতীত অন্যের সাক্ষাৎ কহিতে পারিবনা এতৎ শ্রবণে তাহাকে বাদসাহর নিকট আনয়ন করিলে বাদসাহ সপ্নবিবরণ তাহাকে জিজ্ঞাসা করিলে সে কহিল এ সপ্ন বিবরণ বিরলে কহিব। বাদসাহ তৎখনাত সভাস্থ সকলকে সভা হইতে বিদায় করিলেন, তখন বুজরচমেহর কহিল আপনার সত্তরজন বেগমের মধ্যে এক জন পুরুষ আছে; এই কথা শুনিয়া তৎক্ষণাৎ বেগমদিগকে আনাইয়া বুজরচমেহরকে কহিলেন ইহারদিগের মধ্যে কাহাকেও পুরুষের লক্ষণ বোধ হয়না তুমি মিথ্যা কহিতেছ;

বুজরচমেহর কহিল আপনি ইহাদিগকে বিবস্ত্রা করিয়া দেখিলে সত্য জানিবেন; বাদসাহ উঠিয়া বেগমদিগকে একে একে বিবস্ত্রা করিতে করিতে একজনপুরুষ তাহার মধ্যেছিল প্রকাস হইল, তখন সেই পরুষ যে বেগমের সহিত আসিয়াছিল তাহাকেও সেই বেগমকে মৃত্তিকা খনন করিয়া পুতিতে আজ্ঞা করিলেন; পরে বুজরচেমেহরকে অনেক প্রকার পরিক্ষা করিয়া উজির পদে নিযুক্ত করিলেন, কিছুদিন পরে খাকান চিন চিন দেশের বাদসাহ হেয়তালের বাদসাহর সহিত যুর্দ্ধ করিল তাহাতে হেয়তালের বাদসাহ যুদ্ধে অক্ষম হইয়া নওসেরওয়ার সরনাগত হইলে নওসেরওয়া বহুবিধ সৈন্যসঙ্গে লইয়া হেয়ত্তালের বাদসাহর সহায় হইয়া খাকান চিনের সহিত যুর্দ্ধ করিতে গেলেন, খাকান চিন তাহা শুনিয়া যুদ্ধে আসিয়া নওসেরওয়ার অনেক সেনা দেখিয়া আপনার অল্প সেনা প্রযুক্ত ভিত হইয়া উকিল পাঠাইয়া সন্ধি করিয়া আপনার কন্যাকে নওসেরওয়ার সহিত বিবাহ দিলেন, নওসেরওয়া ঐ বাদসাহ দিগের উভয়ে বন্ধুত্ত করিয়া আপনি ইরানে আসিয়া বাদসাহি করিতেলাগিলেন। কিয়ৎ দিবস পরে হিন্দুস্থানের রায় বাদসাহ সতরঞ্চ ক্রিড়ার একজন ক্রীড়ক সহিত এক পণ্ডিতের সঙ্গে পত্র লিখিয়া নওসেরওয়ার নিকট পাঠাইল; সতরঞ্চ খেলা পাঠাইতেছি যদি আপনকার সভাস্থপণ্ডিতেরা আমার পণ্ডিতকে এই ক্রীড়ায় পরাভব করিতে পারে তবে আমি যেমত কর দিয়া থাকি তাহা দিব নতুবা আর করের বিসয় উল্লেক করিবেননা। নওসেরওয়া এইপত্র ও সতরঞ্চ ক্রীড়ক

পণ্ডিতের নিকট প্রাপ্ত হইয়া কহিলেন যে আমার দেশে এতৎ ক্রীড়া প্রকাশ নাহি এবং কেহু জ্ঞাত নহে তুমি একবার তোমার সমভিব্যাহারি লোকের সহিত ক্রীড়া কর আমার পণ্ডিতেরা তাহা দেখিয়া তোমার সহিত খেলিবেক ইহা শুনিয়া সে সেইমত করিল, পরে বুজরচেমেহর ঐ পণ্ডিতের সহিত সতরঞ্চ খেলিয়া তাহাকে পরাস্ত করিল, তখন নওসেরওয়া বুজরচেমেহরকে দুই সহস্র উষ্ট্রের পৃষ্টে নানা বিধ রত্ন দিয়া হিন্দুস্থানে রায় বাদসাহের নিকট লিখিয়া পাঠাইলেন যে আমার পণ্ডিত তোমার পণ্ডিত দিগের সহিত সতরঞ্চ ক্রিড়া করিতে জাইতেছে যদি আমার পণ্ডিত পরাভব হয় তবে দুইসহস্র উষ্ট্রের বোঝা রত্ন তোমাকে দিয়া আসিবেক; আর কখন তোমার নিকটে কর গ্রহণ করিবনা কিন্তু তোমার পণ্ডিতেরা পরাভব হইলে নিয়মিত কর এই পণ্ডিতের সঙ্গে পাঠাইবা। বুজরচেমেহর হিন্দুস্থানে পৌছিলে তাহাকে অগ্রসার লোক পাঠাইয়া সমাদর করিয়া বাসা দিয়া রাখিলেন, অৎপরে ক্রমাগত একমাস বুজরচেমেহরেরসহিত হিন্দূস্থানের পণ্ডিত দিগের সতরঞ্চ ক্রীড়া হইবায় সকলেই তাহার নিকটে পরাস্ত হইলেন, হিন্দুস্থানের রায় বাদসাহ একসহস্র উষ্ট্রের বোঝা রত্ন ও নানা দ্রিব্য উপঢৌকন ও নিয়মিত কর বুজরচেমেহরের নিকট দিলেন, বুজরচেমেহর রায় বাদসাহকে কহিল সতরঞ্চ ক্রীড়ার আদি সূত্র কোথা হইতে হইল; এবং কে প্রকাশ করিল তাহা আমি জানিতে বাঞ্ছা করি? রায়, বাদসাহের সভায় সাহুই নামে একজন বৃদ্ধছিল সে খেলার আদিবিবরণ যেমত কহিল তাহা শুন

সতরঞ্চ ক্রিড়ার সৃষ্টি ॥

রায় বাদসাহের সভাসত সাহুই নামক সে কহিল পূর্ব্বে কোন সময়ে হিন্দুস্থান দেশে জমহুর নামক এক বাদসাহ ছিলেন তৎ সময়ে তিনি অতি প্রধান রূপে খ্যাত ছিলেন; অন্য বাদসাহারা তাঁহাকে কর দিতেন তাহার রাজধানী ছন্দলি নগরে ছিল তাহার এক পুত্র হইল তাহার নাম গো রাখিলেন যখন ঐ পুত্রের বয়ক্রম দুইবৎসর তখন উক্ত বাদ সাহের মৃত্যু হইল উজির আমির ও সরদারেরা পরামর্স করিয়া ঐ বাদসাহের কনিষ্ট ভ্রাতা মায়কে বাদস্যাহ করিল, মায় তাহার ভ্রাতার স্ত্রীকে বিবাহকরিলেন, তাহার দ্বারা ঐ বেগ মের এক পুত্র হয় তাহারনাম তলখন্দ রাখিলেন ঐ বালক দুইবৎসর হইলে মায় বাদসাহের মৃত্যু হইল তখন আমির উজির প্রভৃতি সকলে যুক্তি যুক্ত করিয়া ঐ বেগমকে তক্তে অভিষিক্ত করিল, আর ঐ দুই বালককে নানাবিদ্যা সিক্ষা করাইতে আরম্ভ করিল যখন গো আর তলখন্দবয়ঃ প্রাপ্ত হইল এবং আপন২ বিবরণ জ্ঞাত হইয়া উভয়ে আপন মাতাকে কহিল আমি বাদসাহ হইব? তাহারদের মাতা উভয় কে সান্ত্ব করিত। দৈবাত এক দিবস উভয়ে বিবাদ করিয়া পর দিবস তাহাদের মাতা যে তক্তে বসিয়া রাজকার্য্য সম্পন্ন করিত সেইখানে আর এক তক্ত স্থাপিত করিয়া দুই তক্তে দুইভাই বসিল। উজির ও আমিররা আসিয়া তদৃষ্টে বিস্ময়াপন্ন হইয়া উভয়কে অনেক প্রকার সদ্বাক্য দ্বারা প্রবোধ করিল কিন্তু তাহাতে কেহ ক্ষান্ত নাহইয়া উভয়ে সেনা

স গ্রহ করিতে কহিল তদনন্তর উভয়ে মাঠে গিয়া গো আপন
সৈন্যের প্রতি আজ্ঞা করিল যে তোমরা কেহ তলখন্দকে
আঘাত করিবানা, যদি সে তোমারদিগের সম্মুখে আইসে
তখন তোমরা কহিবা হে সাহ আপনি ফিরিয়া জাও ইহা
কহিয়া উভয় সেনায় যুদ্ধ আরম্ভ হইল, প্রথম দিবস তলখ-
ন্দের সেনারা পরাভব হইল। পর দিবস গো তলখন্দকে
কহিয়া পাঠাইল আর যুদ্ধের আবিশ্যক নাই তুমি বাদসাহি
কর আমি ঈশ্বরের ভজনা করিব, এই কথা শুনিয়া তলখন্দ
রাগত হইয়া কহিল আমি কাপুরুষ নহি যে দান লইয়া বাদ
সাহি করিব আমি পুনরায় যুদ্ধ করিব ইহা কহিয়া পুনঃ
সেনা সংগ্রহ করিয়া যুদ্ধে প্রবর্ত্ত হইলে গো কহিয়া পাঠাইল
এই নিকটস্থ যে নদীআছে উভয়ের সেনা নৌকাযোগে নদী
পারে গিয়া যুদ্ধ করুক আমারা দুইজনা হস্তির উপর আরো-
হণ করিয়া যুদ্ধ দেখি তাহাতে উভয়েই সম্মত হইলে উভয়
পক্ষের সেনা নৌকারোহণে নদীর পারে গেল, কেহবা
নৌকায় যুদ্ধ আরম্ভ করিল; কিন্তু তলখন্দের সে
নারা সে দিবস ও পরাভব হইল তলখন্দ তাহা দেখিয়া
লজ্জা ও ঘৃনায় হস্তির উপর আমারির মধ্যে সয়ন করিয়া
প্রাণত্যাগ করিলেন। বেলা অবসান হইবাতে উভয় সেনা
আপন২ স্থানে গমন করিল। তলখন্দের সরদারেরা বাদসাহ
কে দেখিতে নাপাইয়া অনেক অনুসন্ধানেরপর হস্তির আমা
রির মধ্যে তলখন্দরের মৃত্যুকলা দেখিয়া সকলে সোকাকুল
হইল পরদিবস গো তলখন্দের নিকটসমাচার আনিতে লোক
পাঠাইলে সে জাইয়া মৃত্যু সংবাদ শুনিয়া গোকে কহিল,

গো তলখন্দের সরদারদিগকে ডাকাইয়া যুদ্ধস্থকিত রাখিয়া তলখন্দরের মৃত্যুদেহ লইয়া গোরদিক্তেবাটিতে চলিল, যখন বাটির নিকট আইল তাহারদের মাতা অট্টালিকা হইতে দেখিল যে একজন আসিতেছে তদ্দৃষ্টে শোকাকুল হইয়া রোদন করিতে লাগিল যখন গো বাটিতে আইল তখন তলখন্দম রয়াছে শুনিয়া অগ্নিকুণ্ড প্রজলিত করিয়া তন্মধ্যে প্রাণ ত্যাগ করিতে গেলে গো এতৎ সংবাদ প্রাপ্তে আপন মাতার নিকট গিয়া অনেক প্রবোধ করিয়া কহিল যে তল্‌খন্দেকে কেহ আঘাত করেনাই সে লজ্জাবসতঃ প্রাণত্যাগ করিয়াছে, আপনি একথা সমস্ত প্রধানদিগকে জিজ্ঞাসা করিয়া জ্ঞাত হউন আর যে প্রকার যুদ্ধ হইয়াছিল তাহা আমি আপনকাকে চিত্রপঠ করিয়া দেখাইব, পরেচিত্র কর আনাইয়া একমাঠের মধ্যে রণস্থল তাহার দুইদিগে দুই বাদ সাহ দুই উজির আর একং পক্ষে দুইহস্তি দুই ঘোটক দুই নৌকা আটজন পদাতিক চিত্রপটে লিখিয়া তাহার নিজেযে রূপ যুদ্ধ হইয়াছিল সেই বিবরণ লিখিয়া আপন মাতাকে দেখাইল। সে যতদিন বর্ত্তমানছিল এই চিত্র পটের ন্যায় সত্তরঞ্চ রাখিয়া ঐ প্রতিমুর্ত্তি করিয়া আহার আলোচনা পূর্ব্বক কাল যাপন করিল ॥

বজরচেমেহর সাহুয়ের নিকট সত্তরঞ্চর আদি শুত্র জ্ঞাত হইয়া পরে হিন্দুস্থানের রায়বাদসাহর স্থানে বিদায় হইয়া ইরানে আইল পরে বরজু নামে এক জন মণ্ডলেরওয়ার সভাসত হিন্দুস্থানে কোন কর্ম্ম

উপলক্ষে গমন করিয়া ছিল তথায় বাদসাহের বিদ্যা লয় হইতে কলেলা দমনা নামে দুই শ্রগাল কর্ত্তৃক এক উত্তম উপাক্ষণ আনিয়া বাদসাহকে দিল ॥

---

## বুজরচেমেহের কারাবদ্ধ

একদিবস নওসেরওয়া বাদসাহ শীকার করিতে গিয়া এক শীকরের পশ্চাৎ২ ঘোটকারোহণে ধাবমান হইয়া আপন সৈন্য হইতে অনেক দূরে গেলেন কেবল বুজরচেমেহের সঙ্গে রহিল আর কেহ পৌছিতে পারিলনা; দুইপ্রহরের সময় রৌদ্রে ভ্রমণ করিয়া অত্যন্ত ক্লান্ত হইয়া এক বৃক্ষ তলে বুজরচেমেহরের উরুদেশে মস্তক রাখিয়া নিদ্রা গেলেন° বাদসাহের বাহুতে এক বহু মূল্য রত্নের বাজু মুক্তার সহিত গুম্ফিত ছিল নিদ্রাবস্থায় পার্শ্ব পরিবর্ত্তণ করিতে ছিন্ন হইয়া ভূমে পতিত হইলে বাদসাহ জাগ্রত হইবেন এই আসঙ্কা প্রযুক্ত বুজরচেমেহর তাহা তুলিতে পারিলনা । ইতোমধ্যে এক কৃষ্ণ বর্ণ পক্ষ উর্দ্ধ হইতে নিম্নে আসিয়া ঐ বাজু ও মুক্তাগ্রাস করিয়া শূন্য মার্গে অদরশন হইল, বুজরচেমেহর তাহা দেখিয়া আপনার কুগ্রহ বিচার করিয়া বিষয়াপন্ন হইয়া থাকিল ক্ষণেককাল পরে বাদসাহের নিদ্রা ভঙ্গ হইলে আপন বাজু নাদেখিয়া কহিলেন ওরে কুক্কুর কিকু কর্ম্ম করিয়াছিস, বুজরচেমেহর পূর্ব্বে জ্ঞাত হইয়াছিল যে তাহার কুগ্রহ ঘটিয়াছে এই হেতু কোন উত্তর না করিয়া নিরব থাকিল; এমত সময়ে আর২ লোক সকল আসিয়া পৌছিল বাদসাহ তখন ঘোটকারোহি হইয়া বাটিতে আসিয়া বুজরচেমেহরকে কারা

গারোবর্দ্ধকরিলেন কিছুদিন পরে কয়ছররোম একদূত দ্বারা নানাপ্রকার উপঢৌকনীয়দ্রব্য, আর একস্বর্ণময় কৌটা চাবি বর্দ্ধকরিয়া চাবিউকিলের জিম্মা করিয়া খুলিতেবারণ করিয়া উকিলকে দিয়া কহিলেন বাদসাহকে এই কৌটা দিয়া কহিবা ইহার মধ্যে কি বস্তু আছে তাহা তোমার সভার পণ্ডিত ও গণকেরা যদি কহিতে পারেন তবে আমার বাদসাহ যে রূপ কর দিতেছেন তাহা দিবেন নচেৎ আপনি আর কর চাহি বেননা। দূতে আসিয়া উপঢৌকনীয় ও পত্র দিয়া সেই স্বর্ণ ময় কৌটা সমুখে রাখিয়া উক্তমত কহিল বাদসাহ ঐ উকিল কে সমাদর করিয়া বাসা দিলেন। তৎ পরদিবস সভায় বসিয়া পণ্ডিত ও গণক দিগকে কহিলেন যে কয়ছররোম অনেক প্রকার দ্রব্য ও স্বর্ণময় এই কৌটা চাবি বর্দ্ধ করিয়া উকিল দ্বারা পাঠাইয়াছে ইহার মধ্যে কি বস্তু আছে তাহা বলিতে পারিলে যেমত কর দিয়া থাকে তাহাই দিবেক নতুবা আর কর দিবেনা; অতএব তোমরা গণনা করিয়া ইহার মধ্যে যাহা আছে তাহা বল? পণ্ডিত ও গণকেরা অনেকগণনা করিলেন কিন্তু কিছুই স্থিরকরিতে পারিলেননা তখন বাদসাহ বুজরচেমেহরকে কারাগারহইতে মুক্ত করিয়া আনিতে আজ্ঞা করিলেন; কারাগারের অধ্যক্ষ বুজরচেমেহর কে বাদসাহের নিকট আনিত করিলে বাদসাহ তাহাকে পুন রায় উজিরী কর্ম্মে অভিষেক করিয়া কয়ছর রোমের প্রস্তর কথা কহিলেন, বুজরচেমেহর কহিল অনেক দিন কারাগার বর্দ্ধ থাকায় বুদ্ধির কিছু মালিন্য জন্মিয়াছে দণ্ডেক দুইদণ্ড পথ মধ্যে ভ্রমণ করিয়া আইলে ইহার মধ্যে যাহা

আছে তাহা কহিতে পারি; বাদশাহ তাহাকে দুইদণ্ড কাল ভ্রমণ করিতে আজ্ঞা করিলেন, বুজরচেমেহর সভা হইতে উঠিয়া কথকদূর জাইতেছেন এতৎ সময়ে এক পরমা সুন্দরি যুবতী এক গলির মধ্যে হইতে বাহির হইয়া রাজবর্ত্মে আইলে বুজরচেমেহর তাহাকে কহিলেন ॥

শুনহ রূপসি ধনী আমার বারতা।
বিবাহ হইয়াছে কিনা বল এই কথা ॥
সে কহিল বিবাহ হইয়েছে বহুদিন।
গর্ব্ভবতী হইয়াছি আমি অল্পদিন দিন

ইহা শুনিয়া বুজরচেমহর সেখান হইতে কথক দুর গিয়া আর এক যুবতীর সহিত পথ মধ্যে সাক্ষ্যাত হইল তাহাকে জিজ্ঞাস করিলেন?

শুনহ রূপবতী আমার বচন।
পতি পুত্র ছাড়ি কোথা করেছে গমন।
সে কহিল শুন ২ ওহে মহাশয়।
পতি ঘরে আছে কিন্তু পুত্র নাহি হয় ॥

তাহা শুনিয়া সেস্থান হইতে আবার কথক দুর গমনকরিলে আর এক বাটির দ্বার মোচন করিয়া এক যুবতী দাঁড়াইয়া রহিয়াছে তাহাকে দেখিয়া কহিলেন?

শুন ওলো কুলবতী প্রশ্ন এক করি।
বিবাহ হইয়াছে কিম্বা আছহ কুমারি ॥
সে কহিল অদ্যাবধি আছি হে কুমারি।
বিবাহ করিতে বাঞ্ছা নাহিক আমারি ॥

এই কথা শুনিয়া আর কথক দুর গেলেন কাহারও সহিত

সাক্ষাত হইলন; তখন পুনরাবৃত্তি হইয়া বাদসাহর সভায় আসিয়া কহিলেন যে এই রত্নময় কৌটার মধ্যে তিনটি অতি সুন্দর মুক্তা যত্নদ্বারা বেষ্টিত আছে; তাহার একটি ছিদ্র করা আর একটি অর্দ্ধ ছিদ্র করা এবং একটি ছিদ্রই নাই। বুজরচেমেহর এই কথা কহিলে বাদসাহ রোমের উকিলকে কহিলেন যে পণ্ডিত জাহা কহিল তাহা শুনিলে এইক্ষণে কৌটার চাবি খোল কি আছে সকলে দেখুক তখন উকিল চাবি খুলিয়া অতি সুন্দর রেসমি বস্ত্রের পুটলি তিনটি বাহির করিল ঐ পুটলি খুলিলে তিনটি মুক্তা উক্ত মতছিদ্র সকলে দেখিয়া বিস্ময়াপন্ন হইলেনবাদসাহ বুজরচেমেহরকে কারাগারে বর্দ্ধ হেতু লজ্জা বশতঃ খেদ করিয়া পরে অনেক পুরস্কার ও প্রসংসা করিলেন. তখন বুজরচেমহর কহিল বাদসাহর হস্তের রত্নময় রাজএককঙ্ক বর্ণ পক্ষ লইয়া জায় তাহা যে আমি চুরি করিয়াছি এই সন্দেহ প্রযুক্ত আমাকে কারাগারে রাখিয়াছিলেন তখনআমিকোনকথা কহিনাই তাহারকারণ এই যে তৎকালে আমার অতি গ্রহবৈগন্য হইয়াছিল। কিছু দিন পরে কয়ছর রোমের মৃত্যু সংবাদ শুনিয়া এক উকিল দ্বারা কয়ছর রোমের পুত্রকে কহিয়া পাঠাইলেন, তোমার পিতা যেরূপ কর দিত তুমিও সেই নিরূপিত কর দিয়া সুখে রাজ্য ভোগ কর আমি তোমার সহায় থাকিব। উকিল তথায় পৌছিয়া এই কথা কহিলে কয়ছর রোমের পুত্র রাগাসক্ত হইয়া কহিল আমি তোমার বাদসাহকে কিনিমিত্ত্য কর দিব আমি কি দুর্ব্বল যুদ্ধ করিতে বাঞ্ছা থাকে আমি যুদ্ধ করিতে প্রস্তুত

আছি, ইহা কহিয়া অতি তাচ্ছল্য বলে উকিলকে বিদায় করিল। উকিল আসিয়া কয়ছর রোমের পুত্রের প্রকৃতি ও স্বভাব ও যেবহার যেমত করিয়াছিল তাহা কহিলে নওসে রুওয়া রাগান্বিত হইয়া সসৈন্য রোমদেশে যাত্রা করিলেন। যখন রোমের নিকট পৌঁছিলেন খরচের নিমিত্তে যে ধন সঙ্গে ছিল তাহা সমুদয় ব্যয় হইল, বাদসাহ তাহা শুনিয়া বুজরচেমেহেরকে আজ্ঞা করিলেন যে একজন মনুষ্যকে ইরানে ধন আনয়নার্থে শিঘ্র প্রেরণ কর; সে কহিল রোম দেশে অনেক ধনবান মহাজন লোক আছে কাহার স্থানে কর্জ লইব ইহা কহিয়া একজন বিজ্ঞ ব্যক্তিকে রোমের মহাজন দিগের নিকট পাঠাইল; সে তাহার দিগের নিকটে এই কথা জানাইলে তাহারা কহিল আমারদিগের এত ধন নাই যে বাদসাহের যুদ্ধের ব্যয় সম্পন্ন হয় এতন্নগরে বাসকরে একজন চর্ম্মকার তাহার অনেক ধন আছে তাহাকে কহিলে অনায়াসে দিতে পারিবেক সেইব্যক্তি তাহার নিকটে জ্ঞাপন করিলে সেই চর্ম্মকার তৎক্ষণাৎ সম্মত হইয়া চলিশ উষ্ট্র বোঝাই করিয়া ধন দিয়া তাহাকে কহিল আমার মানস এই যে আমার একটি পুত্রকে লেখা পড়া শুদ্ধরূপ শিক্ষা করাইয়াছি যদি অনুগ্রহ করিয়া বাদসাহের সরকারে কোন কার্য্যে নিযুক্ত করেন তবে আমা প্রতি অতি কৃপা প্রকাশ হয় আপনি বাদসাহকে জ্ঞাপন করিলে যেমত আজ্ঞা করেন আমাকে কহিয়া পাঠাইবেন। সে ব্যক্তি ধন লইয়া আসিয়া চর্ম্মকারের অভিলাষ বাদসাহকে জানাইলে বাদসাহ শুনিয়া কহিলেন চর্ম্মকার বাদসাহের নিকট মন্ত্রিকিম্বা কর্ম্ম কর্ত্তা

হইলে আর২ প্রধান লোকেরা কি কর্ম্ম করিবেক তুমি তাহার এই কথা শুনিয়া ধন কেন লইয়াছ জাহা হউক এ টাকা এথান হইতে এখনি লইয়া তাহাকে দেও। আমি চর্ম্মকারের ধন লইবনা, সে তৎখনাত ঐ ধন লইয়া চর্ম্মকারকে ফিরাইয়াদিল। সেই দিবস কয়ছর রোমের পুত্র নওসেরওয়ার সসৈন্যে আসিবার সংবাদ পাইয়াও অনেক সেনা শুনিয়া ভিত হইয়া যে কর বাকিছিল তাহা পত্র লিখিয়া উকিল দ্বারা পাঠাইয়া বাদসাহর সহিত প্রণয় করিল এ বাদসাহ তাহাকে ডাকাইয়া অনেক আশ্বাস করিয়া আপন দেশে আইলেন, যখন নওসেরওয়ার ৭৪ বৎসর বয়ক্রম হইল তখন উজির ও আমির ও পণ্ডিত দিগকে কহিলেন যে আমার ছয় পুত্র তাহার জেষ্ঠ হোরমজ তাহাকে বাদসাহর উপযুক্ত বোধ হইতেছে অতএব তোমরা তাহাকে পরিক্ষা করিয়া আমাকে কহ? তাহারা সকলে নানা প্রকার পরিক্ষা করিয়া কহিলেন হোরমজ বাদসাহর উপযুক্ত বটেন; তাহার পর নওসেরওয়া হোরমজকে যুব রাজ্যে অভিষেক করিয়া এক বৎসরের পর তাহার আটচল্লিষ বৎসর বাদসাহির পরে অনিত্য সংসার পরিত্যাগ করিয়া নিত্য ধামে গমন করিলেন ॥

## হোরমজ বাদসাহর বিবরণ ॥

হোরমজ সাহ বাদসাহ হইয়া কিছুকাল পৈতৃক নিয়ম মত বাদসাহি কর্ম্ম নির্ব্বাহ করিয়া পরে অতিশয় দৌরাত্ম্য আরম্ভ করিলেন, বিশেষতঃ তাহার পিতার উজির ও আমির

গণের কাহার মস্তক ছেদন; কাহাকে বিশ ভক্ষণ, কাহাকে ও কারাগারে বর্দ্ধ, কাহাকে দেশ হইতে দুরী করণ করিতে লাগিলেন। প্রথমতঃ এজদকসছপ নামক একজন সরদারকে কারাগারে বর্দ্ধ করিলেন; সেকারাগারেরুর্দ্ধ হইয়া জরদহস্ত নামক এক উজির ছিল তাহাকে কহিয়া পাঠাইল যে আমি কারাগারে বিনা অপরাধে অতিশয় কষ্ট পাইতেছি এবং অন্নবস্ত্র রহিতহইয়াছি; তুমিহোরমরজকে কহিয়া আমাকে কারাগার হইতে মুক্ত কর। জরদহস্ত ইহা শ্রতমাত্রে ভৎক্ষণাত এজদকসছপকে দেখিতে গেল কারাগারের রক্ষকেরা উজিরকে যাইতে বারণ করিতে পারিলনা, জরদহস্ত তাহার সহিত সাক্ষ্যাত করিয়া আপন বাটীতে গিয়া এজদকসছপের নিমিত্ত্য খাদ্য দ্রব্য পাঠাইল; কারাগারের রক্ষকেরা হোরমজকে কহিল যে জরদহস্ত উজির এজদকসছপকে দেখিতে গিয়া তাহার ভক্ষণার্থে বাটি হইতে অন্ন ব্যঞ্জন পাঠাইয়াছে এই কথা শুনিয়া এজদকসছপের মস্তক ছেদনকরিতে আজ্ঞা করিলেন, তাহারা সেইমত করিল। পর দিবস জরদহস্ত উজির হোরমজের নিকট আসিয়া বাটি যাইবার নিমিত্ত্য বিদায় প্রার্থনা করিলে বাদসাহ কহিলেন অদ্য একজন নূতন পাচক আসিয়াছে সে উত্তম পাক করিয়া থাকে ক্ষণেক কাল বিলম্ব করিয়া আহার করিয়া স্বস্থানে গমন কর, পরে নানা প্রকার অন্ন ব্যঞ্জন আনাইয়া আপনি আহার করিয়া তৎপরে জরদহস্তকে আহার করিতে কহিলেন, সে আহার করিতে আরম্ভ করিলে এক বাটিতে বিশমিশ্রিত করিয়া ব্যঞ্জন তাহাকে আনিয়া দিলে সে কহিল আমার ইহাতেই

পরিতোস হইয়াছে আর ব্যঞ্জনের আবিস্যক নাই, বাদসাহ ঐ ব্যঞ্জন কিঞ্চিৎ লইয়া কহিলেন ইহার আস্বাদন গ্রহণ কর এইরূপ পুনঃ পুনঃ কহিলে সেই পাত্র হইতে কিঞ্চিৎ লইয়া আহার করত বিদায় হইয়া বাটিতে গিয়া অতি ব্যাকুলহইয়া সয়ন করিলেন ক্ষণেক কাল পরে তাহার প্রাণ ত্যাগ হইল তদনন্তর ছিমাহ বরজেন নওসেরওয়ার আর এক উজিরছিল তাহাকেও বিনাস করিতে আজ্ঞা করিলেন। এই প্রকার অনেক সরদার ও আমিরকে নষ্ট করিলেন, কাহারও বর্থা সর্ব্বস্ব লইয়া দেশ হইতে দূর করিয়া দিলেন। দশবৎসর এইরূপ দৌরাত্ম্য করিলেন; তাহার পর তোরক দেশ হইতে ছাওবা সাহ নামক একজন বাদসাহ অনেক সেনা লইয়া যুর্দ্ধ করিতে আইলে যেকএক জন সরদার ছিল তাহার দিগের সহিত পরমুস করিয়া রয় দেশে বহরাম জোপিনা নামক একজন বলবান ছিল তাহাকে আনয়ন পূর্ব্বক সেনা পতি করিয়া যুর্দ্ধে পাঠাইলেন, সে যুর্দ্ধে যাইয়া ছাওয়া সাহকে বিনাশ করিয়া অনেক ধন পাইল এবং তাহার সকল সেনা বহরামের অনুগত হইল, বহরাম এই জয় সংবাদ হোর মজকে লিখিয়া ঐ সকল সেনা লইয়া ছাওয়া সাহর দেশ তুরানে গিয়া তাহার পুত্র পজমুদ সাহর সঙ্গে যুর্দ্ধ করিল, সে যুদ্ধে অসক্ত হইয়া এক দুর্গমধ্যে গোপন হইল বহরাম সেই দুর্গের চতুর্দিগে বেষ্টন করিয়া রহিল তখন পজমদ কাতর হইয়া বহরামের সরণাগত হইল, তাহার পর বহরাম ইরানের বাদসাহ হইতে বাঞ্ছা করিল। এখানে

ইরাণের সকল লোক হোরমজের দৌরাত্যতে অস্থির হইয়া সকল প্রধানেরা অক্য হইয়া হোরমজকে অন্ধ করিয়া কারাগারে বদ্ধ করত তাহার পুত্র খোছরোকে বাদসাহ করিল। বহরাম হোরমজের কারাকুঠিরে রুদ্ধ হওয়া সংবাদ পাইয়া ইরানে যুর্দ্ধ করিতে আইল; তাহা শুনিয়া খোছরো সসৈন্যে বহরামের সহিত দুই দিন যুর্দ্ধ করিলেন ত্রিতিয় দিবস বহরাম পলায়ন করিল। খোছরো বাদসাহি করিতে লাগিলেন, পুনরায় বহরাম অনেক সেনা সংগ্রহ করিয়া যুর্দ্ধে আইল, খোছরো যুর্দ্ধ করিয়া শেষে অপারক হইয়া তাহার পিতা হোরমজ সাহকে কহিলেন কোন বাদ সাহর সরণাগত হওয়া কর্তব্য? সে কহিল তুমি কয়ছর রোমের নিকটে জাও ইহা শুনিয়া খোছরো রোম দেশে যাত্রা করিলবহরাম ইরানের রাজধানিতে আসিয়া হোরমজ কে কাটীয়া ইরানে বহরাম বাদসাহ হইল। হোরমজ বার বৎসর বাদসাহি করিয়াছিল বহরাম পরিশেষে খোছরোর অনুসন্ধান অনেক করিয়া শুনিল যে খোছরো রোমদেশে গিয়াছে তাহাকে ধরিতে অনেক লোক পাঠাইল; তাহারা দেখা নাপাইয়া ফিরিয়া আইল। খোছরো কয়ছর রোমের সঙ্গে প্রণয় করত তাহার কন্যাকে বিবাহ করিয়া তাহার সেনা লইয়া ইরানে আসিয়া বহরামের সহিত যুর্দ্ধ করিল; বহরাম যুদ্ধে অসক্ত হইয়া চিন দেশের বাদসাহর সরণাগত হইয়া তাহার কন্যাকে বিবাহ করিয়া সেই স্থানে বাস করিল বহরাম একবৎসর ইরানে বাদসাহি করিয়াছিল ॥

## হোরমজের পুত্র খোছরো সাহর বিবরণ ॥

খোছরো সাহ বাদসাহ হইয়া অনেক দান এবং সদ্বিচার করিতে আরম্ভ করিলেন তাহাতে সকলে তুষ্ট হইল, কিছুদিন পরে কয়ছর রোমের কন্যার এক পুত্র হইল তাহার নাম সেরোয়া রাখিলেন, গণকদিগকে কহিলেন যে সেরোয়ার ভাগ্য কেমন তাহা বিচার করিয়া বল? তাহারা গ্রহদিগের বলাবল ও স্থান বিচার করিয়া কোন উত্তর করিলনা; তাহাতে খোছরো তাহাদিগকে পুনরায় জিজ্ঞাসা করিলে তাহারা কহিল ইহা হইতে অনেক গোল যোগ হইবেক আর ধর্ম্ম বিরুদ্ধ কর্ম্ম করিবেক, ইহাহইতে অধিক কহিতে পরিবনা। বাদসাহ ইহা শুনিয়া অত্যন্ত খিদ্যমান হইয়া কয়েক দিবস অন্তঃপুরে থাকিলেন; উজির ও আমিরেরা অনেক কহিয়া পাঠাইলে বাহিরে আসিয়া সেরোয়ার জর্ম্ম লগের ফল জাহা গণকেরা কহিয়াছিল তাহাদিগকে কহিলেন, তাহারা শুনিয়া অনেক খেদ ও মনস্তাপ করিল। কিয়ৎ কাল পরে খোছরো একদিন সিকার করিতে গিয়া পথমধ্যে একসামান্য লোকের পরমসুন্দরী সিরিননামা এককন্যাকে দেখিয়া আসক্ত হইয়া আপন ভৃত্যগণকে আজ্ঞা করিলেন যে ইহাকে আমারখাসমহলেঅর্থাৎঅন্তপুরেলইয়া রাখ, তাহারা তৎক্ষণাত সিরিনকে লইয়া বাদসাহর বাটিতে রাখিল, বাদসাহ সিকারান্তে আলয়ে আসিয়া সিরিনকে বিবাহ করিলেন, উজির ও আমিরেরা শুনিয়া খোছরোকে কহিল এই নগরে অনেক প্রধান লোকের সুন্দরী কন্যাআছে তাহা না, লইয়া

এক সামান্য মনুষ্যের কন্যা গ্রহণ করায় জন সমাজে নিন্দা বাদসাহ তাহা গ্রাহ্য না করিয়া তাহাকেপ্রধানা বেগম করিলেন। যখন সেরোয়া যুব হইল বড দৈরত্য আরম্ভ করিল এনিমিত্ত্য তাহাকে এক বাটী মধ্যে কয়েদ রাখিলেন। অতি অল্প দিবসান্তে কারাগার হইতে বাহির হইয়া একজন সরদারের সঙ্গে অক্য করিয়া খোছরোকে কয়েদ করিবার মন্ত্রনা করিল; খোছরো তাহা জ্ঞাত হইয়া বাটি হইতে আপনার উদ্যানে গিয়া থাকিলেন, সেরোয়া তাহাকে ধৃত করিয়া কয়েদ করিল। হোরমজদ নামে সেরোয়ার একজন আত্মিয় সেই সেরোয়ার আজ্ঞা মত খোছরো সাহকে বিনাশ করিল খোছরো সাহ অষ্টত্রিংশৎ বৎসর বাদসাহি করিয়া ছিলেন

---

## সেরোয়া সাহর বিবরণ।।

সেরোয়া সাহ আপন পিতা খোছরো সাহকে মারিয়া বাদসাহ হইয়া আপন বিমাতা সিরনকে কহিয়া পাঠাইলেন যে তূমি আমার নিকট আইস তোমাকে ইরানের প্রধানা বেগম করিব, সিরিন ইহা শুনিয়া ভিত্ত হইয়া কহিয়া পাঠাইল আমি একা জাইতে পারিবনা। পর দিবস সেরোয়া উদ্যানে এক সভা করিয়া সিরনকে ডাকাইয়া পাঠাইল সিরিন সেই সভা মধ্যে আইলে সেরোয়া সিরিনকে কহিল আমি অন্য স্ত্রীলোককে বিবাহ করিতে বাঞ্ছা করিনা তুমি আমাকে বিবাহ কর তোমাকে আমার বেগমকরিব। সিরিন অতি বুদ্ধি বতী ছিল সে কহিল আমি তাহাতে সম্মত আছি কিন্তু আমার তিনমানস আছে তাহাপুর্ণ্ণহইলে বিবাহ,করিব

সেরোয়া কহিল তোমার সে ভিন্ন মানস কি তাহা প্রকাশ করিয়া আমাকে বল। সিরিন কহিল প্রথম এই খোছরো সাহ আমাকে অলঙ্কার বস্ত্র ও ধনাদি জাহা দিয়াছিল তাহা আমি সেচ্ছাধিন দান করিব তাহাতে কেহপ্রতিবাদী নাহয়? দ্বিতিয়তঃ আমার অন্তঃপুরে খোছরো সাহর মর্য্যাদি জাহা আছে তাহা সমুদয় আমি দগ্ধ করিব, সেরোয়া ইহা শুনিয়া কহিল তুমি এইক্ষণেই জাইয়া আপন মনবাঞ্ছা পূর্ণ কর, সিরিন তৎক্ষণাত্ তথাহইতে গমন করিয়া আপন অলঙ্কার বস্ত্র ও ধনাদি যাহা ছিল তাহা আপন দাস দাসি দিগে্য বিতরন করিল আর কথক দরিদ্র দুখি দিগের দিয়া, আপনার সয়য়নাগারে অগ্নি প্রদান করিল, তাহা দেখিয়া তথাকার রক্ষকেরা সেরোয়ার নিকটে আসিয়া জানইল যে সিরিন বেগম আপন মহলে অগ্নি প্রদান করিয়াছে। তাহা শুনিয়া সেরোয়া তাহাদিগকে কহিল যে সিরিনির ত্রিতিয় প্রার্থনা কি তাহা জানিয়া আইস তাহারা গিয়া সিরিনকে ঐকথা কহিলে সে কহিল খোছরো সাহর গোর খুলিয়া তাহার সরির একবার দেখিতে বাঞ্ছা করি? সেরোয়া ইহা শুনিয়া তৎক্ষণাত্ গোর খুলিতে আজ্ঞা করিলেন, তখন সিরিনসেই স্থানে উপস্থিত হইয়া গোরের মধ্যে খোছরোকে দেখিয়া রোদন করিতে২ আপন মুখ নখাঘাতে খণ্ড২ করিয়া বিষ ভক্ষণ্ করত্ খোছরোর মৃত্যু দেহের উপরে পতিত হইয়া প্রাণ্ ত্যাগ করিলেন। সেরোয়া ইহা শুনিয়া খেদিত হইল সেরোয়া সাতমাস বাদসাহি করিলে পর তাহাকে কোন্ ব্যক্তি বিশ ভক্ষণ্ করাইয়া তাহার প্রাণ নষ্ট করিল॥

## সেরোয়ারপুত্র আরদসিরের বিবরণ।

আরদসির বাদসাহ হইয়া পিরোজ খোছরো নামে এক সরদার ছিল তাহাকে সেনাপতি করিলেন, কিঞ্চিৎ দিবস পরে কোরাজ নামক রোমি একজন অতি দুরাত্মা তাহার সঙ্গে মিলিত হইয়া নানা মত কুমন্ত্রনা দ্বারা তাহাকে ভুলাইয়া কহিল তুমি আরদসিরকে মারিতে পারিলে ইরানের বাদসাহ হইবে; পিরোজ খোছরো তাহার কুমন্ত্রনায় ভুলিয়া এক রাত্রে আরদসির বাদসাহের সভায় জাইয়া কহিল নৃত্য গীতাদি করিতে আজ্ঞা কর, তদনন্তরে দুইপ্রহর পর্য্যন্ত নৃত্য গীত হইয়া সভা ভঙ্গ হইল সকলে গমন করিলেন যখন বিরল হইল তখন পিরোজখোছরো আরদসিরকে অস্ত্রাঘাতে নষ্ট করিয়া আপনি তক্তে বসিল, কিন্তু অত্যল্প দিন বাদসাহি করিলে কোরাজ এই সংবাদ কয়ছর রোমকে লিখিল সে এই কথা শুনিয়া অত্যন্ত রাগত হইয়া সসৈন্যে ইরানে আইল, পিরোজ খোছরো কয়ছর রোমের অনেক সেনা দেখিয়া ইরান হইতে পালায়ন করিল তখন কয়ছর রোম ইরানের তক্তে বসিয়া কিছুদিন থাকিয়া বহু ধন রত্নাদি লইয়া রোমের একজন সরদার করাবিন নামক ছিল তাহাকে ইরানে বদসাহ করিয়া আপনি রোমে প্রস্থান করিল। করাবিন ইরানে বাদসাহ হইয়া একবৎসর বাদসাহি করিলে পর ইরানের সরদারেরা অক্য হইয়া করাবিনের মস্তক ছেদন করিলে ইরান দেশ বাদসা হিন হইল; তখন প্রধানেরা উজিরের নিকট গিয়া জানাইলে সে কহিল কয় বংসিয় যে

কেহ থাকে তাহাকে আনিয়া বাদসাহ কর; তাহারা অনেক সন্ধান করিলেন কিন্তু কোনস্থানে উক্ত বংশীয় কাহাকে পাইলেননা শেষে শুনিলেন যে তুরানানামা এক কন্যা আছে তাহাকে আনিয়া ইরানের বাদসাহ করিলেন; সে ছয়মাস বাদসাহি করিয়া পীড়িতা হইয়া প্রাণ ত্যাগ করিল ॥

তৎপর আরজম নামা কয় বংশী এক কন্যা চারিমাস বাদ সাহি করিয়া তিনিও সমন সদনে গমন করিলেন ॥

---

## ফরখজাদের বাদসাহি ॥

ফরখজাদ নামক কয় গোষ্টির একজন চেহরম নগরে অপষ্টরূপেছিল বিস্তর অনুসন্ধানের দ্বারা তাহাকে আনিয়া সরদারেরা সকলে ঐক্য হইয়া বাদসাহ করিলেন; তিনিপ্রজা পালন ও সদ্বিচার অতি শুন্দর মত করিলেন তাহা দেখিয়া সকলেই তুষ্ট হইল। তাহার এক প্রিয় দাস ছিয়াচস্ম নাম ছিল তাহার কোন অপরাধ হওয়াতে তাহাকে কয়েদ করিলেন; সে কারাগার হইতে অনেক রোদন পূর্ব্বক মিনতি জানাইলে এক সপ্তার পরে তাহাকে মক্ত করিয়া তাহারপূর্ব্ব কর্ম্মে নিযুক্ত করিলেন, সে অতি দুষ্ট বদজাত ছিল বাদসাহ কয়েদ করিয়াছিলেন সেই ক্রোধে বাদসাহকে মদ্যের সহিত বিশ মিশ্রত করিয়াদিল বাদসাহ তাহা পানমাত্র তৎখণাত্ অজ্ঞান হইয়া প্রাণ ত্যাগ করিলেন, ফরখজাদ একমাস বাদসাহি করিয়াছিলেন ॥

## এজদ জোরদ বাদসাহর বিবরণ ॥

ফরখজাদের মৃত্যু হইলে এজ্‌দজোরদ নামে কয় গোষ্ঠির নওসেরওয়ার সন্তান একজন কোনস্থানে অতি দিনভাবে ছিলেন; সরদারেরা অনুসন্ধান পাইয়াতাহাকে আনয়নপূর্ব্বক বাদসাহ করিলেন, তিনি পূর্ব্ব বাদসাহ দিগের রিতামত সর্ব্বদা প্রজা পালন ও দানকারিতে আরম্ভ করিলেন, তাহাতে সরদারেরা ও প্রজারা সকলেই তুষ্ট হইল। বহুকাল এইরূপে এজ্‌দজোরদ বাদসাহি করিলেন শেসাবাস্থায় অমর বাদসাহ ছাদবেক্কাছ নামক এক সরদারকে অনেক সেনা সঙ্গে দিয়া ইরানের বাদসাহর সহিত যুদ্ধে পাঠাইল। এজ্‌দজোরদ সাহ তাহা শুনিয়া বহুবিধ সেনা সংগ্রহ করিয়া রোস্তমনামক একজন সরদারকে সেনাপতি করিয়া সেনা সমূহ সঙ্গে দিয়া ছাদবেক্‌কাছের সহিত যুর্দ্ধ করিতে পাঠাইলেন। রোস্তম জৌতিষ বিদ্যা উত্তম রূপে জানিত সে আপনি উপস্থিত যুর্দ্ধের বিশয় গননা করিয়া দেখিল যে যুর্দ্ধে মঙ্গল হইবেকনা ইহাতে চিন্তিত হইয়া আপন ভ্রাতা ফরখজাদ নামে এজ্‌দ জোরদ বাদসাহর সভাসত ছিল তাহাকে লিখিল যে আমি এই যুর্দ্ধের বিশয় গননা করিয়া দেখিয়াছি ইহাতে অশুভ হই বেক কিন্তু ইহা ভাবিয়া যুর্দ্ধে ক্ষেন্ত থাকাও কাপুরুসের কর্ম্ম আমি ছাদবেক্‌কাছের সহিতযুর্দ্ধে চলিলাম আপনি বাদসাহ কে লইয়া সাবধানে থাকিবেন। পরে রোস্তম ছাদবেক্‌কা ছের সহিত যুর্দ্ধে গিয়া ছাদবেক্‌কাছের অশ্বনষ্ট করিল ছাদ বেক্‌কাছি ঘোটক হইতে পতিত হইয়া পলাইয়া সে দিবস

যুদ্ধ স্থকিত রাখিল পর দিবস যুদ্ধে আইলে রোস্তম আরোবের অনেক সরদার ও সেনা বিনাশ করিয়া পরি শেষে আরোবের এক সরদারের মস্তক ছেদন কালীন তাহার শোনিত রোস্তমের মুখে ও চক্ষে পতিত হইল তাহাতে ব্যাস্তহইয়া যেমতমস্তক নত করিল সেইসময় আরো বের এক সরদার রোস্তমের স্কন্দে এক তলওয়ার মারিল তাহাতে রোস্তমের মস্তক ছিন্ন হইয়া ভূমে পডিল তাহা দেখিয়া রোস্তমের সেনারা পলায়ন করিল; তৎসময় এজ্দ জোরদ বাদসাহ বগদাদ নগরে ছিলেন রোস্তমের মৃত্য সম্বাদ পাইয়া সেস্থান হইতে খোরাছান দেশে জাইয়া তথা কার শুবদার ইরানের এক সরদার মাহুই ছুরি নামক ছিল তাহাকে যর্দ্ধে সহায় হইতে লিখিলেন; এবং তুছ দেশের শুব দারকে ও এক পত্র লিখিলেন; মাহুইছুরি বাদসাহর পত্র পাইবা মাত্র আপন সেনা সঙ্গে লইয়া বাদসাহর নিকট আসিয়া অনেক দৈন্যতা ও সিষ্টচারি করিয়া কহিল আমার প্রাণ থাকিতে আপনকার অঙ্গে বায়ু প্রবেশ করিতে পারি বেকনা, তাহার দৈন্যতা ও সিষ্টচারি দেখিয়া সকলে তাহা কে প্রসংসা করিল, পরে ফরখজাদ রোস্তমের ভ্রাতা বাদ শাহকে মাহুই ছুরির নিকট রাখিয়া সর্তকে থাকিতে কহিয়া আপনি সসৈন্যে আরব দিগের সহিত যুদ্ধে গমন করিল ॥

মাহুইছুরি অতিসয় খল ও বিশ্বাষ ঘাতক, যখন দেখিল বাদ সাহর সেনা গণেরা যুদ্ধে গেল কেবলবাদসাহ তাহারনিকট রহিল তখন তুরানের একবাদসাহ বেজন নামক ছমরকন্দ দেশেছিল মাহুইছুরি তাহাকে পত্র লিখিল যে ইরানের

এজ্‌দজোরদ বাদসাহ আরোব দিগের সহিত যুদ্ধে অপারক হইয়া পলায়ন করিয়া আমার নিকটে আসিয়া মরব নগরে রহিয়াছে, তুমি এই সময়ে অত্যল্প সেনা লইয়া আইলে ইরানের বাদসাহি অনাআসে তোমার হস্তগোত হয়। বেজন মাহুই ছুরির এই পত্র পাইয়া তৎক্ষণাত দস সহস্র সৈন্য লইয়া সপ্তাহের মধ্যে বোখারা দেশ দেশের পথ দিয়া মরব নগরে আসিয়া পৌছিল, বাদসাহ মাহুই ছুরিকে কখন সত্রু বোধ করে নাই; যখন বেজন সেনা সহিত নিকট উপস্থিত হইল তখন মাহুই ছুরি আপনার এক দুত দ্বারা বাদসাহকে কহিয়া পাঠাইল যে আরোবের বাদসাহ অনেক সেনা লইয়া যুদ্ধ করিতে আসিয়াছে আপনকার যেমত অনুমতি হয়? বাদসাহ এতৎ শ্রবণে অত্যন্ত ব্যস্ত হইয়া যুর্দ্ধ সজ্জা করিয়া আপনার যে কয়েক জন সেনা ছিল তাহা লইয়া তরানি দিগের সহিত যুর্দ্ধ করিতে চলিলেন, আর মাহুই ছুরিকে সেনা সহিত সঙ্গে আসিতে কহিলেন। বাদসাহ যুদ্ধস্থলে গিয়া তরানি দিগের অনেক সেনা বিনাশ করিলেন, তরানিরা বাদসাহের সঙ্গে যে কয়েক জন সেনাছিল প্রায় তাহারদিগের সকলকে সংহার করিল, বাদসাহ পশ্চাৎ ভাগে চাহিয়া দেখিলেন যে তাহার সঙ্গের লোক প্রায় নাই আর মাহুই ছুরি সেনা লইয়া নাআসিয়া আপন শিবির মধ্যে রহিয়াছে ইহা দেখিয়া এজ্‌দজোরদ বাদসাহ পলায়ন করিয়া কথক দূর গিয়া অশ্ব ত্যাগ করিয়া পদব্রজে সন্ধের সময় এক ময়দাওয়ালার দোকানের দ্বার বন্দ ছিল কোন ক্রমে সেই দোকান মধ্যে প্রবেশ করিয়া ঐ রাত্রি তথায় থাকিলেন। মাহুই

চুরি বাদসাহ পালাইলে তাহাকে ধৃত করিতে লোক প্রেরণ করিল তাহারা কথক দূর গিয়া বাদশাহর ঘোটক পথিমধ্যে দেখিয়া তাহাকে ধৃত করিয়া মাহুই চুরির নিকটে আনিয়া কহিল যে বাদসাহকে দেখিতে পাইলাম না তাহার এই ঘোটক পথ মধ্যে পাইয়া আনিয়াছি বিশেষতঃ অন্ধকার রাত্রে কোথায় সন্ধান করিব, এই কথা শুনিয়া মাহুই চুরি পুনরায় বাদসাহর অনুসন্ধান করিতে লোক পাঠাইল। প্রাতে ময়দা ওয়ালা দোকানের দ্বার খুলিয়া দেখিল যে শুর্য্যের ন্যায় তেজস্বি এক পুরুষ গৃহ মধ্যে বসিয়া আছে, ময়দা ওয়ালা বিশ্বয়া পন্ন হইয়া কহিল আপনি চন্দ্র কি শুর্য্য তাহা অনগ্রহ করিয়া আমাকে কহিতে আজ্ঞাহউক? বাদসাহ কহিলেন আমি একজন সেপাহি আরোব দিগের সহিত যুদ্ধে পরাজয় হইয়া এস্থানে আসিয়াছি অতিসয় খুদিত আছি যদি কিছু খাদ্যদ্রব্য আমাকে দেও তবে আহার করিয়া প্রাণরক্ষা করি, ঐ দোকানি কহিল আমার গৃহে শুস্ক রূটি আর সাক আছে; বাদসাহ কহিলেন তাহাই আমাকে দেও দোকানি সাক এবং রুটি বাদসাহর সম্মুখে রাখিয়া তাহার দোকানের নিকট এক সরোবর ছিল সেই জলাশয়ে জল আনিতে গেল; এমত সময়ে মাহুই চুরির প্রেরিত লোক তাহাকে দেখিয়া জিজ্ঞাসা করিল একজন সরদার যুদ্ধে হারিয়া পালাইয়াছে তুই তাহাকে জাইতে দেখিয়াছিস? সে কহিল একজন অতি শুন্দর শুর্য্যার ন্যায় পুরুষ আমার দোকানে বসিয়াছে, তাহারা ঐ কথা শুনিয়া ময়দা ওয়ালাকে ধৃত করিয়া মাহুইচুরির নিকট লইয়া গেলে মাহুইচুরি

তাহাকে জিজ্ঞাসা করিলে সে পূর্ব্ব মত সকল কহিল; তখন মাহুইছুরি উক্ত দোকানিকে কহিল তুই এখনি ঘরে জাইয়া তাহার মস্তক ছেদন কর নতুবা তোর মস্তক ছেদন করিব। মাহুইছুরির সরদারেরা এই কথা শুনিয়া অনেক নিসেধ করিল ও হিতউপদেশ দিল সে তাহা নাশুনিয়া কথিতব্যক্তির সমভিব্যাহারে লোক দিয়া বাদসাহকে কাটিতে পাঠাইল ময়দা ওয়ালা আপনার প্রাণের ভয়ে গৃহে আসিয়া বাদসাহকে নষ্ট করিল। মাহুইছুরির লোক আসিয়া কহিল এজ্দজোরদ বাদসাহ মরিয়াছে, সে কহিল তাহার অলঙ্কার বস্ত্রাদি লইয়া সেই মৃত্যু দেহ ঐ জলাসয়ে নিক্ষেপ কর, তাহারা সেইমত করিল, ইহা দেখিয়া সরদারেরা তাহার নিকট হইতে উঠিয়া গেল। সেই গ্রামস্থ লোকেরা বাদসাহের মৃত্যু দেহজলে ভাসিতেছে দেখিয়া জলহইতে শবউঠাইয়া গোর দিলেক মাহুইছুরি তাহা শুনিয়া আপন সেনা পাঠাইয়া সে গ্রামের অনেক লোককে নষ্ট করিল, তাহা দেখিয়া লোক সকলে ভয়ে গ্রাম হইতে পালাইল, মাহুইছুরি ইরানে আসিয়া বাদসাহ হইল, তুরানের বাদসাহ বেজন সাহ শুনিল যে মাহুইছুরি এজ্দজোরদ বাদসাহকেবিনাশ করিয়া আপনি তথায় বাদসাহ হইয়াছে। অতিসয় ক্রোধযুক্ত হইয়া আপন সেনাপতি বরছামকে ও দশসহস্র সেনা সঙ্গে লইয়াইরানে আইল, মাহুইছুরি তাহা শুনিয়া আপন সেনা লইয়া যুদ্ধ করিতে প্রবর্ত্ত হইলে মাহুইছুরি বেজনের যুদ্ধে অসক্ত হইয়া পলায়নকরিল। বেজনের সেনাপতি বরছাম তাহার পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া তাহাকে ধরিয়া বেজনের

নিকট আনিল বেজন তাহার দুইহস্ত ও দুইপদ কাটিয়া উষ্ট্র বালুকায় ফেলিয়া টানিয়া সকল সেনার নিকট লইয়া যাই-তে কহিল আর তাহার সঙ্গে এই ঘোসনা করিল যে আপন প্রভুকে যে নষ্ট করে তাহার দণ্ড এই। মাহুইছুরির তিনজন পুত্রকে ধরিয়া প্রজ্বলিত অগ্নিকুণ্ডে একেএকে নিক্ষেপ করিল তাহার পরে মাহুই ছুরিকে সেই অগ্নিমধ্যে ফেলিয়া পোড়াইয়া মারিল। তদনন্তর ইরানে আসিয়া কয় গোষ্ঠির বাদসাহ দিগের ঘরে অনেক অন্যাসন করিল কাহার সন্ধান পাইলনা যে কেহছিল তাহারা ভয়ে দেশ দেশান্তর হইল তথন বেজন আপন লোক ও সেনা লইয়া স্বদেশে প্রস্থান করিল। আরোবেরা ইরান দেশ অধিকার করিল ॥ কয় গোষ্ঠীর বাদসাহির বিশ্রাম এই পর্য্যান্ত হইল। ফের দৌছি কৃত সাহনামা বাঙ্গালা তরজমা সমাপ্ত হইল ॥

ত্তোক্তম দেশিস্ত বাদসাহ দিগের নাম ও যে যত দিবস বাদসাহি করেন তাহার বিবরণ ॥

| | বৎসর | মাস |
|---|---|---|
| কয়ুমরছ প্রথম বাদসাহ ত্রিশ বৎসর বাদসাহি করেন | ৩০ | ০ |
| তাহার পর তাঁহার পৌত্র হোসঙ্গ বাদসাহ চল্লিশবৎসর বাদসাহি করেণ | ৪০ | ০ |
| তাহার পর তাঁহার পুত্র তহমরছ বাদসাহ ত্রিস বৎসর বাদসাহি করেণ | ৩০ | ০ |
| তাহার পর তাঁহার পুত্র জমসেদ বাদসাহ সাত সত বৎসর বাদসাহি করেণ | ৭০০ | ০ |
| তাঁহার পর জোহাক তাজি বাদসাহ একদিন ন্যুন হাজার বৎসর বাদসাহি করেণ | ১০০০ | ০ |
| তাহার পর ফরেদোঁ বাদসাহ পাঁচ সত বৎসর বাদসাহি করেণ | ৫০০ | ০ |
| তাহার পর মনচেহর বাদসাহ একসত বিষ বৎসর বাদসাহি করেণ | ১২০ | ০ |
| তাহার পর তাহার পুত্র নৌদর বাদসাহ সাত বত্সর বাদসাহি করেণ | ৭ | ০ |
| তাহার পর জু বাদসাহ পাঁচ বৎসর বাদসাহি করেণ | ৫ | ০ |
| তাহার পর কয় কোবাদ বাদসাহ একসত বৎসর বাদসাহি করেণ | ১০০ | ০ |

| | বৎসর | | মাষ |
|---|---|---|---|
| তাহার পর তাহার পুত্র করকাউছ বাদসাহ একসত্ত পঞ্চাস বৎসর বাদসাহি করেণ | ১৫০ | । | ০ |
| তাহার পর তাহার পৌত্র করখোছরো বাদসাহ সাইট বৎশর বাদসাহি করেণ | ৬০ | । | ০ |
| তাহার পর লহরাস্প বাদসাহ বাদসাহি করেণ তাহার পর তাহার পুত্র গোস্তাস্প বাদসাহ একশত বিষবৎসর বাদসাহি করেণ | ১২০ | । | ০ |
| তাহার পর তাহার পৌত্র বহমন বাদসাহ শাইট বৎসর বাদসাহি করেণ | ৬০ | । | ০ |
| তাহার পর তাহার কন্যা হোমা বত্রিস বৎসর বাদসাহি করেণ | ৩২ | । | ০ |
| তাহার পর তাহার পুত্র দারা বাদসাহ বার বৎসর বাদসাহি করেণ | ১২ | । | ০ |
| তাহার পর তাহার পুত্র দারা বাদসাহ চদ্দবৎর বাদসাহি করেণ | ১৪ | । | ০ |
| তাহার পর ছেকন্দর বাদসাহ চত্তুদ্দস বতসর বাদসাহি করেণ | ১৪ | । | ০ |
| তাহার পর ছেকন্দরের স্থাপিত মত্তক তওয়া এফের বংশ দুইশত বতসর বাদসাহি করেণ | ২০০ | । | ০ |
| তাহার পর আরদসির বাদসাহ চল্লিষ বতসর বাদসাহি করেণ | ৪০ | । | ০ |
| তাহার পর তাহার পুত্র সাহপুর বাদসাহ চল্লিষ বতসর বাদসাহি করেণ | ৪০ | । | ০ |

| | বত্সর | মাষ |
|---|---|---|
| তাহার পর তাঁহার পুত্র ওজমোরদ বাদসাহ ত্রিশ বত্সর বাদসাহি করেণ | ৩০ ৷ | ০ |
| তাহার পর তাহার পুত্র বহরাম বাদসাহ আট বত্সর বাদসাহি করেণ | ৮ ৷ | ০ |
| তাহার পর তাহার পুত্র বহরাম বেন বহরাম বাদসাহ উনিশ বত্সর বাদসাহি করেণ | ১৯ ৷ | ০ |
| তাঁহার পর তাহার পুত্র বহরামিয়ান বাদহাহ চারি বৎসর বাদসাহি করেণ | ৪ ৷ | ০ |
| তাহার পর তাহার ভ্রাতা নরসি বাদসাহ নয় বত্সর বাদসাহি করেণ | ৯ ৷ | ০ |
| তাহার পর তাহার পুত্র ওজমোরদ সাপুর বাদসাহ সত্তর বত্সর বাদসাহি করেণ | ৭০ ৷ | ০ |
| তাঁহার পর তাহার পুত্র সাপুর বাদসাহ পাঁচ বত্সর বাদসাহি করেণ | ৫ ৷ | ০ |
| তাহার পর এজ্দজোরদ সাপুর বাদসাহি করেণ | | |
| তাহার পর খোছরো বাদসাহ বাদসাহি করেণ | | |
| তাহার পর বহরাম গোর বাদসাহ তেসাট্টি বত্সর বাদসাহি করেণ | ৬৩ ৷ | ০ |
| তাহার পর তাহার পুত্র এজ্দ জোরদ বাদসাহ আঠোর বত্সর বাদসাহি করেণ | ১৮ ৷ | ০ |
| তাহার পর তাহার পুত্র হোরমোজদ বাদসাহ এক বত্সর বাদসাহি করেণ | ১ ৷ | ০ |

বৎসর মাস

তাহার পর তাহার ভ্রাতা পিরোজ বাদসাহ
বাদসাহি করেণ
তাহার পর তাহার পুত্র সরফজায় বাদসাহ বাদসাহি করেণ
তাহার পর তাহার ভ্রাতা কোবাদ বাদসাহ
সাইট বত্সর বাদসাহি করেণ ৬০ । ০
তাহার পর তাহার পুত্র নওসেরওয়া বাদসাহ
আটচল্লিষ বত্সরবাদসাহি করেণ ৪৮ । ০
তাহার পর তাহার পুত্র হোরমজ বাদসাহ
বার বত্সর বাদসাহি করেণ ১২ । ০
তাহার পর বহরাম জোপিনা বাদসাহ
এক বত্সর বাদসাহি করেণ ১ । ০
তাহার পর খোছরো বাদসাহ আটত্রিস
বত্সর বাদসাহি করেণ ৩৮ । ০
তাহার পর তাহার পুত্র সেরোওয়া বাদসাহ
সাত মাষ বাদসাহি করেণ ০ । ৭
তাহার পর তাহার পুত্র আরদসির বাদসাহ
বাদসাহি করেণ
তাহার পর করাবিন রোমি বাদসাহ এক বৎসর
বাদসাহি করেণ ১ । ০
তাহার পর তুরান নামে এক কন্যা ছয়
মাষ বাদসাহি করেণ ০ । ৬
তাহার পর আরজম নামে এককন্যা চারিমাষ
বাদসাহি করেণ ০ । ৪

| | বত্সর | মাষ |
|---|---|---|
| তাহার পর ফুরখজাদ বাদসাহ একমাষ বাদসাহি করেণ | ০ । | ১ |
| তাহার পর এজ্দ্জোরদ বাদসাহ বিশ বৎসর বাদসাহি করেণ | ২০ । | ০ |

এইপর্য্যন্ত ছাছান বংসিয় দিগের বাদসাহির বিরাম হইল তাহার পর আরব দেশের ওমর নামে বাদসাহর এক সরদার ছাদবেক্কাছ নামে আসিয়া ইরান দেশ আক্রমন করিয়া আরব দেশের অধিন করিল ॥